॥ अहंकारमीमांसा-२ ॥

गोस्वामी श्याम मनोहर

प्रकाशक : गोस्वामी श्याम मनोहर.
६३, स्वस्तिक सोसायटी
४था रस्ता, जुहुस्कीम
विले-पार्ला, मुंबई.४०००५६

प्रकाशनार्थ आर्थिकसहयोग :

१. श्रीमती पूर्वी.रा.पारेख (पार्ला, मुंबई)
२. श्रीमती चंद्रावली जो. भाटिया (खार, मुंबई)
३. श्रीमती उर्मिलाबेन म. शाह (कांदिवली, मुंबई)

प्रवचनकार : गोस्वामी श्याम मनोहर

प्रथमसंस्करण : वसंत पंचमी वि.सं.२०७३

निःशुल्कवितरणार्थ

प्रति : ५००

मुद्रक : पूर्वी प्रेस प्रा.ली.
राजकोट

।। प्राक्कथन ।।

।।श्रीमदिष्टदेवतायै नमः ।।

जिज्ञासायाः समाधाने पटीयान् तत्त्वबोधने।
सभ्यानुरूपभाषायां व्याख्याने विदुषां पुरः।।
सम्प्रदायस्य रक्षायां संवृद्धौ च प्रचारणे।
सततं जागरूकोऽयं परसिद्धान्तखण्डने।।
तपोबुद्ध्या प्रकुरुते श्रीकृष्णस्य प्रसादतः।
उपास्यब्रह्मणः सेवां सुधीः श्यामो मनोहरः।।
अहङ्कारमीमांसायाः व्याजेनात्र विवेचितम्।
स्फुटं तेन सप्रमाणं जगतां कृत्स्नदर्शनम्।।

भगवत्कृपा तथा गुरुजनोंके आशीर्वादसे अहंकारमीमांसा (भाग दो) की भूमिका लिखनेके प्रस्तावको मैने प्रभुके प्रसादरूपमें ग्रहण किया है. अभिज्ञानशांकुतलमें उक्त है कि उत्तमजनोंके द्वारा अपने गुणोंका आदर आत्मविश्वास देता है : ''**प्रायः प्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमादरः**'' मैं अच्छी तरह जानता हूं कि इस विलक्षण एवं उपादेय ग्रन्थकी भूमिका लिखनेकी योग्यता मुझमें नहीं है तथापि एक योग्यता अवश्य है कि इस ग्रन्थके लेखकके साथ बाल्यकालिक परिचयके कारण मैं उनका चिरकालसे प्रीतिपात्र रहा हूं. जबसे मैंने होश संभाला ग्रन्थलेखकके साथ मेरा परिचय है.

वल्लभवेदान्तके संरक्षण-संवर्धनहेतु निरन्तर कटिबद्ध बड़ामन्दिर (मुम्बई)से विगत पूरा नौ दशकोंसे मैं सुपरिचित हूं. मेरे पितृचरण पण्डित कृष्णमाधव झा ने सम्मान्य श्रीश्याममनोहरजीके पितामह प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद गोकुलनाथजी महाराजका आश्रय प्राप्त कर उनकी सन्ततियोंको न्यायशास्त्रके अध्यापनहेतु जीवनके चौवालिस वर्षो (१८२८से १८७२

ई.तक) का काल सम्मानपूर्वक बम्बईमें व्यतीत किया. अध्यापनके साथ अनेक ग्रन्थोंका प्रणयन किया और अन्यस्थानीय शिष्योंको भी कृतविद्य किया. शैशवमें साठके दशकमें (१८५४से १८५८तक) मेरे भी कुछ वर्ष पितृचरणसे न्यायविद्याकी अधिगति हेतु यहां व्यतीत हुए. अतएव समवस्यकता के कारण इस ग्रन्थलेखकसे मेरा मैत्रीपूर्ण परिचय शैशवसे रहा है. वेदान्तशास्त्राम्बुधिके पारदृश्वा पूज्यपाद दीक्षितजी महाराजका भी मैं प्रीतिपात्र रहा हूं. उनका वात्सल्य अनुग्रह तथा औदार्य मेरे हृदयके स्मृतिपटलपर लौहलेख्यकी तरह अंकित है.

महर्षि पतञ्जलिने महाभाष्यमें कहा है कि चार प्रकारोंसे विद्याका उपयोग होता है १) गुरुमुखसे सुनकर, २) उस सुनी हुई विद्याके अभ्यासहेतु निरन्तर अध्ययन मनन करते रहनेपर, ''**स्वाध्यायोऽध्येतव्यः**'' श्रुतिवचनका यही स्वारस्य है, ३) पुनः इस अधिगत विद्याका समाज तथा शिष्योंके मध्य प्रवचन या अध्यापन द्वारा वितरण करनेपर, इससे ऋषिऋणका भी प्रायः अपाकरण होता है. ४) तथा उस ज्ञानके अनुरूप आचरण तथा संरक्षण करनेपर ''**चतुर्भिश्च प्रकारैः विद्या उपयुक्ता भवति आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेन इति**'' चूंकि विद् धातु से निष्पन्न 'विद्या'पद चार अर्थोमें प्रयुक्त हो सकता है. विद्धातु ज्ञानार्थक विचारार्थक सत्तार्थक तथा लाभार्थक होता है. विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद् सत्तायां तथा विद्लृ लाभे धातुपाठमें उक्त है. अतः महर्षि पतञ्जलिका अभिप्रेत 'विद्या' पद यहां ज्ञानका वाचक है.

''**विद्या ह वै ब्राह्मणम् आजगाम गोपाय मा शेवधिस्तेऽहमस्मि**'' इस श्रुतिगत 'विद्या' भी ज्ञानका ही वाचक है. इस श्रुतिका अभिप्राय यह है कि ब्राह्मणके पास आकर विद्याने कहा कि मेरी रक्षा करो मैं आपकी सम्पत्ति हूं. इस की पृष्ठभूमि यह रही है कि प्राचीनकालमें चातुर्वर्ण्य व्यवस्थाके अन्तर्गत विद्याका संरक्षण संवर्द्धन एवं प्रचार प्रसार

का भार ब्राह्मणोंपर था. अतः अध्ययन-अध्यापनका दायित्व ब्राह्मणके लिये निर्दिष्ट था. प्रजापालनका दायित्व क्षत्रियके लिए, धनके संरक्षण-संवर्धनका दायित्व वैश्यके लिए तथा सेवाका दायित्व शूद्रके लिए निर्धारित था.

प्राचीन समयमें सामाजिक व्यवस्थाके अन्तर्गत शैशवमें विद्याकी अधिगति हेतु गुरुकुल तथा विद्यालयोंमे बच्चोंका प्रवेश होता रहा और धार्मिक प्रवचनोंके माध्यमसे समाज विद्याकी अधिगति करता था. कुल पुरोहितोंके द्वारा धार्मिककृत्य रूप कर्मकाण्डका अनुष्ठान चिरकालसे आज भी हो रहा है और विद्वज्जन रामायण, महाभारत, पुराण, भागवत तथा भगवद्गीताका पारायण एवं कथावाचनके द्वारा समाजको मित्रसम्मित उपदेशके द्वारा विद्यासे अवगत कराते हुए विधि-निषेधका ज्ञान करवाते रहे हैं. शास्त्रोंके अभिज्ञ तथा कथावाचनमें कुशल पण्डितजन ही पुरोहित धर्मगुरु तथा कथावाचक हुआ करते थे. समाजमें उनका अपना विशेष आदर तथा सम्मान था. विद्याके बलपर मिथिला राज्यके उपार्जक नैयायिकशिरोमणि महेश ठाकुरने एक ओर पक्षधर प्रसिद्ध जयदेवमिश्रकी कृति तत्त्वचिन्तामणि आलोककी दर्पण नामक व्याख्याका प्रणयन किया तो दूसरी ओर मध्यप्रदेशमें अवस्थित बस्तर राजघरानेमें पौरोहित्य कथावाचन तथा धर्मशास्त्रीय निर्णयदाता के रूपमें प्रसिद्धि पायी. धर्मशास्त्रविषयक उनके अनेक ग्रन्थ मिथिलामें उपलब्ध तथा प्रचलित हैं. इस उद्देश्यसे ही शङ्कर भगवत्पाद्ने भारतकी चारों ही दिशाओंमें पुरी, शृंगेरी, द्वारका तथा बदरिकाश्रम में पीठस्थापन किया. पश्चात् वैष्णवाचार्योंके द्वारा भी अपने अपने सम्प्रदायोंके प्रवर्तनहेतु पीठ स्थापित हुए. स्वयं आचार्योंने तथा उनके अनुगामियोंने समाजको शिक्षित दीक्षित कर प्रवचनोंके द्वारा साम्प्रदायिक सिद्धान्तोंका संरक्षण संवर्धन किया उसके प्रचारप्रसारके द्वारा अपना स्वतन्त्र मार्ग निर्माण किया.

यह प्रवचन भारतमें दीर्घकालसे प्रचलित है - ऋग्वेदके अष्टम

मण्डलमें जमदग्निने मित्रावरुणसे कहा है "**न यः संपृच्छे संप्रश्नाय न रमते न पुनर्हवीतवे यज्ञाय रमते न संवादाय रमते**" आदि.

न्यायशास्त्रमें '**तद्विद्यसम्भाषा**' का उल्लेख है. इसका तात्पर्य है जिज्ञास्यविषयक अभिज्ञ (विशेषज्ञ)से वार्तालाप करके अपनी जिज्ञासा शान्त करना. आजका सेमिनार, संगोष्ठि, एक्स्टेंन्शन् लेक्चर तथा प्रवचन आदि इसी '**तद्विद्यसम्भाषा**' का एक प्रकार है. न्यायशास्त्रके चतुर्थ अध्यायमे तत्त्वज्ञानविवृद्धिप्रकरणमें दो सूत्रोंमें इसका स्पष्ट विवरण दिया है. तद्विद्य अर्थात् अभिज्ञके साथ बातचित करते हुए तत्त्वज्ञानका ग्रहण तथा अभ्यास करना अपेक्षित है. "**ज्ञानग्रहणाभ्यासस्तद्विद्यैः सह संवादः**" (४।२।४७) इसके लिए गुरु शिष्य ब्रह्मचारी विशिष्ट श्रेयोर्थी अर्थात् मुक्तिकामी तथा असूयारहित व्यक्तिके साथ वार्ता (बातचीत) करना चाहिए "**तं शिष्य गुरु सब्रह्मचारिविशिष्टश्रेयोऽर्थिभिर् अनसूयुभिर् अभ्युपेयात्**" (४।२।४८) असूया कहते है दूसरोंके गुणोंमें दोष दिखाना अतः यहां न्यायसूत्रमें असूयारहित व्यक्तिका उल्लेख हुआ है.

इसी क्रममें 'अहङ्कारमीमांसा' रूप यह प्रवचन-ग्रन्थ प्रस्तुत हुआ है. श्रीमद्भागवत, भगवद्गीता तथा तत्त्वार्थदीपनिबन्धमें समागत अहङ्कारविषयक विचारको केन्द्रमें रखकर न केवल भारतीय चिन्तनोंका अपितु विश्वचिन्तनोंका इस विषयक परिष्कृत विवेचन इस प्रवचनमें देखा जा सकता है. मैं आद्योपान्त इस ग्रन्थका अध्ययन कर ही इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं.

श्रीमद्भागवतका पद्य -

सएष यर्हि प्रकृतेः गुणेषु अभिविषज्जते ।।
अहंक्रियाविमूढात्मा कर्तास्मीत्यभिमन्यते ।।

तथा भागवतके व्याख्यात्मक सम्प्रदायके ग्रन्थ तत्त्वार्थदीपनिबन्धमें उक्त पद्य -

यथा यथा हरिः कृष्णो मनस्याविशते निजे॥
तथा तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते॥
कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना॥
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

यहां प्रवचनके केन्द्रमें विद्यमान है. इसका पुंखानुपुंख विवेचन करते हुए प्रवचन-कर्ताने उदाहरण तथा प्रत्युदाहरण के माध्यमसे तथा लौकिक दृष्टान्तोंका प्रदर्शन कर दर्शनान्तरोंसे तुलनात्मक साम्य वैषम्य दिखाकर अपने इस प्रवचनका श्रोताको हृदयंगम करानेमें सफलता अर्जित की है. वल्लभवेदान्तसे भिन्न पौरस्त्य एवं पाश्चात्य दर्शनों के साथ समन्वयका सार्थक प्रयास यहां द्रष्टव्य है. इसी क्रममें प्रतीत्यसमुत्पादवाद आरंभवाद विवर्तवाद विकृत एवं अविकृत परिणामवाद, इगो, इगोस्प्लिटिंग, बीईङ बिकमिंङ, केओस या कोसमोस युनिवर्सल अवेयरनेस् इस्लामका धर्म तथा ईसाका संदेश आदि का विचार यहां इस तरह एक धागामें पिरोया गया है कि विभिन्न रंगोके सुरभित विचारकुसुमोंकी आकर्षक एवं विलक्षण वनमाला बन गयी है.

महाकवि भारविने प्रवचनकर्ताके विषयमें कहा है कि वही वक्ता सभीमें श्रेष्ठ माना जाता है जो अपने मनोगत भावोंको वचनके माध्यमसे दूसरोंको समझानेमें समर्थ होते हैं. इनमेंसे भी कुछ ऐसे हैं जो ग्रन्थके ग्रन्थियोंको सुलझानेमें निपुण होते हैं. **''भवन्ति ते सभ्यतमा विपश्चितां मनोगतं वाचि निवेशयन्ति ये, नयन्ति तेष्वप्युपपन्ननैपुणाः गम्भीरमर्थं कतिचित् प्रकाशताम्''** इनके सारस्वत वचनका आभरण होता है विविक्तवर्णता अर्थात् विशदता, श्रुतिसुखदता ऐसी की दुश्मनके हृदयको भी प्रसन्न कर दे. ऐसी प्रसन्न और गम्भीर सरस्वती-वाणी-वचन पुण्यकर्मीके द्वारा ही सम्भव है. जिसने तपस्या नहीं की है उससे संभव नहीं है.

''विविक्त वर्णाभरणा सुखश्रुतिः प्रसादयन्ती हृदयान्यपि द्विषाम्॥
प्रवर्तते नाकृतपुण्यकर्मणां प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''॥

यहां हम देखते है कि प्रवचनकी भाषा जितनी सरल है उतना ही विशद एवं ऋजुतासंपन्न है. गम्भीर कथ्यको समझानेका कौशल. यह विषयकी पूर्णाङ्गताका प्रमाण है अक्षरचतुष्टयात्मक इस अहंकारके विवेचनीयार्थमें सहस्रपृष्ठोंका विनियोग. तूलराशिके प्रचयके समान लोक कथाओंके उदाहरणद्वारा उपपाद्य विषयोंको समझानेकी अनूठी शैली अन्तःकरणको चमत्कृत कर देती है.

विद्याके परिपाकसे ही चिन्तनमें प्रौढि आती है जो यहां प्रवचनकी प्रतिपंक्तिमें परिलक्षित होती है. पौरस्त्य एवं पाश्चात्य दर्शनों का ज्ञान तथा यथावसर उचित स्थलोंपर उचित रीतिसे उसका उपयोग प्रवचनकर्ताके प्रज्ञाकौशलका परिचायक होता है. इस अभिप्रायकी अभिव्यक्ति महाभाष्यमें महर्षि पतञ्जलिने की है **''एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति''** अच्छी तरहसे ज्ञात एक भी पद उपयुक्त अवसर पर उचित स्थलमें प्रयुक्त होने पर इसलोकमें तथा स्वर्गलोकमें इच्छानुरूप फल देता है. जैसे यहां शब्दका माहात्म्य उक्त है उसी तरह इस प्रवचनमें चिन्तनसमष्टिकी महिमा आकलनीय है.

प्राचीन भारतीय मनीषियोंने सात प्रकारोंके साधनोंसे प्रतिपाद्य विषयके तात्पर्य-निर्णयका विधान किया है **''उपक्रमोपसंहारावभ्यासोऽपूर्वताफलम् अर्थवादोपपत्ती च लिङ्गं तात्पर्यनिर्णये.''** उपक्रम उपसंहार अभ्यास अपूर्वता फल अर्थवाद तथा उपपत्ति का भरपूर उपयोग यहां किया गया है. **उपक्रम** = आदिमें प्रतिपाद्य विषयका संक्षेपमे कथन कि मैं यह कहना चाहता हूं अर्थात् विषयप्रवेश, **उपसंहार** = संक्षेपमें ऐसा कथन कि प्रतिपाद्य विषय इस तरह सिद्ध हुआ, **अभ्यास** = बार बार प्रतिपाद्य विषयका पाठक या श्रोताको स्मरण कराना, **अपूर्वता** = प्रतिपाद्य विषयमें पूर्वसे अनुक्तका कथन अथवा जिस प्रमाणसे प्रतिपाद्यका अभ्युपगम होता है उससे भिन्न प्रमाणका अविषयत्व कथन, **फल** = प्रतिपाद्यके प्रयोजनज्ञान

या परिणति, **अर्थवाद**=प्रतिपाद्यका गुणकथनरूप प्राशस्त्यकथनसे श्रोताका ध्यानाकर्षण, तथा **उपपत्ति**=तर्कस्वरूप युक्ति एवं प्रमाण का प्रदर्शन होनेसे उस प्रतिपाद्यविषयक सन्देह, विचिकित्सा तथा विपर्ययके अपाकरणसे साधारणजन या विद्वज्जन की निष्कम्प प्रवृत्ति होती है. अतएव अनुभवकी भित्ति पर आधृत यह प्रवचन प्रामाणिक एवं सर्वजनबोधगम्य है.

आजकल अभिजातवर्गमें दो प्रकारोंके प्रवचनोंका प्रचलन है क्लास प्रवचन और मास प्रवचन. यह प्रवचन दोनों ही प्रवचनोंके उद्देश्यको पूरा करता है. पुष्टिमार्गके पथिक भी लाभान्वित होंगे तथा सामान्य श्रोता भी.

शाक्ततन्त्रके ग्रन्थ महाकालसंहिता(कामकलाखण्ड) की भूमिकामें वर्णमालाके आद्यवर्ण 'अ' तथा अन्त्यवर्ण 'ह' को लेकर 'अहं'प्रत्याहारका निर्माणकर इसमें नामरूपात्मक इस संसारका स्वरूप प्रतिष्ठित किया है तथा अपवर्गकी सिद्धिहेतु शाक्तसाधनामें इसके त्यागकी बात कही है जो तत्त्वार्थदीपनिबन्धकी पंक्ति **''अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्''** से तुलनीय है.

बुद्धिकी विचारक्षमतारूप विवेक, विविधशास्त्रोंके अध्ययनसे अर्जित संस्काररूप श्रुतिसंपत्ति, गुरुजनोंके वचनोंमे निष्ठा तथा तपस्विता अर्थात् एकतान होकर विचार्यविषयके प्रति संलग्नता या मनोयोग रूप उपकरणोंसे असन्दिग्ध तथा दृढता से संपन्न शास्त्रीयज्ञान विषयरूपमें तथा करणरूपमें आत्मविश्वास देता है-**''विवेकः श्रुतिसंपत्तिः गुरुभक्तिस्तपस्विता एताः विषयभावेन करणत्वेन च श्रुताः''** इस प्राचीन चिन्तकोंके अनुभवपरिपूत इस वचनके परिज्ञान रहनेके कारण यहां प्रवचनकर्ताने जो कुछ कहा है वह न तो निर्मूल है न ही अनपेक्षित है **''नामूलं लिख्यते किञ्चिन् नानपेक्षितमुच्यते''** का अक्षरशः परिपालन दृष्टिगोचर हो रहा है.

यहां उपसंहारमें इतना ही कहना है कि अहङ्कारका शास्त्रीयरीतिसे तत्त्वबोधन, श्रोताओंकी जिज्ञासाओंका विशद एवं समुचित समाधान, अपने सांप्रदायिक चिन्तनका संरक्षण-संवर्धन तथा विरोधी मतोंके निराकरणमें यह अहङ्कारमीमांसा सर्वथा मर्यादित है.

३१।१२।२०१६ - शनिवासर

किशोरनाथ झा
पूर्वप्रवाचक
गङ्गानाथझा केन्द्रियसंस्कृतविद्यापीठ
चन्द्रशेखरआझादपार्क
इलाहाबाद-२११००२
(उत्तरप्रदेश)

कृतज्ञताज्ञापन

इस ग्रन्थके प्रकाशनमें प्रवचनको सीडीसे लिपिबद्ध करनेमें सहयोग प्रदान करनेवाले, कम्प्युटर् संबंधित सहयोग एवं मुद्रणोपयोगी उत्तरदायित्व सम्हालनेवाले श्रीधर्मेन्द्र-श्रीमती पद्मिनी झाला, श्रीपरेश-श्रीमती मनीषा शाह, श्रीअनिल भाटिया, श्रीअशोक शर्मा, श्री जगदीश शेठ, श्रीमती ख्याति भुला, श्रीप्रवीण डढाणिया, श्रीपीयूष गोंधिया के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं. प्राकृकथनके लेखक श्रीकिशोरनाथ झा का भी हम आभार व्यक्त करते हैं. तदुपरांत प्रकाशनार्थ सर्वविध सहयोग प्रदान करानेवाले श्रीअतुल्य शर्माके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूं.

गोस्वामी श्याम मनोहर

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
१. पूर्वप्रवचनसंगति	२
२. टेक्स्च्युअल् डायलेमा/पेराडोक्स्	३
३. अहंकारको स्वरूप	८
४. अन्तःकरण और बहिःकरण	१८
५. क्रियाजनक और कर्तृजनक करण	२०
६. कर्ताके प्रकार	२१
७. 'डीफेक्टो' और 'डीज्युर' कर्ता	२३
८. प्रतीत्यसमुत्पादवाद आरम्भवाद और विवर्तवाद	३५
९. विकृतपरिणाम और अविकृतपरिणाम	४०
१०. पूर्वदिवसीय सिंहावलोकन	४५
११. अहंकारको स्वरूप सहस्रशीर्षता/अहंकार एक मस्तक अनन्त	४५
१२. अहंकार संकर्षणको रूप	४६
१३. पुरुषएव संकर्षण	४९
१४. सृष्टि : अक्षरब्रह्ममें पुरुषोत्तमकी आत्मक्रीड़ा	४९
१५. अक्षरकी अक्षरता	५२
१६. कर्म और स्वभाव की सिस्टम्	५४
१७. बीइंग् और बिकमिंग्	५६
१८.बौद्ध और सांख्य को मत	५७
१९. आचार्यचरणको मत	५८
२०. बायोलोजीको मत	६१
२१. प्रकृति-पुरुषमें 'बीइंग' और 'बिकमिंग्'	६२
२२. महत् वासुदेवको रूप	६४
२३. काल = परब्रह्मकी चेष्टा	६४
२४. अहंकार और भूत-वर्तमान-भविष्य/अहंकार बचपनेको और बुढ़ापाको	६५
२५.अहंकारके विभिन्न पेहलु	७३
२६. अहंकारके विभिन्न पेहलु होवेको कारण पुरुष-प्रकृतिकी क्रिसक्रोसिंग	७५
२७. अहंकारके भोक्तृत्वके कारण विषय अच्छो या बुरो लगे	७७
२८. पुरुष प्रकृतिस्थ होके प्रकृतिके गुणनको भोग करे	७९
२९. महत्=जगदंकुर=प्योर-अवेयरनेस् और अहंकार=सेल्फअवेयरनेस्	८३
३०. भक्त्यात्मक सेवामें डीप् इन्वोलमेन्ट्=समाधि	८४
३१. अहंकारके कारण अनचाही चीज भी करें	८५
३२. तापक्लेशतिरोभाव	८८
३३. सिंहावलोकन	९०
३४. अहंकारकी कार्यपद्धति	९२
३५. ज्ञान-इच्छा-प्रयत्न द्वारा कर्तापनेको झांसा	९५
३६. इच्छाकी प्रक्रिया/इच्छा=शरीर या वासना की मांग	९९
३७. अहंकारके द्वारा ही अपनेमें कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व को भाव जगे	१०४
३८. जेम्स-लेन् थीअरी	१०७
३९. सुख-दुःखको चक्कर	१०९
४०. प्रच्छन्न बौद्ध और प्रच्छन्न शांकर	११४
४१. अहंक्रियाकी कार्यपद्धति=विभिन्न करण और कार्य को एकीकरण/यूनीफिकेशन्	११५
४२. नेचुरल् और आर्टिफिशियल् के विभेद	११९
४३. क्या आर्टिफिशियल् और मिथ्या तथा सत्य/नेचुरल्?	११९
४४. अहंकारके फ्ल्यक्च्युअेशन्/फ्लेक्सिबिलीटी	१२७
४५. अहंकारके विभिन्न पेहलूनमें कोओरडिनेशन्/डिसकोओरडिनेशन्	१२९

४६. ईगोस्प्लिटिंग् १३०
४७. ईगोस्प्लिटिंग्की भक्त्युपयोगिता १३४
४८. जाके नामको मार्ग वाके मार्गकी विकृति पसंद पर उनके आदेश पसंद नहीं!! १३७
४९. ईगो और भावना १४१
५०. बौद्ध शांकर वाल्लभ मतानुसारी ज्ञाता ध्याता कर्ता भोक्ता १४३
५१. सर्वभवनसामर्थ्यसु प्रकट सृष्टिकु मिथ्या माननो इंटेलेक्च्युल् हेस्ट् १५२
५२. पुरुषको प्रकृतिमें इन्वोल्वमेन्टको प्रकार १५५
५३. अयोगोलकन्याय १५८
५४. **तच्छक्त्या अविद्यया तु अस्य जीवसंसार उच्यते** १५९
५५. स्वतःमोक्षको सिद्धान्त १६१
५६. कृत्रिम और स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया १६४
५७. महत्को रोल् = युनिवर्सल अवेयरनेस् केओस् या कोसमोस् १६९
५८. ब्रह्मके स्वतः सामर्थ्य स्वाभाविक ज्ञान बल क्रिया १७५
५९. कॉम्पलेक्स करणके बिना शक्तिनूके खिलवेसु आतो सामर्थ्य १८२
६०. भोक्ता होवेको रहस्य १८७
६१. वीरकु वीरताकी मोत भी अच्छी लगे पर कायरपनेंसु जीनो नहीं १९०
६२. करण क्रिया कर्ता और मिथ्यात्व १९३
६३. बाह्यक्रिया और आन्तरक्रिया में कर्तृत्वबोध १९५
६४. महाप्रभुजीको अभिप्राय १९६
६५. आर्टिफिशियल् और एक्वार्यड् में भेद? १९८
६६. व्यापक क्रिया १९८
६७. जडमें उदा.टेबलमें व्यापकक्रिया कैसे हे? २०१
६८. अहंकारकी क्रियात्मकता और करणात्मकता २१३
६९. अहंकारशृंखला २१५
७०. भोक्तृत्वको अहंकार सबसु पावरफुल २१८

७१. भोक्तृत्वको जबरदस्ती दबानो नहीं चेनलाईज़ करनो २२१
७२. सिद्ध और साधित अहंकार २३६
७३. एपिस्टमोलोजिकल् अहंकार २३६
७४. सोशियोलोजिकल् ईगो २४१
७५. अहंको नेचर् एक्स्क्लुसिव है दूसरेके अहंको अनुमानमात्र अनुभव नहीं २५१
७६. पर्सनालिटी/व्यक्तित्व क्या हे? २५५
७७. ईगोकी कोमनालिटी और प्रेडिक्टेबिलिटी २६२
७८. अहंके क्रिया करण और कार्य सभीके सामने प्रकट हैं २८१
७९. नलकूबर-मणिग्रीवस्तुति २८५
८०. दशमसुबोधिनीसु सिद्ध अहंकारकी समझ २८६
८१. कृष्णके सर्वात्मकताकी समझ, दीनताकी भावना और स्वस्थभक्तिमय व्यवहार २९२
८२. दुनियाके सारे व्यवहारको आधार भावना ही २९८
८३. कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ ३०४
८४. ब्रह्म सहस्रशीर्षा पुरुष के साथ अहंकार कैसे इन्टरेक्ट् ३११
८५. कृष्णके साथ अपने अहंकारको इन्टरेक्शन् ३१२
८६. ब्रह्मकी अहंलीला ३१४
८७. ब्राह्मिक अहं स्वाभाविक या आर्टिफिशियल्? ३१७
८८. 'अहं' और 'त्वम्' ३१८
८९. अहंक्रिया ३२२
९०. अहंलीला अहंक्रिया और अहंकर्म ३२४
९१. स्वभाव और प्रभाव की अहंपे असर ३२६
९२. पूर्वकर्मवासनासू अहम् ३२८
९३. व्यक्तिगत और सामुहिक अहम् ३२९
९४. अहंकर्म और अहंव्यवहार ३३२

९५. कृष्णके साथ अहंको व्यवहार = सर्वथा दीनभावना ३३४
९६. कृष्णके रसलीलात्मक अहंको रॅस्पोन्स् अपने
भक्तिलीलात्मक अहंसु ३४१
९७. काश्मीरशैवीझममें शिवको अहं ३४५
९८. कृष्णकी सर्वात्मकता और अपनी दीनभावना ३४७
९९. ब्रह्मकी आनन्दरूपता और रसरूपता ३५३
१००. अहंकारकी स्वरूपानुगुणता और लीलानुगुणता ३५६
१०१. ज्ञानी और भक्त को रियलाइज़ेशन् और रेलिशमेन्ट् ३६३
१०२. ईसाको सन्देश प्रेम और इस्लाम माने
शान्ति फिर झगडा क्युं? ३६६
१०३. ज्ञान और भक्ति की साधनामें अहंको रोल् ३६७
१०४. स्वरूपात्मक एकतामें लीलाकी अनेकताको बिगबेन्ग् ३६८
१०५. हर धर्मको मूल ३७०
१०६. अहंकु लीलानुगुण बनानेको पहेलो कदम ३७३
१०७. भक्तको अहं ३७३
१०८. न भुक्ति न मुक्ति पर भक्ति ३७४
१०९. ज्ञानमार्गीय अहंकारको स्वरूप ३७६
११०. मोहजन्य अज्ञानमार्गीय अहंकारको स्वरूप ३७८
१११. अपनो मूल अहंकार और बाकी कोपी ३८४
११२. वास्तविक और ऐच्छिक अहंकार/दीनता ३८५
११३. आनुष्ठानिक, रिच्युलिस्टिक् इत्यादि अहंकार/दीनता ३८९
११४. इमोशनल् अहंकार और दीनता ३९१

परिशिष्ट

११५. ब्रह्मवादी और सापेक्षतावादी चिन्तनान्तर्गत अहंकारविचार ४००
११६. अहंकारमीमांसा आधार वचन ४०८
उद्धरणतालिका ४१२

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः॥

॥अहंकारमीमांसा - २॥

(साधनप्रकरणप्रवचन)

यथा यथा हरिः कृष्णो मनस्याविशते निजे॥
तथा तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते॥
कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥
(त.दी.नि.२।२४०-२४१).

सहस्रशिरसं साक्षात् यम् अनन्तं प्रचक्षते॥
संकर्षणाण्यं पुरुषं भूतेन्द्रियमनोमयम्॥
कर्तृत्वं कारणत्वं च कार्यत्वं च इति लक्षणम्॥
शान्तघोरविमूढत्वम् इति वा स्याद् अहंकृतेः॥

सएष यर्हि प्रकृतेः गुणेषु अभिविषज्जते॥
अहंक्रियाविमूढात्मा 'कर्तास्मि'इति अभिमन्यते॥
(भाग.पुरा.३।२६।२५-२६,३।२७।२)

कार्य-कारण-कर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिः उच्यते॥
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुः उच्यते॥
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्॥
कारणं गुणसंगो अस्य सदसद्-योनि-जन्मसु॥
(भग.गीता.१३।२१-२२)

(पूर्वप्रवचनसंगति)

गये बखत इन कारिकानूपे अहंकारको क्या स्वरूप हे, कैसे वो प्रोपरली फन्क्शन् करे हे, कैसे वाकी मेलफन्क्शनिंग् डेवलप् हो जाय वगेरे वगेरे विषयनूपे अपनूने चर्चा करी. कछु कारणसु वाकी कन्टीन्युटी मोकु ख्याल नहीं आ रही हे के कहां वाकु छोड़्यो. वाकी सी.डी मैं सुन नहीं पायो. कोई पुनरावृत्ति होती होय तो माफ करियो और पुनरावृत्ति नहीं होती होय तो भी कमसु कम एक बात मैं यहां एम्फेटीकलि केहनो चाहूंगो और वो ये हे कि अहंकारको वर्णन भागवतमें कियो हे, वो या सत्रमें अपन् विस्तारसु देखेंगे जरूर.

वामें एक बहोत सिग्निफिकेन्ट् बात मैंने गये बखत इतने विस्तारके साथ नहीं बतायी के भागवतमें अहंकारके लिये एक बहोत सुन्दर वर्णनमें ये कह्यो हे **''सहस्रशिरसं साक्षाद् यम् अनन्तं प्रचक्षते.''** (भाग.पुरा.३।२६।२५). ये अहंकार हजार माथावालो हे. अब ये वर्णन ब्रह्मको हे, जैसे **''सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष सहस्रपात् स भूमिं विश्वतो वृत्त्वा अत्यतिष्ठद् दशांगुलम्''** (तैत्ति.आर.३।१३।२). जो बात वेदमें ब्रह्मके वर्णनमें आई हे, गीतामें विराटस्वरूपके वर्णनमें आई हे, वास्तवमें वोही विराटता भागवत या अहंकारकु भी देनो चाहे हे. **''सहस्रशिरसं देवं यम् 'अनन्तं' प्रचक्षते''** वो **''सहस्रशीर्षा पुरुष''** हे, वाको 'अनन्त' नाम हे. अब ये दोनों बातें बहोत ही सिग्निफिकेन्ट् हें क्योंके वहां भी **'सहस्र'**पद **'अनन्त'**को पर्यायवाची हे. वा बातपे अपन् ध्यान दें तो सीधीसी एक बात ये समझमें आवे हे के अनन्तशीर्ष होवेके कारण वा अहंकाररूपी देवको नाम **'अनन्त'** हे. अब ये सहज समझवेकी बात हे कि वो हजार माथानूकी गिनती अपन् कर नहीं सकें. वो थ्योरीटिकली भी पोसिबल् नहीं हे और अपनी टाईमूलिमिट्में भी पोसिबल् नहीं हे. अपनी सामर्थ्यके हिसाबसु भी पोसिबल् नहीं हे के हजार माथा और उन एक एक माथानूके क्या स्वरूप? फिर भी जो कछु बातें अहंकारके बारेमें गये बखत नहीं हो पाइ हती, उनकु

मैं आपके साथ शेर् करनो चाहूंगो. अहंकारके बारेमें वो ध्यान देवे लायक बातें हें.

(टेक्स्च्युअल् डायलेमा/पेराडोक्स्)

या बातकी महत्ता खास यालिये हे के जैसे जो वचन यहां अपन् कर रहे हें **"कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना. अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्"**. माने 'अहंकार नहीं करे' केहवेपर क्या अहंकारकी कोई निषिद्धता प्रकट हो रही हे? एक बाजु अहंकारकी या तरहसु निषिद्धता हे. सोर्ट् ऑफ् प्रोहीबिटेड् आइटम् लग रही हे अपनूकु. दूसरी बाजु अहंकारकु संकर्षणरूप कह्यो गयो हे. अहंकारको अधिष्ठाता देव संकर्षण होवेके कारण संकर्षणरूप कह्यो गयो हे. संकर्षण माने अपने यहां दाऊजी. थोड़े और व्यापक अर्थमें देखें तो संकर्षण माने खुद रुद्र. थोड़े व्यापक अर्थमें देखें तो संकर्षण माने जापे भगवान् पोढ़ें हें वह शेषनाग. वाकी मेटाफीजिकल् डेप्थ्में जायें तो वेदमें शेषकु अपने यहां वेदात्मक मान्यो गयो हे. जा क्षण अपन् वाकु 'वेदात्मक' कहेंगे तो वेद तो वह प्रमाण हे जा प्रमाणसु भगवान् परमात्मा और ब्रह्म सिद्ध होवे हे माने वापे पोढ़ रह्यो हे. वेदके लिये भी आवे हे **"अनन्ता वै वेदा:."** (तैत्ति.ब्राह्म.३।१०।११।३) शेषनागके नामन् में भी 'अनन्त' नाम आवे हे. याही लिये शेषनागपे पोढ़े भये नारायणकु 'अनन्तशयनम्' कह्यो जाय हे. अनन्ते शयनम् यस्य स: 'अनन्तशयनम्'. या बाजु अपन् आधिदैविक एन्गलसु अहंकारकु देखें और दूसरी बाजु **"अहंकारं न कुर्वीत"** ऐसो अपन् सोचें भी तो ऐसे लगे के अहंकारसु अपनूकु पाप लग रह्यो हे. (तब तो) या **"अहंकारं न कुर्वीत"** को मतलब "वेदं वेदान् वा प्रमाणं न कुर्वीत" या "बलरामं न सेवेत्" ऐसे होयगो. अब रुद्र अपने यहां वैष्णव सम्प्रदायमें नहीं होवेके कारण अपनूकु लगे ही हे के बहोत सारे पुराने वैष्णव 'शिव' बोलवेमें भी पाप मानते हते. अब पता नहीं 'शिव' बोलवेमें पाप मानते

हते तो 'शिव'को 'शव' कर दियो हतो, वो कछु कछु उटपटांग उच्चारण करते हतें. "'शीववुं' नहीं बोलवानु" क्योंके शिवको नाम उच्चारण हो जायगो, इतनो द्वेष हतो. ऐसे कई तरहकी अपनी प्रेज्युडाइस् के अपनी प्रीसपोजिशन् और कई अन्य तरहकी भी इन्टरप्रेटेशन्की पोसिबिलिटीज् हें. वो इन दोनो पेहलुन्में आपसमें टकरातीसी लग रही हें. बहोत करके इन सारे विषयनूकु मैं गये बखत नहीं छेड़ पायो हतो अहंकारकी विस्तृत चर्चाके बाद भी. शायद जो कछु अहंकारके डिफेन्समेकेनिज़म् बताये हतें वो सब तो डिस्टोर्टेड् अहंकारके मेकेनिज़म् हें. वो सब **'न कुर्वीत'** निषेध के संदर्भमें बताये हते. वो बताये वामें कोई गलती नहीं करी. लेकिन वो सब बात अहंकारके बारेमें पर्याप्त नहीं हें. अपनूकु इन दोनों एन्गल्सूसु सोचनो पड़ेगो के एक बाजु अहंकार **"सहस्रशीर्षं देवं यम् अनन्तं प्रचक्षते"**, माने संकर्षणरूप हे और दूसरी बाजु **"अहंकारं न कुर्वीत"** कह्यो जा रह्यो हे. इन सबमें कोई एक जातको पेरोडोक्स् आ रह्यो हे.

या लिये अहंकारके बारेमें अपनी जो मॅटाफीजिक्स् हे थियोलोजिकल् स्टॅन्ड् हे (वाकु भी देख लें). माने वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये चतुर्व्यूहविशिष्ट नारायण हे. कृष्णलीलामें जा बखत भगवान्ने असुर मारे, वा बखत संकर्षणव्यूहसु मारे हें. असुरनूकु मारवेमें संकर्षणको मेजररोल है. वो असुर क्या हें ये अपन् देखें तो वे अपनी पंचपर्वा अविद्याके स्वरूपविस्मृति देहाध्यास, इन्द्रियाध्यास, अंत:करणाध्यास, प्राणाध्यास वगेरह वगेरह. ये सब असुररूप हें. जैसे बक दम्भरूप असुर हे, तृणावर्त रजोगुण हे. इन सबकु मारवेमें तो संकर्षणशक्ति ही काम आ रही हे माने अहंकारशक्ति ही तो मारवेमें काम आ रही हे. वो अहंकार ही नहीं करेंगे तो क्या अपनूकु असुरनूसु हार जानो! अपने भक्तिके दैवीकरणकी प्रक्रिया हे. जा प्रक्रियासु भक्तिको अपन् दैवीकरण करें हें, वा प्रक्रियामें आसुरीभावको कन्फ्रन्ट् करेंगे ही अपन्. जब कन्फ्रन्ट् कर रहे हें **"द्वया ह वै प्राजापत्या दैवाश्च**

आसुराश्च ततः कानीयसा देवा ज्यायसा असुराः त एषु लोकेषु अस्पर्धन्त'' (बृह.उप.१।३।१). उपनिषद् कहे हे जो अपने भीतर दोनों तरहके भाव भरे भये हें दैवीभाव भी भर्यो भयो हे और आसुरीभाव भी भर्यो भयो हे. महाप्रभुजी वहां व्याख्यामें ये बात समझावें हें कि उन दोनों भावन्की या उन दोनों फोर्सिस्की अपने भीतर कॉन्सटॅन्टली एक टाइप्की वॉर चल रही हे. महाप्रभुजी ये भी आज्ञा करें हें कि वामें अक्सर आसुरीभाव ही जीततो होवे हे. दैवीभाव तो कभी कबाक ही जीते हे. अब कभी कबाक भी जीतेगो तो जीतेगो कायसु? वह जीते है संकर्षणकी सामर्थ्यसु. अब संकर्षणकी सामर्थ्य जो अहंकारकी सामर्थ्य हे वासु जा बखत अपन् आसुरभावकु जीतवेवाले होंय और वा बखत कोई कहे ''**अहंकारं न कुर्वीत**'' तो ''संकर्षणसामर्थ्येन आसुरभावस्य विजयाय न यतेत्'' ऐसो भी अर्थ निकल सके हे. तब तो बड़ो कॉम्प्लिकेशन् आ गयो. यामें बहोत ही ज्यादा डायलेमा क्रियेट् हो गयो. तो ये सारे पेहलु हें जिनकु अपन्कु गंभीरतासु या संदर्भमें सोचनो पड़ेगो.

इन्सिडेन्टली या बरस जा चर्चासभाको ये अपन् पुष्टि-अस्मिताको उत्सव मनावें हें, १९९३सु मना रहे हें, सोलह बरस भये. अब तो सोलह बरसको जवान भयो अपनो ये उत्सव. ''**प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवद् आचरेत्** .....'' सोलह बरसको बच्चा हो जाय तो वाकु बेटा तरीके नहीं दोस्त तरीके ट्रीट् करनो चहिये, ऐसो भी शास्त्र कहे हे. दोस्त तरीके ट्रीट् करोगे तो कमसु कम झगड़ा तो नहीं होयगो. बेटा तरीके ट्रीट् करोगे तो झगड़ा तो होवेवालो ही हे. ''**प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवद् आचरेत्**'', वाके साथ दोस्ताना व्यवहार करनो चहिये. ये माता-पिताको कर्तव्य हे. अपने पुष्टि-अस्मिताको ये उत्सव भी ''**प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवद् आचरेत्**'' कछु मित्रवत् आचरणकी अपेक्षा रख रह्यो हे. अपनो एक नियम हे वामें हर साल पेहले अपन् चर्चासभाके जो डिबेटेबल् इश्यु

हते वाको एकाउन्ट् कछु ऑडिट करे हें, वाके बाद अपन् जो भी कछु विषय हे वापे जावें हें. अभी क्योंकि सोलह साल पूरे भये हें तो इश्युन्कु अपन् पीछेसु सोच लेंगे तत्कालमें नहीं लेंगे. वा इश्युकु भी अपन् लेंगे. पर गये बरसके अहंकारके जो पेन्डिंग इश्यु हें उनकु अपन् पेहले डील् करनो चाहेंगे.

या अहंकारके विषयमें ''**यथा यथा हरिः कृष्णो मनसि आविशते निजे तथा तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते**'' पर पर्याप्त विवेचन हो गयो हतो. सो वाकी पुनरावृत्तिकी अब जरूरत नहीं हे.

''**कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना. अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्..**'' यामें सबसु बड़ो एक डायलेमा सामने आ रह्यो हे. ''**कृष्णे सर्वात्मके, कृष्णे नित्यं**'' वामें **नित्य**कु देहलीदीपक न्यायसु दोनों जगह भी जोड़ लें ''कृष्ण नित्य ही सर्वात्मक है'' अथवा नित्यकु अपन् या बाजु जोड़ लें ''नित्यं सर्वथा दीनभावना''. कृष्णके सामने दीनभावना करवेमें कोई ऋतुकालीन सेवाकी तरह या उत्सवकालीन सेवाकी तरह या मनोरथकालीन सेवाकी तरह नहीं करके नित्यसेवाकी तरह दीनभावना अपन्कु रखनी चहिये. या तरह भी जोड़यो जा सके हे. कृष्णकी सर्वात्मकता नित्य हे वा तरफ भी '**नित्य**' पदकु जोड़यो जा सके हे. यहां उतनी ही समस्या नहीं हे. याके बाद तुरत आ रह्यो हे '**अहंकारं न कुर्वीत**'. टेक्स्ट्की वर्डिंग्में थोड़ोसी डुबकी लगाके देखोगे तो पता चलेगो के दीनभावना करनो वामें ही ''**अहंकारं न कुर्वीत**'' आ गयो. फिर पाछो ''**अहंकारं न कुर्वीत**'' केहवेको को मतलब क्या? और समझोके केह दियो ''**अहंकारं न कुर्वीत**'' तो ''**मानापेक्षां विवर्जयेत्**'' ये बात कहांसु आ गई? एक ही एक बातकु तीन बखत रिपीट् करवेको जस्टीफिकेशन् क्या? माने मैं यों कहूं ''ये नेपकिन हे. ये टॉवेल नहीं हे पर टॉवेल जैसो है''. फिर मैं यों कहूं ''नहीं, नहीं, ये हाथ पोंछवेके

लिये है''. बात तो एकही एक हे ना! नेपकिन कहो और टॉवेल नहीं हे और टॉवेल जैसो हे, छोटो हे, हाथ मुंह पोंछवेको हे. अब एकही एक बातकु तीन तरहसु केहवेसु फायदा क्या? ये एक टॅक्स्च्युअल् डायलेमा यामें थोड़ो बहोत तो आ रह्यो हे के नहीं! इन तीनोंको मतलब एकही हे अथवा इन तीनोंमें कोई अलग अलग बात कही जा रही हे? माने दीनभावना, अहंकार न कुर्वीत, और मानापेक्षाराहित्य - ये तीनों एकही बात हें के तीनों अलग बात हें? ये प्रश्न अपने सामने सुरसाकी तरह मुंह फाड़े खड़ो ही हे.

संस्कृतमें याकु **'आम्रेडन'** भी कह्यो जाय हे जो प्रवचनमें निरन्तर करनो पड़े. आम्रेडनको मतलब घड़ी घड़ी एकही बातकु केहनो. एकही एक बातकी जुगाली करनो. जब एकही एक बातकी अपन् जब जुगाली करें तो सुनवेवालेकु उपकारक भी हो सके हे. साथ ही साथ काव्यमें भी कोई रसविशेषकु पैदा करतो होवे हे. कभी कभी चमत्कृति भी पैदा करतो होवे हे. पर जहां टेक्स्ट् हे, जहां एक एक शब्दकी कीमत हे, एक एक शब्दकी अर्थवत्ताकी कीमत हे, एक एक इतरव्यावृत्तिकी कीमत हे, वहां 'आम्रेडन' कियो जाय तो लगे ''क्या गड़बड़ हो गई?'' अपनूकु ये भी सोचनो पड़ेगो कि यहां या तरीकेको कोई गड़बड़ाध्याय हे या महाप्रभुजीकी कोई अन्य विवक्षा हे? यापे दो-चार दिन जो भी कछु अपन् कर पायेंगे वामें या बातकु देखेंगे. ये मैं आपकु रनवेकी तरह बता रह्यो हूं कि विमान कहांसु दौड़ेगो और कहांसु टेक् ऑफ् करेगो. तो ये रनवे हे जहांसु अपनूकु अपने चिन्तनके प्लेनकु दौड़ानो पड़ेगो.

जैसे या अहंकारके पूरे पेसेजूमें एक टेक्स्चुयल् डिफिकल्टी हे, वैसे एक बात मैंने आपकु बताई **''यम् अनन्तं प्रचक्षते''** और **'सहस्रशीर्षम्'** के तहत अहंकारको जो 'सहस्रशीर्षा:' होवेको गुण और 'अनन्त' नामक होवेको गुण वाके ऊपर अपन् कम एम्फॅसिस् कर पाये. इंगित नहीं

कियो हतो ऐसी बात नहीं हे थोड़ोसो इंगित कियो हतो पर जैसो चहिये हतो वैसे एम्फॅटिकली चित्रण नहीं भयो हतो.

(अहंकारको स्वरूप)

ये भी अपनूकु थोड़ो देखनो पड़ेगो के या अहंकारको स्वरूप क्या हे? एक एज़्सच् अहंकारके बारेमें कॉन्सेप्च्युअल डिफिकल्टी और भी हे माने ''अहंकार क्या चीज है?'' वा बातकु जब अपन् सोचवे बैठें तो वामें भी थोड़ेसे डायलेमा खड़े हो रहे हें. सचमुचमें ये बड़ी मजेदार बात हे के अहंकार जैसी चीज विचारणीय या विवादास्पद होवे, यासु ज्यादा विचित्र बात दुनियामें और क्या हो सके!

उपनिषद्ने तो याकु बहोत अच्छे ढंगसु समझायो हे. सबसु पेहले ब्रह्मने सृष्टि पैदा करी. वाके पेहले ब्रह्मकु अपने खुदके अहंको बोध भयो. वाके कारण वाने अपने अहंमें कई तरहके शीर्ष देखे. कई तरहके अनन्त नाम, अनन्त शीर्षवाले रूप देखे. उन सबकु वाने अपने अहंके भीतर देख्यो. माने अहंकी फ्रेममें अनेक नाम अनेक रूप देखे और उन अनेक नाम और रूप के साथ जुड़े भये अनेकविध कर्म देखे तो वाने कही **''बहुस्याम् प्रजायेय''** (छान्दो.उप.६।२।३) मैं बहोत हो जाऊं. मूलमें तो वाने अपनो अहं अपनी चेतनामें, उन नाम रूप कर्म की विविधता पेहले देखी हे करके वाने विविध नाम रूप धारण किये. **'सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः नामानि कृत्वा अभिवदन् यदास्ते''** (तैत्ति.आर.३।१२।७) में ब्रह्मके वर्णनमें आवे है; नाम रूप कर्म की अनन्त विविधता ब्रह्मने पेहले अपने अहंमें देखी और वा अहंमें अपन् भी दीखें. समझो तो उपनिषद् वाकु क्या कहे हे? बड़ी मजेदार बात कहे हे उपनिषद् **''अस्मात् सर्वस्मात् सर्वान् पाप्मन् औषत् तस्मात् पुरुष ओषति ह वै स तं यो अस्मात् पूर्वो बुभूषति य एवं वेद''** (बृह.उप.१।४।१) सारे पाप

खतम हो जायेंगे. सारे पापनूकु खतम कर दियो. क्यों पापनूकु खतम कर दियो के वाने नाम रूप कर्म की विविधता कहीं और नहीं देखी, अपनी अहंतामें देखी. याहीलिये आगे ब्रह्मज्ञानीके लिये उपनिषद् बहोत मजेदार बात कहे हे **'तद्धा एतत् पश्यन् ऋषि वामदेवः प्रतिपेदे अहं मनुर् अभवं सूर्यश्च इति.''** (बृह.उप.१।४।१०). जब ब्रह्मकु वाने जान्यो तो वाकु भी अपनी अहंताके भीतर अनुभूत भयो ''सूर्य भी मैं हूं, चन्द्र भी मैं हूं, ब्रह्मा भी मैं हूं, पृथ्वी भी मैं हूं, जल भी मैं हूं, आकाश भी मैं हूं''. ऋषिवामदेवकु या तरहसु ब्रह्मानुभवके कारण अपनी अहंतामें ये सहस्रशीर्षता ये सारी बातें झलकती दिखलाई देवे लगी. वाको सहस्रशीर्षपनो, वाको अनन्त नामाख्यातपनो, वाकी अनन्त कर्मरूपता प्रकट भई. अब यदि अपन् यों कहें **''अहंकारं न कुर्वीत'** तो या बाजु वोही पापको नाश करवेको अन्तिम उपाय उपनिषद्ने बतायो हे. अब वोही **''अहंकारं न कुर्वीत''**? तब जानो तो कहां जानो!!

अपनी चर्चासभामें जो चर्चाकार हते वो साम्प्रदायिक सिद्धान्तनूसु इतने अनभिज्ञ हते के या प्रकारके प्रश्नकी चर्चा उनके सामने करनी ही निष्फल हती. वहांपे तो एक ही उद्देश्य हतो ''ठाकुरजीके नामपे पैसा लियो जा सके हे कि नहीं और ठाकुरजीको प्रदर्शन कियो जा सके हे के नहीं?'' ''प्रसाद लियो जा सके हे के नहीं?'' और कोई मुद्दा ही नहीं हतो. अपने महाप्रभुजीके दर्शनकी या विचारनूकी गरिमाकी जो भी कछु हाईट् हे वो तो वा चर्चामें कहांसु प्रकट हो सकती हती! या तरहकी वानरचेष्टामें यह सम्भव ही नहीं हतो, क्योंके वहां विचारकी या समझकी वो डेप्थ् ही नहीं हती या वा प्रश्ननूपे रुचि ही नहीं हती. बहोत ही क्षुद्र विषयनूकी चर्चा भई छंदके दोष क्या हें वगैरह. वहां नहीं प्रकट हो सकी पर अपन् तो उत्सव मना रहे हें वा पुष्टि-अस्मिताको. वो उत्सव मनावेमें वा चर्चाके अन्दर गेहराईमें पैठके समझनो तो पड़ेगो के ये सब

क्या समस्या हे? या समस्याकी बेयरींग् अपने आखे महाप्रभुजीके विचारप्रणालीपे, साधनाप्रणालीपे, अपनी दीक्षाप्रणालीपे हे. अपने जा तरीकेके उद्गार हें के **''हुंभाव पुंभाव न्यौछावर करीने गिरिवरधर तमे वरजो रे''** (दयारामभाई). **'हुंभाव'** (माने अहंकार) न्यौछावर करके तुम गिरिवरधरने वरजो रे. वहां भी पाछी वही बात आ रही हे **''दीनतानां पात्रमां मन मणि मूकीने भेंट भगवन्तजीने करजो रे.''** तो **''कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्''** येही बात तो दयारामभाई भी बता रहे हें वहां. ये सारी बातें अहंकारके साथ विचारवेकी हें. अहंकारके साथ जुड़े भये प्रश्न हें जिनपे अपनूकु विचार करनो हे.

एक बात हमकु खुले दिलसु कबूल करनी चहिये के ये आखी चर्चा या चिन्तन अपन् करेंगे, वाकी टॅक्स्ट् पंक्तियें उतनी अवेलेबल् नहीं हें. एटलीस्ट् यहांपे अवेलेबल् नहीं हें पर अन्यत्र अवेलेबल् हें; सुबोधिनीमें बिखरी भयी हे ये सारी चर्चा; वैसे ही निबन्धमें और भाष्यमें भी बिखरी भई हे ये सारी चर्चा. वहां बिखरी भई चर्चानूकु इकठ्ठो करके अपन् एक गुलदस्ता बनावें. जो रूप बन रह्यो हे वो गुलदस्ता या उत्सवकी खुशहालीमें आपके हाथमें थमानो चाहूं के ये सोलह बरस पूरे भये तो सत्रह बरसमें गुलदस्ता अपन् हाथमें लेवें. क्योंके वो फूलनूकी तरह सारे ग्रंथनूमें ये चर्चायें बिखरी भई हें पर यहां कहीं दीख नहीं रही हे. सहज संभव हे के जब भी मैं या विषयकी कछु चर्चा करूंगो तो आप यहां (साधनप्रकरणकी) पंक्तिनूमें देखोगे तो नदारद मिलेगो. फिर आप कहोगे ''श्याममनोहरजीने टेक्स्ट् छोडीने कांई कांई बोलवानी टेव पड़ी गई छे. बोलताज रहे छे, बन्ध नथी करता.'' अब यामें अपन् महाप्रभुजीके ग्रंथको मात्र पाठ करवे बैठें होते तो वामें अपन् विवेचन नहीं करें, वो बात सच हे जैसे अपन् वल्लभाख्यानको पाठ करवे बैठें तो वा बखत अपन् वाको विवेचन नहीं करें वाको अपन् गान ही करें हें. पर

या बखत अपन् मात्र पाठ करवे नहीं बैठें हें. अपन् या बखत विचार करवे बैठें हें, चिन्तन करवे बैठें हें, श्रवण मनन निदिध्यासन करवे बैठें हें. श्रवण कीर्तन स्मरण करवे बैठें हें. उनमें तो अपनूकु ये सारी बातें सोचनी पड़ेगीं. अब सोचवेमें तो थोड़ी तकलीफ होयगी ही. वो जो कछु भी तकलीफ हे सो तो प्रसवपीड़ा हे. मैं इतनीसी बात केह सकूं के वो प्रसवपीड़ा तो झेलनी ही पड़ेगी तभी तो हेल्दी बच्चा पैदा होयगो अन्यथा हेल्दी बच्चा पैदा नहीं हो सके. चालू खाताको कोई टेणीया पैदा हो जाय वो कथा दूसरी हे. हेल्दी बच्चा पैदा करनो हे तो प्रसवपीड़ा तो होयगी, होयगी और होयगी ही. वा प्रसवपीड़ाकु अपन् लोग साथ झेलें, ये सबसु पेहली अपेक्षा हे क्योंके आप घबरा जाओगे के भगवच्चर्चा छोड़के ये अहंकारकी चर्चा और सो भी इतने विस्तारसु क्यों करी जा रही हे?

वो तो जब चर्चा करेंगे तभी तो समझमें आ सकेगो के अहंकारकी चर्चा भगवच्चर्चामें कितनी ज्यादा उपयोगी हे. क्योंके अपनूकु जब ब्रह्मसम्बन्ध लेनो होय तब भी तो **''तिरोभावो अहम्''** केहनो पड़ेगो. वहां भी 'अहं' हे और ब्रह्मसंबंधमें समर्पण करवेके बाद जा बखत अपन् **'दासोहम्'** कहेंगे तो वहां भी 'अहं' हे. अब वो अपनूसु नहीं निभतो होय और **''श्रीकृष्ण: शरणं मम''** केहते होंय तो अहं न होयगो तो 'मम' हे पर बिना अहंके मम कैसे हो सके हे? ये बहोत जटिल समस्या हे. अब इन जटिल समस्यानूकु अपन् सोचे बिना अहंकारपे धोबीघाट तो नहीं चला सकें हें ना! या कॉन्टेक्स्टमें अपनूकु ये चर्चा करनी पड़ेगी के अहंकार कितनो विचारणीय विषय हे. ब्रह्मके जितनो ही मल्टीडायमेन्शनूनल फिनोमिना हे, मोनो-डायमेन्शनल् फिनोमिना नहीं हे. याको थोड़ो बहोत इन्डिकेशन् मैंने आपकु पेहले भी दियो हतो.

सबसु पेहले अहंकारमें एक डायलेमा आवे हे. गुजरातके कोई

कवि हें वाने एक बड़ी मजेदार बात अहंताके बारेमें तो नहीं कही हे पर ममताके बारेमें कही हे. ममताके बारेमें वो ये बात केह रह्यो हे **''तारूं न कांई होय तो छोडीने बताव तू. तारूंज बधुं होय तो साथे लईने तो जाव.''** बहोत जबरदस्त डायलेमा हे. तू जो ये केहतो होय ''मारूं काईं नथी.'' ''अहंकार न कुर्वीत सर्वथा दीनभावना.'' 'मारूं शुं छे. बधुं भगवान्नु छे. भगवान्ने समर्पित छे.' बड़ी मजेदार बात वाने कही हे **''तारूं न होय तो छोडीने बताव.''** चिपक्यो क्यों भयो हे फिर! अब तू केहतो होय 'नहीं नहीं! हे तो मेरो.' **'तारूंज बधुं होय तो साथे लईने जाव'**. कौनसी चीज जायेगी अपने साथ यहांसुं? कछु भी साथ जावेवालो नहीं हे. ये तो वाने ममताके बारेमें कही हे. ९९% कवि यहां बम्बईको ही हे. ललितवर्मा नाम हे वाको या ऐसो ही कछु नाम हे. बात बड़ी रिमार्केबल् कही हे. हर वक्त वो **''तस्मात् सर्वात्मना नित्यं 'श्रीकृष्ण: शरणं मम' वदद्भिरेव सततं''**, ऐसे ही अपनूकु सोचते रेहनो चहिये **''तारूं न होय तो छोडीने बताव. तारूं बधुज होय तो साथे लईने जाओ.''** शुं करशे? कछु समझमें नहीं आवे. न तो अपन् कछु छोड़ सकें हें, न कछु अपने साथ जावेवालो हे. ये ममताको चक्कर हे. छूटे कछु भी नहीं हे, साथ कछु जावेवालो नहीं हे. ये निरन्तर अपने ममतामें एक झगड़ा रह्यो भयो हे के न कछु छूटे और न कछु साथ जावे. साथ नहीं जावेवालो हे तो कछु अंशमें तो छोड़ दे के नहीं! तो छोड़े भी नहीं. यापेसु सोचें तो अहंकारको भी कछु ऐसो ही फिनोमिना हे. वोही डायलेमा अहंकारमें भी पैदा होवे हे. मैंने याकी एक ऐसे ही पैरोडी बनायी. **''तुं जो न कांई होय फना थईने तो बताव.''** तू कछु भी नहीं होय तो फना होके बता? ''हुं शुं छुं? काईं नथी?'' अरे नथी तो फना होके बताओ? **''तुं जो कांई न होय फना थईने तो बताव. तुं कांई पण जो होय तो ते रहीने बताव''**? तुम समझ

रहे हो ''मैं ये हूं.'' अरे तुम जो हो, अपने बारेमें जो सोच रहे हो वो अपनो रेहके तो बताओ? कोई सोचे ''मैं जवान हूं.'' कोई सोचे ''मैं बूढ़ो हूं.'' कोई सोचे ''मैं टीचर हूं.'' कोई सोचे ''मैं विद्यार्थी हूं.'' कोई सोचे ''मैं व्यापारी हूं'' कोई सोचे ''मैं अध्यापक हूं.'' कोई सोचे ''मैं प्रवचनकर्ता हूं.'' सब अपनो अपनो सोच रहे हें. ''तुं जे कांई पण होय, तुं जे कांई होय, ते रहीने तो बताव?'' कछु रेह नहीं जाय. थोड़ोसो लफड़ा होवे ना, यदि लकवा आ जाय या हार्टएटेक आ जाय तो धन्धा करते होंय तो धन्धा बन्द हो जाय. कछु जो अपन् अहंकार करें हें, के मैं ये हूं, मैं ये हूं, मैं ये हूं, मैं ये तो करूंगो ही, मैं ये तो करूंगो पर ये कछु अपन् रेहके तो नहीं बता सकें! मेरी बात समझमें आ रही हे ना! पेरोडी हे वाकी. वाके काव्यमें ज्यादा काव्यात्मकता हे, उतनी काव्यात्मकता मेरे दोहामें नहीं हे पर जो बात मैं केहनो चाह रह्यो हूं वापे ध्यान दो. ये स्ट्राइकिंग् फिनोमिना हे के अपन् अपने अहंके बारेमें न जाने क्या क्या सोच रहे हें! के मैं ये हूं, मैं ये हूं वोही **''सहस्रशीर्षं यम् 'अनन्तं' प्रचक्षते.''** उनमेंसु कछु भी तो अपन् नहीं हें. अपन् कहें ''क्यों कछु भी नहीं हें?'' अगर हें तो जो कछु भी तुम अहंकारके बारेमें सोचते हो वाकु मेन्टेन् करके बताओ? चले नहीं, कोई अहंकार चले नहीं. अपने अहंकारकी गति कैसी हे? जैसे स्टेशनपे अपन् लॉकल ट्रेनके डब्बामें चढ़े होंय, नई नई सगाई भई होय, ''तेरा मेरा साथ जीवन भरका रहेगा.'' पर डब्बामें चढ़ते ही साथ रेह ही नहीं सके. छूट जाय हाथ. वो तो केहवेकी बात हे के ''अपन् साथ रहेंगे. जीवन भरका साथ हमारा.'' लॉकल ट्रेनमें तो साथ रेह नहीं पाये! जीवनभर कैसे साथ रहोगे! भीड़ इतनी हे. ''तुं जे काईं होय ने ते रहीने बताव?'' कोई रेह नहीं सके वा ढंगसु. ये अहंकारकी बड़ी गम्भीर समस्या हे. जब लॉकल ट्रेनमें अपनो अहंकार नहीं टिकतो होय, जहां कोई

हिंसा नहीं हे, जहां कोई डिस्टर्बन्स् नहीं हे, जहां कोई कॉम्पटीशन् नहीं हे, सिर्फ भीड़के कारण अपनो अहंकार खण्डित हो जातो होय, तो जहां कोई आड़ी टेढ़ी बात भई तो वहां अहंकारकु टूटवेमें देर कितनी लगे? थोड़ी भी आड़ी टेढ़ी बात भई और अहंकार ऐसे टूटे जैसे कोई पत्ताको खड़ो कियो मकान होय. ये अहंकारके साथ एक बड़ी कन्सॅप्चुअल् डायलेमा हे. या डायलेमाको भी अपन्कु कोई सोल्युशन् खोजनो पड़ेगो. आखिर ये बला हे क्या अहंकार!

सबसु पेहले अपन् एक बात समझें. ये सब मैं आपकु 'अनन्तशीर्षता' समझा रह्यो हूं. ऐसे मत समझियो के ट्रेनमें फियान्सी और फियान्स् के चढ़वेको कोई गीत गा रह्यो हूं. मैं सारी बात जो कर रह्यो हूं वो सब **''सहस्रशीर्षं देवं यम् 'अनन्तं' प्रचक्षते''** की ही बात कर रह्यो हूं और कोई बात नहीं कर रह्यो हूं. ट्राई टु अन्डरस्टेन्ड् मी प्रोपरली. जा पर्सपॅक्टिव्में मैं बात कर रह्यो हूं वा पर्सपॅक्टिव्में समझवेको प्रयास करो. ये जो अहंकार हे अपनो, वैसे केहवें अपन् हें 'अहंकार'. 'अहंता' भी केहवें हें. थोड़ो बहोत अन्तर यामें ही आ जाय, अहंता और अहंकार केहवेमें. जैसे 'ता' अपनो धर्मवाचक प्रत्यय हे. **''त्वतलौ भावप्रत्ययौ:''**. 'कार' भावप्रत्यय नहीं हे. 'कार' को मतलब क्रिया हे जैसे सहकार. 'सहकार'को मतलब क्या? '''सह' करोति इति 'सहकारः'''. वैसे संस्कृतको शब्द नहीं हे पर गुजरातीमें बहोत प्रयुक्त हे 'सरकार'. अभी मैंने पढ़यो हतो के जब भी सरकारी कामकाज होवे तो वो असरकारी नहीं होवे हे और जो भी असरकारी कामकाज होवे हे वो सरकार नहीं कर सके. वाको सबको प्रमाण देखो! अपने वृजराजशरणजी बता रहे हते के चौदहसो करोड़ रुपया यमुनाजीके प्युरीफिकेशन्के लिये डाले. वो चौदहसो करोड़ रुपया!!! सरकारने यमुनाजीकी सफाईके लिये खर्च किये पर वो असरकार भये ही नहीं. क्योंके सरकारी कामकाज हतो. सुप्रीमकोर्टने ये ऑब्जर्वेशन्

कियो के गटर बन्द करवेके बजाय चौदहसो करोड़ पैसा गटरमें गये. सरकारी कामकाज असरकारी नहीं होवे. असरकारी काम सरकार कर ही नहीं सके. 'कार' को मतलब क्रिया होवे हे. 'अहंता' जा बखत कहें तो वाको मतलब 'अहं' होनो. 'अहंकार' को मतलब "अहं करनो". या स्थितिमें अपन् सोचें तो अहंकारके बारेमें दो पेहलु तो आ ही रहे हें. या तो अहंकार कोई सिद्ध वस्तु हे. या अहंकार कोई साध्य क्रिया हे जैसे 'मनुष्यता', 'मानवता'. ये साध्य क्रिया नहीं हे, अपनो सिद्ध गुण हे. मानवमें मानवता होवे हे. ये गुणधर्म हे क्रिया नहीं हे. जा बखत 'ता' प्रत्यय लगे वा बखत सिद्ध वस्तुको बोध होतो होवे हे जैसे सुन्दरता. 'सुन्दरता' को मतलब "सुन्दर होनो" है सुन्दर बनानो नहीं. सुन्दरीकरण माने कोई चीजको ब्युटीफिकेशन्. वहां क्रिया मतलब होवे हे. संस्कृतकी दृष्टिसु अपन् यों केह सकें हें के 'सुन्दरता' और 'सुन्दरकार'. 'सुन्दरकार' माने कोई चीजकु सुन्दर बनानो. 'सुन्दरता' को मतलब कोई चीजको सुन्दर होनो. एक ठिकाने अपनूकु कोई सिद्ध वस्तुको बोध होवे हे और दूसरे ठिकाने अपनूकु साध्य क्रियाको बोध होवे हे. ये अहंता और अहंकार बोलें तो पाछे वामें अपने अहंकारके हजार शीर्षनूमेंसु दो शीर्ष प्रकट हो जा रहे हें. दिखलाई दिये ना! अहंकारके दो माथायें हें. अहंकार कोई तरहसु अपनो कोई गुणधर्म भी हे और अहंकार कोई तरहसु ऐसो फिनोमिना भी हे कि जाकु अपन् एकॉम्प्लिश् करें हें, सिद्ध करें हें. जैसे ब्युटीफिकेशन् या सुन्दरीकरण. ब्युटिफुल् होनो एक बात हे और 'ब्युटीफिकेशन्' को मतलब कोई चीजकु ब्युटीफाई करनो. ये दो प्रभेद आवें हें वामें.

थोड़ी गेहराईमें अपन् और जायें तो एक और बात बड़ी मजेदार मिले हे. याही अहंकारके लिये अपने यहां ये कह्यो जाय हे के ये अंत:करणकी एक वृत्ति हे. अंत:करणको एक फन्क्शन्

हे. अंत:करणको एक पेहलु हे. अब यदि अहंकार अंत:करणको एक पेहलु हे तो वाको मतलब ये हे कि अहंकार कोई एक इन्स्ट्रूमेंट् हे. 'करण' को मतलब इन्स्ट्रूमेंट होवे. अब देखो ये कैसो मधुमक्खीनूको छत्ता जैसो इश्यु हे. अहं कोई करवेकी क्रिया हे या अपनी कोई सिद्ध क्वालीटी हे. अहं अपने पास कोई इन्स्ट्रूमेंट् हे के जा इन्स्ट्रूमेंट्सु अपन् कोई काम एकॉम्प्लिश् कर रहे हें. जैसे आंखसु अपन् देख रहे हें, कानसु अपन् सुन रहे हें. नाकसु सूंघ रहे हें, जीभसु स्वाद ले रहे हें. मोंहसु बोल रहे हें. पैरसु चल रहे हें. हाथसु पकड़ रहे हें वा तरहसु अहंकार भी एक करण हे, जा करणसु अपन् कछु काम सम्पन्न कर रहे हें तो वो करण हो गयो. आखिर ये हे क्या बला! क्रिया हे या करण हे या गुणधर्म हे? ये सारे फेसेट् भी अपनूकु अहंकारके बारेमें सोचें तो एकदम उभरके सामने आ रहे हें. अब मोकु ये नहीं पता के ये टॉपिक् आपकु बोरिंग् लग रह्यो हे के आप यामें इन्ट्रेस्टेड् हो? बोरिंग् होय तो बोर हो जाओ. प्रभु आपकु और ज्यादा बोर करे. इन्ट्रेस्टिंग् लगतो होय तो इन्ट्रेस्ट् लेके वाकु समझवेको प्रयास करो.

सचमुचमें छोटीसी बात हे अहंकार पर वाके न जाने कितने कितने अनजाने पेहलु हें. ये अपन् कॉइनूकी तरह नित्य वापर रहे हें और अपनूकु पता नहीं हे कि सचमुचमें अहंकार क्या हे? जगजीतकी एक बड़ी अच्छी गज़ल हे. **"देखा तो मेरा साया भी मुझसे जुदा मिला. सोचा तो हरेक सिम्तसे कुछ सिलसिला मिला."** अपनी छाया अपनूकु अपनेसु अलग दिखलाई दे हे. अरे भाई! मेरी छाया मेरेसु अलग हो क्यों गई!! शायर कहे है **"मेरा साया भी मुझसे जुदा मिला. सोचा तो हरेक सिम्तसे कुछ सिलसिला मिला"**. छायाकी बात जावे दो. दुनियाकी कोई चीज ऐसी नहीं हे के जा चीजसु मैं कोई तरहसु रिलेटेड् नहीं होऊं. कोई न कोई तरहसु हर बातसु

रिलेटेड् हूं. खाली एक शॉकिंग् ट्रीटमेंट् आपकु दे रह्यो हूं. अभी जो मैं आपसु पूछूं के कोई कसाईसु आपको रिलेशन् हे? आप सब ना पाड़ोगे के जब मांस खानो नहीं तो कसाईसु रिलेशन् क्यों करनो? अरे भई! कसाईने जब बकरा काटके बेच्यो होयगो, वाको जो पैसा लियो होयगो वासु जो कपड़ा खरीद्यो होयगो, वो कपड़ा खरीदवेके कारण वो पैसा कपड़ा बेचवेवालेको आपके पास नहीं आ गयो होयगो! **''सोचा तो हरेक सिम्तसे कुछ सिलसिला मिला''**. कहीं न कहीं जाके हरेक चीज एक दूसरेसु जुड़ी भई हे. अपन् कहें हम वेजिटेरियन् आदमी हें, हमकु कसाईसु क्या लेनो देनो? पर कसाईके भी तो रुपया आते होंयगे के नहीं? अपन् गेरन्टी ले सकें के कसाईके रुपया नहीं आते होंयगे अपने पास. आते ही होंयगे. **''सोचा तो हरेक सिम्तसे कुछ सिलसिला मिला''**. अहंकार भी शायद ऐसे ही सोचतो होयगो. मेरा साया मेरेसु जुदा! देखो ध्यानसु देखो. जब अपन् सोचें के ''अपनो अहं क्या हे?'' सोचवेवाले आप और कायके बारेमें सोच रहे हो? अहंकारके बारेमें. ''देखा तो मेरा साया भी = अहंकार भी मुझसे जुदा मिला''. फिर सोचोगे ''मैं क्या हूं?'' यदि अहंकार नहीं होय तो मैं सोचुं कायकु हूं?. सिलसिला अहंकारसु भी अपनो मिल जायगो. ऐसी कोई चीज ही नहीं हे. यामें एक बहोत अच्छो शेर वो और कहे हे. **''फुरसत किसे हे जो मेरे हालात पूछता. हर शख्स मेरे बारेमें कुछ सोचता मिला''** कोईने भी आके मोकु पूछ्यो नहीं के मेरे हाल क्या हें? पर घरमें बैठे बैठे मेरे बारेमें सोच रहे हते.

अपनूकु भी कभी फुरसत नहीं मिली कि अपन् अहंकारसु पूछें के तेरे हालात क्या हें? हर व्यक्ति अपने अहंकारके बारेमें कुछ कुछ सोच तो रह्यो हे. कोई दैन्यभावसु सोच रह्यो हे, कोई मानभावसु सोच रह्यो हे, कोई कोई भावसु सोच रह्यो हे. ऐसे

हर व्यक्ति अहंकारके बारेमें कुछ कुछ सोच रह्यो हे. बड़ी एप्रोप्रियेट् गज़ल हे जो अपने अहंकारपे लागू पड़े हे. ये सारी प्रोब्लम् अपनूकु अहंकारकी हें. वा संदर्भमें मैं कछु पेहले आपकु बतानो चाहूंगो.

(अन्तःकरण और बहिःकरण)

अहंकार अन्तःकरण हे. यदि अहंकारकु अपन् अंतःकरण केहते होंय; अंतःकरण क्यों कहें अहंकारकु? क्योंके ये अपनी आंख, नाक, कान वगेरह अपनी पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय वो बहिःकरण हें. बहिःकरण माने बाहरके करण हें, बाहरके इन्स्ट्रूमेंट् हें. जिनकु अपन् अपने कोई भी काम करवेके लिये वापरें हें. देखवेको काम करवेके लिये आंख वापरें, सुनवेको काम करवेके लिये कान वापरें; कोई भी चीजको स्वाद लेवेके लिये जीभ वापरें; ये सब करण हें. इन्स्ट्रूमेंट हें. जैसे कोई आइसक्रीम खानी होय तो चमचा वापरें, तो चमचा 'करण' केहवावे. लिखनो होय तो अपन् पेन वापरें; ये सब 'करण' केहवावें; कोई काम करवेके लिये अपन् जिन चीजनूकु वापरते होंय, वो चीजें 'करण' केहवावें. उन करणमें ये पांच कर्मेन्द्रिय और पांच ज्ञानेन्द्रिय बहिःकरण हें, जिन करणनूसु अपन् कोई बाहरकी क्रियायें सम्पन्न कर रहे हें या बाहरको ज्ञान संपादन कर रहे हें.

अब अपने भीतर भी बहोत सारी क्रियायें निरन्तर चल रही हें. उन क्रियानूकु कौन सम्पन्न कर रह्यो हे? उन क्रियानूकु अपने भीतर सम्पन्न करे हे अपनो अन्तःकरण. भीतर रहे भये अपने कछु करण हें, इन्स्ट्रूमेंट् हें जिनसु अपन् अपने भीतरकी क्रियानूकु सम्पन्न करें हें. जैसे देखवे सुनवे की क्रिया बाहर अपन् सम्पन्न करें हें आंख नाक वगेरहसु. ऐसे भीतरकी क्रियानूकु अपन् अन्तःकरणसु सम्पन्न करें हें. उन अन्तःकरणमें एक फन्क्शन् अहंकारको भी हे. वा एन्गलसु अपन् देखें तो अहंकार अपनो एक करण हे जासु अपन् कछु क्रियायें सम्पन्न करें हें और जा बखत अपन् क्रिया सम्पन्न कर रहे हें.

(चार्ट.१)

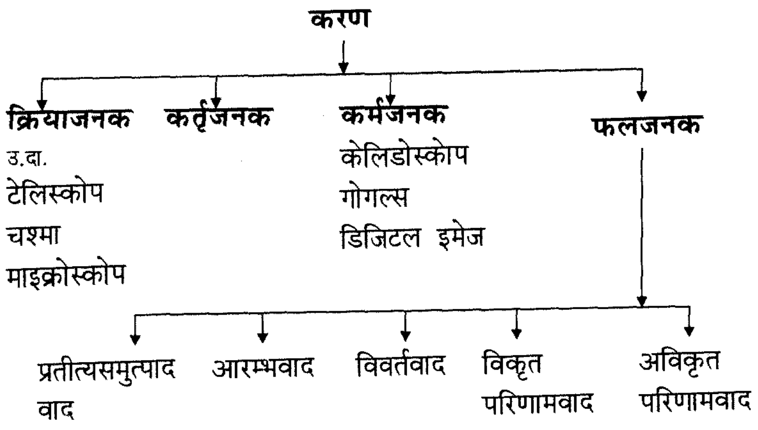

ये करणमें भीतरकी अपनी बहोत सारी क्रियायें हें, जिन क्रियान्कु अपन् अपने अहंकारसु सम्पन्न करे हें. उन क्रियान्में अपन् देख सकें हें के राग द्वेष वगेरहकी क्रिया, सांसारिक क्रिया, संसारातीत क्रिया, मुक्तिकी क्रिया, कई तरहकी सब क्रियायें अपन् पेहले भीतर सम्पन्न करें हें. हकीकत पाछी एक ये हे के बाहरकी कोई भी क्रिया अपन् सम्पन्न करते होंय, सबसु पेहले वो अपने भीतर सम्पन्न होवे हे. यदि भीतर सम्पन्न नहीं होती होय तो वो क्रिया बाहर सम्पन्न नहीं हो सके हे. जैसे मोकु देखनो हे, ऐसो मेरो अन्त:करण सोचे तो मैं बाहरके करणकु वापरूंगो और देखुंगो. मोकु सुननो हे, ऐसो मोकु मेरो अन्त:करण केहतो होय तो मैं कान वा तरफ लगाऊंगो.

मोकु चलनो हे ऐसे पेहले मोकु मेरो अन्त:करण कहे तो मैं पैरके करणकु वापरके चलवेकी क्रियाकु सम्पन्न करूंगो. हर बहि:करण चाहे ज्ञानके हो चाहे क्रियाके; जैसे हाथ, पैर, जीभ ये सब क्रियाके करण हें और आंख, नाक, कान ये सब ज्ञानके करण हें. ज्ञानके करण होंय चाहे क्रियाके करण होंय, कोई भी करणकु जा बखत अपन् सम्पन्न कर रहे हें, उनकु सम्पन्न करवेके पेहले, अंत:करणमें वो बात पेहले अपन् करें हें. भीतर अपन् पेहले नक्की करें के "ये काम मोकु करनो हे". जब वो काम अपन् भीतर करें तो तुरत वो काम बाहर जासु भी रिलेटेड् करण होय वहां तक वो इन्स्ट्रक्शन् कॅरी फॉरवर्ड् हो जाय.

(क्रियाजनक और कर्तृजनक करण)

कुछ करण क्रियाजनक होवें जो क्रियाकु पैदा करते होवें हें, जैसे पैरसु अपन् चलवेकी क्रिया पैदा करें हें. मुंहसु अपन् बोलवेकी क्रिया पैदा करें हें. लेखनी, लेखनीसु लिखवेकी क्रिया पैदा होयगी. पर या गलतफहमीमें मत रहियो के सारे करण क्रियाके ही जनक होवें हें. कछु करण कर्तृजनक होवे हें. क्यों कर्तृजनक होवें हें? जा क्रियाकु वो उत्पन्न करें हें वाके कोरोस्पॉन्डिंग् वो पाछो कर्ता खड़ो करें हें. जस्ट्पॉसिबल् हे के वो कर्ता टोकन् कर्ता होय, या डीफॅक्टो कर्ता होय, डिज्युर कर्ता होय. सचमुचमें कोई कर्ता हे अथवा कर्ता नहीं हे पर कर्ता तरीके वाको स्टेटस् अपन्कु अपने कोई कामकाजमें स्वीकारनो पड़े. जैसे ये ए.टी.एम. के खाता होंय न बेंकन्में. वामें रातकु जा बखत तुम पैसा लेवे जाओ, तो वहां पैसा देवेवालो कोई क्लर्क थोड़े ही बैठ्यो भयो हे. वो जो मशीन लगी भयी हे, वो कर्ता नहीं हे पर कर्ताको सब्स्टीट्युट् तो हे ना! वाकु तुम अपनो नम्बर दो, वाकु तुम अपनी फिगर दो के मोकु इतने रुपया चहियें, वो सब चेक् करके मशीन तुमकु रुपया दे रही हे. वो जो क्रिया कर रह्यो हे पर सचमुचमें वो कर्ता

नहीं हे, पर फिक्टीशियस्कर्ता तो बन ही रह्यो हे ना वो! वो बिहेव् तो तुम्हारे साथ जैसे के कर्ता होय वैसे करे.

(कर्ताके प्रकार)

सचमुचके कर्ता और फिक्टीशियस् कर्ताको मूल भेद क्या हे? जो खुदके ज्ञान इच्छा और प्रयत्न सु क्रिया सम्पन्न करतो होय वो सचमुचमें कर्ता कह्यो जाय. अपने भीतर कछु ज्ञान हे वा ज्ञानके अनुरूप अपने भीतर कछु इच्छा उत्पन्न भई. वा इच्छाके अनुसार अपनूने प्रयास किये. ज्ञान इच्छा और प्रयत्न की प्रोसेस्में जो क्रिया अपन् सम्पन्न करें तो वो क्रियाकु सम्पन्न करवेवालो कर्ता, कर्ताकी स्टेटस् ग्रहण कर ले. यदि इच्छा हे, प्रयत्न हे पर ज्ञान नहीं हे तो वाकु कर्ता नहीं मान्यो जाय. ज्ञान हे, इच्छा नहीं हे पर कोई क्रिया हो गई, तो भी वाकु कर्ता नहीं मान्यो जाय. ज्ञान और इच्छा हे पर वा बारेमें प्रयत्न नहीं हे तो भी वाकु कर्ता नहीं मान्यो जाय. जैसे बच्चाकु ज्ञान नहीं हे, अपन् कहें ना के बच्चा छुअे नहीं, अमुक एज्के नीचेके बच्चाकी कोई जिम्मेदारी नहीं हे, पाप पुण्य नहीं लगे, सूतक पिण्डरू नहीं लगे. क्यों नहीं लगे? बातकु समझो. इच्छा नहीं हे ऐसी बात नहीं हे, बड़े जो काम करें मंकीबिज़नेस् करवेकी बच्चाकु एकदम इच्छा होती होवे, समझ आवे के नहीं आवे, अपन् करें वो बच्चा भी करे. वाकु समझ नहीं पड़े के क्यों करनी, काहेकु करनी? बड़े कर रहे हें तो मंकीबिज़नेस्सु बच्चायें वा तरहसु कछु कछु काम करते ही रहें. पर इनकु वो ज्ञान नहीं होवे. जैसे अपनूकु ज्ञान नहीं होवे और अपन् कोई क्रिया कर दें, तो कर तो दी पर वामें अपनूमें कर्तृत्व नहीं आवे. क्योंके तुममें कछु इच्छा हती और तुमने कछु कर दियो पर समझते तो तुम हते ही नहीं के तुम क्या कर रहे हो? समझो बच्चाने एक भाटा (पत्थर) लेके बारीमेंसु कोईपे फेंक दियो. कोईको माथा फूट गयो. वाको क्रिमिनल् चार्ज आयगो?

क्यों नहीं आयगो? बच्चाकु समझ ही नहीं हे. ज्ञान नहीं हे, ज्ञान हे पर मोकु इच्छा नहीं हे. जैसे अपन् जानते होंय, पर अपनूकु इच्छा नहीं होय. जबरदस्ती कोई अपनूसु काम करा ले, तो वाके कर्ता अपन् मानें जायेंगे? **''सर्वान् बलकृतान् अर्थान् अकृतान् मनुर् अब्रबीत्''** (मनुस्मृ.८।१६८). जबरदस्ती करायो भयो कोई भी काम करवेवालेकु वाको कर्ता नहीं मान्यो जाय. ज्ञान भी हे, इच्छा भी हे पर वाको प्रयत्न अपन् नहीं कर रहे हते कुछ, पर एक्सीडेन्टली हो गयो. जैसे कोईकु मारनो नहीं चहिये, अपनूकु कोईकु मारवेकी इच्छा भी नहीं हे पर कारको एक्सीडेन्ट् हो जाय तो हो जाय. वामें क्या कर सके आदमी? कछु तो टकरा ही जायगो; कछु तो हो ही जायगो. वाके प्रयत्न किये हते तुमने? कोईकु मारवेके प्रयत्न किये हते तुमने? प्रयत्न नहीं किये हते. पर हो गयो तो हो ही गयो. वामें वो कर्ता नहीं मान्यो जाय. ये वाको रहस्य हे.

जब ज्ञान इच्छा और प्रयत्न सु कोई कृति पैदा भई होय, तो वो कर्ता मान्यो जाय. कम्प्युटर जो ए.टी.एम.में अटेन्ड् कर रह्यो हे, वाकी सिर्फ प्रोग्रामिंग् हे, ज्ञान इच्छा और प्रयत्न वालो फन्क्शन्, वहां नहीं होवेके कारण यद्यपि वो क्रिया करे हे सारी कर्ताके जैसी, पर एट् दि सेम् टाईम् वाकु कर्ता नहीं मान्यो जाय. पर फिक्टीशियस्कर्ता तो माननो ही पड़ेगो. जैसे अपन् मोटरकु मोटर कहें हें ना! वो कर्ताके अर्थमें कहें हें. मोशन जो करतो होय; 'मोटर' में जो 'र' प्रत्यय हे अंग्रेजीमें, वो कर्ताके अर्थको प्रत्यय हे. प्रमोटर, मोटर, फिटर, एम्प्लोयर, ये 'र' प्रत्यय लगे अंग्रेजीमें, वो कर्ताके अर्थमें लगे. जाकु कर्ता बनानो होय वामें 'र' जोड़्यो जाय. देखो कर्ताके अर्थमें मोटर लगे पर अपन् कहें के कर्ता नहीं पर मशीन हे. क्योंके मोशन् कर रही हे, या अर्थमें वो मोटर हे. फिक्टीशस् कर्तापनो वामें आवे हे.

प्रश्न: : ज्ञान इच्छा और प्रयत्न; इन तीनोंनूमेंसु एक भी चीज प्रेज़ेन्ट नहीं हे तो वो कर्तामें परिणित नहीं होवे. पर कोई क्रिया तो हो ही रही हे. वा सेन्स्‌में होती भई क्रियाके लिये कोई कर्ता तो चहिये ही. अपने सेन्स्‌में; वो समझमें नहीं आ रह्यो हे?

('डीफेक्टो' और 'डीज्युर' कर्ता)

उत्तर : अभी तेंने थोड़े शब्द बदल दिये. डीफेक्टो पेहले तू बोल्यो ना! मैं पेहले डीफेक्टोपे आ जाऊं. 'डीफेक्टो' और 'डीज्युर' ये दोनों अलग अलग शब्द हें. डीफेक्टो कर्ताको मतलब हकीकतमें जो कर्ता है; कानून वाकु मानतो होय के नहीं मानतो होय. डीज्युर कर्ता कब कह्यो जाय के हकीकतमें कर्ता नहीं होय पर कानूनकु वाकु कर्ता माननो पड़े. (कोई वकील बेठ्यो हे के नहीं यहां?) डीफेक्टो और डीज्युर. डिज्युर माने ज्युरीडिकली. ज्युरीडिकली कर्ता सामान्य कर्ता नहीं हे. (उदाहरणके तौर पे) डीटि केन् स्यु एन्ड् केन् बी स्युड. मूर्ति डीफेक्टो कर्ता नहीं हे पर डीज्युर कर्ता हे. एन् इन्स्टीट्युशन् केन् स्यु सम् वन् एण्ड् इन्स्टीट्युशन् कॅन् बी स्युड. क्योंके वामें डीज्युर कर्तापनो हे, डीफेक्टो नहीं होते भये भी. ये कानूनी शब्द हे. डीज्युर माने जो ज्युरीडिकली कर्ता हे और डीफेक्टोको मतलब फेक्च्युअली जो कर्ता हे. ये 'डी' शब्द ऑफ़्के अर्थमें हे. फेक्ट्को कर्ता; ज्युरी डिसीजन्को कर्ता. 'लेटिन' वर्ड् हे 'डी'. मैंने डीफेक्टो डीज्युर यहां यालिये बताये कि कर्ताके दोनों तरहके नेचर हो सकें हें. ज्ञानेच्छाप्रयत्नवान् डीफेक्टो होवे हे. ज्ञानेच्छाप्रयत्नरहित भी डीज्युर कर्ता तो हो ही सके हे. वा अर्थमें मैंने ये बात बताई हती. तेरे प्रश्नमें एक बात खास समझवेकी हे के १००% तू क्या पूछनो चाह रह्यो हे वो मोकु क्लीअर नहीं हे पर जैसे मैं समझ्यो वाको खुलासा मैं ऐसे देनो चाहूंगो के मैंने एक कम्प्युटर बनायो. वा कम्प्युटरमें मैंने कोई प्रोग्रामिंग् करी. वामें सारे पेरामीटर मैंने धरे के या तरीकेके अंगूठाके फिन्गर प्रिन्टस् आते होंय तो;

या तरीकेके आईबोल्के स्ट्रक्चर होय तो; और कलर होय तो; ये खाता नम्बर होय तो; खातामें उतने पैसा जमा होय तो; ऐसे सारे 'तो' 'तो' 'तो' डालके मैंने वाकी कन्डिशनिंग् करी और उतनी कन्डिशनिंग् करके कम्प्युटरकु बता दियो के इतनी कन्डीशन्स् फुलफिल् होवें; बटन दबे तो उतने रुपया निकाल देनो. बटन दबते ही वा मशीनने फटसु रुपया निकालके दे दियो.

व्यवहारमें अपनूकु लगे जैसे एटीएम मशीन रुपया निकालके देवेवाली उपकरण हे. या लिये वामें ज्ञानेच्छाप्रयत्न नहीं हे. अब वामें ज्ञानेच्छाप्रयत्न नहीं हे तो नहीं हे पर जाने बनाई वाके ज्ञानेच्छाप्रयत्न तो वामें बोल रहे हें करके कोई न कोई डीफेक्टो कर्ता तो वाको होनो ही चहिये. ऐसे मैं तेरी कछु बात समझ्यो. ये बात बड़ी अच्छी हे और ध्यानसु समझवे लायक हे. यामें खास जो बात पिनपोइन्ट् अपन् देखें तो वो ये हे के प्रोग्रामिंग्को कोई कर्ता ज्ञानेच्छाप्रयत्न कृतिमान हे. पर वा तरहसु प्रोग्राम्ड् होवेके बाद जो काम मशीन कर रही हे वा बखत वो प्रोग्रामर् हे तो भी वो काम मशीन करेगी और नहीं हे तो भी वो मशीन काम करेगी. जा बखत वो मशीन क्रिया कर रही हे, वा बखत जाकु तू डीफेक्टो कर्ता केह रह्यो हे, वो तो नहीं हे. चल्यो गयो, मर गयो तो भी मशीन् वा तरहसु प्रोग्राम्ड् हे तो क्रिया तो करेगी, वा बखत वाको कर्ता प्रोग्रामर वहां कहां हे! मशीन जो क्रिया कर रही हे, तेरे खाताकु चेक करके तेरी सारी बातनूकु चेक करके तोकु उतने रुपया केश निकालके दे रही हे, वा बखत वा प्रोग्राम्को प्रोग्रामर कर्ता वहां हे? अपन् गेरन्टीसु नहीं केह सकें के हे ही हो भी सके और नहीं भी हो सके. अगर हे भी तो एटलीस्ट् वहां तो नहीं हे जहां वो क्रिया हो रही हे. वो कहीं और होयगो. वो सॉफ्टवेयर्-इंजीनियर् कहीं दूर होयगो. भारतमें अन्यत्र या अमरीकामें या जापानमें या चीनमें या जर्मनीमें होयगो. जहां वो मशीन क्रिया कर रही हे वहां

तो कर्ता मौजूद नहीं हे. वो यहां नहीं हे और वहां हे, तो वाके होवे और नहीं होवेमें क्या फर्क पड़्यो? क्रियासु जो कर्ता पैदा होवे हे वामें वाको डीफेक्टो नेचर काम नहीं आ रह्यो हे. ''जैसे साजन घर भले तैसे भले विदेश'' वैसी वाकी स्थिति हे. या लिये कोई कर्ता हे वो यहां गुड फोर नथिंग् हे. ऐसे कछु कर्तायें एवं करण क्रियाजनक होवेके बाद कछु करण ऐसे भी हो जायें हें जो कर्ताकु पैदा करते होवें हें, जो अधरवाईज् कर्ता नहीं होवे हें. पर वा करणके कारण वो क्रियाकु सम्पन्न करवेसु वा व्यक्तिमें कर्तापनो आ जाय. जो अधरवाइज् पॉसिबल् नहीं हतो यदि वो करण नहीं होय तो. जैसे दोसो फीट्पे खड़े आदमीके उदाहरणसु तुम या बातकु बड़ी आसानीसु समझ सकोगे. दोसो फीट् दूर खड़े भये आदमीकु कोई आदमी मार कैसे सकेगो? वो बन्दूकसु मार सके हे. वा बन्दूकरूपी करणके कारण वामें घातकपनेको कर्ता आ रह्यो हे. तो बन्दूकने वो क्रिया उत्पन्न करी के दूरसु वाकु मार्यो जा सके हे, करके वामें वा दूर खड़े भये व्यक्तिकु मारवेको कर्तापनो आयो. जैसे मिसाईल् अपन् दूरसु छोड़ दें. वा छोड़वेमें क्योंकि वाके क्रियाके करणने वो क्रिया करी और वा क्रियाकु वाने करी या लिये वामें कर्तापनो आयो. तो कछु करण केवल क्रियाजनक नहीं होके कर्ता तकके भी जनक होवें हें. बड़ी पेराडोक्सिकल् सिच्युऐशन् हे क्योंके कर्ताकु ग्रामिटिकली ऐसो मान्यो जाय के कर्ता सब चीजकु इकठ्ठो करे और करणकु इकठ्ठो करे. व्याकरणमें वो बात सच हे महाप्रभुजी भी या बातकी आज्ञा करें हें ''**कर्ता स्वतन्त्रएव स्याद्**'' (त.दी.नि.१।७७). पर वास्तवमें कछु करण कर्ताकु पैदा करते होवें जो अदरवाइज कर्ता नहीं हो सकें. कछु करण पाछे कर्मजनक भी होवें हें. वा क्रियाके कर्मकु वो करण पैदा कर रह्यो हे. वो इन्स्ट्रुमेंट् तुम वापर रहे हो, करके वा क्रियाको कर्म पैदा हो रह्यो हे. वो इन्स्ट्रुमेंट् नहीं वापरते होव तो वा क्रियाको कर्म पैदा नहीं हो सके. कछु करण फलजनक होवें हें. हर क्रियासु अपन् कछु फलकी आशा

करें हें, पर वा क्रियाको वो रीज़ल्ट कब आवे? जब वो करण वार्प्यो होय तो. वो करण नहीं वार्प्यो होय तो वा क्रियाको वो रिज़ल्ट नहीं आवे, कुछ करण ऐसे होवें हें. यामें ऐसे मत समझियो के अपन् करणकी चर्चामें खो गये हें. अपन् अपने अहंकारके करणके ही दौरमें हें. क्या अहंकारके करण कुछ ऐसे हें के जो क्रियाजनक हें, या कर्ताजनक हें, या कर्मजनक हें, या फलजनक हें? इनमेंसु कुछ हें के सब हें? ये सारे फेसेट्स् जब अपन् सोचेंगे तो अपनूकु अहंकारको चित्र साफ होयगो के अहंकार **''सहस्रशीर्षं देवम्''** कैसे हे.

थोड़ोसो इनकु उदाहरणसु समझ लोगे तो बात साफ हो जायगी. क्रियाजनक करण - जैसे टॅलिस्कोप् भयो, माइक्रोस्कोप् भयो. दूर देखवेकी क्रिया या कोई माइक्रोस्कोपिक् स्ट्रक्चरल् फिनोमिना हे वाकु इतनो एनलार्ज् करके देखवेकी क्रिया वो टेलीस्कोप् या माइक्रोस्कोप् हे तो अपन् कर सकें हें. टेलिस्कोप् होय तो अपन् दूरके ताराकु देख सकें हें. छोटेसे एक ब्लड्की बूंदकु माइक्रोस्कोपूसु देखोगे तो वामें सारे ब्लड्के कन्टेंट् दीखेंगे अन्यथा नहीं दीखेंगे. तो दूरकी वस्तु देखवेकी क्रिया या बहोत छोटी झीनी वस्तु देखवेकी क्रिया कायसु सम्पन्न हो रही हे? कर्तासु सम्पन्न नहीं हो रही हे; वो करण माइक्रोस्कोप, वा क्रियाकु सम्पन्न करे हे करके अपन् वा ताराकु देख सकें हें नहीं तो अपनूकु नहीं दीख सके हे. माइक्रोस्कोप् अपन् वापरें तो वो छोटे अणुकु देखवेकी क्रिया सम्पन्न हो सके अदरवाईज़ सम्पन्न नहीं हो सके. अब या तरीकेके इन्स्ट्रुमेंट्की एक ब्युटी हे. अहंकारको अपन् धोबीघाट करें तो वाके पेहले अहंकार की ब्युटी पेहचानो. देखो टेलिस्कोप् हे चाहे माइक्रोस्कोप् हे, वा करणकी खूबसूरती हे के न तो टेलिस्कोप् दूरकी चीजकु तुम्हारे पास लावे हे और न तुमकु दूर पहोंचावे. न माइक्रोस्कोप् वा वस्तुकु वस्तुत: उतनी एनलार्ज् करे हे. वो वस्तु जैसी हे, वैसी वहां रखते भये भी कोई

डिफरेन्ट् रिज़ल्ट् तुम्हारे सामने प्रस्तुत करे हे. दूरकी वस्तुकु दूर रेहते भये भी तुमकु पास दिखावे हे. छोटेकु छोटे रेहते भये भी तुमकु बड़ो करके दिखा दे हे. एक करण ऐसो होवे हे. इन सब बातनूको जैसे मालाको मनका फेरें हें ना! ऐसे मनकाकी तरह अहंकारपे फेरोगे तो या सारी बातकी मजा ले पाओगे नहीं तो मजा नहीं ले पाओगे. माला फेरें तो मनका आतो रहे ना, तो मनका आवेके बाद फिर एक दो सु शुरु करें हें. ऐसे याको अहंकारके सुमेरुको मनका फेरते रहो, तो तुमकु या बातकी मजा मिलेगी के या तरीकेको अहंकार हे क्या? जो चीज जैसी हे वाकु वैसी रखे हे; दूरकी दूर रखे हे, छोटीकु छोटी रखे हे; एट् दि सेम् टाईम् तुमकु बहोत पास या बड़ी करके दिखा दे हे. **''देखा तो मेरा साया भी मुझसे जुदा मिला. सोचा तो हरॅक सिम्तसे कुछ सिलसिला मिला.''** पास भी दिखा दे, दूरकी भी पास दिखा दे हे. न पास लावे हे और जैसे अपन् फुग्गाकु फुलाके बड़ो करें ऐसे माइक्रोस्कोप् कोई ब्लड्के ड्रोपकु फुलाके बड़ो थोड़े ही करे हे. ब्लड्के ड्रोपकु ब्लड्को ड्रोप् ही रेहवे दे पर फुग्गाकी तरह फूल्यो भयो दिखा दे. सारी डिटेल दीख सके हे. करणकी या खूबसूरतीपे ध्यान दो. अहंकार या तरहको भी करण हो सके हे के नहीं हो सके हे? वो तो अपन् पेहले सोचेंगे के ये फिनोमिना क्या हे वो अच्छी तरहसु समझ लें.

कछु या तरीकेकी क्रियाके करण होवें हें. देखो छेड़छाड़ नहीं करें; जो कर्म हे वासु कोई भी तरहकी छेड़छाड़ नहीं करें. ये तो याको सिद्धान्त हे पर जो तुम्हारे पास करण अवेलेबल् हे, वा करणकु जो असिस्ट् करतो होय, ऐसे भी कुछ करण हो सकें हें. वो करण कैसे होंयगे? जैसे अपनो चश्मा हे; कोन्टेक्ट लेन्स् हे; वो जो वस्तु जैसी हे वैसी दिखा रह्यो हे पर तुम्हारी आंखकी देखवेकी शक्ति जो कम हो गई, वाकु वो फिरसु रीस्टोर करे हे. तुम्हारी क्षीण भई शक्तिकु वो पाछो रीस्टोर करवेवालो करण हे.

माइक्रोस्कोप् या टेलीस्कोप् जैसे ओब्जेक्ट्के साथ कछु कर रहे हें ऐसे वहां कछु नहीं करे हे, पर तुम्हारे पास जो करण अवेलेबल् हें वाकु असिस्ट् करवेवालो करण होवे हे. अब वो पाछो कैसे होवे हे के तुम्हारी आंखके साथ जुड़्यो भयो या लग्यो भयो करण होवे हे. तो अपन् एक दूसरे उदाहरणमें चश्मा या ऐसे जो कोई दूसरे करण हें, इन्स्ट्रुमेंट् हें, उनकु देख सकें.

जैसे आदमी अंधो हो जाय तो वाकु रस्ता तो दीखे नहीं तो वो करण वापरे. कौनसो करण वापरे? लकड़ी लेके टक टक करके चले. अब देखवेकी आवश्यकताकु वो देखके नहीं पर स्पर्शसु पूरी करके अपनी आवश्यकताकु पूरी करे. दीखे नहीं हे वाकु, पर देखवेको एक सब्स्टीट्यूट् खड़ो करे हे. ऐसे सब्स्टीट्यूट् खड़े करवेवाले, जो क्रिया तुम कोई भी कारणसु नहीं कर पा रहे हो, वाके तुमकु कोई सब्स्टीट्यूट् प्रोवाइड् कर दे, ऐसे करण. क्रिकेटमें एक सब्स्टीट्यूट् खिलाड़ी और होवे जैसे ग्यारह खिलाड़ी होवें, उनमेंसु कोई खेल नहीं पा रह्यो हे तब वो खेलवे आ जाय वा बखत. ऐसे ही अन्धेकी लकड़ी हे. अपने यहां तो ये सिस्टम नहीं हे परन्तु यूरोप अमरीकामें, अन्धे लोगन्कु रोड पार करावेवाले कुत्ता भी होवें हें. वहां खाली वे अन्धे कुत्ताकु पकड़ें हें और वो कुत्ता सारी केयर ले, रोडके सिग्नल देखे, यहां वहां देखके बाकायदा रोड पार करा दे हे. जहां जानो हे वहां तुमकु ले भी जाये हे. कुत्ता भयो या लकड़ी भई, ये वास्तवमें तुमकु क्रिया करवेमें सहायता नहीं कर रहे हें पर तुमकु क्रियाको कोई सब्स्टीट्यूट् प्रोवाईड् करें हें. जासु वा क्रियाकु नहीं कर पावेके कारण तुमकु जो कछु तकलीफ हो रही हे वाकी भरपाई हो जाय. ऐसे कछु सब्स्टीट्यूशनल् करण भी होवें हें. अपनो अहंकार भी ऐसे कोई चीजको सब्स्टीट्यूट् करवेवालो करण हो सके हे. थोड़ो वा सुमेरुपे फिर आओगे ना, तो पता चलेगी के अपनो अहंकार भी एक ऐसो करण हो सके हे. सचमुचमें

जो क्रिया अपनकु करनी हे वो नहीं कर रह्यो हे पर अपनकु वो एक सब्स्टीट्यूट् प्रोवाईड् करके दे रह्यो हे. ये करण लो याके कारण तुम ये काम आरामसु कर सको हो. वा अहंकारमें सब्स्टीट्यूट् होवेको भी एक केरेक्टर हो सके हे.

प्रश्न : चश्मा और टेलीस्कोपको उदाहरण समझमें नहीं आयो?

उत्तर : चश्मा चीजकु वहींकी वहीं दिखा रह्यो हे. टेलीस्कोप चीज जहां हे वहां नहीं दिखा रह्यो हे. नजदीक लाके दिखा रह्यो हे. तो फर्क हे के नहीं? दोनों कुछ अलग तरीकेके करण हें. जो चीज जितनी हे उतनी ही नहीं दिखा रह्यो हे. माइक्रोस्कोप क्या करे हे? चीजकु बड़ी करके दिखावे. फर्क तो हे के नहीं? चश्मा तुम्हारी आंखकु एसिस्ट् कर रह्यो हे. तुम्हारी आंख जाकु नहीं देख पा रही हे, वाकु देखवेमें सिर्फ एसिस्ट् करे हे. वाके अलावा कोई एडीशनल् काम नहीं कर रह्यो हे. टेलीस्कोप् सिर्फ आंखकु एसिस्ट् नहीं करे हे, विषयकु नजदीक लावे हे. माइक्रोस्कोप् आंखकु सिर्फ एसिस्ट् नहीं कर रह्यो हे पर विषयकु एनलार्ज् करे हे. दोनोंन्के अलग अलग रोल् हें. ये सारे क्रियाजनक करणन्के मॉडल हें. अब जा तरीकेकी क्रिया जा करणसु होती होयगी वा तरीकेकी क्रियाके कारण वा तरीकेको वो कर्ता हो जायगो. वामें बहोत एक्स्प्लेनेशन्की जरूरत नहीं हे क्योंके जो क्रिया अपन् कर रहे हें वा तरीकेके अपन् कर्ता हो जायेंगे. वहां बहोत विवेचनको विषय नहीं रेह जाये. पर कर्मन्में अपनकु देखवे लायक वॅरायटी मिलें हें.

एक और अन्य करण देखो कॅलिडोस्कोप्, वो करण हे. वो जो ज्योमॅट्रीकल् डिज़ाइन्को पेटर्न् हे वाकु देखवेको केलिडोस्कोप् एक करण हे. वो एक ऐसो करण हे जो के खुद कर्मकु पैदा कर रह्यो हे. वो डिज़ाइन् सचमुचमें कहीं हे नहीं. जैसे टेलिस्कोप् दूरकी

चीजकु पास दिखावे हे, ऐसे कोई अनऑरगेनाइज्ड् चीजकु ऑरगेनाइज़् करके दिखा रह्यो हे. बस इतनी ही बात नहीं हे. अपने भीतर वो वा तरीकेको ऑरगेनाइज़ेशन् कर रह्यो हे. केलिडोस्कोपिक कन्स्ट्रक्शन्, स्ट्रक्चर पैदा करवेवालो हे. एक करण या तरीकेको हो सके हे. सुमेरुके पास आके देखो याकु तब वाकी खूबसूरती पता चलेगी. अहंकारके कारण बाहरकी कोई चीज तुमकु अनुभव आ रही हे. जा चीजकु तुम अहं समझ रहे हो वो अहं तुम्हारे भीतर केलिडोस्कोपिक नेचर्सु अहंकार पैदा कर रह्यो हे. बात समझमें आई? वा डिज़ाइनकु केलिडोस्कोप् खुद पैदा कर रह्यो हे. वो डिज़ाइन कहीं बाहर हे ही नहीं. केलिडोस्कोप्में ही होवे हे. वो खुद डिज़ाइन पैदा करे हे और खुद तुमकु दिखा रह्यो हे वाको करण पाछो हे. ये अहंकार या तरीकेको भी करण हो सके हे. वो खुद डिज़ाइन पैदा कर रह्यो हे और खुद ही तुमकु दिखावेमें सहाय कर रह्यो हे. "**यमेव एषः वृणुते तेन लभ्यः**" (कठोप.१।२।२३) वा नेचरसु. तुमने केलिडोस्कोप्कु जा चीजकु देखवेके लिये चुन्यो वो चीज कॅलिडोस्कोप् तुमकु दिखा दे हे. करण या तरीकेके होवें हें.

प्रश्न : अपनो अहंकार अपने भीतर ही ऐसी डिजाइन पैदा करके दिखावे वाको कोई उदाहरण बतावेकी कृपा करें?

उत्तर : तोकु डिफिकल्टी क्या हे याकु समझवेमें?

प्रश्न : केलिडोस्कोप् की बात समझमें आई के वो चूड़ीनूकी डिज़ाइन खुद अपने अन्दर ऑरगेनाइज़् करे हे पर अहंकारकी बात समझमें नहीं आई?.

उत्तर : तेरी चेतना हे, तेरी सोच हे, तेरो गुस्सा हे, तेरो प्रश्न हे, तेरी बोलवेकी क्रिया हे, वो सब अलग अलग हो रही हें. वो कोई एक फिनोमिना तो हे नहीं! अब वो अहंकार सबकु एक करके प्रस्तुत कर दे रह्यो हे, केलिडोस्कोपिक् नेचरसु. बुद्धि आत्मा नहीं हे. आत्मा बुद्धि नहीं हे. बोल जो रही हे वो बुद्धि

नहीं बोल रही हे, बोल तो जीभ रही हे. जीभ जो बोल रही हे वो सोच नहीं रही हे. पर तू सोचके बोल रही हे. तो ये डिज़ाइन पैदा कौन कर रह्यो हे? ये डिज़ाइन कौनसो करण पैदा कर रह्यो हे?

प्रश्न : यामें (स्वप्न) ड्रीम्स् आयेंगे?

उत्तर : यामें ड्रीम्स् भी आ जायेंगे. क्यों नहीं आयेंगे! अहंकार या तरीकेको कॅलिडोस्कोपिक् नेचरसु कर्मकु खुद पैदा करके दिखावेवालो, ऑलमोस्ट् मांके जैसो हे. रसोई बनाके खवावे भी और खुद भी खावे. वा तरीकेको नेचर अहंकारको भी हो सके हे. अब तो कोई प्रोब्लम् नहीं हे कोई? देखो एक दूसरो बहोत सिम्पल् उदाहरण. गोगल्स् माने कोई भी रंगके रंगीन चश्मा जा बखत तुम पेहर रहे हो, तो कर्म कोई रंग पैदा नहीं करे हे कॅलिडोस्कोप् की तरह. पर रंग दिखावे हे जरूर. वो रंग पैदा नहीं करे हे, कोई चीजमें रंग पैदा नहीं कर रह्यो हे. न आंखको हरो रंग हे न कपड़ाको हरो रंग हे पर गोगल्स् पेहनवेके बाद जब भी तुम देखोगे तो सब चीज हरी ही दिखाई देंगी. ऐसे अहंकार तुमने पेहर लिये, तो जो भी सोचोगे तो लगेगो "हां हां आ तो बधुंज म्हारूज छे. कोणे कह्युं म्हारू नथी?" क्यों "म्हारू छे?" अहंकारना गोगल्स् पेहरी राख्या छे अे काम कौणे कर्युं? में! तो कर्युं क्यारे? वो अहंकारको चश्मा पेहर रख्यो हे ना! वाके कारण वो कलर अपनूकु दीखे हे. जब भी अपन् देखें तो दूसरो कलर अपनूकु दीख ही नहीं सके. अगर दूसरो कलर दीख भी रह्यो हे तो वामें इन्टरप्रेट् होके ही दीखे. जैसे गोगल्स् पेहर्यो हे तो सफेद नहीं दीखे ऐसी बात नहीं हे. सफेद दीखे पर पाछे सफेद भी हरो टिन्ट् लेके दीखेगो. गुलाबी रंग भी दीखेगो तो वो हरो टिन्ट् लेके दीखेगो. पीलो भी दीखेगो तो हरो टिन्ट् लेके दीखेगो. क्योंके गोगल्स्के चश्मा पेहर रख्यो हे. ऐसे भगवान्ने भी सृष्टि पैदा करी हे तो अहंकारको

चश्मा अपनूकु पेहरा रख्यो हे. अपनूकु लगे ''काम तो मैं ही कर रह्यो हूं, कोई भगवान् काम करवे थोड़े ही आये हें.'' ''**सिद्धोऽहं बलवान् सुखी आढ्यो अभिजनवान् अस्मि को अन्यो अस्ति सदृशो मया यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये इति अज्ञानविमोहिताः.**'' (भग.गीता.१६।१४-१५). ''**इति अज्ञानविमोहिताः**'' =अहंकारजननेन अज्ञानविमोहिताः ऐसो भी तो करण हो सके ना अहंकार! जो सचमुचमें कर्म पैदा नहीं करे हे वा तरीके कॅलिडोस्कोपिक् नेचरमें, पर दिखावे वाही ढंगसु हे जैसे के वाको खुदको नेचर हे. दूसरे नेचरसु देखवेकी वो तुमकु इजाजत ही नहीं देगो. माने अपनूने एक बखत अहंकारके करणको गोगल्स् पेहर्यो तो कोई भी चीज अपनूकु बिना अहंकारके दिखलाई देनी बंद हो जायगी. वा तरीकेकी गोगल्सूकी तरह काम करतो भयो एक इन्स्ट्रुमेंट् भी हो सके हे. वो जो हरो रंग दीख रह्यो हे वो कर्मकु पैदा करवेवालो करण हे. ये सब मैं कॉमनसेन्स्के उदाहरणसु समझा रह्यो हूं. शास्त्रीय उदाहरण नहीं हें, जासु तुमकु चित्र साफ हो जाय के या करणके टॉपिक्में कितनी डेप्थ् हे.

जैसे एक डिजिटल् इमेज्. जब डिजिटल्केमरासु तुमने देख्यो, तब डिजिटल्केमेरा क्या करेगो? जो बाहर फिगर हे या जो बाहर सीन् हे वाकु पेहले अपने भीतर रहे भये डिजिट्में कन्वर्ट् करके दिखावे. बाहरको नहीं दिखावे. जो भी तुमकु वो दिखावे हे डिजिटल्कन्वर्जन्के बाद दिखावे. अब तुम यों समझ रहे हो कि तुमकु बाहरको आदमी दीख्यो जाको तुमने फोटो पाड़्यो. वो दूसरे केमरा हते जिनमें शुद्ध लेंन्स् वापरो जातो हतो, जहां केमरा कोई क्रियेशन् नहीं करतो हतो. सिर्फ पॅसिवली जो बाहर हे वाकु दिखातो हतो. डिजिटल्केमरा पेसिवली तुमकु नहीं दिखावे हे. डिजिटल् केमरा क्या करे हे? सामनेकी कोई चीजकु तुरत वा फिगर या सीनकु डिजिटल् कन्वर्जन् करके तुमकु दिखावे. वो कर्मजनक होवे. पाछे फिर सुमेरुमाला फेरो. दुनियां बाहरकी चाहे कैसी भी होय, जैसी भी होय भगवान्की के शैतानकी बनाई

भई होय, के अल्लाहकी के यहोबाकी बनाई भई होय, कृष्णकी बनाई भई होय, शिवकी बनाई भई होय, मायाकी बनाई भई होय, पर मेरो अहंकारको कॅमरा, वाको डिजिटल्कन्वर्जन् करके जो कर्म दिखायगो वोही बात सच्ची बाकी बात सब खोटी. जैसे कुछ दर्शन अपने कर्मनूके कारण जगत् उत्पन्न भयो ऐसो माने है. बात समझमें आई ना! करण वा तरीकेको हे के हर चीजकु वो अपनेमें कन्वर्ट् करतो जा रह्यो हे. कितनो क्विक् करे कन्वर्ट् डिजिटल् कॅमरा! मोबाईल्में भी वोही फॅसिलिटी हे! मोबाईल् सामने रखते ही वो सामनेकी वस्तुकु अपनेमें डिजिटली कन्वर्ट् कर दे. जो तुमकु दीख रह्यो हे वो सच्चो सीन् नहीं दीख रह्यो हे. डिजिटल्रिप्रेजेन्टेशन् वाको दीख रह्यो हे. बात ठीक हे ना? जब भी अहंकारके कॅमरासु आप दुनियाको फोटो पाड़ोगे, तो वो डिजिटल्कॅमरा जैसे पेहले बाहरकी चीजको अपने भीतर एक सब्स्टीट्युट् पैदा कर लेवे हे, अपने भीतर एक स्युडो सीन पैदा करे हे और वो आपकु दिखावे हे; ऐसे अहंकार आपके भीतर हर बाहरकी वस्तुको एक स्युडो इमेज् पैदा करे हे. आप वा इमेजकु देखवेके लिये लाचार हो. एक बार आपने अहंकारको चश्मा पेहर्यो तो बाहरकी दुनियां आपकु दीख नहीं सके हे सचाईसु.

(आज पेहली बार आपने इतने सालनूमें प्रश्न कियो हे. मोकु बड़ी खुशी भई. उत्सव मनानो चहिये. वार्तामें आवे हे के गिरिराजजीकी रोज परिक्रमा करते हते और श्रीगुसांईजी बोलें नहीं. जब कंकर उठाये तो उनकु लग्यो के आज इनने सेवा करी. तो आज आपने वल्लभसम्प्रदायकी सेवा करी!)

करण या तरीकेके भी हो सकें हें. जो खुद वाको डिजिटल्; डिजिटल् तो केहवेकी बात हे, खुद अपनी वाकी कछु एक काउन्टरइमेज् खड़ी करके वो अपनूकु दिखाते होंय. करण ऐसो भी हो सके

हे, जिनने शरदबावाके कोर्सकी परीक्षा दी होगी तो उनकु ये बात सरलतासु समझमें आयेगी. जिनने परीक्षा नहीं दी हे उनकु समझमें नहीं आयेगी. कछु करण ऐसे होवें हें, जो सिर्फ क्रियाजनक कर्मजनक या कर्तृजनक नहीं होके फलजनक होवें. जो रिज़ल्ट हे, वो करणने पैदा कियो हे. अब ये रिज़ल्ट् पैदा करवेवाले कैसे? वाकु ध्यानसु समझो. घर घरको उदाहरण तुमकु दऊं. समझो के कढ़ी हे या उपमा हे या कोई पूरी हे या कोई निरन्तर हेरफेर करते रेहवेकी या तलते बखत हिलाते रेहवेकी वस्तु हे. खाली सिगड़ीपे वाकु छोड़ देवेसु काम नहीं चलेगो. तो वो जो चमचा या कढ़ाई या या करछी हे, वो फलजनक हे. जैसे तुमकु चहिये उपमा या सीरा या कढ़ी, वा तरीकेको फल पैदा करवेवालो वो इन्स्ट्रुमेंट् हे. यदि वा इन्स्ट्रुमेंट्कु नहीं वापर्यो, खाली सिगड़ीपे रखके तुमने छोड़ दियो तो पूरी नीचेसु तल जायगी और ऊपरसु कच्ची रेह जायगी. वा उपमाकु या सीराकु तुमने हिलायो नहीं तो कढ़ाईके पैंदामें जो उपमा या सीरा हे वो चोंटके जल जायगी और ऊपरकी सीरा या उपमा कच्चो रेह जायगो. तो अपन् क्या करें? वाकु अपन् हिला-हिलाके करछीसु या चम्मचसु फल पैदा करें हें जो फल अपनूकु चहिये होय? ऐसे कछु फलजनक इन्स्ट्रुमेंट् होवें हें. ऐसे अपनो अहंकार भी फल पैदा करवेवालो इन्स्ट्रुमेंट् हे. कछु फल हे अपने जीवेको, अपने होवेको, वो फल कौन पैदा कर रह्यो हे? अहंकार. अपने संसारमें बंधवेको या अपने संसारसु मुक्त होवेको, अपने भक्ति कर्म या ज्ञान करवेको जो कछु फल हे वो फल पैदा कौन कर रह्यो हे? आत्माकु आत्माके भरोसे छोड़ दी होती, जाकु अपन् चिदंश कहें हें, तो वो क्या करती? क्या वो ज्ञानको प्रयास करती? क्या वो कर्मको प्रयास करती? क्या वो आत्मा भक्ति करती? नहीं करती. शुद्ध चिदंश आत्मा ये सारे उपद्रव करती ही नहीं. मैं बहोत सावधानीसु ज्ञान कर्म भक्ति कु भी उपद्रव केह रह्यो हूं. ऊधमके अर्थमें नहीं पर आत्माकी शुद्ध चेतनाके अर्थमें कोई भी चीज उपद्रव

हे. जैसे संसार एक उपद्रव हे, ऐसे कर्म ज्ञान भक्ति भी उपद्रव हें. माने आयो भयो कोई एक इनफ्लो हे. उपद्रवको मतलब इनफ्लो. "उपद्रवति इति उपद्रव". वाको नाम उपद्रव. आजकल उपद्रवको मतलब तूफान हो गयो हे. तूफानके अर्थमें उपद्रव नहीं पर उपद्रवको मतलब इनफ्लो. वामें इनफ्लो आयो कहांसु? ये उपद्रव भयो कैसे? अहंकारके कारण भयो. तो फलजनक भी अहंकार हो सके के नहीं हो सके, थोड़ेसे शान्त चित्तसु विचारो तो एक ये सीनेरियो भी अपने सामने आवे हे. अब जिनने परीक्षा दी होगी उनकु ये तकलीफ नहीं होनी चहिये, शरदबावाने जो प्रमेयरत्नसंग्रह किताब लिखी हे, वामें प्रतीत्यसमुत्पादवाद आरम्भवाद विवर्तवाद विकृतपरिणामवाद अविकृतपरिणामवाद ये सारे रिज़ल्ट्के मॉडल समझाये हें. फलजनक करणसु इतने सारे नेचरके रिज़ल्ट हो सकें हें.

(प्रतीत्यसमुत्पादवाद आरम्भवाद और विवर्तवाद)

प्रतीत्यसमुत्पादवाद : ये बड़ो अच्छो मॉडल हे, अपने यहांको नहीं हे. बौद्धनूको हे. या मोडलकी क्या खासियत हे? सचमुचमें पैदा कछु भी नहीं हो रह्यो हे. वो जो केलिडोस्कोप् नेचर हे वो प्रतीत्यसमुत्पादको नेचर हे. केलिडोस्कोपूमें जो डिज़ाइन पैदा हो रही हे, वो पैदा नहीं हो रही हे, पर पैदा होती भई दिखलाई दे रही हे. वामें कोई एक चीज कारण नहीं हे. मल्टीपल् कारण हें वाके. क्योंकि चूड़ीनूको रंग, शेप्, पीछेवालो दूधिया ग्लास, आगे तीन मिरर, उनकु बंद करवेवालो, ऐसे मल्टीपल् कारणनूसु वो एक डिज़ाइन पैदा हो जाय हे. वाकु बुद्ध भगवान् प्रतीत्यसमुत्पाद कहें हें. कोई चीज पैदा हो ही नहीं रही हे. कई चीजनूके इकठ्ठे होवेके कारण, अपन् यों भी केह सके के प्रतीतिको एक समुत्पाद होवे हे. वामेंसु अपनूकु ये फील् होवे हे के ये पैदा हो गयो. वो सचमुचमें हो रह्यो हे. प्रतीत्यसमुत्पाद सचमुचमें हो रह्यो हे. वस्तुत: कोई डिज़ाइन् पैदा नहीं हो रही हे. केलिडोस्कोपूमें अपन् देखेंगे

ना, आजकल तो मिलने बन्द हो गये केलिडोस्कोप्, आंख गड़ाके केलिडोस्कोप् में देखो, पर कांचमें मत देखो, आंख गड़ाके सेन्टर पॉइन्ट्पे देखो तो तुमकु दिखाई देगो के कोई डिज़ाइन नहीं है, खाली चूड़ीके चन्द टुकड़ायें हें. वहां तुमकु दिखलाई देगो के प्रतीत्यसमुत्पाद हे. डिज़ाइन पैदा होतीसी दीख रही हे पर डिज़ाइन पैदा भई नहीं हे. ये बुद्ध भगवान्‌को उत्पत्तिको सिद्धान्त हे रिज़ल्ट्को.

आरम्भवाद : ये नैयायिकन्‌को आरम्भवादको सिद्धान्त हतो या अर्थमें के सारे स्पेयरपार्टस् जोड़के, जो कोई भी अकेले स्पेयरपार्टमें ये सामर्थ्य नहीं हती के आदमीकु अपने भीतर बैठाके चहिये जहां ले जा सके. वो मोटरकी सामर्थ्य या साईकल्‌की सामर्थ्य सारे स्पेयरपार्टस्‌कु जोड़वेसु आ रही हे. इन्डीविजुअली वाके कोई भी पार्टकु देखोगे तो कोईमें भी सामर्थ्य नहीं हे पर उनके टोटल् जोड़में वो सामर्थ्य आ रही हे. ऐसे जो भी रिज़ल्ट हे, जीवनमें, नैयायिक लोग यों सोचें हें के वो कई तरहके जो मल्टीपल् कारण हें, उनके इकट्ठे होवेके कारण जोड़में वो सामर्थ्य आई हे. स्वतन्त्रतया कोई भी एकमें वो सामर्थ्य नहीं हे. जैसे मकान जो खड़ो भयो हे, वामें क्या अपन् केह सकें के कौनसी नींवपे खड़ो भयो हे? कई नींव चारों दिशान्‌में डाली जायें, उन चारों दिशान्‌के जोड़पे मकान खड़ो रहे हे. एक नींवपे खड़ो नहीं रहे. कोई भी एक नींवमें ये सामर्थ्य नहीं हे पर वो चारों दिशान्‌की नींवमें जुड़के वो सामर्थ्य आ जाये के वो मकानकु खड़ो रख सकें. याकु आरम्भवाद कहें हें. हर रिज़ल्ट् या तरहसु एक नयो आरम्भ हे. नयो आरम्भ हे जो पेहले नहीं हतो, नयो एक बिगनिंग हे.

ऐसे अहंकार अपने भीतर एक समुत्पाद् हो सके हे. "**कर्ताऽहं इति मन्यते**" (भग.गीता.३।२०) ऐसो तुम मान रहे हो. सचमुचमें कर्ता तो कोई हे ही नहीं. एक प्रतीत्यसमुत्पाद हो सके हे. प्रतीत्यसमुत्पाद

नहीं होके अहंकार सचमुचमें तुम्हारे भीतर कोई एक नयो आरम्भ कर रह्यो हे, जो सिर्फ शुद्ध चेतनामें या इन्द्रियन्‌में या देहमें या बुद्धिमें सामर्थ्य नहीं हती, तो उन सबकु जोड़के वाकी एसेम्बलीके कारण, वा एसेम्बल्ड् फिनोमिनामें वो सामर्थ्य आ गई के तुम जानाति इच्छति और यतते कर रहे हो. मॉडर्नसाइन्स् बहोत बार सारे जो अपने फन्क्शन् हें; चाहे बायोलॉजिकल्‌फन्क्शन् होंय चाहे सायकोलॉजिकल् फन्क्शन् होंय, उनमें आरम्भवादी एटीट्युड् ही एडोप्ट् करके चलें हें. जैसे इमोशन्स्‌के लिये कोई दूसरे केमिकल् सीक्रेशन् हें; अन्डरस्टेन्डिंग्‌के लिये अपने कोई दूसरे न्युरॉन् हें. इच्छाके लिये कोई दूसरे केमिकल् सीक्रेशन् हें. उन इच्छान्‌कु कोई एक्शन्‌में कन्वर्ट् करवेकेलिये कोई दूसरे इलेक्ट्रो कॅमिकल् वायब्रेशन् हें जो अपने नर्व्जस्‌में आ रहे हें और सब अलग अलग सम्पन्न हो रह्यो हे. उन सबकु अलग अलग सम्पन्न होते भयेमें कोई एक चीज रीस्पॉन्सिबल् नहीं हे. वो टोटल् मिलके एक रिज़ल्ट पैदा कर रही हे. ये आरम्भवाद हे. कमीबेशी हर बातमें मॉडर्न् साइन्स् या आरम्भवादकु ज्यादा प्रिफर करे हे. क्योंके वा तरीकेकी साइन्स्‌की एनेलेटिकल् एप्रोच् होवे हे. ऐसे ही अपनो अहंकार अपने भीतर एक नयो आरम्भ पैदा कर रह्यो हे के अपन् कर्ता हो जा रहे हें. एक वो सिच्युएशन् भी फलके जननकी अपन् समझ सकें हें.

प्रश्न : प्रतीत्यसमुत्पादवाद और आरम्भवादल में जो आपने मल्टीपल् कॉज़ेज़ बताये वो एक नहीं लग रह्यो हे?

उत्तर : प्रतीत्यसमुत्पादमें वो रिज़ल्ट् फिक्टीशियस् हे मात्र एपीयरेन्स् हे. आरम्भवादमें सचमुचमें पैदा हो रह्यो हे. समुत्पादमें जो रिज़ल्ट हे वो एपीयर हो रह्यो हे पर हे नहीं. आरम्भवादमें एपीयर नहीं हो रह्यो हे पर पैदा हो रह्यो हे. तुम ऐसे नहीं कहोगे कि हमकु लग रह्यो के कारको एपीयरेन्स् हे. आप कारमें चढ़ सको हो. कारमें बैठ सको हो. कारकु ड्राईव कर सको हो तो वो प्रतीत्यसमुत्पाद

नहीं हे. वहां कारमें सचमुचमें वो सामर्थ्य पैदा हो गयो हे जो सिर्फ चार टायरनूमें या स्टेयरिंगूमें या गियर सिस्टम्में या ब्रेक् सिस्टम्में नहीं हतो या पैट्रोल्में नहीं हतो. पर सबकी एसेम्बली होवेके बाद वामें वो सामर्थ्य आ जाय हे. आरम्भ हो जाय हे जो तुमकु बैठाके कहीं ले जा सके हे. प्रतीत्यसमुत्पाद्में भी मल्टीपल् कॉज़् हें, आरम्भमें भी मल्टीपल कॉज़् हें, पर वहां मल्टीपल कॉज़्के कारण सिर्फ रिज़ल्ट् एपीयर हो रह्यो हे. आरम्भवादमें रिज़ल्ट् एपीयर नहीं हो रह्यो हे पर रिज़ल्ट् पैदा हो रह्यो हे. ऐसे अपनो अहंकार अपने भीतर कोई फ्रेश् रिज़ल्ट् पैदा करे हे, वो भी एक पॉसिबिलिटी अहंकारकु करण मानवेपे अपन् सोच सके हें.

विवर्तवाद : ये शंकराचार्यजीवालो मॉडल् हे. शंकराचार्यजी क्या कहें हें के सीपपे जैसे चांदीको भास होवे हे; रस्सीपे जैसे सांपको भास होवे हे; ऐसे तुमकु अपनी चेतनामें अहंको मिथ्याभास हो रह्यो हे. एक मजेदार बात बताऊं. बहोत सारे शांकरवेदान्तके शौकीननूकु ये भ्रमणा हे के शंकराचार्यजीने अपने साधनाके प्रकारमें अहंब्रह्मास्मिकु बहोत एम्फेसाईज़ कियो हे. अक्सर ज्ञानमार्गीय उपदेशक भी या बातकु केहते रहे हें "हम अहंकी प्रधानतासु उपदेश दे रहे हें. अहंकु ब्रह्म जानो मूर्तिकु ब्रह्म मत जानो. अपने आपकु ब्रह्म जानो. मूर्तिकु ब्रह्म मत जानो. मूर्ति तो जड़ हे, पत्थर हे, धातु हे" वगेरह वगेरह. पर शंकराचार्यजीके मतमें अहं ब्रह्ममें पैदा होती भ्रान्ति हे. एग्ज़ेक्ट उतनी ही जितनी मूर्तिको सत्य होनो भ्रान्ति हे. मूर्ति जैसे रामकी, कृष्णकी, शिवकी भ्रान्ति हे, अपनेकु दिखलाई दे रही हे पर हे नहीं. रस्सीपे जैसे सांप दिखलाई दे हे. ऐसे वो राम कृष्ण शिव की मूर्ति अपनकु दिखलाई दे रही हें पर वस्तुतः वो भगवान् हें नहीं. कोई न कोई कारणनूसु अपनूने कोई न कोई रिज़ेंब्लेन्स् खड़े कर लिये हें और शिवकी मूर्तिकु भगवान् शिव समझ रहे हें; विष्णुकी मूर्तिकु विष्णु समझ रहे हें; असलमें कोई विष्णु हे नहीं. वो तो

खाली आभास हो रह्यो हे जैसे के रस्सीपे सांपको आभास होवे. पर एग्ज़ेक्टली वो जितनो मिथ्या हे उतनो ही मिथ्या शांकरमतमें अहं भी हे. अपनी चेतनामें अहं भी वाही तरहसु भास रह्यो हे जैसे ब्रह्ममें मूर्तिको भास हो रह्यो हे. तो उनके यहां ब्रह्म हे ही नहीं. जो अहं हे सो ब्रह्म नहीं हे और जो ब्रह्म हे सो अहं नहीं हे. हे ही नहीं वो तो उनने एक अहंको बहाना बना रख्यो हे. तो कभी भक्तिमार्गीयनूकु, अपनेकु खास, ऐसे **'ब्रह्मास्मि'** उपदेशसु विचलित नहीं हो जानो चहिये. याकु अच्छी तरहसु समझके रखनो चहिये. अगर हमारी मूर्ति मिथ्या हे तो तुम्हारो अहं कौनसो सच्चो हे? रही बात ब्रह्मकी तो ब्रह्म तो तुम्हारे भी हे और हमारे भी हे. दोनोंके कॉमन् हें. वामें कोई घबरावेकी जरूरत नहीं हे. ब्रह्म उनको भी हे अपनो भी हे. पर अहं उनके यहां मिथ्या हे एग्ज़ेक्टली उतनो ही जितनी मूर्ति मिथ्या हे. या रहस्यकु अपनकु समझके रखनो चहिये. तो वो विवर्तवाद हे. अपनी चेतनामें अहं एक विवर्त हे. ऐसो भी अहंकारको एक नेचर हो सके हे. याकी एक पॉज़िटिव् साइडकु देखवेको प्रयास करोगे जो के बहोत खूबसूरत हे. बहोत सारे विवर्त अपन् नाक मौंह सिकोड़के विवर्त बोले हें करके अपनूकु घृणा आ जाय के अरे ये विवर्त हे, भ्रान्ति हे रस्सीपे सांपके जैसी और ज्ञान होवेसु निवृत्त हो जायगो. अरे भई! ध्यानसु देखो के तुम कांचमें अपनो रिफलेक्शन् देखो तो वासु लिपस्टिक लगा सको हो. वामें देखके तो तुम तिलक लगा सकोगे, तुम मंजन कर सकोगे, तुम दाढ़ी बना सकोगे. विवर्त है यासूं ऐसो नहीं हे कि वाकी यूटीलिटी नहीं हे. विवर्तकी तो मॅक्ज़िमम् यूटीलिटी हो सके हे. यदि आपकु थोड़ोसो ख्याल होय तो कोई टेलीस्कोप् बिना विवर्तके हो ही नहीं सके हे. कोई ग्लासमें, कोई भी लेन्स्में इतनी सामर्थ्य नहीं हे के वो विवर्त पैदा किये बिना अपनूकु दूरकी चीजकु पास दिखा सके. दूरबीन देखी होंयगी आपने, ऐसे एक डट्टा यों होवे और एक डट्टा यों होवे; तो वहां पेहले लाईटको आके रिफ्लेक्शन्

पड़े, फिर यहां रिफ्लेक्शन् पड़े; फिर यहां रिफ्लेक्शन् आवे. तो विवर्त तो वहां हे ही. दूरबीनमें तो रिफ्लेक्शन् ही काम करतो होवे हेतो वहां भी विवर्त हे. ऐसो नहीं हे के विवर्तके नामसु अपनूकु दु:खी हो जानो चहिये. विवर्तके भी बहोत सारे सदुपयोग हो सके हें, नहीं हो सकें ऐसी बात नहीं हे. अहं भी विवर्त होय; समझो अपनो अहंकार एक भ्रान्ति हे चेतनामें, तो वा चेतनामें पैदा भई भ्रान्तिको सदुपयोग नहीं हो सके हे ऐसी बात नहीं हे. जैसे अपनो चेहरा कांचमें देखके मंजन करें, टीकी लगावें, दाढ़ी बनावें, ऐसे वा अहंमें अपनी चेतनाके पड़े भये रिफ्लेक्शन्सु अपन् बहोत सारे काम, पाप-पुण्यके, भले-बुरेके कर सकें हें. तो जैसे वहां अहंमें कर सकें हें, ऐसे ही मूर्तिमें भी कर सकें हें. ऐसी कोई बात नहीं हे. या रहस्यकु अपनूकु समझनो चहिये.

(विकृतपरिणाम और अविकृतपरिणाम)

विकृतपरिणामवाद मैंने आपकु बतायो के जैसे दूधमेंसु दही बन जाय, ऐसे कोई न कोई कारणसु अपनी चेतना सचमुचमें कर्ता नहीं हती, महाप्रभुजीके हिसाबसु चेतना निष्क्रिय हे, चेतना अपनी कर्ता नहीं हे पर निष्क्रिय हे पर क्योंके अहंको जामन वामें मिल्यो तो दहीकी तरह कर्ता बन जाय. जैसे ही दूधमें तुमने जामन डाल दियो, दूधमें तुमने नींबूकी बूंद डाल दिये और वो जैसे दही बन जाय, ऐसे तुमने चेतनामें अहंको जामन डाल्यो और वो निष्क्रिय चेतना पाछी विकृतपरिणामके मॉडलसु कर्ता हो सके हे.

एक दूसरो मॉडल अविकृतपरिणामवादको जो महाप्रभुजीको प्रिय मॉडल हे. जैसे सोनामेंसु गेहना बन जाय वो सोनाकु/सोनापन खोके गेहना नहीं बने हे. सोना तो रहेवे ही हे एट्र द सेम् टाईम् वो गेहनाको नाम रूप और फन्क्शन् भी ग्रहण कर ले हे. अविकृतपरिणाममें भी अहंकार या तरीकेको एक करण हे जो आपकी चेतनाकु अचेतन

नहीं बना रह्यो हे. अहंकारके कारण आपकी चेतना अकर्तामेंसु कर्ता बन जा रही हे जैसे सोनामेंसु गेहना बन जाय. या तरीकेको एक मॉडल अहंकारके करणको भी हो सके हे. ये तो अपनूने सहस्रशीर्षदेवकु, यदि अहंकारकु सिर्फ करण मानें तो कितनी पोसिबल वेराइटी हो सकें हें. याके बाद क्रिया मानें तो, कर्ता मानें तो वो मैं आपकु कल बताऊंगो. ये तो सिर्फ करण मानें के अहंकार करण हे तो इतनी सारी पॉसिबिलिटीस् अपने सामने विचारके लिये खड़ी हो रही हें और कितनी खूबसूरत हें. या अहंकारकु हम जितनो लाइटली लेवें हें और वो शेरमें कैसे कह्यो हे **''फुरसत किसे थी कि कोई मेरे हालात पूछता.''** अहंकार भी रो रह्यो हे आपके सामने के जा अहंकारकु आप निरंतर वापर रहे हो वा अहंकारके हालात क्या हें आपके भीतर, कभी आपने पूछ्यो? **''फुरसत किसे हे के जो मेरे हालात पूछता. हर शख्स मेरे बारेमें कछु सोचता मिला.''** हर व्यक्ति अहंकारके बारेमें कछु कछु सोच रह्यो हे. कभी फुरसत निकालो और अहंकारसु पूछो के तेरे क्या हाल हें? इनमेंसु तू क्या हे? तू कौन हे? तू कैसे काम कर रह्यो हे? क्या काम कर रह्यो हे बता तो सही? हमकु तो बता हम तो तेरे दोस्त हें. तो बतायेगो तुमको अहंकार. वाके हालात पूछो जाके 'मजामां?' तो अहंकार क्या बोलेगो? हालातकु सोचते रहोगे और अहंकारसु वाके हालात नहीं पूछोगे तो तो गड़बड़ तो होयगी और होयगी और होयगी ही. तो फुरसत निकालो और पुष्टि-अस्मिताको कार्यक्रम हे, वा अस्मिताको भी अहंकार हे. तो थोड़ी फुरसत निकालो. हालात पूछो. ये हालात पूछोगे तो पुष्टि-अस्मिताकी भी आपकु कछु न कछु इन्फॉरमेशन् मिल ही जायगी. **''हर शख्स मेरे बारेमें सोचता मिला.''**

अब आपकु कोई डिफिकल्टी होय तो आप जरूर पूछो.

प्रश्न : जेजे लास्टमें विकृतपरिणामवादमें और अविकृतपरिणामवाद

में आपने बतायो जो अपनी निष्क्रिय चेतनामें भी यदि अहं मिलायो तो चेतना कर्ता बन सके हे और अविकृतपरिणामवादमें भी चेतना ही कर्ता बन सके हे तो उन दोनोंनूमें डिफरेन्स् क्या रह्यो? विकृतपरिणामवादमें उदाहरणसु देखें तो दूधको दही बननो. दही बादमें दूधमें परिणत नहीं होवे हे. यासु अपन् विकृत केहवें हें. सोनाको गेहना वापिस सोना बन सके हे क्योंके वो अविकृत हे. ऐसे ही अपनी निष्क्रिय चेतना, अहंमें मिलवेके बाद कर्ता बन रही हे. वाकु यदि अपन् विकृत केह रहे हें तो अविकृतपरिणामवादमें भी अपनी चेतना अविकृततया कर्ता कैसे बन रही हे?

उत्तर : सबसु पेहले तो ये बात समझो के ये जो मैंने टेबल् बतायो, ये सिद्धान्तके तौरपे नहीं बतायो, डिफरेन्ट् पॉसिबिलिटीज़् क्या हें, उनकु एक्स्प्लोर करवेके लिये बतायो हे. वो तो एक्स्प्लोर करवेके लिये मैंने आपकु कुछ कुछ सैद्धान्तिक बेकराउन्ड्में कोई एक्स्प्लेनेशन् दिये हें. इनमेंसु मैं कछु भी बात यों नहीं केहनो चाह रह्यो हूं कि ये सिद्धान्त हे. ये तो जब अपनूकु अहंकारको नेचर और फन्क्शन् एक्स्प्लोर करनो हे, वा सहस्रशीर्ष देवको, वा अनन्त नाम कर्मकू धारणकरवेवाले देवको जा बखत अपनूकु दर्शन करनो हे, तो पॉसिबिली क्या क्या हें ये अपन् दर्शन कर सकें हें, वाके पॉसिबल् ऑल्टरनेटिव् मैंने सिर्फ यहां टेब्युलेशन् फार्ममें बताये हें. यामें कोई सैद्धान्तिक रूपसु नहीं बताये हें. इनमेंसु सचमुच अपन् क्या मानें हें, ये तो अपन् शांतिसु छे-सात दिन बैठके सोचेंगे ना! ये तो अपनूकु क्या क्या हो सके हे, वा बातको चिन्तन बतायो हे. क्या हे वाको नहीं बतायो हे. अब तेरी बातपे तू आ. फिर मैं बताऊं. हां.

प्रश्नकर्त्री : मैं तो उदाहरणसु कोरिलेट् कर रही हती के निष्क्रिय चेतना विकृततया और अविकृततया दोनों अवस्थानूमें कर्ता कैसे बन रही हे?

उत्तर : चेतनाकु महाप्रभुजी निष्क्रिय माने हें. क्यों? क्रियाजनन वाकी खुद नहीं होवे हे. क्रियाको सोर्स् वो खुद नहीं हे. बस इतने अर्थमें निष्क्रिय माने हें. पर वा चेतनाके भीतर बैठ्यो भयो अन्तर्यामी निष्क्रिय नहीं हे. **''एष ह्येवैनं साधुकर्म कारयति तं यमेभ्यो लोकेभ्य उन्निनीषत एष उ एवैनम् असाधुकर्म कारयति तं यमधो निनीषते''** (कौषि.उप.३।८) तो चेतना अपने आपमें निष्क्रिय होते भये भी वा चेतनाके माध्यमसु प्रकट नहीं हो सके हे, उतनी ही इन्ट्रांजिक् नेचरकी जितनी वाने खुदने करी होय. समझो अपन् ऊपरके ग्रहन्मेंसु टेलिस्कोप लगाके पृथ्वीमें देखते होंय और यहां इतनी सारी कार दौड़ती दीखें तो वो लोग क्या समझेंगे के ये सब जानवर हें जो चींटी मकौडाकी तरह दौड़ा-दौड़ कर रहे हें. उनकु कार थोड़ेही समझमें आयेगी! अब अचानक कोई पेसेन्जर कारमेंसु निकलके बाहर आयो तो वो समझेंगे के कारकी आत्मा निकल गई और ये कार मर गई. ऐसे नहीं समझ सकें? बाहरसु देखते भयेकु क्या पता चले जो कार और कारमेंसु निकले भये प्राणी को सम्बन्ध क्या हे? ऐसे भी तो हो सके ना! तो अपनी चेतना कारकी तरह हे. वो अन्तर्यामी कारमें पेसेन्जरकी तरह हे. तो कारमें सवार कारकु चला रह्यो हतो पर बाहरसु देखवेवालेकु तो कार ही चलती दीखेगी ना! भीतरसु अन्तर्यामी चला रह्यो हे. वाकी जैसी फीलिंग होयगी तो अपन् जब चींटीकु देखें तो क्या वैसी फीलिंग अपनूकु नहीं होवे? मैं तो जब भी चींटीकी पक्तिं चलती देखुं ना, तो मोकु बम्बईकी कारकी ट्रैफिक् याद आवे कि ये सब चीटीयें चल रही हें उनके भीतर भी कोई पेसेन्जर नहीं बैठ्यो होयगो याकी गेरन्टी क्या! कछु बाहर निकल नहीं रह्यो हे करके अपनूकु नहीं लग रह्यो हे. अगर कोई बाहर निकल जाय तो अपनूकु लगे कि ये याकी कार हे और ये याको सवार. याहीलिये महाप्रभुजी कहें हें के ये रथी, रथ और सारथी के भावसु ये सब या रथमें बैठे भये हें. या रथमें आत्मा रथी हे पेसेन्जर् हे, अन्तर्यामी भगवान्

सारथी हें ड्राईवर हें और रथ अपनूकु चलतो भयो दीख रह्यो हे. पर चल रह्यो हे काहेके कारण? वाको रथी कौन हे, वाको सारथी कौन हे? वो तो अपनूकु पता नहीं चले ना? अब अपन् कहें के रथभी निष्क्रिय हे. रथ निष्क्रिय क्यों हे? क्योंके रथी और सारथी वाकु चला नहीं रहे हें. रथी और सारथी रथकु चलायें तो वहां क्रिया भी तो पैदा हो ही सके हे ना! तो निष्क्रियको ये मतलब नहीं के वामें क्रिया प्रकट नहीं हो सके हे; वामें क्रिया तो प्रकट हो ही सके हे. अब वो खुद सोर्स् नहीं हे वा क्रियाको. पर कहीं वाको सोर्स् तो हो ही सके हे! देखो ये बात तो अपन् पंखापे भी तो लागू कर सकें हें! पंखा खुद थोड़े ही चल रह्यो हे. बिजली चल रही हे. पर बिजली चल रही हे पंखाके चलवेके रूपमें. अब अपनूकु बिजली चलती कहां दीखे हे! चलतो क्या दीखे अपनूकु? पंखा!. वाके भीतर सारथी बनके कौन चल रह्यो हे? बिजली. अब इतनेसे अपराधके कारण पंखाकु यों कह्यो जाय के पंखा चल नहीं रह्यो हे, तो वो एक एन्गल् हे. प्रतीत्यसमुत्पादको एन्गल् हो सके हे, आरम्भवादको एन्गल् हो सके हे, विवर्तवादको एन्गल् हो सके हे, विकृतपरिणामवादको एन्गल् हो सके हे. ऐसे ही अविकृतपरिणामको भी तो हो सके हें ना! क्योंके पंखाकी हकीकत ही ऐसी हे के बिजलीको जो कन्डक्टर होय, तभी तो पंखा हे. आश्रयको पद गाके आजको सत्र पूरो करें.

oooooooo

(पूर्वदिवसीय सिंहावलोकन)

या कारिकाके ऊपर गये बरस जो अपनूने विचार कियो हतो वाके बाद फिर जो कुछ अन्य पेहलु अपनूकु विचारने हते, वो अपनूने कल सोचे. मूलमें कल दो बात आपकु खास बताई हती. एक ये बात बताई हती **''कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्.''** दीनभावना रखनी, अहंकार नहीं करनो और मानकी अपेक्षा नहिं रखनी. या श्लोकके ये तीनों ही चरण एककी एक बातकु रिपीट् करतेसे लग रहे हें. याको क्या रिलेशन् हे वो अपनूकु सोचनो हे. साथमें एक बात ये भी बताई हती के जैसे यहां रिपीटेशन्‌सो लग रह्यो हे वाही तरहसु ललितवर्माकी कविता अनुसार अहंकारमें भी यह प्रोब्लेम् दीख रह्यो हे. वाको क्या समाधान? साथ साथ आपकु ये भी बतायो कल के यहां जो **''अहंकारं न कुर्वीत''** कह्यो और साथ साथ भागवतमें अहंकारकु **''सहस्रशिरसं साक्षाद् यम् 'अनन्तं' प्रचक्षते.''** केहके ग्लोरिफाई भी बहोत कियो गयो हे. इन सबनूकु देखते भये वो अहंकारके नेचरमें भी पाछो कुछ पेरोडोक्स् विरोधाभास सो दिखाई देवे हे. या पेरोडोक्स्‌को नेचर कल अपनूने देख्यो और वाकु रिज़ोल्व् अपनूकु करनो हे. अगर रिज़ोल्व् नहीं करें तो विरुद्धधर्माश्रयता स्वीकारनी पड़ेगी. पर कुछ न कुछ निष्कर्ष तो अपनूकु वाको लानो ही पड़ेगो.

(अहंकारको स्वरूप सहस्रशीर्षता/अहंकार एक मस्तक अनन्त)

सबसु महत्त्वपूर्ण बात यामें ये हती के जैसे विराटपुरुषकु **''सहस्रशीर्षाः पुरुष''** कह्यो गयो **''सहस्रशिरसं साक्षाद् यम् अनन्तम् प्रचक्षते''** कह्यो गयो. यहां 'सहस्र' हजारके अर्थमें नहीं हे पर अनन्तके अर्थमें हे. अनन्त वाके मस्तक हें. अपन् याकु ऐसे समझ लें के जैसे हिमालयके कितने सारे शिखर हें; वो सारेके सारे शिखर हिमालयके हें. अब कोईने वाकी काउन्टिंग करी हे के नहीं करी पर हिमालयकी रेन्ज् देखें तो वामें बहोत सारे शिखर हैं जैसे नन्दादेवी मत्स्यपुच्छ कांचनजंघा

कैलाश वगेरह वगेरह. तो अनेक शिखरवालो हिमालय अनेक नहीं हे. अनेक शिखर होते भये भी हिमालय एक हे. ये बात तो अपन् कमसु कम समझ सकें हें. या तरहसु अनेक शिर होते भये भी अहंकार एक हे और एक अहंकारके अनेक शिर हें. ये बात कल अपनूने देखी. अनन्त वेदको भी एक केरेक्टर हे. **'' 'अनन्त'शब्दः काले, संकर्षणे, शेषे च प्रवर्तते''** (सुबो.३।२६।२५). शेषनाग काल और रुद्र कु भी 'अनन्त' कहें हें. वा अर्थमें अपने यहां बलरामजी भी अनन्त हें. कुछ ऐसे अहंकारके गुणधर्म हें जो प्रभुके बहोत इन्टिमेट् पेहलुसु शेयर करवेवाले गुणधर्म हें. पाछो वो जो **''अहंकारं न कुर्वीत''** केह रहे हें वाके कारण वा विरोधाभासकु कैसे समझनो?

(अहंकार संकर्षणकोरूप)

यहांकी सुबोधिनीको थोड़ोसो कोटेशन् मैं लायो हूं जो या संदर्भमें अपने मनन करवे लायक हे. वामें मैं यहां जो सुबोधिनीको कोटेशन् लायो हूं वामें ये खुलासा नहीं हें पर वहां (अन्यत्र) सुबोधिनीमें बहोत अच्छे अच्छे खुलासा किये गये हें. वो जब प्रसंग आयगो तो देखेंगे फिरसु. वहां ये बात कही गई हे **''संकर्षणः स्वभावतो अयं तामसः प्रलयकर्ता च. अहंकारेण उत्पादितं नाशकमेव''** (सुबो.३।२६।२५). काल जैसे हर चीजकु उपसंहृत कर दे हे ऐसे अहंकारसु पैदा भई सब चीज भी पाछी फिर कहीं न कहीं टरमिनेट् हो जाती होवें हें. वा अर्थमें अहंकारको, काल या संकर्षण होवेको नेचर हे. ये बात अपन् अपने व्रजलीलाके प्रसंगमें दाऊजीमें भी देख सकें हें. जहां जहां असुरन्‌को मार्यो हे तो दाऊजीने मार्यो हे या यदि ठाकुरजीने भी मार्यो हे तो संकर्षणव्यूहके आवेशके साथ मार्यो हे. कोई चीजकु टर्मिनेट् करनी हे, कोई नामकु, कोई रूपकु, कोई कर्मकु तो वामें संकर्षणको मेजर रोल् हे. ऐसे ही कोई चीजकु टर्मिनेट्‌वर्दी बनानो होय तो अहंकारको मेजर रोल हे. वहां महाप्रभुजीने ये बात बताई. भगवान् भी गीताजीमें ये बात बतावें हें **''यस्य**

न अहंकृतो भावो बुद्धिर् यस्य न लिप्यते हत्वापि स इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते'' (भग.गीता.१८।१७). अहंकारके बिना यदि कोई कर्म कर रहे हें तो वो कर्म अपनकु टर्मिनेट् नहीं कर दे. पर अहंकारके साथ यदि अपन् कोई कर्म कर रहे हें तो वो अपने लिये एक तरहको टर्मिनेटिंग् कर्म हो जाय हे कोई न कोई अर्थमें अपन् खतम होवे हें. खतम होवें हें कौनसे अर्थमें? देहके अर्थमें नहीं पर कोई न कोई अपने कर्मको औचित्य अच्छो होते भये भी खतम हो जाय हे. जैसे **''सर्वान् बलकृतान् अर्थान् अकृतान् मनुर् अब्रवीत्''** (मनु.स्मृ.८।१६८). ऐसे कह्यो जाय हे के बलसु या जबरीसु करायो गयो कोई भी काम, कियो या न कियो गयो, इकसार होवे हे. ऐसे अहंकारसु किये गये कामन्के लिये यों नहीं कह्यो गयो हे के अहंकारसु किये गये काम किये या अनकिये बराबर हें. पर एट द सेम् टाईम् ये बात तो बताई ही गई हे के अहंकारसु किये भये काम कभी सुखद नहीं होवें हें शुभ नहीं होवें हें. अपनकु प्रभुके तरफ ले जावेवाले नहीं होवें हें. अब प्रभुकी बात थोड़ी देरके लिये छोड़ भी दें तो जो अहंकारसु किये भये कर्म हें, वो अपने कर्मकी एक जो गरिमा हे, वा गरिमाकु खंडित करवेवाले होवें हें. ऐसे बहोत सारे वहां कॉमन् फीचर बताये हें जिनके कारण ये बतायो हे के अहंकार या अर्थमें काल या संकर्षण को रूप हे. संकर्षणको मतलब अच्छी तरहसु खींचके खतम करवेवालो. दाऊजीके श्रीहस्तमें या लिये हल-मूसल बिराजे हे के हलसु खीचें हें और मूसलसु मारके खतम करें हें. हल-मूसलकु आयुध तरीके उपयोग याही अर्थमें के ''संकर्षणः हलेन् कर्षति मूसलेन् निवारयति.'' हल और मूसल याही लिये माने जायें के दाऊजीकु संकर्षणको रोल अदा करनो हे. वा लिये वो आयुध हें. जैसे अपने ठाकुरजीके आयुध हें शंख चक्र गदा और पद्म. उनको भी कीर्तनन्में जैसे बतायो जाय **''पद्म धर्यो जन तापनिवारण गदा धरी दुष्टन् संहारन.''** (जन्मा.वधा.).

(चार्ट.२)

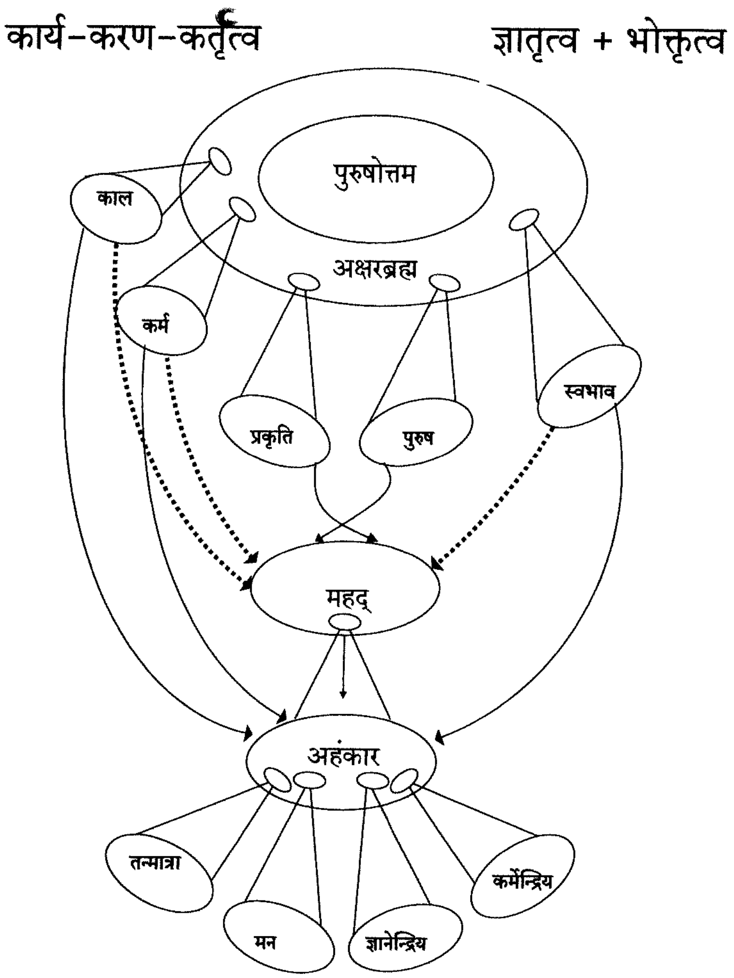

(पुरुषएव संकर्षण)

आचार्यचरण कहें हें **''सा काचिद् अन्या देवता भविष्यति इति आशंक्य आह 'पुरुषम्' इति. पुरुषएव संकर्षणः नतु मूलभूत: काल:''** (सुबो.३।२६।२५). संकर्षणके कई स्वरूप हो सकें हें. काल रुद्र और वेद कु भी 'संकर्षण' कह्यो जाय, अपने दाऊजी भी संकर्षण हें. तो यहां कौनसे अर्थमें 'संकर्षण' हे? वामें आचार्यचरण यों खुलासा कर रहे हें के यहां पुरुष ही संकर्षण हे मूलकाल नहीं. आचार्यचरण ये बात समझा रहे हें के पुरुष ही एक स्टेजपे जाके संकर्षण बने हे मूलकालको यहां संदर्भ मत समझियो. **''तस्य त्रिविधाहंकाराधिष्ठातृत्वाय रूपत्रयम् आह भूतेन्द्रियमनोमयम्''** और ये पुरुषके तीन तरहके अहंकार होवें हें, वाके लिये भागवतमें ये कह्यो **''भूतेन्द्रियमनोमयम्''** अहंकारको ये पेहलु मैं आज आपकु विस्तारसु समझानो चाह रह्यो हूं. ये विषय ऐसो नहीं हे जो के मैंने पेहले आपकु नहीं समझायो होय. मैं समझुं के कोई न कोई बहानेसु कमसु कम पांच छे बार तो ये विषय जरूर समझायो ही होयगो , पर जब भी समझायो हे तो वो कोई न कोई अन्य संदर्भनूमें समझायो हे. अहंकारके संदर्भमें नहीं समझायो हे. आज अपनूकु या विषयकु पाछो अहंकारके संदर्भमें देखके विषयकु भी रिफ्रेश् कर लेनो हे और अहंकारकी प्रोपर प्लेसिंग् भी समझनी हे. वाको प्रोपर् ओरीजिनेशन् क्या हे वो समझनो हे.

(सृष्टि अक्षरब्रह्ममें पुरुषोत्तमकी आत्मक्रीड़ा)

अपन् या बातकु हर बखत सोचते और सुनते आये हें के सारी सृष्टि अक्षर-पुरुषोत्तमको आत्मविकास हे, आत्मक्रीड़ा हे, आत्मरति हे. एकदम स्पेसिफिक् शब्दनूमें केहनो होय तो ये सारी सृष्टि अक्षरब्रह्ममें पुरुषोत्तमकी आत्मक्रीड़ा हे. क्योंके **''मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिद् अस्ति धनञ्जय!''** (भग.गीता ७।७). जैसे भगवान् कहे हें और ये बात भी कहें हें **''मयि सर्वम् इदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव. रसो अहम् अप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययो:''** (भग.गीता.७।७-८). तो जो कछु भी हे वो भगवान्के द्वारा प्रवर्तित हे, वो भगवान्के द्वारा लियो भयो रूप हे. अक्सर जैसे मैं कोट् करतो रहूं **''भूमिर् आपो अनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च. अहंकार इति इयं मे भिन्ना प्रकृति: अष्टधा:''** (भग.गीता.७।४). तो अहंकार भगवान्को एक रूप हे. ये बात भी अपन् हर बखत देखते आये हें.

वा संदर्भमें याकी प्रोसीजर क्या हे? वापे फिरसु थोड़ोसो ध्यान देनो पड़ेगो. याकु आप ऐसे समझो पुरुषोत्तमको धाम अक्षर हे. पुरुषोत्तम सारी क्रीड़ा नित्यलीला या सृष्टिकी लीला अक्षरमें ही करे हे. अपन् या बातकु अच्छी तरहसु जानें हें के अपन् श्रीठाकुरजीकु जा सिंहासनपे पधरावें हें वाकु अपन् अक्षरब्रह्मात्मक मानें हें. अपने हृदयमें प्रभुको प्राकट्य होवे हे, तो हृदयकु भी अक्षरब्रह्मात्मक मानें हें. जैसे ''ब्रजमें ठाकुरजी प्रकटे'' जब यों कहे हें, तो वा ब्रजकु भी अपन् अक्षरब्रह्मात्मक मानें हें. अब जब सब ही अक्षरब्रह्मात्मक हे तो यामें इनकी स्पेशियल् अक्षरब्रह्मात्मकता क्या? तो एक सीधीसी बात ये हे के हवामें नमी तो होवे ही हे पर बरसे तो वो कोई स्पेशल प्रवाहीरूप पानी ही. हवामें नमी हे तो हे पर जहां बरस रह्यो हे वहां वो अपनूकु नोटवर्दी होवे हे, जहां बरसे नहीं हे वहां नोटवर्दी नहीं होवे हे. वैसे जहां नोटवर्दी भयो हे वहां वाकी अक्षरब्रह्मात्मकता विशेष कही जा रही हे. दूसरे ठिकाने अक्षरब्रह्मात्मकता नहीं हे, ऐसे तो कैसे कह्यो जा सके हे! कोई भी वस्तु अक्षरब्रह्मके बाहर नहीं हे क्योंके सारी सृष्टि अक्षरब्रह्ममें प्रकटी हे. अक्षरब्रह्मके बाहर कछु हे नहीं. हे सब कछु अक्षरब्रह्ममें ही मगर जहां प्रभुको संदर्भ बतायो जाय हे, वहां **''प्रभुत्वेन हरौ: स्फूर्तौ लोकत्वेन तदुदभव:''** (त.दी.नि.२।१०२). ये महाप्रभुजी कहें हें. जहां भी प्रभु प्रकट हो रहे हें वहां लोक तरीके अक्षरब्रह्म स्पेशियली प्रकट होवे हे. सब जगह हे ही पर अप्रकट हे, पर वहां स्पेशियली अक्षरब्रह्म तरीके प्रकट होवे हे.

माने अपने हृदयमें प्रभु प्रकटें तो अपने हृदयमें भी अक्षरब्रह्म प्रकट होवे हे. सिंहासनपे ठाकुरजीकु पधरायें तो सिंहासनमें भी अक्षरब्रह्म प्रकट होवे हे. वा एक्स्टेंट् तक के जहां भी प्रभु बिराजें हें वहां अक्षरब्रह्मरूप धाममें ही बिराजें हें. "**तद्धाम परमं मम**" (भग.गीता.१५।६). अक्षर मेरो धाम हे. ये बात कही गई हे. याही अर्थमें सिद्धान्तमुक्तावली जिनने पढ़ी होयगी उनकु या बातको ख्याल होयगो के जीवकु भी अक्षरब्रह्मात्मक मान्यो हे. क्योंके जीवमें प्रभु अन्तर्यामीरूपसु बिराज रहे हें. तो जीव अन्तर्यामीके बिराजवेके कारण अक्षरात्मक हो जाय हे. अब अक्षरात्मक कौनसो जीव होवे हे? जाकु अन्तर्यामीको बोध होतो होय; नहीं तो अक्षरात्मक बोध नहीं होयगो (अक्षरात्मकता अनुभूत नहीं होयगी). देखो! वाकी डिफिकल्टी समझो, यामें बहोत पॅरोडोक्सिकल् बात हे; जीवकु अपन् कहें हें तिरोहितानन्द और अक्षरब्रह्म तिरोहितानन्द नहीं हे. अक्षरब्रह्मकु तिरोहितानन्द नहीं कह्यो जाय हे. वाकु तो गणितानन्दकम् कह्यो जाय हे पर आनन्द तो हे ना! यासुं तिरोहितानन्द तो नहीं हे, सच्चिदानन्द ही हे. "**सच्चिदानन्दकं बृहत्**" (सि.मु.३) हे. अब जीवके रूपमें देखो तो अक्षरब्रह्म तिरोहितानन्द हे. वोही जीवकु अक्षरब्रह्मके एन्गल्सु देखें तो तो वहां आनन्द प्रकट हो रह्यो हे पर अक्षरब्रह्मके एन्गल्सु देखनो कब मिलेगो? जब अपनूकु अन्तर्यामी हृदयमें दीखतो होय तो जीवमें आनन्दात्मकता दीखेगी, नहीं तो जीवमें आनन्दात्मकता नहीं दीखेगी.

ये बात बिल्कुल वाही ढंगकी हे के जैसे अपन् कोई भी फिल्मीगीत ले लें तो अपनूकु गीतके शब्द ही तो सुनाई पड़ें, पर सा रे ग म प ध नि सा (सुर) थोड़े ही सुनाई पड़े? यदि गीतमें सा रे ग म सुनाई देतो होय, तो अपने कानकु वाकु पेहचानवेकी सामर्थ्य होय के या गीतमें कहां सा रे ग म आयो, तो वामें अपनूकु रागात्मकता दीखेगी, नहीं तो गीतात्मकता दीखे. जैसे ही सा रे ग म अपनूकु पता चल्यो तो तुरत राग मिल जाय. सा

रे ग म पता नहीं चल्यो और गीत ही पता चल्यो तो राग वामें कौनसो हे वो पता नहीं चले. वोही रागको मतलब आनन्द हे. "रंजयति इति 'रागः'" जो खुश करे वाको नाम 'राग'. राग वामें प्रकट कब होवे जब अपनूकु स्वरबोध होवे. गीतमें अन्तर्यामीकी तरह बिराजमान जो स्वर हें उन् स्वरनूको अपनूकु ज्ञान होतो होय, तो तुरत राग प्रकट हो जाय. जब सुर पता चल जायें, वो फिल्मीगीतमें ही नहीं कहीं भी जब तुम मारू-विहाग सुनोगे ना तो तुरत पता चल जायगो के ये मारू-विहाग हे. सुर पता होवे तो राग पता चले नहीं तो राग पता नहीं चले. ऐसे ही अन्तर्यामी पता होय तो सच्चिदानन्दात्मकता वाकी पता चले, नहीं तो अपनूकु तिरोहितानन्द ही लगे. क्योंके सुर ही खुद गायब हे तो राग भी गायब हो जायगो. सुर प्रकट होय तो राग प्रकट होय. राग गीतपे डिपेन्डेन्ट् नहीं हे, या रहस्यकु समझो.

प्रश्न : आपने कही जीव तिरोहितानन्द हे, गुप्तानन्द हे. महाप्रभुजीको ऐसो वचन हे "**गुप्तानन्दा यतो जीवा:**"; तो कोई तरहसु आनन्द हे तो सही ना?

उत्तर : यामें महाप्रभुजीने खुलासा कियो हे के धर्मीरूपसु आनन्द तिरोहित हे; धर्मरूपसु प्रकट होवे हे. वालिये चिदंशमें आनन्दको तिरोधान भी कहें हें और धर्म वहां प्रकट हो रह्यो हे वा अर्थमें वाकु गुप्तानन्द भी कह्यो हे.

(अक्षरकी अक्षरता)

एक दूसरे उदाहरणसु तुमकु समझा रह्यो हूं. ये जो आपने प्रश्न कर्यो जो 'अक्षर' क्यों कह्यो जावे हे? (वाक्य लिखके) यामें क्यों कह्यो जाय हे जो यामें इतने अक्षर आये भये हें? अब ये शब्द जिन अक्षरनूसु घड़े भये हें, इन अक्षरनूसु कोई दूसरे शब्द भी घड़ सकें हें. थोड़े प्रयास करवेपे कोई न कोई शब्द

तो मिल ही जायेंगे. ''देजा वेर कर क्यों?'' इन् अक्षरनूसु दूसरे शब्द घड़े जा सकें हें. नये अक्षरकी जरूरत नहीं पड़ेगी. जिन् अक्षरनूसु शब्द घड़्यो गयो हे, ये सब क्षर हें. खतम हो जावें हें. पर अक्षरकु कोई भी दिन खतम कर दो तो बोल ही नहीं सकोगे ना? 'अ - क्षर' जाको नाश नहीं होतो होय वाको नाम 'अक्षर'. सारी सृष्टि शब्द और वाक्य जैसी हे. ये जो (मानो) शब्द और वाक्य = सृष्टि हे यामें अक्षर = ब्रह्म हे जो खतम नहीं होवे हे. नाम खतम हो सके हे; रूप खतम हो सके हे; जो क्रिया अपन् करें हें वो खतम हो सके हे. दांत गिर जावें हें, बाल गिर जावें हें. चमड़ीको नाश होवे हे; सब खतम हो जाय हे धीरे धीरे पर जो नाशवान नहीं हे वाको नाम अक्षर. ''न क्षरति इति 'अक्षर'.'' अर्थात् जो नाशवान नहीं हे वाको नाम 'अक्षर'. जैसे कोई वाक्यमें कोई भी शब्द तुम घड़ो, कोई भी वाक्य घड़ो, परन्तु यामें जो कछु नहीं घड़यो जावे, वो हें क ख ग इत्यादि, यामें ये अक्षर नाशवान नहीं हें या लिये ये अक्षर हें. परन्तु अक्षरनूसु घड़े भये शब्द नाशवान हो सकें हें. क्योंके याही अक्षरनूसु दूसरे शब्द भी बनें हें.

तो अपन्ने ये देख्यो के जो भी सृष्टि हे वो सृष्टि पुरुषोत्तमके द्वारा अक्षरब्रह्ममें रचित सृष्टि हे. अब ये अक्षरब्रह्म अपने आपकु प्रकृति और पुरुष तरीके दो तरहसु डिवाइड् करे हे. मैंने जैसे आपकु बतायो के अक्षरब्रह्म सच्चिदानन्दक हे. सच्चिदानन्दक होवेके कारण वो अपने सत्के पेहलुसु प्रकृति बने हे; चित्के पेहलुसु वो पुरुष बने हे. यालिये महाप्रभुजी कहें हें **''प्रकृतिः पुरुषश्चोभौ परमात्मा अभवत् पुरा यद् रूपं समधिष्ठाय तद् 'अक्षरम्' उदीर्यते.''** (त.दी.नि.२।९८) अक्षर काहेकु समझनो? अक्षर समझनो के प्रकृति और पुरुष माने मेटर और माइन्ड्; मेटर और स्पिरिट्; मेटर और सोल्; जड़ और चेतन; इन सबन्को डिवीज़न् जो अपन्कु सृष्टिमें दिखाई दे रहे हैं,

वा डिवीज़न्को यूनीफिकेशन् पॉइन्ट् अक्षरब्रह्म हे. ये जो डिवीज़न दिखाई दे रहे हैं ये अक्षरब्रह्ममें जाके यूनीफाइड् हो जा रहे हें. यहां आके वो डिवाइड् हो रहे हें. अब ये डिवीज़न् वो पुरुषोत्तम करे कैसे हे? महाप्रभुजीने वाकु भी समझायो हे जो प्रथम कालको प्रकट करके करे हैं. . कालको मतलब महाप्रभुजी कहें हें के ब्रह्म जब सृष्टि प्रकट करनो चाहे तो वाके भीतर जो चेष्टा प्रकट होवे, प्रयत्न या वायब्रेशन् या स्पन्दन आवे वाको नाम 'काल' हे. विज्ञानके द्वारा वैसे तो अपन् सब अच्छी तरहसु जानें हैं के जा बखत दूध दही बनवे जाय, जा बखत वामें जमवेकी प्रक्रिया शुरु होवे हे तो वामें दूधके परमाणु एज़ाइल् हो जावें हें. वो अपन्कु आंखसु नहीं दीखें पर यदि अपन् माइक्रोस्कोप् लगाके देखें तो बहोत एज़ीटेशन् हो जातो होवे हे. वो एज़ीटेशन् विधिन दूध क्या करे हे के वो दूधकु जमाके दही बना देतो होवे हे. ऐसे ब्रह्ममें काल चेष्टाके रूपमें प्रकट होवे और वो **''यो अयं कालः तस्य ते अव्यक्तबन्धोः चेष्टाम् आहुः चेष्टते येन विश्वम्''** (भाग.पुरा.१०।३।२६) वा न्यायसु वा चेष्टाके कारण अक्षरब्रह्म स्प्लिट् होवे. अक्षरब्रह्म अपने आपकु दो तरहसु डिवाइड् करे हे. सदंशसु वो प्रकृति बन जाय और चिदंशसु वो पुरुष बन जाय. वाके बाद वो प्रकृति और पुरुष जुड जाय.

(कर्म और स्वभाव की सिस्टम्)

जैसे स्टेशनपे अपन् पहोंचें या कोई मुकामपे पहोंचें तो गाड़ीकु कितनी देर रुकनो हे, कितनी देर बाद फिर चलनो हे, ये सारे फन्क्शन् करवेके लिये गाड़ीमें दोनों बातें होनी चहियें. रुकवेके लिये ब्रेक्सिस्टम् होनी चहिये और फिरसु स्पीड्कु बढ़ावेके लिये एक्सीलेटरसिस्टम् भी होनी चहिये. मोटरकी, ट्रेनकी, प्लेनकी हर वाहनकी अपनी अपनी सिस्टम् होवे हे, पर हर वाहनमें ब्रेक और एक्सीलेटर की दोनों सिस्टम् होनी चहिये. यदि दोनों सिस्टम् नहीं होंय तो चलती भई वस्तु या तो चलती रहेगी या खड़ी हो गई तो खड़ी हो जायगी.

खड़ी होके फिर चले और चलके फिर खड़ी हो जाय, ये दोनों बात अपनूकु मेन्टेन् करनी होंय तो ब्रेक्की सिस्टम् भी होनी चहिये और एक्सलरेशन्की सिस्टम् भी होनी चहिये. तो वो सिस्टम् कहांसु आवे हे? वाके लिये कहें हें के कर्म एक तरहकी एक्सीलेटरसिस्टम् हे और वा कर्मके कारण कोई भी वस्तु ब्रह्ममें जैसी भी पैदा हो जाय हे वा फॉर्मकु वो रिटेन् करनो भी चाहे हे, क्योंके बदलनो शुरु भयो तो कौनसे हद तक बदलेगो? जैसे सीढ़ीपेसु अपन् फिसलें तो कौनसी सीढ़ी तक अपन् फिसलेंगे? यदि अपने पास रोकवेकी कोई प्रक्रिया हे तो अपन् आखिर तक नहीं फिसलेंगे. यदि नहीं हे तो आखिर तक फिसलेंगे. कोई भी चीज अपनी मूल अवस्थासु फिसल रही हे, जैसे दूध अपनी मूल अवस्थासु फिसलके दही बन रह्यो हे. पर टु ए ग्रेट एक्स्टेंट् वो दही काफी अरसा तक दही ही रहे हे. वा दूधमेंसु जो दहीको ट्रांसफॉरमेशन् भयो हे, वा नेचरकु पाछे वो रिटेन् करे हे. फिर अपन् वामें पानी डालें, वाकी छाछ बनावें, फिर मक्खन निकालें तो पाछे फिर ट्रांसफॉरमेशन् आवे. पर जैसे मक्खन भी अपनूने बना दियो तो मक्खनको फॉर्म वो फिर मेन्टेन् करे हे. हर मेटर्में जो भी फोर्म प्रकट होय है वाकु समहाउ मेन्टेन् करनो चाहे हे. बदलवेको प्रोसेस् स्टार्ट हो गयो तो नदीकी तरह बेहके तुरत ही सब कुछ बदल जाय, ऐसे नहीं. वो जैसे कभी कम्प्युटर् पागल हो जाय तो फटाफट सब आवे लग जाय, वा तरहसु नहीं. कछु वाको स्टेटिक् नेचर भी वामें आवे और मोशन् भी आवे. फिर दोनोंन्की एक परफेक्ट सेटिंग् हे के जा सेटिंगके तहत चीज बदल रही हे, एट्र द सेम टाईम् कुछ बदल्यो भयो रूप पाछे रिटेन् भी हो रह्यो हे. वो रिटेन्शन् स्वभावके कारण होवे हे. बदलाव कर्मके कारण होवे हे.

अब प्रकृति क्योंके जड़ हे करके जड़कु परिणति पोसावे. कारण क्या? जैसे अपन् बिजलीको उदाहरण लें तो बात अपनूकु एकदम

साफ हो जायगी. बिजली पंखामें भी आयगी, वैसे प्रोजेक्टरमें, स्पीकरमें और टी.वी. सभीमें आयगी, सब जगह आयगी. बिजली क्योंके एनर्जी हे तो वाकु अपनो एनर्जीको केरेक्टर खोनो पोसावेगो नहीं. क्योंके एनर्जीको केरेक्टर् वाने खोयो तो वो बिजली ही नहीं रेह जायगी. पर वाके कारण जो भी मशीन् हें उनमें मोशन्, एक्टीवेशन् स्टार्ट हो जाय. वो अपनो नेचर मेन्टेन् करे. मशीन भी अपने नेचरकु वा बिजलीके कारण बदलनो शुरु करे. खड़ो भयो पंखा चलवे लग जाय, खड़ो भयो ठंड नहीं फेंकवेवालो ए.सी. ठंड फेंकवे लग जाय. प्रकाश नहीं डालवेवालो प्रोजेक्टर् प्रकाश डालवे लग जाय. साउन्ड् नहीं प्रोड्युस करवेवालो साउन्ड् प्रोड्युस करवे लग जाय. सीन् पैदा नहीं करवेवालो टी.वी. सीन् पैदा करवे लग जाय. तो वो सब नेचर बदलें. पर उनके बदलावमें जो नहीं बदले हे वो हे बिजली. वो बिजली पुरुषके नेचरकी हे जो बदले नहीं हे वैसे पुरुषको चेतन्य नेचर् रहे भी हे.

(बीइंग् और बिकमिंग्)

सरलतासु समझनो होय तो पुरुष 'बीइंग्' हे और प्रकृति 'बिकमिंग्' हे. अब 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' में फर्क क्या? 'हे' और 'होवे हे' को फर्क है. जो 'बीइंग्' को मतलब है वो 'हे'. 'बिकमिंग्'को मतलब 'होवे हे'. 'हे' और 'होवे हे' एक चीज नहीं हे. 'हे' में एक स्थिरता दिखलाई दे रही हे. 'होवे हे' में अस्थिरता दिखलाई दे रही हे, माने 'हो रह्यो हे'. अक्षरमें तो काल, कर्म, स्वभाव सब कुछ हतो. तीनों हें पर वाने अपनी 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' कु डायवर्सिफाइ् कियो. एक साइड्में वो 'बीइंग्' बन जाय हे और दूसरी साइड्में वो 'बिकमिंग्' बने हे. तो प्रकृति 'होवे हे' और पुरुष 'हे'. जैसे दूध दही बन रह्यो हे तो वो वाकी 'बिकमिंग्' हे. क्योंके वो 'बीइंग्' नहीं हे.

याकी खूबसूरती ये हे के हर 'बिकमिंग्' फॉर सम् टाइम् और फॉर सम् अवर्स्, सम ईयर्स्।, 'बीइंग्'को नेचर पाछो एडोप्ट् करे हे और फिर 'बिकमिंग्'के प्रोसेस्में जावे हे. सो धेयर इज़् ए् साइकल् बिटवीन् 'बीइंग्' एण्ड 'बिकमिंग्'. जैसे अपन् घाटपे चढ़ते होंय, तो एक हाइट आवे. एक हाइट आके अपन्कु वो एक हाइट मिल जाय. फिर पाछी चढ़ाई शुरु हो जाय. फिर हाइट आवे. ऐसे हर 'बिकमिंग्'मेंसु एक 'बीइंग्'की हाइट आवे और हर 'बीइंग्'की हाइट्मेंसु पाछी फिर 'बिकमिंग्'की चढ़ाई या उतराई, जैसे वाकु लेनो होय, वो शुरु हो जाय. वाके कारण ये सारी सृष्टि प्रकट होवे हे. वा 'बिकमिंग्'को नेचर कर्म गवर्न् करे हे और 'बीन्'को नेचर स्वभाव गवर्न् करे हे. जो भी 'बिकमिंग्' हो रही हे, वाकु कर्म गवर्न् करे और 'बीइंग्'को स्वभाव गवर्न् करे हे. अब न तो कोई एब्सॉल्यूट् 'बीइंग्' हे और न कोई एब्सॉल्यूट्ली 'बिकमिंग्' हे. जा बखत डिवीज़न् हो गयो 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' को वा बखत न तो एब्सॉल्यूट् 'बिकमिंग्' बच्यो और न एब्सॉल्यूट् 'बीइंग्' बच्यो.

(बौद्ध और सांख्य को मत)

जैसे बौद्धन्के या सांख्यमें मूल अन्तर यहां हे के उन लोगन्ने कहीं ऐसो मान लियो के 'बीइंग्' एब्सॉल्यूट्ली बीइंग् हे और 'बिकमिंग' एब्सॉल्यूट्ली बिकमिंग् हे. उन दोनोंन्में इन्टरेक्शन् पॉसिबल् नहीं हे. यदि इन्टरेक्शन् हे तो वो बहोत ही सुपरफीशियल् लेवल्पे हे. वो ऐसे लेवल्पे नहीं हे जासु 'बीइंग्'को 'बिकमिंग्'में ट्रांसफॉर्मेशन् हो सके और 'बिकमिंग्'को 'बीइंग्'में ट्रांसफॉर्मेशन् हो सके. मेटाफीजिकली मैं समझूं हूं के सिवाय महाप्रभुजीके कोईने ये बात रिकॉग्नाईज नहीं करी हे. अपने महाप्रभुजीने ये बात ऑब्जर्व करके रिकॉग्नाईज़ करके रखी हे के "नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं हे. हर 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' में एक म्युच्यअल ट्रांसफॉर्मेशन्को साइकल् चल सके हे". बाकी सारे दार्शनिकन्ने या तो 'बीइंग्' मान्यो हे और वो 'बिकमिंग्' हो सके हे वाकु नहीं माने हें. जब 'बिकमिंग्' मान्यो हे तो वो

यों मानें हें के ये 'बीइंग्'में ट्रांसफॉर्म् नहीं हो सके हे. अपने महाप्रभुजी हर 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' में म्युच्यअल ट्रांसफॉर्मेशन् मानें हें. वो ट्रांसफॉर्मेशन् मानवेके कारण सारी सृष्टि प्रकट होवे हे, ऐसो महाप्रभुजीको माननो हे. स्वभाव 'बीइंग्'को कॅरेक्टर प्रोवाइड़् करे हे. कर्म वाकु 'बिकमिंग्'को कॅरेक्टर प्रोवाइड़् करे हे.

बड़ो स्थूल उदाहरण आपकु दे रह्यो हूं. जैसे अपनूने एक घर बनायो. जो भी वा घरकी आर्किटेक्चरल् डिजाइन् हे वो अपनूने बना दी. अब वो बनवेकी प्रोसेसूमें ईंटके, सरियाके, सीमेन्टके और मट्टीके, इन सब एन्गल्सु देखोगे, तो वो 'बिकमिंग्'में इन्वोल्व भयो. पर जब घर बन गयो वाके बाद वो 'बीइंग्' हे के 'बिकमिंग्' हे? वो 'बीइंग्' हे. अपन् यों थोड़े ही कहेंगे "मकान हो रहा हे". अपन् क्या कहेंगे? "मकान हे" यों ही तो कहेंगे ना! वो तो सब कॉमन् सॅन्स्सु कहें हैं 'हे' और "हो रहा हे" पर दार्शनिककी खोपड़ी थोड़ी खाली होवे, तो उनकु जल्दीसु समझमें नहीं आवे. वो कहें "जो 'हो रहा हे' वो 'हे' नहीं और जो 'हे' वो 'हो नहीं रहा'". ठीक हे भई! क्या करनो! हम तो बस इतनो ही केह सकें "तुम दार्शनिक हो!". यहां दार्शनिक उल्लूके अर्थमें केह रह्यो हूं. 'उल्लू' गालीके अर्थमें नहीं, उल्लू या अर्थमें के जो दूसरेनूकु नहीं दीखती होंय, वो चीजें रातकु उल्लूकु दीखती होंय. या अर्थमें उल्लू केह रह्यो हूं. अपनूकु रातकु नहीं दीखे पर उल्लूकु रातमें दीखे. कहां चूहा घूम रह्यो हे, कहां चिड़िया घूम रही हे? और वो वाकु तुरत पकड़ ले. तो दार्शनिक ऐसे उल्लू होवें.

(आचार्यचरणको मत)

महाप्रभुजीने अपनी सोच, व्यवहार और वस्तु के सारे नेचरके आधारपे या बातकु समझायो. हर 'बिकमिंग्'को एक जैसो प्लाटो आ जाय और वो प्लाटो 'बीइंग्'को होवे. हर प्लाटोके बाद पाछी

एक 'बिकमिंग्'की प्रोसेस् शुरु हो जाय. हर 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' के बीच बीचमें प्लाटो आ रहे हें, जा प्लाटोपे पाछे हर 'बिकमिंग्' रिलेटिवली 'बीइंग्'को केरेक्टर एडोप्ट करे हे. वा 'बीइंग्'के बाद पाछी कोई एक 'बिकमिंग्'की प्रोसेस् स्टार्ट् हो जाय, करके इनमें उतनो हाई और फास्ट् भेद नहीं हे जितनो उल्लूनूको दीखे हे. महाप्रभुजी कहें हें के उतनो हाई और फास्ट् भेद नहीं हे, क्योंके जो भी कछु प्रकट भयो हे, वा प्रकटमें एक बाजुसु कर्म इन्टरेक्ट् कर रह्यो हे; कर्म अपनी ताकत लगा रह्यो हे बदलवेकी. दूसरे बाजुसु स्वभाव अपनी ताकत लगा रह्यो हे वाकु रोकवेकी. रोकवेकी और बदलवेकी दोनों ताकतें जो लग रही हें हर वस्तुपे, वाके कारण हर वस्तु या तरीकेको बेलेन्स निभावे हे के वो जो कछु बन गई वो बन गई, थोड़ी देर वैसी बनी रहे हे, अब वो एक मिनट् बनी रहे या एक घंटा या एक महीना या एक बरस या एक हज़ार साल बनी रहे, वो रिलेटिव् बात हो सके हे. ये पहाड़ एक एक हज़ार साल तक क्या, दस दस हज़ार साल, लाख लाख सालन् तक बने रहें हें. कोई पेड़ सो डेढ़सो साल तक बने रहें हें. ऐसे सबके आयुष्य अलग अलग हो सकें पर वा आयुष्यके भीतर जो भी वस्तु पैदा भई हे, वो अपनो 'बीइंग्'को भी कॅरेक्टर अपने स्वभावके कारण निभावे हे, या रहस्यकु महाप्रभुजीने बहोत क्लीअरकट् कह्यो हे. मोकु ख्याल नहीं हे के कोई औरने इतनो क्लीअरकट् कह्यो होय. सौ प्रतिशत नहीं केह सकूं पर या एन्गल्सु देखनो चहिये के दूसरे दार्शनिकनूने कह्यो के नहीं कह्यो पर महाप्रभुजीने या बातकु बहोत ही क्लीअरकट् समझायो हे. वाके कारण महाप्रभुजी अपनूकु एक बात कहें हें ये सृष्टि प्रकट होवे हे या तरीकेके काउन्टर फोर्स्सु. नॉरमली सबनूकी समझ सृष्टिके बारेमें ऐसी मोनोडायरेक्शनल् फोर्स्की हे के एक कोई क्रियेटिव् फोर्स् हे जो 'ज़्यूंऽऽऽ....' करके जा रह्यो हे (माने एक सीधी रेखामें गति करे है); महाप्रभुजी केह रहे हें "नहीं नहीं, क्रियेटिव् फोर्स् ऐसे 'ज्युंऽऽऽ...' करके नहीं,

ज़िग्-ज़ेग् होके जा रही हे. एक दूसरेकु साथ लेके जा रही हे.'' लेटली अब जाके इन सालन्में साइन्स्ने भी या तरीकेके फिनोमिनाको एक्सेप्ट् कियो हे के कई तरहके फोर्सिस् काम कर रही हें. उन सब फोर्सिस्के लिये जो 'गट' = ग्रांड यूनीफिकेशन् थिऑरी कही जाय हे. वा ग्रांड यूनीफिकेशन् थिऑरीके अन्तर्गत सायन्स् भी या बातकु एक्सेप्ट् करे हे के कई काउन्टर फोर्सेस् वो सब एक दूसरेके क्रिस्-क्रोस्में जा रही हें. डॉक्टर भी ऐसे मानें हें के जैसे अपनी आंख हे वो क्रिस्-क्रोस्में जा रही हे. कान अपने क्रिस्-क्रोस्में जा रहे हें. या हाथको या बाजू ब्रेन्में कन्ट्रोल् हे, या हाथको या बाजू ब्रेन्में हे. या पैरको या बाजू ब्रेन्में हे; या पैरको या बाजू ब्रेन्में हे. हर चीज या तरहसु क्रिस्-क्रोस्में फन्क्शन् कर रही हे. अपने महाप्रभुजीने बोहोत पेहले या फिनोमिनाकु रिकोग्नाइज् कियो हे के कर्म और स्वभावके क्रिस्-क्रोस्में ये सारो डेवलपमेंट् हो रह्यो हे. कोई एक ऐसी स्ट्रेट् माने मोनोडायरेक्शनल् क्रीयेटिव् फोर्स नहीं हे या तरीकेकी. वाको कहवेको कारण क्या हे महाप्रभुजीको? वो बात ध्यानसु समझो. क्योंके महाप्रभुजीने जा ब्रह्मकु प्रीसपोज़् कियो हे वो विरुद्धधर्माश्रयी हे. विरुद्धधर्माश्रयमेंसु जो भी चीज प्रकट होयगी, वो कछु तो अपनी विरुद्धता प्रकट करेगी ना! जब विरुद्धधर्माश्रयसु कोई चीज प्रकटी हे तो वो अपनी विरुद्धता तो कार्यमें भी प्रकट करेगी ही. तो कार्यमें विरोध कैसे प्रकट हो रह्यो हे? वो या तरहसु प्रकट हो रह्यो हे के वो कर्म भी हे. कर्मको विरोधी स्वभाव हे. स्वभाव होय तो कर्म नहीं हो सके. स्वभावको मतलब क्या के जो चीज जैसी हे वो वैसी ही हे. कर्मको मतलब क्या? जो चीज जैसी हे वाके अलावा वो कुछ कुछ काम कर रही हे. जैसे मैं यहां हूं, खड़ो भयो हूं. चलनेको कर्म कर्यो तो यहां आ गयो. फरक पड़ गयो ना. कर्म कर रह्यो हूं तो मैं यहां आयो ना! चलनेको कर्म कियो तो यों फिर गयो. पर स्वभाव यदि खड़ो रेहनो होय, पत्थरकी तरह, तो बस खतम हो गई बात. फिर तो हिल-डुल

ही नहीं सकें. तब तो मेरे भीतर स्वभाव भी काम कर रह्यो हे. जब मैं खड़ो हूं यहां. जब मैं कछु फिरनो चाह रह्यो हूं, हिलनो डुलनो चाह रह्यो हूं तो कर्म भी काम कर रह्यो हे. तो दोनों फोर्सिस् तो मेरे भीतर काम कर रही हें ना! कार होय, चाहे प्लेन होय, चाहे ट्रेन होय, वाके लिये ही मैंने कही के ब्रेक् भी चहिये वामें और एक्सलेटर भी चहिये वामें. दोनों चीज वामें चहियें. स्पीड भी और ब्रेक भी दोनों चहिये. वा तरीकेके काउन्टर फोर्सिस् के कारण सृष्टि प्रकट भई हे.

वा सृष्टिके प्राकट्यमें, या बातकु ध्यानसु समझो. अब देखो क्रिसक्रॉस कह्यो मैंने यहां, दियो दिखलाइ? क्यों ये काम कर रह्यो हे या तरहसु. क्रिसक्रॉस क्यों भयो? जब 'अक्षरब्रह्म', 'प्रकृति और पुरुष'में डिवाइड् भयो तो डिवाइड् ही रेहनो चहिये हतो. यदि डिवाइडेड् नहीं रेहनो हे, तो डिवाइड् भयो क्यों? डिवीज़न् भयो क्यों? डिवीज़न् भयो हे तो लेट धेम् रिमेन् डिवाइडेड्. यदि अपन् कोई भी ऐसी तरहकी बात करें तो सृष्टि प्रकट नहीं हो सके. ये तो मैं बोहोत युनीवर्सल् बात बता रह्यो हूं आपकु. यदि अपन् कहें के भूमि और बीज डिवाइड् हो गये; लेट धेम रिमेन् डिवाइडेड्; बट् धेन धेयर विल् बी नो क्रियेशन्. पेड़ उगवे बंद हो जायेंगे. भूमि और बीज जो डिवाइड् हो गये हें वो पाछे कहीं जाके बीज भूमिमें आ जाय हे करके फिर पाछो नयो पेड़ हो जाय. तो जो डिवीज़न हे वो पाछो जाके कहीं न कहींसु मिन्गल् होवे हे. जो मिन्गल् हो रहे हें वो पाछे फिर बिछुड़ रहे हें.

(बायोलोजीको मत)

बायलॉजिकली भी या बातके रहस्यकु समझो जो एकदम साफसुथरी बात हे. एक सेलने अपने आपकु मेल् फीमेल्में डिवाइड् कर दियो तो बच्चा कैसे पैदा होवे हे? स्पर्म् और ओवम्के पाछे क्रिस्क्रॉसिंग्सु.

अपने भीतरके क्रोमोज़ोम् भी या तरहसु क्रिस्-क्रोस् होके बच्चाकु पैदा करें हें. मांके क्रोमोज़ोम् और पिताके क्रोमोज़ोम् 'माता और पिता' नहीं पर 'मातापिता' मिलके वो बच्चा बनके निकले हे. वो एण्ड कम्पनीकी तरहसु नहीं आवे. ये क्रिसक्रॉसिंग् सब जगह हे. जहां भी क्रियेशन् हे वहां या तरहकी क्रिसक्रॉसिंग् हे. तो वो डिवाइड् होवें हें और डिवाइड् होके पाछे फिर वो एक हो जावें हें. ऐसे ये क्रम चलतो रहे हे. ये आखो सृष्टिके प्रोसेस्को एक स्वरूप हे और वो सृष्टिके प्रोग्रेस्को स्वरूप हे क्योंके वो कर्म यामें काम कर रह्यो हे; कर्म वाकु डिवाइड् करेगो; स्वभाव पाछो वाको फिर रोक देगो.

लक्ष्मीसु आज ही मेरी चर्चा हो रही हती. कोईको तलाक हो गयो. लक्ष्मीकु बड़ी चिंता हो रही हती "इतनी जल्दी तलाक होवे तो शादी करवेकी जरूरत क्या?" मैंने कही "भई! शादी करनी हती या लिये के क्रिस्-क्रोस् करनो होयगो एक दूसरेकु." वो बोली "शादी भई तो तलाक क्यों भयो?" मैंने कही "तलाक भी या लिये भयो के वाकु कहीं और जानो होयगो और याकु और कहीं जानो होयगो. फिर पाछी क्रिसक्रॉसिंग् हो जायगी. चिंता क्यों करो?" तो सारी सृष्टि याही ढंगसु हे के नहीं? लक्ष्मीकु मेरी बात समझमें नहीं आई, दिमागमें उतरी नहीं. मैंने कही "जावे दो तो." तथ्य ये हे, रहस्य ये हे के प्रकृति और पुरुष अक्षरब्रह्ममेंसु डिवाइड् भये. ऑलमोस्ट स्पर्म् और ओवम् के पॅटर्नपे. प्रेशर कर्म और स्वभाव को हे.

(प्रकृति-पुरुषमें 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्')

प्रश्न : ये प्रकृति और पुरुष में ही 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' होवे हे? क्योंके पेहले आपने कह्यो के प्रकृति 'बिकमिंग्' हे और पुरुष 'बीइंग्' हे. वाके बाद कर्म और स्वभाव के कारण वाके ऊपर

प्रभाव आवे 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्' को. तो वो खाली प्रकृतिके ऊपर होवे हे या प्रकृति पुरुष दोनोंके इन्टरेक्शन्के कारण दोनोंमें ये आवे हे? ये थोड़ो कन्फ्युज़न होवे हे.

उत्तर : प्रकृति पुरुषसु कन्फ्युज़्ड् हो रही हे. पुरुष सब प्रकृतिनृसु ही कन्फ्युज़्ड् हें. तो तू कन्फ्युज़्ड् हो ही मत. यामें कोई कन्फ्युज़न्की जरूरत नहीं हे अपनृकु. जो बात मैं केहनो चाह रह्यो हूं के प्रकृतिके प्रोडक्ट्में पुरुषको चैतन्य इनसेमिनेट् होवे हे. **"दैवात् क्षुभितधर्मिण्यां स्वस्यां योनौ परः पुमान् आधत्त वीर्यं सा असूत महत्तत्वं हिरण्मयम्"** (भाग.पुरा.३।२६।१९) ऐसे भागवत कहे हे. अक्षरब्रह्मतो सभीको समाहार हे. काल कर्म स्वभाव प्रकृति पुरुष सबको समाहार अक्षरब्रह्म हे. ऑलमोस्ट मट्टीके जैसो के जामें सब कछु हे. पर वामेंसु डिवाइड् भयो प्रकृति और पुरुष इन फोर्सिस्के कारण और काल कर्म स्वभाव के फोर्सिस्के कारण. वो डिवाइड् होवेके बाद कर्म और स्वभाव ने कुछ या तरीकेको प्रेशर लायो जाके कारण दोनोंनके प्रोडक्ट् एक दूसरेमें क्रिस्-क्रोस् होके महत्तत्त्व पैदा भयो. अपन् या महत्तत्त्वकी डीटेल्में नहीं जायेंगे. क्योंके अपन् अहंकारकी बारातके बाराती हें. या महत्मेंसु अहंकार पैदा होवे. अब ये महत्को कॅरेक्टर कैसो हे? वा बाजु पुरुषको चैतन्य लिये भयो हे. या बाजु प्रकृतिको एक्शन् लिये भयो हे. एक्टिव् चेतन हे वो, अचेतन एक्शन् नहीं हे, इनएक्टिव् चेतन नहीं हे. महत्-तत्त्व कैसो हे? इनएक्टिव् चेतन नहीं हे. जो या लेवलपे इनएक्टिव् चेतन हो गयो हतो डिवीज़नके बखत. यहां अचेतन एक्टिविटी हती. वो यहां आके दोनोंको प्रोडक्ट् हे, वो पाछो एक्टिव् चेतनको हो गयो. वो चेतन भी एक्टिव् हे. वाही तरहसु ऑलमोस्ट जो भी बच्चा जन्में हे वो थोड़े मांके गुण लिये आवे हे; थोड़े बोहोत पिताके गुण लिये आवे हे. हाइट् पिताकी ले लेगो तो रंग मांको ले लेगो; मांकी हाइट् ले लेगो तो पिताको रंग ले लेगो. या तरहसु वो क्रिस्-क्रोस् हो जाय. महत्में वो दोनों

गुण मौजूद हें. वा महत्‌मेंसु पाछो अहंकार पैदा होवे. अब महत्‌कु इन् नटशेल् इतनो समझ सको हो के एक्टिव् और कोनशियस् प्रिंसिपल् हे पर न तो एक्टिविटी वाकी खुदकी हे प्रकृतिके ढंगसु और न कोनशियसनेस् वाकी खुदकी हे. वाके भीतर एक्शन् जो प्रकट हो रह्यो हे और जो कॉनशियसनेस् प्रकट हो रही हे, जो चेतना प्रकट हो रही हे और जो प्रकृति प्रकट हो रही हे, वो क्रिस्-क्रोस्‌के कारण प्रकट हो रही हे. बच्चामें जैसे मा-बाप दोनोंनूके गुण आ जायें. वो वाके खुदके नहीं हें. बच्चामें गुण वाके नहीं हें पर वाके मा-बापके गुणनूको खिचड़ा बन रह्यो हे. ऐसे महत्‌में प्रकृतिकी क्रिया और पुरुषकी चेतनाको एक खिचड़ा तैयार होवे हे. वा खिचड़ामें कोई तरहकी सेल्फ अवेयरनेस् नहीं हे. पर वामेंसु सेल्फ् अवेयरनेस् जनरेट् होवे हे. जाकु अहंकार कह्यो जाय हे.

(महत् वासुदेवको रूप)

या लिये अपने यहां अक्सर ये बात कही गयी हे के ये महत् वासुदेव हे. महत् क्यों वासुदेव हे? क्योंके वाके भीतर पुरुष वासुदेव बिराजे हे और वो वासुदेवरूपी चेतना हे. पुरुषके जो चार व्यूह हें वासुदेव, प्रद्युम्न, संकर्षण और अनिरुद्ध; तो वामेंसु ये महत्‌तत्त्वकु वासुदेव कह्यो जाय हे और अहंकारकु संकर्षण कह्यो जाय हे. अब यामें देखवेकी बात हे के वो कर्म, स्वभाव और काल यहां भी काम कर रहे हें फोर्स् तरीके. ये जो एक नयो प्रोडक्ट् आयो अपने सामने वामें ये फोर्स् काम कर ही रही हें. ये फोर्स् इनऑपरेटिव् नहीं हो गई हें. इन फोर्स्‌के द्वारा फोर्स्ड महत् पाछो अहंकार बने हे. जब अहंकार बने हे, तब भी वामें स्वभाव काम कर रह्यो हे, कर्म काम कर रह्यो हे, काल भी काम कर रह्यो हे.

(काल = परब्रह्मकी चेष्टा)

कालको मूल रोल तो मैंने बतायो के परमब्रह्ममें प्रकटी एक

चेष्टा हे. पर कालकु परमब्रह्ममें प्रकटी चेष्टाकी तरहसु अपन् समझें. **''यो अयं कालः तस्य ते अव्यक्तबन्धो चेष्टाम् आहुः चेष्टते येन विश्वम्''** (भाग.पुरा.१०।३।२६). काल हर वस्तुकु अपने रंगमें रंगे हे. वो कैसे रंगे हे? जैसे चेष्टा हे. चेष्टा एक तरह 'बिकमिंग्'को प्राइमरी रूप हे. प्राइमरी रूप होवेके कारण जब वो अपनो एकदम प्रकट रूप दिखा दे हे; तब क्या होवे हे के जो वस्तुमें काल नहीं पैदा हे वा वस्तुमें कालको रंग पैदा होवे हे. हर वस्तुको कोई भूतकाल हो जाय; हर वस्तुको कुछ वर्तमान हे; हर वस्तुको कुछ भविष्य जाकु अपन् कहें के ये तो यामेंसु पैदा होनो ही हतो अथवा पैदा होवेके बाद ये तो ऐसो ही होयगो. जो पैदा भयो हे वो खतम तो होयगो ही. ये भूत, भविष्य और वर्तमान तीन डायमेंन्शननूकु वस्तुमें कौन लावे? कौन सप्लाइ करे? काल सप्लाइ करे. यदि काल नहीं होय तो वस्तुमें थ्री डायमेंन्शन् नहीं आयगो. वस्तु तो मोनोडायमेंन्शन् हे. पर हर वस्तुमें तीन डायमेंन्शन् आ रहे हें, तो क्यों आ रहे हें? कालके कारण. काल वाकु अपने रंगमें रंगे हे. अपने बोक्स्‌में वाकु पेक कर दे हे. पेक कर दे हे करके क्या होवे हे के हर वस्तुमें कालको थ्री डायमेंन्शनल् स्वरूप वामें प्रकट हो जाय, भूत, भविष्य और वर्तमान को. मोडर्न् साइन्स् कालकु मोनोडायमेंन्शनल् माने हे. स्पेस्‌कु थ्री डायमेंन्शनल् माने हे. अपने यहां ऐसे नहीं हे. अपने यहां कालके दोनों रूप हे, मोनोडायमेंन्शनल् रूप भी कालको हे और थ्री डायमेंन्शनल् रूप भी हे. अभी साइन्स्‌कु समय लगेगो वा बातकु समझवेमें जो बात अपन् केह रहे हें.

(अहंकार और भूत-वर्तमान-भविष्य/अहंकार बचपने को और बुढ़ापाको)

पर या अहंकारमें काल तो काम कर रह्यो हे क्योंके जैसे तुम अपने कालको कोई भूतकाल देख सको हो; अपने अहंकारको वर्तमान भी देख सको हो; अपने अहंकारको भविष्य भी समझमें

आ सके, नहीं समझमें आ सके ऐसी बात नहीं हे. आदमीमें निगाह होनी चहिये के मेरे अहंकारको भविष्य क्या हे? तो अपने अहंकारमें वो काल बोले हे ना! पर जैसे काल बोले हे; ऐसे कर्म भी अहंकारमें बोले हे; कर्म क्या बोले हे? के अहंकारकु कर्म स्थिर नहीं रेहवे दे हे. अहंकार निरन्तर बदलतो रहे हे. जैसे बच्चा हते तो अपने बचपनाको अहंकार हतो. जवान हो गये तो जवानीको अहंकार हे. बूढ़े हो जायेंगे तो बुढ़ापाको अहंकार होयगो. बच्चानुकु जब भी अपन् पूछें तो हर बच्चा या तरीकेको अहंकार रखे के "मैं बड़ो होऊंगो तब! मैं बड़ो होऊंगो तब!" जब जवान हो जाय तो जवानीको अहंकार रखे. कोई बखत यामें ये लफड़ा और पैदा होवे के बचपना याद आतो होवे हे के वो चैन नहीं रह्यो, वो सुख नहीं रह्यो. बुढ़े हो जायें तो पेहली बार तो वो आदमी डिनाइ करनो चाहे के मैं बुढ़ो नहीं भयो. पर जब सब तरफसु कालकी लप्पड़ पड़ें के दांत टूटें, बाल भी सफेद हो गये, घुटननूमें भी दर्द हो गयो, पेटमें पचनो भी बंद हो गयो. फिर कहीं न कहीं आदमी खोटो अहंकार डेवलप् कर ले के अब मैं कोई जवान थोड़े ही हूं अब तो मैं बुढ़ो हूं. कल तक तो तू बुढ़ापाकु दैन्यको कारण समझ रह्यो हतो. आज अहंकार कैसे कर लियो! अचानक जब वो एक पॉइन्ट्पे कालसु हार जाये तो मियांजी गिर गये और टंगड़ी ऊंची कर दे. ऐसे जा दिन वाकु कन्फेशन् करवेके अलावा कोई और चारा नहीं रेह जाय के अब बुढ़ो हो ही गयो, तो फिर वामें वो तुरत दैन्यकोभी अहंकार कर ले.

कोइ रोज डांडिया करवे जा रहे हते, तो एक लड़कीने कही "काका जरा खसो ना!" तो डांडिया करनो ही छोड़ दियो. क्यों खसो कह्यो? रोज डांडिया करवे जाते हते, मनमें वो यौवनकी तरंग हती वामें वो अपन् यौवनकी तरंग मानें पर यदि कोई लड़की केह दे "काका जरा खसो ना!" तो फिर मजा खतम हो गई

ना डांडियाकी! फिर वो मजा नहीं रही. वामें तकलीफ हे पर आदमी अपने तीनों तरहके अहंकारकु छोड़े नहीं.

हम लोग जब बनारस हते तब एक दिन ऐसे ही भयो. हमारे धर्मशालाके नीचेसु स्मशान जाते हते. तो ढब्बूने एक दिन मोकु पूछी "काका ये सब क्यों इतने यहां मरें?" मैंने कही "बेटा जो जन्मे हे सो तो मरे ही ना!" तो ढब्बूकु ब्रह्मज्ञान हो गयो अचानक. ढब्बूने मोसु कही "आप मरोगे?" मैंने कही "हां, मरेंगे ही ना!" "भाभी मरेगी?" मैंने कही "हां मरेगी." तो लक्ष्मीने कोई चीज वाकु नहीं दी तो ढब्बूने सीधे जाके वाको केह दी "आप भले ही मत दो, पर जा दिन मरोगी वा दिन तो मेरी ही होयगी." तो बच्चानूकु बड़े होवेको या तरीकेको अहंकार होवे. बड़े होवेके बाद अपनूकु बचपनाको अहंकार याद आवे. स्मृति आवे के अरे मुश्किल हो गई! **"ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो, मगर मुझको लौटा दो मेरा वो बचपन, वो कागजकी कश्ती वो बारिशका पानी."** वो अहंकार पाछे वा तरहसु लग जाय. फिर थोड़े दिन अपन् वो नाटक करें पर जा दिन बराबर पक्की नोटिस् मिल जाय, इवेक्युऐशन् नोटिस्, वा दिन पाछो वो काका होवेको घमण्ड आ जाय "केम छो दीकरा! केम छो दीकरी!" अभी तक दीकरा दीकरी क्यों नहीं कह रहे हते भाई साहब! असलमें अपने वो अहंकारको छुपावेके लिये खुद दूसरेकु दीकरा दीकरी कहे जासु लोगनूकु लगे के हां अब ये काका हो गये. अब देखो अहंकारमें तीनों काल बोल रहे हें के नहीं बोल रहे हें? अहंकारमें याही ढंगसु काल भी बोल रह्यो हे, कर्म भी बोल रह्यो हे, स्वभाव भी बोल रह्यो हे. अपनूने जो कछु भी अपनो स्वभाव घडयो हे वो अहंकारमें ही निरन्तर बोलतो रहे हे. पर या प्रक्रियामें अहंकार अपने आपमें न तो ऐसो फिनोमिना हे के जो इनएक्टिव् होय, न ऐसो फिनोमिना हे के सिर्फ कोन्सियस् ही होय, पर कोई चेतन

सक्रिय फिनोमिना अहंकार हे. अब वो चेतना भी वाकी खुदकी नहीं हे, पुरुषसु आई भई हे.

क्रिया भी वाकी खुदकी नहीं हे. प्रकृतिसु आई भई हे. इनहेरिटेड् हे. ये दोनों वाकु इनहेरिटेंन्स्में मिलें हें मगर इनहेरिटेंन्स्में मिलें तो वाकु हें ना! मिलें हें वाकु या लिये अपनो अहंकार एक्टिव् प्रिंसिपल् भी हे और कॉन्शियस् प्रिंसिपल् भी हे. या रहस्यकु एकदम साफ सुथरे तौर पर समझो. या अहंकारकु भागवतकार यों कहें हें ये अहंकार भूतेन्द्रियमनोमय हे. ये जो श्लोक मैने आपकु बतायो "**सहस्रशिरसं साक्षाद् यम् अनन्तं प्रचक्षते. संकर्षणाख्यं पुरुषं भूतेन्द्रियमनोमयम्**" (भाग.पुरा.३।२६।२५) वहां महाप्रभुजीने कह्यो हे "**त्रिधा अहंकारा: भूतेन्द्रियमनोमयम्.**" अहंकारके तीन पेहलू हो जायें हें. एक अहंकार **भूत**की तरहसु डेवलप् होवे हे. 'भूत' माने भूतप्रेतपिशाच नहीं भूत माने मॅटर. और एक अहंकार **इन्द्रिय**की तरहसु पैदा होवे हे. ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय की तरह. एक अहंकार उनको गवर्निंग्, मनके फेक्टर तरीके पैदा होवे हे. वो अपन् ग्राफिकली समझ लें अच्छी तरहसु के या अहंकारमें भूतको मतलब रूप रस गन्ध स्पर्श और शब्द. ये भूत हें. आंखसु दिखलाई देतो रूप; कानसु सुनाइ देतो शब्द; जीभपे समझमें आतो रस; नाकसु ग्रहीत होती गन्ध; त्वचासु ग्रहीत होतो स्पर्श. ये पञ्चतन्मात्रायें हें भूतके अर्थमें हे. यदि अपनकु याकु समझनो होय तो यों भी समझ सकें हें के भूतके ठिकाने तन्मात्रायें डाल दें तो सारी बात साफ हो जायगी. या तरहसु अहंकार ये ज्ञानेन्द्रिय, ये कर्मेन्द्रिय; इनको गवर्निंग् फेक्टर मन; कब ज्ञानसु कर्मपे स्विच् ओवर होनो; कब कर्मसु ज्ञानपे स्विच् ओवर होनो; जैसे आपने मोबाइल्में देख्यो होयगो के वो जो बीचको कर्सर होवे, वासु अपन् अलग अलग आइकोन्पे जा सके हें, ऐसे अपनो मन कर्सरकी तरह काम करे के कब तुमकु ज्ञानेन्द्रियपे जानो हे तो वो मन तुरत ज्ञानेन्द्रियपे पहोंचा दे हे. कोनसे नामपे तुमकु कॉल् करनो हे? वा

नामपे तुम कर्सरकु ले जाओ, तो वा नामपे घण्टी बज सके. मन, मोर और लेस् कर्सरकी तरह काम करतो होवे. जो काम अपन्कु करनो हे, वो काम तुरत वा कर्सरके द्वारा होवे हे; तो वो अपने अहंकारमें प्रोवाइडेड् एक फेसिलिटी हे मनकी. कोई भी चीजकु समझनी हे तो ज्ञानेन्द्रिय सक्रिय हो जायगी. जैसे ये पेन् देखनी हे तो आंखकी तरफ मन जायगो. देखवेके बाद आप समझो के पेन् आपकु चहिये तो हाथ वा तरफ आगे बढ़ेगो. वो हाथके तरफ मन जायगो. कर्सर् वहां जा रह्यो हे अपनो. तो जो चीज अपन् देख रहे हें, वाकु ले रहे हें या छोड़ रहे हें, वगेरह वगेरह जो भी ज्ञानसु क्रिया कर रहे हें, वो सब हें. और ये जो कर रहे हें ये तो कर ही रहे हें अपन्.

पर तन्मात्रायें अपनी ऐसी फीलिंग हे के तन्मात्रा अपने बाहरकी कोई वस्तु हे. जैसे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द अपनो गुण नहीं हे. रूप क्या हे? जैसे आप बैठे भये हो तो आपकी आकृति, आपके जो रंग हें वो रूप हे जो मेरी आंखसु ग्रहीत हो रह्यो हे. आप जो बोल रहे हो, वो आपके शब्द मेरे कानसु ग्रहीत हो रहे हें. अभी कोईने परफ्युम् नहीं लगायो नहीं तो गन्ध भी ग्रहीत होयगी. यहां शेर होतो तो खावेको स्वाद भी बता सकतो के कौनको क्या स्वाद हे? ऐसे जो भी तन्मात्राऐं मैं ग्रहीत कर रह्यो हूं, वो मेरे बाहर हें, फीलिंग् ऐसी हे. वा फीलिंग्कु अपने यहां स्वीकार्यो नहीं गयो हे. वो तथ्य अपन् नहीं मानें हें. ये एक बहोत गम्भीर रहस्य हे और सारी भारतीय फिलोसोफी और पाश्चात्य फिलोसोफीमें बहोत झगड़ाको ये इश्यु हे. जैसे जो अपनकु दीख रह्यो हे वो अपने भीतरकी कल्पना हे के बाहरके जगत्को अपने ऊपर पड्यो भयो प्रभाव हे. कल मैने याहीलिये वो सारे फन्कशन् बताये हते अहंकारके, वो आप रिकोल् करोगे तो अब आपकु समझमें आयगो के करण कैसे कर्म पैदा करे हे? तो करण

ऐसे भी कर्म पैदा करे हे के खुद तटस्थ रहे. खुदको कॉन्ट्रीब्युशन् कछु भी नहीं. खाली आपकु असिस्ट् करे बाहरकी कोई चीजकु समझनेके लिये. पर मैंने आपकु कह्यो के जो नये कॅमरा आये हें, नये मोबाइल् आये हें, वो बाहरकी चीज आपकु नहीं दिखावें. बाहरकी चीजके पैरेलल् एक वाकी डिजिटल् इमेज खड़ी करे हें और वो डिज़ीटल् इमेज आपकु दिखावे हे. ऐसे तन्मात्रायें जितनी हें वो एग्ज़ेक्टली न तो बाहरकी हें और न केवल भीतरकी कल्पना हे. पर बाहर जगत्के भीतरके जो अपने फन्क्शन् हें ज्ञानकर्मके उनके इन्टरेक्शन्में पैदा होती भई कोई डिजिटल् इमेज हे. वाहीलिये बहोत सारे लोग यों समझते हते, ये छेल्ले दो हजार सालमें बल्कि पच्चीससो सालमें फिलोसोफीको इतनो डिबेटेबल् इश्यु रह्यो हे के भारी महाभारत हे या प्रश्नकु लेके. ईवन् सायन्स् भी झगड़ रह्यो हे. जैसे एक सामान्य प्रश्न आपसु पूछूं के रंग कहां हे; वस्तुमें के आंखमें? रंगके लिये क्या कह्यो जाय के जो किरणें प्रकाशकी जा सरफेसूपे पड़ें उन किरणन्की अलग अलग वेवलेंथ होवें. हर सरफेस्की अपनी कछु पोटेन्शियलिटी होवे हे. कोई किरणकी लेंथकु वो एब्सॉर्ब् कर सके हे और जा किरणकी लेंथकु वो एब्सॉर्ब् नहीं करे वाकु पाछी रिफलेक्ट् करे. जो किरण जा सरफेस्सु रिफलेक्ट् होके आई वो किरण अपने भीतर कलरको सेन्सेशन् पैदा करे हे. अलग अलग लेंथ हें किरणन्की और अलग अलग किरणन्की लेंथ हें वाके कारण अलग अलग कलरके सेन्सेशन् हो रहे हें. अब यामें इतनो बड़ो झगड़ा हे के कलर वस्तुमें हे के किरणमें हे के आंखमें हे? अब ये डिस्क्रिप्शन् सुनोगे तो पेहलो आपको रिऐक्शन् आयगो के अच्छा तो किरणकी लेंथमें रंग हे. पर वो ही किरण, उतनेही लेंथकी किरण, ब्लेक् एण्ड व्हाइट् कॅमरामें कहां रंग दिखावे हे? नहीं दिखावे. बहोत सारी जो कलर, जैसे मोबाइल्में भी वो इक्विप्मेंट् होवे हे. कम्प्युटरमें तो बहोत ही ज्यादा हे. एकदम एबन्डन् रूपमें हे. जो इमेज़ आपने स्टोर करी वामें रंगके साथ आपकु जो कछु भी फेर बदल करनो

होय, वो बाहरकी इमेज़ अन्दर लो और अन्दर जो भी रंग डालनो होय वामें डाल सको हो. अब वो रंग बाहरको हे के भीतर को हे? कल्पित हे के तथ्य हे? यदि भीतर हे तो कल्पित हे, यदि बाहरको हे तो तथ्य हे. पर या तरहसु डिजिटल् कॅमरामें जो कलर पैदा हो रह्यो हे, वो न तथ्य हे और न ही कल्पित हे. दोनोंसु इदं तृतीयं कछु और हे. वाके पेरेलल् पैदा होती कोई अलग क्रियेशन् हे. कोईकु देखके कोई चीज़ दूसरी पैदा हो रही हे. ये बात केवल आंखसु दिखाई देते रूपके बारेमें ही हे ऐसो नहीं हे; कानसु सुनाई देती ध्वनिके बारेमें भी येही प्रिंसिपल् हे. नाकसु ग्रहीत होते गन्धके बारेमें भी येही प्रिंसिपल् हे. अपने हाथसु चमड़ीके स्पर्शके बारेमें भी येही प्रिंसिपल् हे. जो भी लोग स्कूल्में गये होंयगे, उनने वो बहोत प्रसिद्ध सायन्स्को ऐक्स्पेरीमेंट् पढ्यो होयगो के तीन अलग अलग पानीकी बाल्टी रखो. एकमें गरम जल रखो, एकमें ठण्डो जल रखो. तीसरेमें समोयो जल रखो. फिर पेहले ठण्डे और गरममें हाथ डालो. फिर वाको समोये जलमें हाथ डालो. तो गरम जलमें जो हाथ डाल्यो हतो वाकु ये जल ठण्डो लगेगो. जाने ठण्डे जलमें हाथ डाल्यो हतो वाकु वो ही जल गरम लगेगो. तो जलकी गरमी जलमें हे के हाथमें हे? जलकी गरमी, टॅम्परेचर् अपन् बात कर रहे हें, वाके टॅम्परेचर मापवेके थर्मामीटर हें; वो गरम हे के ठण्डो ये तो पता ही नहीं चल रह्यो हे. जो गरम हे वो ठण्डो लग रह्यो हे और जो ठण्डो हे वो गरम लग रह्यो हे. तो ये सिर्फ रूपके बारेमें ही नहीं हे; ये स्पर्शके बारेमें भी हे; शब्दके बारेमें भी हे; गन्धके बारेमें भी हे; स्वादके बारेमें भी हे; रसके बारेमें भी हे; सबके बारेमें ये ही हे करके जितनी भी तन्मात्रायें हें अपने शास्त्रन्के हिसाबसु, न तो एक्स्क्लुसिवली ऑब्जेक्टिव् हें और न ही एक्स्क्लुसिवली सब्जेक्टिव् हें. न ये कल्पना हे; न हकीकत हे; हर टाइम् हर क्षण, एक नई सृष्टि पैदा होती जा रही हे डिज़िटली. जामें या बाजु अपनी चेतनाको कॉन्स्ट्रीब्युशन् हे और वा बाजुसु

वस्तुको कॉन्स्ट्रीब्युशन् हे. दोनोंनूके इन्टरेक्शनूमें कॉन्स्टेंटली कछु न कछु नयो पैदा होतो जा रह्यो हे. जो नयो पैदा होतो जाय हे वाकु तन्मात्रा कहें हें.

वाकु अपन् या प्रयोगसु अच्छी तरहसु समझ सके हें. जैसे ये स्क्रीन् व्हाइट् दीख रह्यो हे पर यापे अभी कोई कलरवाली लाइट डाल दो तो वो कलरवाली लाइट्को कलर यामें आ जायगो. अब ये स्क्रीन्को रंग क्या हे? कैसे बतानो? स्क्रीन्को रंग स्क्रीनको हे के लाइटको हे के आंखको हे. या रहस्यकु समझो के आंख, किरण और स्क्रीन् तीनोंनूके इन्टरेक्शनूसु पैदा होती भई एक टोटली इन्डिपेन्डेन्ट् एक डिजिटल् इमेज् हे. जो रंग हे वो, जो ध्वनि हे वो, जो स्वाद हे वो, आपकु लगेगो के मीठो तो मीठो ही हे, खट्‌टो तो खट्‌टो ही हे, ऐसे नहीं हे. कोई भी डॉक्टरकु पूछो; जीभको आपको स्वाद बिगड़ गयो ना, तो मीठो मीठो नहीं लगेगो. एक सीधीसी बात कहूं. रसगुल्ला खाके चासनी गटकके फिर चाय पियो तो वह चाय मीठी नहीं लगेगी. प्रयोग करके देखियो. खाली बिस्कुट खाके चाय पियो तो मीठी लगेगी. खाली बिस्कुट खाके, एक मिर्ची खाके, दूधमें शक्कर भी मत डालो खाली दूध पियो तो दूध मीठो लगेगो. प्रयोग करके देखो. अब मीठो हे के क्या हे? कैसे पता चले? अपन् समझें के दूधको गुण हे, अपन् समझें के जीभको गुण हे, अरे भाई! न जीभको गुण हे और न दूधको गुण हे, दोनोंनूके इन्टरेक्शनूमें पैदा होते ये सारे गुण हें. वस्तु और आंखके इन्टरेक्शनूमें पैदा होते भये गुण हें; वस्तु और साउन्ड्के सोर्स्के इन्टरेक्शनूमें पैदा होतो भयो शब्द गुण हे. स्पर्श भी वाही तरहसु हे के आप कैसे तरहसु इन्टरेक्ट कर रहे हो. वासु वहां वो गुण एक नई इमेज् लेके तुरत पैदा हो जाय. और सिस्टम् कितनी क्विक् हे, कितनी ऐलर्ट सिस्टम् हे के ज्यादा समय नहीं लगे, मनकु समझानो नहीं पड़े, मनकु प्रोग्राम् नहीं करनो पड़े, बस

दो बाल्टीमें हाथ डालो गरम और ठण्डेमें, फटाकसु या बाल्टीमें हाथ डालो, फटाकसु या बाल्टीमें हाथ डालो, वासु तुरत निर्णय हो जाय. ठण्डो गरम हो जाय और गरम ठण्डो हो जाय. सिस्टम् कितनी क्विक् और एलर्ट हे एकदम! तो ये आखो क्यों हो रह्यो हे? अपने हिसाबसु अपने यहां वाको कारण ये बतायो हे के या तरीकेकी सारी काउन्टर फोर्सिस् वामें काम कर रही हें; अहंकारको फोर्स् भी काम कर रह्यो हे. जा बखत बाहरकी दुनियांकु देख रहे हो तब अपनूकु लगे के अपने अहंकारसु फिर अपन् देख रहे हें. महाप्रभुजीको सिद्धान्त् और भागवत्को सिद्धान्त् भ्रान्ति नहीं हे. अपने अहंकारसु तुम रूपकु देख रहे हो, अपने अहंकारसु तुम शब्दकु सुन रहे हो, अपने अहंकारसु तुम ढोकलाको स्वाद ले रहे हो. तुम अपने अहंकारसु भी ले रहे हो, पर ऐसे मत मान लीजियो के ये सारी अहंकारकी कल्पना ही है. ये पाछी ब्युटी है. वाकी एक एक्स्ट्रीम ये है के लोग सोचें के ये अपने अहंकारकी खड़ीकी भई कल्पना हे. ये कल्पना नहीं हे हकीकत भी हे. जैसे गये बखत मैने कही हती ना! ''**कुछ हकीकत हे कुछ कहानी हे कितनी पेचीदा जिन्दगानी हे.**'' दोनोंनूको कहानी और हकीकतको निरन्तर इन्टरेक्शन् हो रह्यो हे और वा 'बीइंग्' और 'बिकमिंग्'के इन्टरेक्शनमें कहानी 'बिकमिंग्' हे और हकीकत अपने आपमें एक 'बीइंग्' हे. या तरहसु वो दोनों आपसमें एक दूसरेसु इन्टरेक्ट् कर रहें हें और वा इन्टरेक्शन्के कारण एक आखी सृष्टि प्रकट हो रही है. ये अपने अहंकारको स्वरूप हे.

(अहंकारके विभिन्न पेहलु)

अब यामें गीता भागवत और महाप्रभुजी क्या आज्ञा करें हें वाकु देखो. ''**कार्य-कारण-कर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिः उच्यते पुरुषः सुख-दुःखानां भोक्तृत्वे हेतुः उच्यते**'' (भग.गीता.१३।२०) ''**कार्य-करण-कर्तृत्वे कारणं प्रकृतिं विदुः भोक्तृत्वे सुखदुःखानां पुरुषं प्रकृतेः परम्**'' (भाग.पुरा.३।२६।८).

प्रकृति महत्की प्रोसेस्सु या अहंकारकी प्रोसेससु अहंकारमें कोई तरहके कार्य करण और कर्तृत्व को नेचर लावे हे. पुरुषकी साइड्सु कोई तरहको ज्ञातृत्वको माने नोअरको नेचर आवे हे, और कोई तरहसु भोक्तृत्वको नेचर लावे हे. जा चीजकु तुम जान रहे हो, वाकु तटस्थतया नहीं जान रहे हो, वाकु अपने भोगार्थ जान रहे हो. कोई भी बात, देखो ध्यानसु समझो! संगीत सुन रहे हो या प्रवचन सुन रहे हो, तुमकु सुनाई तो दे रह्यो हे पर जैसे माईककु सुनाई दे रह्यो हे, वामें भोगबुद्धि नहीं है. तुम्हारो कान मेरी आवाज सुन रह्यो हे. पर माईक भी जब सुन रह्यो हे, तब सिर्फ आवाज सुन रह्यो हे पर वाकु भोगबुद्धि नहीं हे. तुम्हारेमें भोगबुद्धि हे. तुमकु मेरी बात सुनके कोईकु अच्छी लगती होयगी कोईकु बुरी लगती होयगी, कोईकु कड़वी लगती होयगी, कोईकु लाउड् माने बम्पर जाती लगती होयगी. कोईकु नींद लावेवाली लगती होयगी. कोईकु उबासी लावेवाली लगती होयगी, कोईकु चमक लावेवाली लगती होयगी. ये सब बातें भोग हें. ये मेरी बातकु तुम सब भोग रहे हो. माईककी तरह मात्र सुन नहीं रहे हो. जब भी सुन रहे हो तो साथमें वा बातको भोग भी तुम कर रहे हो. दूसरे शब्दनूमें वाकी मजा या दुःख मान रहे हो. तो ''**पुरुषः सुखदुःखानाम् भोक्तृत्वे हेतुः उच्यते.**'' (भग.गीता.१३।२०). अपनूकु रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द जो भी कुछ अपने अहंकारमें दिखलाई दे रहे हें या अनुभवमें आ रहे हें, वा अहंकारमें आते भये सुख-दुःखके भोग पुरुषकी साईड्सु सप्लाईड् हें. कार्य, कारण, करण और कर्तृत्व प्रकृतिके द्वारा सप्लाईड् हें. लिहाजा अपने अहंकारमें वे सारे गुण मौजूद हें के अपनो अहंकारको नेचर कार्यको भी है, अपने अहंकारको नेचर करण कर्ता भोक्ता ज्ञाता वगेरे होवेको भी है. अपने अहंकारके ये कितने खूबसूरत फॅसेट् हे! ये देखोगे तो ख्यालमें आयगो के केहवेकु तो एक अहंकार हे पर अहंकारके माथायें कितने हें! एक वाको करण होवेको माथा हे; वैसे कार्य होवेको, कर्ता होवेको, ज्ञाता होवेको, भोक्ता होवेको;

ऐसे कई माथाएँ अपने अहंकारके उभर रहे हें. पहाड़के जैसे शिखर उभरें ना! ऊपर जावें तो अपनूकु शिखर उभरते भये दीखें. ऐसे अपने अहंकारमेंसु उभरते भये ये शिखर अपनूकु ताक रहे हें के ये क्या क्या हे. ये सारे अहंकारके जो फॅसेट मैंने कल आपकु बताये हते, वो आज या बातकु समझोगे, तो एकदम स्पष्ट हो जायगो के कैसे अहंकार कार्य भी हे. अपन् देखेंगे आगे जाके वो करण भी हे, अभी तो मैंने खाली आपकु याको इन्ट्रोडक्शन् दियो हे. आगे याकी डीटेल् अपन् देखेंगे.

(अहंकारके विभिन्न पेहलु होवेको कारण पुरुष-प्रकृतिकी क्रिसक्रोसिंग)

अपने माइन्ड्कु वा तरहसु प्रिपेयर करो के अहंकारके ये सारे फॅसेट क्यों आ रहे हें? वो इनहेरिटेड् आ रहे हें. पुरुष और प्रकृति के क्रिस् क्रॉसिंग्में जो क्रियेशन् भयो हे वाके कारण अहंकार अपने ये सारे फॅसेट शीर्षकी तरह अपनेमेंसु प्रकट कर रह्यो हे. मैं समझूं के इतनी बात आपकु स्पष्ट भई होनी चहिये. याहीलिये भगवद्गीता एक बहोत अच्छी बात कहे हे. **''पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् कारणं गुणसंगो अस्य सदसद्योनिजन्मसु''** (भग.गीता.१३।२१). ये पुरुष यहां आके प्रकृतिस्थ हो जाय. महत्में प्रकृति पुरुषस्थ हो जाय. कॉन्सॅप्ट्की खाली पॅरेलेलिज़म् समझा रह्यो हूं. यासु ज्यादा स्ट्रेच् मत करियो. अपने यहां पत्नीके कई नाम हें. एक प्रसिद्ध नाम तो 'दम्' है और 'पति' वो पतिके सम्बन्धमें है. एक बिचारो 'पति' हे और एक 'दम्' हे करके वो 'दम्पति' है, वो एक अलग कथा हे. पर एक दूसरी कथा और हे. एक भार्या हे तो दूसरो भर्ता हे. ये पुरानी कथा हती. अभी कॅरी फॉरवर्ड् हे. बड़े दिन बाद जब सब लड़कियें पढ़ लिख लेंगी, जॉब् करवे लग जायेंगी तो दोंनो ही भर्ता हो जायेंगे. शायद रिवर्स्में ऐसे भी हो जायगो के वो भार्य हो जायगो और ये भर्त्री हो जायगी. रिवर्सल् प्रोसेस् भी पॉसिबल् हे वामें, डिपेन्डिंग् ऑन सोशियल् सर्कम्स्टेन्सेस्. जो

पुरानी कस्टम् हे वामें पत्नी 'भार्या' हे. 'भार्या' मने जाको भार ढोनो हे. एक भार ढोवेवालो 'भर्ता' हे. भारकु जो ढोवे वाको नाम 'भर्ता'. जाको भार अपन् मेहसूस करते होंय वाको नाम 'भार्या'. याके अलावा एक पत्नीके बारेमें बहोत अलग नाम हे. 'जाया'. पत्नीकु 'जाया' कह्यो जाय. ये बहोत मीठो नाम हे. 'जाया' क्यों कहें पत्नीकु? तो शास्त्र निरुक्ति यों बतावे हे **''यद् अस्यां जायते पुनः''**. हर पति बच्चाकी तरह अपनी पत्नीमें फिरसु पैदा होवे हे. पत्नीमें वो पति बच्चाकी तरह पैदा हो रह्यो हे, या अर्थमें पत्नी वाकी 'जाया' हे. **''जायया जायते पुनः यद् अस्यां जायते पुनः तस्मात् जाया''**. मैं समझूं गुजरातीमें याको शब्द हे के नहीं पर हिन्दीमें याको शब्द हे 'जच्चा'. 'जच्चा' शब्द 'जाया'को ही डेरीवेशन् हे. जामेंसु बच्चा पैदा होवे हे. 'जच्चा' होवे वाको कॉरेस्पॉंडिंग् बच्चा होवे. तो 'जच्चा' और 'बच्चा' दो नाम हें हिन्दीमें हें.

सो ''पुरुषः प्रकृतिस्थोहि महद्रूपेण जायते'' 'महद्' उनकी सन्तति हे. **''यद् अस्याम् जायते पुनः''** याहीलिये पुरुषकु 'जनक' कह्यो हे और प्रकृतिकु 'जाया' कह्यो हे. प्रकृति जाया हे. जामें पुरुष अपने आपकु रीमोल्ड् करके पैदा होवे हे. वो रीमोल्डिंग् अपनी चेतनाकु कितने तरहसु रिमोल्ड् करे हे! पेहले वामें प्योरअवेरनेस् आवे. माने अहंकार बिनाकी अवेरनेस् आवे. ऑलमोस्ट जैसे दुकानन्के दरवाजापे वो इलेट्रॉनिक् गेट लगे होवें हें ना! वामें अहंकार नहीं होवे हे पर कोई आ रह्यो हे तो वाकी अवेरनेस् होवे के कोई आ रह्यो हे तो वो खुल जाय. चल्यो जाय तो पाछे बन्द हो जाय. नलनूमें भी वो सिस्टम् प्रोवाईड करें हें के हाथ डालो तो पानी आवे लग जाय. तो वो अवेरनेस् हे पर वामें सेल्फ अवेरनेस् नहीं हे. अवेरनेस् ऑफ् अधर हे. ऐसी एक अवेरनेस् हे. वामेंसु फिर एक सेल्फ् अवेरनेस् पैदा होवे हे. वो अवेरनेस् जो पैदा हो रही हे **''यद् अस्याम् जायते पुनः''** वो **''पुरुषः प्रकृतिस्थो हिः''** पुरुष जा

बखत प्रकृतिस्थ होवे ऑलमोस्ट् वाही तरहसु जा तरहसु इनसेमिनेशन्की प्रक्रियासु पिता माताके गर्भमें जावे और माताके गर्भमें जाके सन्ततिके रूपमें फिरसु जन्मे. ऐसे पुरुषको चैतन्य प्रकृतिके क्रियामें गर्भगत् होके महद्रूपसु जन्मे हे और वो महद्रूपसु जनमवेके बाद अहंकाररूपमें **''यद् अस्याम् जायते पुन:''**. अपनी चेतना अचानक अहंकारके रूपमें प्रकट हो जाय हे. अहंकारके रूपमें प्रकट चेतनाकी प्रकृति माँ हे और पुरुष वाको पिता हे. रिलेशन् वाको या तरहसु समझोगे तो सारी बात समझमें आयगी.

अब वामें माता-पिता दोनोंके गुण हें. मानो माँको गुण हे एक्टिव् होनो, पिताको गुण माने कोन्शियस् होनो. माता-पिता दोनोंके गुण होवेके कारण अहंकार एक्टिव् भी हे और कोन्शियस् भी हे. अहंकार कर्ता भी हे और ज्ञाता भी हे. जब ज्ञाता और कर्ता दोनों हे तो मुफ्तमें काहेकु जाने! कछु न कछु तो भोगेगो ही करके वो भोक्ता भी बन जाय हे. अकेले पुरुषमें भोक्तृत्व नहीं हतो; अकेली प्रकृतिमें भोक्तृत्व नहीं हतो; प्रकृतिमें कर्तृत्व हे. पुरुषमें ज्ञातृत्व हे. ज्ञातृत्व और कर्तृत्वकी क्रिस् क्रॉसिंग्के कारण जो महद्रूपी बच्चा पैदा भयो और महद्रूपी बच्चामेंसु फिर अहंकाररूपी पोता पैदा भयो, वामें अचानक भोक्तृत्वको एक नयो फॅसेट खुलके आवे. जैसे बच्चा थोडो माँको और थोड़ो पिताको कॅरेक्टर लेके फिर खुदको भी एक कॅरेक्टर डेवलप् करे है. वामें अपन् देख सकें के अच्छा! यामें ये माँको अंश हे, ये पिताको अंश हे और ये याको खुदको अंश हे. वा तरहसु वा बच्चाको तीसरो खुदको फीचर डेवलप् होवे, वा तरहसु वा क्रिस् क्रॉसिंग्के कारण अहंकारने एक नयो फीचर डेवलप् कियो के वो कर्ता और ज्ञाता के साथमें भोक्ता भी है.

(अहंकारके भोक्तृत्वके कारण विषय अच्छो या बुरो लगे)

(तुम्हारेमें जब सेल्फअवेयर्नेस् आई,) माइन्ड् इट माईकूमें क्योंके

सेल्फअवेरनेस् नहीं हे करके आवाज सुने हे पर भोक्तृत्व नहीं हे. कॅमरा रूप देख रह्यो हे पर रूप देखवेके कारण कॅमरा दु:खी सुखी नहीं हे. माने गटरको फोटो पाड़ो तो कॅमरा दु:खी नहीं हे; फूलको फोटो पाड़ो तो कॅमरा सुखी नहीं हे. जो भी हे वाको फोटो पाड़के दे देगो. वाको क्या गयो! गटरके सामने होयगो तो वाको फोटो पाड़के दे देगो और यदि बगीचाके सामने होयगो तो बगीचाको फोटो पाड़के दे देगो; पर अपनूकु गटर देखके सूग आयगी. बगीचा देखके जोश आयगो. अपनेमें ये भोक्तृत्व अहंकारके कारण आ रह्यो हे. अब जाके एक फेसेट डेवलप् भयो. कर्तृत्व ज्ञातृत्व के क्रिस् क्रॉसिंग्के कारण अलगसु भोक्तृत्वको एक पेहलु निखरके सामने आयो. अब अपनो अहंकार कर्ता हे, ज्ञाता हे, इतनो ही नहिं भोक्ता भी हे. सायमल्टेनियस्ली कार्य भी हे, करण भी हे; इतने सारे फॅसेट अहंकारके अपनूने आज देखवेको प्रयास कियो. वामें भगवान् अपनूकु समझावे **''पुरुष: प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्.''** (भग.गीता.१३।२१) पुरुष जा बखत प्रकृतिमें स्थित होवे हे वा बखत वाकु प्रकृतिके गुणनूके बारेमें केवल अवेरनेस् ही नहीं हे; भोग भी करनो चाहे हे. भोग भी करे हे तब वो अहंकारके कारण वामें निरन्तर वाकु सुख या दु:ख को बोध होवे. मेरे अहंकु कोई चीज सूट होती होवे (अनुकूल लगती होय); (वाको में भोगकरनो चाहूंगो). कोई मेरे अहंकु सूट नहीं होती भई चीज हे, जो मेरे अहंकु ठेस पहोंचाती होय, वाको मैं भोग नहीं करनो चाहूंगो वाको मैं त्याग करनो चाहूंगो या उपेक्षा करनो चाहूंगो.

या तरीकेको भोक्तृत्वको भाव अपनी चेतनामें अहंकारके कारण पनपे हे. अब ये कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व; जगत्में भी हो सके हे; ब्रह्मको भी हो सके हे; मुक्तिको भी हो सके हे; नर्कको भी हो सके हे और स्वर्गको भी हो सके हे. सब जगह हो सके हे. ये तो एक फाईन् प्रोडक्ट् पैदा हो गयो हे. अब वाको

एप्लीकेशन् कहां हे, युसेज् कहां हे, युटीलिटी कहां हे वो तो सर्कम्स्टेन्सेस्के ऊपर डिपेन्ड् करेगो जामें कर्ता, ज्ञाता, भोक्ता इनवोल्वड् हो रह्यो हे. जा सर्कम्स्टेन्सेस्में इनवोल्व् होयगो वा तरहसु वो कार्य करेगो. वा तरहसु वो वा बातकु समझेगो. वा तरहसु वो वाको भोग करेगो.

(पुरुष प्रकृतिस्थ होके प्रकृतिके गुणन्को भोग करे)

एक साधारण उदाहरणसु आप समझ सको हो के गटरके किनारे झोंपड़पट्टीमें पैदा भये बच्चाकु गटरकी गंध नहीं आयेगी. अपनूकु गटरकी गंध आयेगी. क्यों? क्योंके अपन् वहां जन्में नहीं. वाके गटरके गुणन्को भोग अपन् नहीं कर रहे हें. जैसे मच्छीमारन्कु मच्छीकी दुर्गंध नहीं आवे. अपन् वहां जावें और मच्छीयें सूखती होवें तो कितनी दुर्गंध आवे! क्यों दुर्गंध आवे? क्योंके अपन् वाको भोग नहीं कर रहे हें. भोग करें तो दुर्गंध आनी बंद हो जायगी. ''**पुरुष: प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् कारणम् गुणसंगोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु.**'' अकबरके लिये ऐसो कह्यो जाय के वाने कोई मच्छीमारकु बुलाके अपने महलमें सुवा दियो. आखी रात वा गरीबकु नींद नहीं आई. वासु पूछी ''तकलीफ क्या हे?'' बोल्यो ''मच्छीकी गंध नहीं आ रही हे.'' मच्छीकी गंध आवे के दुर्गंध आवे? अपनूकु दुर्गंध आवे पर कोईकु सुगंध आवे. ''**पुरुष: प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्.**'' प्रकृतिस्थ होके प्रकृतिमें पैदा होते भये गुणन्को भोग करे हे. ''**कारणम् गुणसंगोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु.**'' या तरहसु अपने अहंकारमें मल्टीपल् फन्क्शन्, मल्टीपल् ओरियन्टेशन् पैदा होवें हें. कई तरहके वामें ओरियन्टेशन् पैदा होवें हें. जाकु अपने यहांकी टर्मिनोलोजीमें अपनो 'बीजभाव' भी समझ सके हें. वाकु ये चीज पसन्द आयगी और ये चीज पसन्द नहीं आयगी. वामें एक तरहको ओरियन्टेशन् पैदा होवे हे. जैसे आचार्यचरण पुष्टिप्रवाहमर्यादामें केह रहें हें ''**सोऽपि तैस्तत्कुले जात: कर्मणा जायते यत:. प्रवाहेऽपि समागत्य पुष्टिस्थ तैर् न युज्यते.**'' (पु.प्र.म.२५). यदि पुष्टिजीव प्रवाहीके

यहां पैदा भयो तो वाको वहां तालमेल नहीं बैठेगो. प्रवाहीजीव पुष्टिमें पैदा भयो तो वाको यहां तालमेल नहीं बैठेगो. क्यों नहीं तालमेल बैठेगो? क्योंके वाके अहंकारके ओरियन्टेशन् अलग अलग हें. वो बात अहंकारके सीधे कन्फ्रन्टेशन्में आ जायगी. जाके अहंकारको प्रवाही ओरियन्टेशन् हे, वाकु पुष्टिमें आते ही सफोकेशन् होनो शुरु हो जायगो ''भई! कहां फंस गये. कैसे फंस गये यामें?'' ''अपनूकु या झगड़ामें क्या लेनो देनो? सेवा करनी होय सेवा करो; मठड़ी खानी होय मठड़ी खाओ पर मेहरबानी करीने अमने तकलीफ न आपो.'' ऐसो भाव हो जाय. प्रवाहमें जाके पुष्टिजीवकु भी एसो लगेगो. या तरीकेकी तकलीफ क्यों होवें सब? क्योंके सबके अहंकारके ओरियन्टेशन् अलग अलग हो जायें हें. वो ओरियन्टेशन अलग अलग होवें करके पुष्टिजीव मर्यादा या प्रवाह में जावे तो वो अपने आपकु फिट नहीं कर पावे. मर्यादाजीव पुष्टि या प्रवाह में आवे तो वो अपने आपकु फिट नहीं कर पावे. ऐसे ही प्रवाहीजीव पुष्टि या मर्यादा में जाय तो अपनेकु फिट नहीं कर पावे. क्योंके सबके अहंकारके ओरियन्टेशन् अलग अलग होवें हें. क्योंके वा जीवको भोक्तृभाव अलग हे. कौनसो भोक्तृभाव भोगनो चाहे वो तो वाके प्रकृतिस्थ अहंकारपे आधारित हे ना!

बचपनसु हमारे माँने हमकु इडली खवाई, डोसा खवाये. इडली आज भी बने ना, तो थोड़ी ज्यादा खवा जाय! हमारे किशनगढ़के मुखियाजीकु हमने इडली दे दी तो उनकु वोमिट् हो गई. उनने कही ''गलेमें ये चीज उतर कैसे सके हे!'' मैंने कही ''अरे!इडलीसु वोमिट् होवे''! पर वोमिट् हो गई वाकु. क्यों हो गई वोमिट्? यामें वोमिट् होवे जैसी कोई बात ही नहीं हे, पर कभी नहीं खाई होय और अचानक कोई मुंहमें इडली धर दे तो गलामें वो उतरे ही नहीं वोमिट् हो जाय. आप देखो जब बच्चाकु जब पेहली बार शक्करको दूध पिवायें तो बच्चा थूक दे. क्योंके माँको दूध

पियो भयो होय, तो वाकु वा दूधको स्वाद आतो होय. अचानक वाकु शक्करको दूध पसन्द नहीं आवे. जबरदस्ती नाक दबा-दबाके डालते रहो तो बच्चाकु फिर माँको दूध भानो बंद हो जाय. शक्करको दूध भावे लग जाय. "**पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् कारणम् गुणसंगो अस्य सदसद्योनिजन्मसु.**" प्रकृतिस्थ होके प्रकृतिके गुणनूको भोग करे हे, भोग करवेके कारण वामें अलग अलग ढंगके ओरियन्टेशन् डेवलप् होवें हें. ये सारो अपने अहंकारको एक पिक्चर हे जो अपनूकु समझनो पड़ेगो.

पेहले "**अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्. कृष्णे सर्वात्मके नित्ये सर्वथा दीन भावना.**" या संदर्भमें अपनूकु इन बातनूकु समझनो पड़ेगो के भई! कौनसे अहंकारकी मनाई करी जा रही हे? कौनसे अहंकारकी मनाई हो नहीं सके हे. जब बात पॉसिबल् ही नहीं हे तब मनाई करोगे कैसे? ये सारी बातें अपनूकु वामें प्राप्त हो रही हें. ये आज तो नहीं देख पायेंगे पर डेफिनेट्ली आवेवाले दो तीन दिनमें देखनों चाहेंगे जो इन बातनूके आधारपे अहंकार नहीं करनो केह रहे हें, तो वो कौनसे नेचरको अहंकार हे? अपने स्वरूपको घटक जो अहंकार हे, वा अहंकारकु ना कैसे पाड़यो जा सकेगो! जो अहंकार तुम्हारेमें ये ओरियन्टेशन् पैदा कर रह्यो के "मोकु कृष्णभक्ति करनी हे; मोकु कृष्णशरणागति करनी हे; मोकु कृष्णकी सेवा करनी हे." ये जो पुष्टिअस्मिता हे "**अमे ऐवा रे, अमे ऐवा रे!" ये भी तो अहंकार हे ना!** या अहंकारकु "**न कुर्वीत**" कैसे कह्यो जा सकेगो! अपन् ऐसे नहीं समझ लें के अहंकार मात्र धोबीघाटपे ले जाके धोकासु धोवेके लिये हे, अहंकारके भी कई पेहलु हैं, कुछ धोबीघाटपे धोने पड़ेंगे; कुछ पहेलु धोये ही नहीं जा सकेंगे. वो अपने आपमें ऐसे हें के यदि कुछ धोनो भी होयगो तो वो अहंकार ही वाकु धोयगो. वा अहंकारकु कोई धो नहीं सके. कोई चीजकु धोनी होयगी तो अहंकार धोका चलायेगो 'ले!'. जब अहंकार धोका

मारेगो तब तबियत साफ हो जायगी. मने "**प्रवाहेऽपि समागत्य पुष्टिस्थ तैः न युज्यते.**" "कीदृशः पुष्टिस्थः?" जामें पुष्टिस्थ होवेको अहंकार हे, वो उनसु जुड़ेगो नहीं. खुदमें पुष्टिस्थ रेहवेको अहंकार ही जामें नहीं रेह गयो, वो तो आनन्दसु जुड़ेगो. अभी जैसे आपकु महाप्रभुजीको सिद्धान्त समझमें आयो तो ये मनोरथनूमें, भागवतकी कथानूमें आप नहीं जुड़ोगे. क्योंके आपकु लगेगो के सिद्धान्तसु विपरीत कथा हे, जो के आप सुन रहे हो पर यदि आपमें वो ओरियन्टेशन ही नहीं हे पुष्टिमार्गीय होवेके अहंकारको, तो जहां भी कोई कथा भई तो तुरत पैर थनगनेंगे, कान थनगनेंगे, आंख थनगनेंगी, हाथ थनगनेंगे. "एक वखत तो जोई आओ पछी जे थवानु होय ते थशे. क्यां महाप्रभुजी आपणने सामेथी रोकवाना छे! एक वखत तो चालो जे रीते देखाय. आजनो ल्हावो लीजिये जी काल कोणे दिठी छे!!" तुरत हो जाय. क्योंके वो पुष्टिको ओरियन्टेशन् नहीं हे. ओरियन्टेशन् होय तो तुरत सूग आयेगी के "हठ! या गंदी बातमें अपन् काहेकु पड़ें". अपन् गटरके किनारे नहीं रेहते होंय, अच्छी स्वच्छ जगह रेहते होंय तो गटरपे जाते ही नाक मौंह सिकुड़ जायेंगी. नहीं सिकुड़ रही हें तो ओरियन्टेशन् गटरके किनारेपे रेहवेको हे. "**पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् कारणम् गुणसंगो अस्य सदसद्योनिजन्मसु.**" तो तुरत "आजनो ल्हावो लीजिये जी, काल कोणे दिठी छे!. वळी केसरनी धोती ने केसरी उपरना. आऽऽहा, आऽऽहा, मजा आवी गईने रे, काल कोणे दिठी छे!". वा तरीकेको चार्वाक् अपनेमें तुरत डेवलप् हो जाय यदि अपने अहंकारको ओरियन्टेशन् पुष्टि ढंगको हे नहीं. अपन् जा बखत केह रहे हें "**अहंकारं न कुर्वीत**" तो वामें इन सारे फेसट्कु अपनूकु क्लीयर कट् समझने पड़ेंगे के कौनसे ढंगको अहंकार करनो और कौनसे ढंगको अहंकार नहीं करनो.

मैं समझूं के प्रश्न आपकु करनें होंय तो करो क्योंके आगेको जो विषय हे वो पाछे बड़े विस्तारकी अपेक्षा रखे हे.

(महत् = जगदंकुर = प्योर्-अवेयरनेस् और अहंकार = सेल्फअवेयरनेस्)

प्रश्न : ये काल कर्म प्रकृति और स्वभाव की जो बात बताई अभी वामें आपने ऐसो बतायो के ये सिस्टम्‌मेंसु पेहले महत् भयो. महत्‌मेंसु फिर अहंकार. तो या तरहके वाया वायाकी जरूरत ही क्या पड़ी? बीचमें महत्‌को क्या रोल आयो?

उत्तर : सीधीसी बात समझो. धेअर केन नेवर बी सेल्फ अवेयरनेस् विदाउट् अवेरनेस्. सो महत् इज़् प्योर-अवेरनेस् और अहंकार इज़ सेल्फ-अवेरनेस्. केन धेर एवर बी सेल्फ-अवेरनेस् विधाउट् अवेरनेस्? अवेरनेस् होयगी तो सेल्फ्-अवेरनेस् आयेगी ना! अवेरनेस् ही नहीं हे; तो सेल्फ्-अवेरनेस् कहांसु आयेगी? महत्‌के लिये भागवतने बहोत अच्छे ढंगसु समझायो हे. ये महत्‌तत्त्व क्या हे? **'जगदंकुर'** हे. **''जगदंकुरः' इति यथा वृक्षस्य प्रथमावस्था अंकुरः तथा जगतः** (सुबो.३।२६।२०) सारे जगत्‌की ब्लुप्रिन्ट महत्‌तत्त्वमें रही भई हे. जैसे अपन् मकान बनावेके पेहले ब्लुप्रिन्ट बनावें ना, तो वाके हिसाबसु मकान बने, ऐसे सारे जगत्‌को अंकुरण, सारे जगत्‌की ब्लुप्रिन्ट महत्‌में रही भई हे. महत्‌में रही भई हे करके महत् अहंकारके माध्यमसु फिर सेल्फ्-अवेरनेस्‌के रूपमें प्रकट होवे हे. महत् ही तन्मात्राके रूपसु बाह्य पंचमहाभूतनकी अवेयरनेस् बनवेके रूपमें प्रकट होवे हे. ज्ञानेन्द्रियके रूपमें करणके रूपमें प्रकट होवे हे. मनके रूपमें वो कर्ताके रूपमें या करणके रूपमें प्रकट होवे हे. या तरहसु वामें जो सारी अवेरनेस् रही भई हे वो अवेरनेस्‌के ही सारे वेरियेशन् हें. जब अवेरनेस् नहीं हे तो सेल्फ्-अवेरनेस् कहांसु आयेगी? जब सेल्फ्-अवेरनेस् नहीं हे तो रूपकी अवेरनेस् कहांसु आयगी? कार्यकी या तन्मात्रान्‌की अवेरनेस् कहांसु आयगी! सेल्फ्-अवेरनेस् होयगी तो ये सब अवेरनेस् आयेंगी ना! जा बखत अपन् नींदमें या कॉमामें जायें और सेल्फ अवेरनेस् खो जाये वा बखत अपनूकु बाहरी दुनियाकी अवेरनेस् होवे? क्यों नहीं होवे? अपनी सेल्फ्-अवेरनेस् बाहरी दुनियांकी अवेरनेस्‌में

पेहली शर्त हे. या बातकी खूबसूरती देखो के कितनी मजेदार हे. कॉमामें भी नहीं होंय जाग भी रहे होंय माने तुम जाग रहे हो, पूरी तरहसु स्वस्थ हो, पर यदि एक वस्तुमें तुम इतने खो गये कि तुम्हारी सेल्फ-अवेरनेस् खो गई, तो तो समाधि लग गई तब तो दुनियांमें कछु भी होतो होय तुमकु पता नहीं चलेगो. योगसमाधिमें कछु भी होय तो पता नहीं चले यह क्यों ऐसो हो रह्यो है? क्योंकी जब सेल्फ-अवेयरनेस्‌सुभी भीतर गये तो सेल्फ-अवेयरनेस खो गई तब दूसरी अवेयरनेस् तो वापे आधारीत है वह कहांसु होयगी.

(भक्त्यात्मक सेवामें डीप् इन्वोलमेन्ट् = समाधि)

कच्छ भुजमें भूकम्प आयो ना! तो वहां एक मांजी सेवा कर रही हती. सेवा कर रही हती और वा बखत भूकम्प आयो तो वाको बेटा दौड़के केहवे गयो के ''चल भाग! मकान हिल रह्यो हे''. अब पता नहीं के वो स्तब्ध हो गई के सेवामें वो इतनी डीप् इन्वोल्व्ड् हती के वो उठी नहीं. उठी नहीं तो बेटाने बहोत कोशिश करी के कोई तरहसु वाकु वहांसु बाहर काढ़ें. पर नहीं उठीसो नहीं उठी. तो बेटा भाग रह्यो हतो सो सीढ़ीपे जाते बखत सीढ़ी कॉलेप्स् कर गई और बेटा मर गयो. और मांजी सेवा करती ही रही. वाकु बादमें वा मकानमेंसु क्रेनूसु निकाल्यो. उठी ही नहीं डोकरी! पीछेसु वाकु बम्बई लाई गई. तो ये बातकु समझो के आदमी जग रह्यो हे तब भी ओवर-इन्वॉल्वमेंट् कहीं ऐसो हो जाय तो सारी चीजन्‌की अवेरनेस् खो जाय. ये खाली ठाकुरजीकी बात नहीं हे. अच्छे बुरे हर व्यसन्‌में यह बात है. जुआमें सिगरेट्‌में भी वोही बात हे. **''बरबादियोंका जश्न मनाता चला गया मैं हर फिक्रको धुंयेंमें उड़ाता चला गया''**. कहीं भी तुम ओवर-इन्वॉल्व्ड् भये नहीं तो तुरत तुम चाहे नींदमें जाओ, चाहे कॉमामें जाओ, चाहे सिगरेटमें जाओ चाहे सेवामें जाओ; यदि तुम्हारो अहंकार कोई भी अवेरनेस्‌में ओवर-इन्वॉल्व्ड् हो गयो तो फिर बाहरी दुनियांकी

खबर नहीं पड़ेगी. पर मन ऐसो है जो सेल्फ़-अवेरनेस् और अवेरनेस् ऑफ अदर्सके बीचमें दौड़तो रहे है या लिये अपनूकु बाहरी दुनियांकी अवेरनेस् हे. वा लिये मन अहंकारमेंसु पैदा होती भई कर्सरके जैसी प्रोवाईडेड् एक युटीलिटी हे. कर्सरसु अपन् ओटोमेटिकली भी जा सकें हें और वोलन्टरी भी जा सकें हें जहां तुमकु जानो होय, जाननो होय तो चलो जान लो अपने अहंकारसु, कर्म करनो होय तो कर्म कर लो अपने अहंकारसु, अनुभव करनो होय तो अनुभव कर लो. तो मन कर्सर हे.

अहंकार मनकु कर्सरकी तरह उपयोग करे. अहंकारमें तो वो कर्तृत्व, ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व हें, कार्यत्व हे, करणत्व हे, सब हे पर वाके कौनसे फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो; वाके कर्तृत्वके फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो, के ज्ञातृत्वके फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो, के भोक्तृत्वके फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो, करणके फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो, के क्रियाके फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो? अहंकारके कौनसे फन्क्शनूकु एक्टीवेट् करनो, वामें मन ऑटोमेटिकली भी और वॉलन्टेरिली भी दोनों तरहसु काम करतो होवे हे.

एक बात बताउं मोकु सचमुचमें आश्चर्य होवे. महाप्रभुजीकी कृपा लगे हे के या विषयमें तुम लोगनूकु रस आ रह्यो हे! नहीं तो ये रस आवे एसो विषय नहीं हें, ये सब सरफेसपें नीरस विषय हें. पता नहीं तुमकु क्यों रस आ रह्यो हे! बहोत डिफिकल्ट्सु भी ज्यादा शुष्क विषय हें के यामें कोई रस ले; मोकु खुदकु गिल्टी फील् होवे के बोलनो के नहीं बोलनो पर करें क्या! श्लोक आयो हे तो बोलनो तो पड़ेगो ही ना! ''बावा बना हे तो हिन्दी तो बोलेगा ही''. पता नहीं तुमकु क्यों रस आ रह्यो हे! महाप्रभुजीकी कृपा लगे हे!

(अहंकारके कारण अनचाही चीज़ भी करें)

प्रश्न : करण जब क्रिया या क्रियाजनक बने तब वाके बिना

क्रिया एकॉम्प्लिश् नहीं होयगी तो कर्मजनक बनेगो तो कर्तृजनक तो बन ही जायगो ना? जब कोई भी करण हे वो क्रियाजनक बन रह्यो हे. जैसे टेलीस्कोप् हे, माइक्रोस्कोप हे, या कोई कर्मजनक बन रह्यो हे जैसे कॅलिडोस्कोप् हे. तब तो वो जैसे दृष्टा वो कर्ता हे; तो कर्ताको जनक तो दोनों एँन्लूसु क्रियाजनक बने या कर्मजनक बने तो कर्तृजनक तो बन ही जायगो? तो कर्तृजनक यहां (चार्टमें) अलग कैसे हे?

उत्तर : थोड़ेसे धीरजसु या प्रश्नकु देखो. बहोत सारो दूध पी ले बहोत सारो चना खा ले. तेरे पेटमें घुड़ घुड़ आवाजें आयेंगी. वो आवाज तू पैदा कर रह्यो हे वामें तोकु कर्तृत्व भासित होयगो के क्रिया भासित होयगी? तू बल्कि रोकनो चाहेगो के ये क्रियायें पैदा नहीं होवें. तो हर क्रियामें कर्ता जरूरी नहीं हे. कछु क्रियायें अपने भीतर ही ऐसी पैदा हो रही हें, जो हो रही हें पर अपन् लाचार हें के पैदा हो रही हें तो हो रही हें. कर्तृत्व तो अपनो नहीं हे.

मैं झूमरीतलैया गयो दादाजीके बहोत अच्छे मित्र दाऊदयालको गाँव हतो. रातकु अचानक पहोंच गयो. वहां टाईगर सँक्च्युरी हती. दादाजीने कही ''वहां जा रह्यो हे तो वहां झूमरीतलैयामें दाऊदयालजीकु भी मिलते आइयो''. अचानक रातको पहोंच्यो. अब वो मोकु जाने नहीं, पेहचाने नहीं. वाने कही ''अब बावा आ गये तो क्या करनो!'' रातकु जंगलमें कोई व्यवस्था नहीं. तो एक दूधको बिहारी गिलास लायो. दूधको गिलास दिखाके मोकु कही 'लो!'. मैंने कही ''इतनो दूध तो मैंने कभी पियो नहीं, कैसे पीउंगो!'' चेलेन्ज् दे दी मोकु ''जवान हो के बुढ्ढे!'' अहंकार घायल हो गयो मेरो भी के मोकु बूढ़ो केह रह्यो हे! पी जाओ. तो मैं पी गयो वो बिहारी गिलास. अब कहां बम्बईको पानी मिल्यो दूध और कहां वो भेंसको बिना पानीमिल्यो शुद्ध दूध! एक गिलास इतनो बड़ो पी गयो तो दाऊदयालजीकु

और जोश आ गयो "एक गिलास और पीओ". मैंने कही "दाऊदयालजी मर जाऊंगो!" तो कही "पीऽऽऽओ." अब ये दादाजीको दोस्त हे के दादाजी हो गयो!! कोई तरहसु पी लियो. अब जो घुड्ड़ घुड्ड़ शुरु भई "**न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते**" (भग.गीता.५।१४). रातभर मोकु लग्यो टाइगर सेन्कच्युरीके सारे टाइगर पेटमें आ गये. इतनी घुड्ड़ घुड्ड़ भई के मर गयो. दूसरे दिन दाऊदयालजीने कही "मैं तब मानूंगो के आपकु मजा आई जब आप दूसरी बार आओगे." मैंने मनमें कही "पागल कुत्ताने काट्यो जो दुबारा आऊं यहां. एक बार फंसे सो फंसे पर अब कौन जाय!" अब तकलीफ वहां ये के जंगलमें संडास दीखे नहीं. जानो भी होय तो डर लगे के टाइगर खा जायगो. तो जानो कहां!! बहोत प्रोबलम् हो गई. क्रियाएँ तो सब प्रकट हो रही हती पर कर्ता मैं नहीं हतो. पता नहीं कौन कर्ता हतो? बड़ी बड़ी क्रियाएँ सारी रात प्रकट भईं. जो मेरो जी ही जाने हे. तो ऐसो नहीं हे के क्रिया प्रकट होवे तो कर्ता प्रकट हो ही जाय. मैं तो बिलकुल साक्षी निर्गुणभावसु देखतो रह्यो के पेटमें क्या क्या हो रह्यो हे. माने मोकु नरकको त्रास भयो ऐसो समझ लो.

प्रश्न : आपने ये कही न के अहंकारके कारण कर्तृत्व, करणत्व और भोक्तृत्व होवे हे वामें वाको एक स्वभाव जामें "**सोपि तैस् तत्कुले जाता कर्मणा जायते यतः**" (पु.प्र.म.२५) याकी संगति आपने बताई. वहां ऐसो लग्यो के अहंकारमें जो भोक्तृत्वपनो आयो हे वाके कारण वाके भीतर पुष्टि, मर्यादा या प्रवाहिता को कुछ स्वभाव प्रकट हो रह्यो हे. अपने यहां जो बीजभावकी जो बात करी वो अलग हे के अहंकारके लेवलपे ये सब प्रकट हो रह्यो हे?

उत्तर : बहोत अच्छो सवाल तेंने कियो. याकु ध्यानसु समझ के बीज तो मट्टीमें बोयो जाय. मट्टीमें बोयो भयो बीज भी उगे

कब हे? जब वाकु पानीसु सींचो तब. तो प्रभुने जो अपनो अंगीकार कियो हे वो तो बीजकी तरह हे. पर जा तरहसु प्रभुने अपनो अंगीकार कियो हे वा तरहको, मने बेझिक्-ओरियन्टेशन्को अपनेपे वा अहंकारको प्रेशर आवे तो बीजकी सिंचाई होयगी तभी ना! अगर वा तरहके प्रेशरको सिंचन नहीं भयो, क्योंके अहंकारमें वो ओरियन्टेशन् ही नहीं आयो या फॉर दि टाईमबीन्ग् डिसओरियन्टेशन् आ गयो, जाकु अपन् दुःसंग कहें या कर्मफल कहें या प्रभुकी विलम्बकी इच्छा कहें. अपने यहांके ग्रन्थन्में याके कई नाम दिये गये हें जो वाकु दुःसंगवशात् ऐसो हो गयो, कर्मफल वामें आड़े आ गये, या प्रभुकी विलम्बकी इच्छा हे. ये सिद्धान्तमुक्तावलीमें '**लोकार्थी**' में सब बातें बताई हें. ऐसी लोकार्थीताके कारण अपने अहंकारमें कछु डिसओरियन्टेशन् आ गयो तो यदि बीज होयगो तोभी बीजकी सिंचाई तो नहीं होयगी. तब तो बीज खिलेगो नहीं. क्योंकी बीज यदि खिलेगो भी तो सिंचाईसु ही खिलेगो ना! तो वो सिंचन कौन करेगो? तेरो अहंकार. तू कहेगो "यह काम सत्संग करेगो." तो सत्संगके कारण भी अंतमें वो अहंकार ही डेवलप् होयगो के "मैं या संग करवेके लिये हूं, या संग करवेके लिये नहीं हूं". सत्संग भी करेगो तो क्या करेगो? वा तरीकेको अहंकारकु ही तो डेवलप् करेगो. दुःसंग भी हिट् करेगो तो हिट कौनकु करेगो? बीजभावकु हिट कर सके क्या! बीजभावकु हिट् नहीं कर शके क्यों के वो तो वरणलभ्य हे वह तो अहंकारकु ही हिट करेगो.

(तापक्लेशतिरोभाव)

एक बहोत अच्छो शेर हे "**वो दर्द ही न रहा, वरना ऐ मताये हयात्. मुझे गुमा भी न था मैं तुझे भुला दूंगा**." तेरेसु बिछुड़वेको जो दर्द हतो, जितने दिन वो दर्द रह्यो उतने दिन तो मैं भूल ही नहीं पायो. एक दिन कछु ऐसो आयो के दर्द मिट गयो और मैं तोकु भूल गयो. "**मताये हयात्**" '**हयात्**' माने हस्ती.

अपने अस्तित्वकी जो पूंजी, तू तो मेरे अस्तित्वकी पूंजी हे. मेरो जो भी कछु एग्ज़िस्टेंस् हे वाकी पूंजी तू हे. मैं तो वा कॅपिटलको इन्ट्रेस्ट हूं खाली. कॅपिटल तो तू हे. मताये हयात् तो तू हे, मैं तो वाको इन्ट्रेस्ट हूं, ब्याज हूं. अब न जाने क्या चक्कर भयो **''मुझे गुमा भी न था के मैं तुझे भुला दूंगा''**. वो दर्द ही नहीं रेह गयो तो भूल गये. दर्द होवे तो कैसे भूले. पेटमें दर्द होतो होय ना तो भूख अपन् कभी नहीं भूलें. पर कोई कारणसु पेटको दर्द भूल जाय, तो अपन् भोजन करनो ही भूल गये. सब जगह ये ही घपला हे. अपन् प्रभुसु बिछुड़ें हें ये तो हकीकत हे, पर वो तापक्लेशतिरोभाव हो गयो हे. **''वो दर्द ही न रहा वरना ऐ मताये हयात्. मुझे गुमा भी न था मैं तुझे भुला दूंगा तू एक बार तो मिल सब गिले मिटा दूंगा''**. पर मिले नहीं तो वो दर्द भी मिट गयो. तो ओरियन्टेशन् खतम हो जाय. ओरियन्टेशन् खतम हो गयो पर बीजभाव स्टोर्ड तो हे; वाको सिंचन होयगो तब वो खिलेगो. यहां रखें.

००००००००

(सिंहावलोकन)

''कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीन भावना. अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्.'' कल अपनूने अहंकार कैसे प्रकटे हे और प्रकट होवेकी वा प्रक्रियामें चेतना और जड़ता यानि प्रकृति और पुरुष कैसे क्रिस्-क्रॉस् होके महत्‌कु पैदा करें हें वह देख्यो. अक्षरमेंसु चेतना और जड़ सदंश, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति कैसे पेहले बायफरकेट् हो जायें माने बट जायें हें. दो अलग अलग वस्तु बन जाय हें; महत्‌में आके पाछे वो एक दूसरेसु कॉनटेक्ट्में आवें; पाछे मिलके एक कोम्प्लेक्स् तैयार करें हें. अब वा कोम्प्लेक्स्में काल कर्म स्वभाव और उन सबकी सारी फोर्सस् काम कर रही हें. उनही काल कर्म स्वभाव के फोर्सस् और प्रकृति और पुरुष के उपादान जामें प्रकृति और पुरुष एक दूसरेसु ताना-बानाकी तरह बुने जाके महत्‌कु पैदा करें. महत्‌में भी सक्रिय और चेतन होवेको नेचर हे. महत्‌मेंसु फिर अहंकार प्रकटे हे यासूं अपने अहंकारमें भी वा तरीकेको नेचर हे. ये विषय अपनूने देख्यो हतो.

यहां चार्ट(नं.२)में भी आपकु दीख रह्यो हे. ये जो कॉनूके पॉइन्ट हें ना! वहां छोटे छोटे गोला हें. वो छोटे गोला अक्षरब्रह्मके भीतर हें वाकु इन्डिकेट् करवेके लिये हें. बाहर उन कॉनूसु वा लिये लाये हें के उतने छोटे गोलानूमें लिख्यो नहीं जा सके; वाकु थ्रीडायमेन्शनल् करके बतायो हे. एक्च्युअली वो बाहर अपने अहंकारमें भी वा तरहको नेचर हे, महत्‌मेंसु फिर अहंकार प्रकटे हे. विनही काल कर्म और स्वभाव के फोर्सिस् और प्रकृति अक्षरके भीतर हें. वो आकृतिमें भीतर सब बतानो मुश्किल हो जाय करके वाकु मात्र समजावेके लिये बाहर लाये हें. वा तरीकेके छोटे छोटे गोला बना दे. अहंकारपे आनो हतो करके मोकु लग्यो के गड़बड़ भई हे. वो या बातकु इन्डिकेट् करवेके लिये ये तत्त्व अक्षरके भीतर

प्रकटे हें; अक्षरके बाहर नहीं.

अक्षरके बाहर कछु हे ही नहीं. माईन्ड इट् पुरुषोत्तमके बाहर हो सके हे पर अक्षरके बाहर कछु भी नहीं हो सके हे. एक सच्ची बात ये हे के पुरुषोत्तम खुद अक्षरके बाहर नहीं हे. पुरुषोत्तम भी हे तो अक्षरमें हे. अक्षरके बाहर तो कछु हो ही नहीं सके हे. जो भी चीज हे वो अक्षरमें हे. तो पुरुषोत्तमकी शक्ति काम कर रही हे. अपन् या तरहसु सोचें के घड़ाकु पैदा करवेमें उपादानकारण तरीके मट्टी काम आवे, कुम्हार होवे हे कर्ता तरीके. या जगत्‌में ब्रह्म स्वयं अक्षरके अपने पेहलुसु उपादानकारण बने हे और पुरुषोत्तमके पेहलुसु कर्ता बने हे. ये बात खास ध्यानमें रखनी चहिये. यालिये अक्षरके बाहर कछु हे ही नहीं. जब अक्षरके बाहर नहीं हे तो अहंकारमें पैदा भी वाही फेशनसु हो रही हें, एक्च्युअली वो अहंकारके बाहर नहीं हें. ईवन् अहंकार भी महत्‌के बाहर नहीं हे. सो टु से. ये बात भी ध्यानसु समझियो. अब इतनी सारी कोम्प्लेक्सिटी अपन् सर्कलके अन्दर तो दिखा नहीं सकें हें करके अपनूने प्रोजेक्ट् करके वाकु बाहर दिखायो हे. मूलमें हे तो वो इनसाईड्में ही वो बाहर नहीं है पर एक्च्युअली वाको प्रोजेक्शन् बाहर हो रह्यो हे. उनकी प्रोपर रिलेशनशिपूकु ध्यानमें दीजियो अन्यथा कन्फ्युज्ड् हो जाओगे. (चार्टके लिये : वहां अहंकारमें भी एक वैसो कॉन् जैसो ही बना दे तो सारी बात साफ हो जायगी.) वो तो क्रिस-क्रॉस् करवेकेलिये मैंने कॉन् नहीं बनायो वहां दिखावेके लिये. अब समझ गये ना वाको सच्चो पिक्चर क्या हे! इन सब बातनूकु ध्यानमें रखोगे ना! तो कली कैसे खिले हे और फूल बने हे, ऐसे वो सारो कन्सेप्ट् आपकु खिलतो भयो नज़र आयगो. एक साथ नहीं खिले वो कली, एक एक पत्तायें खिलें, ऐसे वो सारो कन्सेप्ट् खिल रह्यो हे वामें.

(चार्ट.३)

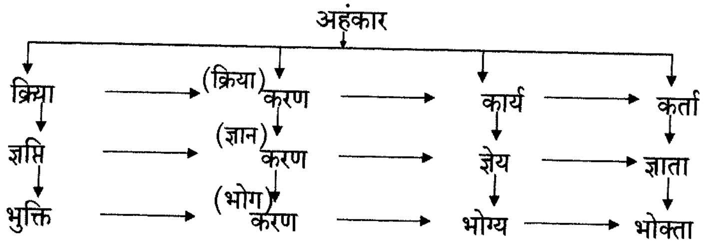

(अहंकारकी कार्यपद्धति)

अपन्ने देख्यो, अहंकारकु यदि कोई क्रिया करनी हे तो कर्मेन्द्रियको सहारा लगेगो. अहंकारकु कछु जाननो हे तो ज्ञानेन्द्रियन्को सहारा लगेगो. जा चीजकु जाननो हे, वो क्या हें? वो तन्मात्रायें हैं. तो तन्मात्रायें भी एक्जेट्ली अहंकारके बाहर नहीं हें पर अहंकारमें पैदा भये जो पंचमहाभूत हे, उनके गुणन्की डिजीटल् इमेज् हे. वो कल मैंने विस्तारसु आपकु ये बात बताई हती के जो भी कछु अनुभव हो रह्यो हे, वो न तो एकदम ओब्जेक्टिव् (बाह्यवस्तुनिष्ठ) हे और न ही एकदम आन्तर कल्पना माने सब्जेक्टिव् ही हे. जैसे केमरामें

डिजीटल् इमेज् खड़ी होवे हे, वाकु अपन् यों नहीं केह सकें हें के काल्पनिक चित्र हे. जो बाहर जगत् हे वाको ही चित्र हे और न ही अपन् ये केह सकें के जा बखत तुमकु डिजीटल् इमेज् दीख रही हे वा बखत तुमकु बाहरकी इमेज् दीख रही हे. बाहरकी इमेज्को एक रिप्रोडक्शन् वहां दीख रह्यो हे. एक मोडल् रिप्रोडक्शन् दीख रह्यो हे, वन् टु वन् जाको कोरेस्पोडेन्स् हे. इन् मेनी रेस्पेक्ट्स् माने शेप्, साईज्, कलर्, डिस्टेन्स्, डायमेन्शन्, वगेरह वगेरह. इमेज् अभी ऐसी नहीं बनी हे के जामें अपन् छू सकें पर थोड़े दिनन्में जब एसी बन जायेंगी तो छू भी सकेंगे, सूंघ भी सकेंगे. डिजीटल् इमेज्सु अपन् कछु भी कर सकेंगे. तो वो तन्मात्रायें भी अहंकारके भीतर ही पैदा हो रही हें. वो अहंकारके द्वारा की जाती शुद्ध कल्पना नहीं हे. अपने भीतर अहंकारके द्वारा खड़ी की जाती डिजीटल् इमेज् हे. वा तरहसु कम्प्युटर या डिजीटल् केमरामें वाकु अच्छी तरहसु समझ सकोगे. ये सारो विषय हतो जो कल अपन्ने देख्यो.

मैंने आपकु ये भी बतायो के मन कर्सरकी तरह काम करे; टाईम् टू टाईम् अपन्कु एक फन्क्शन्सु दूसरे फन्क्शन्में जानो होय तो मन अपन्कु ले जा सके हे. कर्म करनो होय तो मन कर्मेन्द्रियमें ले जायगो; ज्ञान प्राप्त करनो होय तो मन ज्ञानेन्द्रियमें जायगो; और ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय को यूज् नहीं करके अंत:करणन्कु यूज् करनो हे खुद अपने आपकु माने बुद्धिकु या चित्तकु या मनकु यूज् करनो हे तो उन सबके भी इन्टरनल् फन्क्शन् हें. उन फन्क्शन्सुकु भी जा बखत यूज् करनो होय तो वहां भी अपन्कु बेज़िकली मन ही ले जाय हे. मनकु वा तरीकेको सबको राजा कह्यो जाय हे. एक बार अपन्ने अहंकारमें मन पैदा कर दियो तो फिर बहोत एक्स्टेन्ट् तक अपन् समझ सकें हें के अहंकारकु भी कहीं न कहीं मनके आधीन होनो पड़े. ऐसी बात नहीं हे के मन ही अहंकारके

आधीन होवे हे. वो मन पैदा नहीं होवे तबतक अहंकारको वापे बस चले हे; जैसे बच्चा पैदा नहीं होवे तो मांको बस चले वापे पर पैदा होवेके बाद तो फिर बच्चा डिक्टेट् करे ना टर्म्! मुंह लग्यो बच्चा तो ज्यादा टर्म् डिक्टेट् करे. ऐसे मन पैदा भयो तो अहंकारसु हे पर अहंकारकी टर्म्स् मन डिक्टेट् करे हे ''के ऐसो होनो चहिये, वैसो होनो चहिये''. मन अहंकारकु भी समझा सके हे के ऐसे तू मत सोच, ऐसे सोच. बिचारो अहंकार क्या करे! धर्यो रेह जाये के तू मेरी पैदाइश हे. मन कहे पर होऊंगो मैं तेरी पैदाइश पर टर्म्स् तो मैं डिक्टेट् करूंगो. वा तरीकेको मनको कर्सर होवेके कारण सबपे बस चले. वो मोबाईलमें आप देख सको के कर्सर अपन् फिरावें तो जहां कर्सर जावे वा फन्क्शनूकु स्टार्ट होनो पड़े. तो मन कर्सरकी तरह हे के जो चहिये वो फन्क्शन् वहांसु करवा सके हे. वाकी खूबसूरती हे के मोबाईल्को स्विच् ऑफ् भी करनो होय तो भी कर्सरकी जरूरत तो पड़ेगी ना! कर्सर कोई पॉइन्टपे ले जाके छोड़ोगे तो वो स्विच् ऑफ नहीं होयगो. चालू भयेकु स्विच् ऑफ करनो होय तो बेट्री काढ़ दो तब तो बात अलग हो गई. फिर तो बात ही खतम हो गई. आप समझ ही गये होओगे के बेट्री काढ़वेसु मेरो मतलब क्या हे? बेट्री काढ़ दी तो फिर तो मन भी इनऑपरेटिव् हो जाय. जबतक बेट्री हे तो वाकु ऑन करनी के ऑफ करनी वो सब कर्सरकी कार्यवाही हे. वा तरीकेको याको रोल्, फन्क्शन् और स्वरूप हे. ये अपनूने कलतकके विषयमें देख्यो. आज जो अपन् देखवे जा रहे हें वो विषय हे भागवत् यों कहे हे **''स एष यर्हि प्रकृतेर् गुणेषु अभिविषज्जते अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते.''** (भाग.पुरा.३।२७।२). ये पुरुष प्रकृतिके गुणनूमें जा बखत अभिविषक्त होवे हे, माने उनमें इन्वोल्व् हो जाय हे पूरी तरह तब यद्यपि चेतना क्रिया नहीं हे, क्रिया तो प्रकृतिको काम हे, पर वो अहंकी क्रिया करवे लगे हे. अहंकी क्रिया करे हे और अहंकी क्रिया करवेके कारण भागवत्

कहे हे **''अहंक्रियाविमूढात्मा''** अहंक्रिया करवेके कारण वामें एक तरहको मोह उत्पन्न होवे हे. वो जो झालाने कल पूछी हती के जब कोई क्रिया हो गई तो कर्ता तो हे ही ना! पर क्रिया हो गई करके कर्ता होनो जरूरी नहीं हे. बहोत सारी अपनी क्रियायें भीतर ऐसी चल रही हें के जामें अपन् कर्तापनो नहीं सोच रहे हें. यद्यपि अपने भीतर चल रही हें. वाकी खूबसूरती देखो. अपने भीतर चल रही हें पर अपन् अपनेमें वाको कर्तापनो नहीं सोच रहे हें. ये तो जैसे कोईकु गाली बोलवेकी आदत हो जाय तो मुंहसु गाली निकल जाये. निकल जाय तो निकल जाय वामें आदमी अपनेकु कर्ता माने? हमारे किशनगढ़में भीतरियाजी हते वो अपने मालिककु भी केह देते के ''कांई गंडकड़ा जिसी बात कर रह्या हो?'' फिर खुद ही खुदकु केहते ''अरे नमकहराम हे ये तो! थांको अन्न खा रह्यो हे और थांने ही गाली दे रह्यो हे. मालिककु गंडकड़ा केह दियो!!'' 'गंडकड़ा' माने समझे? कुत्ता. मालिककु केह देतो ''कांई गंडकड़ा जिसी बात कर रह्या हो? अरेरे नमकहराम जीव हे, पापी हे, दुष्ट हे, थांने गंडकड़ा केह रह्या हूं. थांको तो मैं अन्न खा रह्यो हूं.'' अरे भाई गंडकड़ा केह दियो. ये क्या हे के सामान्यतया क्रियामें कर्तापनो लगे **''अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते.''** पर उनको ऐसो नहीं हतो, पता हतो के मुंहसु गाली निकल जाय, तब तो निकल जाय तो निकल जाय. वामें कर्ता वो अपनेकु माने नहीं. वैसे तो अपनूकु बुरो लगे के वाने गंडकड़े क्यों कही? पर वामें कर्ताको अभिमान नहीं होवे हे. क्यों नहीं होवे? क्योंके अपने भीतर बहोत सारी ऐसी क्रियायें पैदा हो रही हैं के जिन क्रियानूको अपनूकु कर्तापनो नहीं लगे हे.

(ज्ञान-इच्छा-प्रयत्न द्वारा कर्तापनेको झांसा)

मैने याहीलिये आपकु ये बात बताई हती के जहां ज्ञान इच्छा और प्रयत्न की प्रोसेसूसु कोई क्रिया पैदा होवे हे वामें अपनूकु

कर्ता होवेको भाव जगे हे. पर जहां अपनूकु ज्ञान ही नहीं हो रह्यो हे के भीतर क्या हो रह्यो हे, तो वामें कर्ता होवेको भाव नहीं जगेगो. ज्ञान हो रह्यो हे पर वाकी इच्छा नहीं हे तो अपने भीतर क्रिया हो रही हे पर वाको कर्ता होवेको भाव नहीं जगेगो. इच्छा हो रही हे पर अपनो वाकु पैदा करवेको प्रयत्न नहीं हें तो वो अपने भीतर क्रिया पैदा हो जायगी, पर क्रिया होवेके बावजूद भी वा क्रियामें कर्ता होवेको भाव अपनूकु नहीं जगेगो. कर्ता होवेकी शर्त या कर्ता होवेको झांसा बड़ो गेहरो झांसा हे. अपनूकु ज्ञान पैदा होवे, ज्ञानके बाद इच्छा पैदा होवे, इच्छा होवेके बाद प्रयत्न पैदा होते ही वा क्रियासु वो चेतना विमूढ़ हो जाय. क्योंके चेतनाके सामने कुछ या तरीकेको जाकु अपन् गुजरातीमें कहें हें 'रजुआत', ऐसी रजुआत होवे के ये जो मेरो ज्ञान हे, ये मेरी इच्छा हे, जो मेरो प्रयत्न हे याको कर्ता "मैं हूं". जान्यो कौनने? मैंने; इच्छा कौनकु भई? मोकु; प्रयत्न कौनने कियो? मैंने; यासू एक मोह पैदा हो जाय. ये तीन तरहसु झांसा दे दियो चेतनाकु के चेतनामें ज्ञान पैदा हो गयो; चेतनामें इच्छा पैदा हो गई; चेतनामें प्रयत्न पैदा हो गयो; तुरत चेतनाकु झांसा मिल जाय "याको कर्ता मैं हूं." बात समझमें आई. ये झांसा जहां भी देवेमें अपन् चूक गये, ज्ञानकी हूल दे दी पर इच्छा और प्रयत्न की हूल नहीं दी तो चेतनामें क्रिया पैदा हो जायगी पर वो चेतना वाकु अपनी क्रिया नहीं मानेगी. अपनूने इच्छा पैदा कर दी पर अपन् जान ही नहीं रहे हें के वो क्या हे, तो वामें अपनूकु कर्तापनेको भाव जगेगो नहीं. ज्ञान और इच्छा हो गये पर प्रयत्न अपनूने कियो नहीं; प्रयत्न नहीं कियो तो अपनूकु कर्तापनेको भाव नहीं जगेगो.

मैने एक बखत बताई हती के मैं रोज किंगसर्कल शंकरमठमें पढ़वे जातो वा बखत मैं ड्राईविंग भी सीखतो हतो. वहां एक रोज क्या भयो के अचानक मैंने कार स्टार्ट् करी. अब वामें एक्सलरेटर्

फंस गयो. तो छूटते ही कार दौड़नी शुरु भई. वो ड्राईवर मोकु कहे "केम एटलु रेश् ड्राईविंग करो छो?" मैं कह्यु "हूं तो करतो नथी, कार पोतानी मेळे दौड़ी रही छे." अब तो बियोन्ड् कन्ट्रोल् दौड़वे लग गई. वो बोल्यो "शुं करो छो?" में कह्यु "हूं तो कशु करतो नथी. पोतानी मेळे दौड़ी रही छे." एक्सलरेटर फंस गयो. फिर वो ड्राईवर समझ्यो तब वाने स्विच ऑफ् कियो. बेट्री ऑफ् कर दी तब फिर जाके वो कार बड़ी मुश्किलसु रुकी. चक्कर काटकूटके काफी दूर आ गये. नहीं तो टकरा ही जाते. एक्सलरेटर जाम् हो गयो करके बियोन्ड् कन्ट्रोल् हो गयो. अब देखो कार स्टार्ट् मैंने करी; एक्सलरेटरपे पैर भी मैंने ही धर्यो हतो; सौ प्रतिशत् स्टेयरिंग् भी मैं ही संभाल रह्यो हतो; क्लच् गियर भी सब बदले ही हते; पर वो इतनो फास्ट दौड़ावेके कर्म मेरे नहीं हते. मेरे नहीं हते करके वो ड्राईवर हल्ला मचा रह्यो हतो "क्या कर रहे हो? क्या कर रहे हो?" पर मेरे मनमें कर्तृत्वको भाव ही नहीं हतो करके ना जाने कौनसी शक्ति याकु चला रही हती, तब तो मरनो ही लग रह्यो हतो. "जावा दो नी नौका किनारे किनारे." भटकायेंगे तो भटकायेंगे (टकरायेंगे तो टकरायेंगे) . अक्कल ही काम करनी बंद हो गई! ड्राईवरने जब स्विच ऑफ कियो तब जाके कार कन्ट्रोल्में आई. यदि अपने प्रयत्न नहीं हें तो अपनेमें कर्तापनेको भाव नहीं जगे.

या रहस्यकु आप समझे ना बराबर! तो "**अहंक्रियाविमूढात्मा**". एक अहंकी क्रिया पैदा होवे. अब अभी तक अपनूने करण देख्यो हतो. अब देखो यहां आके भागवत् खुद बता रह्यो हे के अंत:करणको एक फन्क्शन् अहंकार हे, तो वहां अहंकारको मतलब करण हे. एक कोई इनर इन्स्ट्रुमेंट् हे. पर वो इनरइन्स्ट्रुमेंट् अपनूकु बेवकूफ नहीं बनावे हे; अहंक्रिया अपनूकु बेवकूफ बनावे हे. भागवतकार याकु कितनी क्लीअर्कट् टर्मिनोलोजीमें समझा रह्यो हे "**अहंक्रियाविमूढात्मा**

'**कर्ता अस्मि**''. बैठे बिठाये चेतनामें एक अहंकी क्रिया होवे लग जाय. हे कछु भी नहीं हों! न ज्ञान मेरो हे. क्यों ज्ञान मेरो नहीं हे? क्योंके ज्ञान यदि भीतरसु बाहर आ रह्यो होय तो सबसु पेहले बुद्धिमेंसु मनमें जायगो; यदि बाहरसु भीतर जा रह्यो होय तो ज्ञानेन्द्रियसु मनमें जायगो; मनसु अहंकारमें जायगो; अहंकारसु बुद्धिमें जायगो. बुद्धिमेंसु जायेगो तब वह ज्ञान चेतनामें दिखलाई देगो न! तो वो ज्ञान भी तो मेरो नहीं हे. यदि भीतरसु बाहर आ रह्यो हे तो चित्तमें जो कछु स्टोर हे अपनो ज्ञान वो बाहर आयगो. कैसे आयगो? बुद्धिमें आयगो; बुद्धिसु अहंकारमें आयगो; अहंकारसु मनमें आयगो; मनके बाद वो कोई और ठिकाने प्रोजेक्ट् होयगो. या तरहसु बाहर निकलके; तो भी तो वो शुद्ध मेरो तो नहीं हे. तो ज्ञान मेरो नहीं हे. चेतना मेरी हे. इन दो बातकु कन्फ्युज़् मत करियो. चेतना मेरी हे पर ज्ञान मेरो नहीं हे. ज्ञानमें तो बहोत सारो कोलोबोरेशन् हे; बहोत सारे फेक्टर वामें कोलोबोरेट् कर रहे हें जामेंसु ज्ञान पैदा हो रह्यो हे. चेतनासु शुद्ध ज्ञान पैदा नहीं हो सके. जैसे अपन् समझ सकें हें के तारमें शुद्ध इलेक्ट्रिसिटी बेहती होय तो क्या वासु साउन्ड् केच् होयगो? या शुद्ध इलेक्ट्रिसिटी तारमें बेह रही हे तो वासु क्या साउन्ड् प्रोड्युस् होयगो? के वासु टी.वी.में सीन पैदा होयगो? या फ्रीज़में या ए.सी.में कोल्डएअर् आयगी? नहीं न!. शुद्ध इलेक्ट्रिसिटी ये काम नहीं करे हे. पर वह यह काम कब कर सके? जब वो इलेक्ट्रिसिटी वा कामकु करवेवाली मशीनकु एक्टिवेट् करे. वो मशीन एक्टीवेट् करे करके अल्टीमेटली इलेक्ट्रिसिटी जिम्मेदार कही जाय. ऐसे चेतना अपने आपमें ज्ञान नहीं हे. इलेक्ट्रिसिटीकी तरह चेतना तो शुद्ध चेतना हे. चेतना न क्रिया हे और न ज्ञान हे. चेतना क्या हे खाली चेतना हे माने सेन्सिटीविटी हे सेन्सेशन् नहीं हे. न कन्सेप्शन् हे, न परसेप्शन् हे. वो चेतना जो काम कर रही हे, वो ज्ञान वाको नहीं हे. क्रिया भी चेतनाकी नहीं हे प्रकृतिके साइड्सु आई हे क्रिस् क्रोस्की मेथड्सु ये अपनूने देख्यो.

(इच्छाकी प्रक्रिया/इच्छा = शरीर या वासना की मांग)

इच्छा कब होवे? समझो के कोई चीजकु अपनो शरीर मांगतो होय तब; या फिर वासना मांगती होय तब वाकी इच्छा होवे. जैसे भूख हे, प्यास हे, नींद हे; ये वासना नहीं मांगे हे पर शरीर मांगे हे. जैसे गाड़ीकु चलवेके लिये पेट्रोल् चहिये, डीज़ल् चहिये, वेसे शरीरकु चलवेकेलिये जो चीज़ चहिये होय, वो जब वपरा जाय, तो शरीर नयो इनटेक् मांगे ''लाओ पाछो.'' जितनी केलेरी अपनूने खाई हे माने कन्ज्युम् करी हे, वो सारी वपरा गई तो शरीर मांगतो रहेगो के ''लाओ खावेकु''; पानी वपरा गयो तो शरीर पानी मांगेगो के ''लाओ पानी''. तो जो जो चीज शरीरकी वपरा जाये, वो शरीर मांग रह्यो हे. अब याके कारण अपनूकु लगे के इच्छा हो रही हे, पर यह इच्छा अपनी कृति तो हे ही नहीं वो तो शरीर ही मांग कर रह्यो हे. (अपन् वा मांगकु इच्छासु रेगुलेट भी कर सकें हैं.) जैसे नींद आ रही हे तो वो कोई अपनी इच्छा थोड़े ही हे. इच्छा करो के मत करो, जैसे जागवेकी इच्छा भी करते रहो तो भी नींद आ जाय. क्यों आ जाय? क्योंके शरीर मांग रह्यो हे. शरीरकु अपने आपको इक्विलिब्रियम् मेन्टेन् करवेके लिये कछु बेलेन्स् रखनो पड़े हे एलीमेन्ट्को. जो वपरा गयो और जो पाछो वापरवेके लिये चहिये. वो वाके लिये वो शरीर मांग रह्यो हे. अपन् वाकु इच्छाके रूपमें इन्टरप्रिट् कर रहे हें. शरीरमें वो इच्छा नहीं हे. शरीरमें सिर्फ वाकी कमी हे. यासू मूलमें जो अपनी एसी 'इच्छा' तो कमीको एलार्म् हे.

जैसे अपन् जाकु 'भूख लगनो' कहें हें ना! वो क्या हे? अपने पेटके आंतड़ामेंसु कोई एक तरहको एसीड् (रस) छूटे हे और वो पेटकी दीवालनुकु कुचरे. तब अपनूकु लगे के बड़ी भूख लग रही हे. भूख एक तरहकी केमिकल् प्रोसेस् हे. वा केमिकल् प्रोसेसकी तुम्हारे भीतर होती सिर्फ अवेरनेस् हे जाकु तुम 'भूख' केह रहे

हो. अब तुमकु 'भूख' शब्दमें इच्छा दिखलाई नहीं देगी. क्योंके वो 'भूख' शब्द अपभ्रंश हो गयो हे. असलमें संस्कृत शब्द 'बुभुक्षा' हे. 'बुभुक्षा'को अपभ्रंश भयो 'बुभुक्खा'. 'बुभुक्खा'को अपभ्रंश भयो 'भूख'. जो भूखो होय वाकु संस्कृतमें 'बुभुक्षु' कहें. तो 'बुभुक्षु'को अपभ्रंश भयो 'बुभुक्खु'. 'बुभुक्खु'को अपभ्रंश भयो 'भूखो'. भूख्यो. तो वामें इच्छा बोल रही हे. 'ख'में ही इच्छा बोल रही हे. 'बुभुक्षा' माने 'भोक्तुम्' इच्छा 'बुभुक्षा'. भोजनकी जो इच्छा वो बुभुख्क्षा. 'क्षा'को अपभ्रंश 'ख' भयो हे. 'ख'में इच्छा नहीं बोले. पर 'ख' जाको अपभ्रंश हे वापे ध्यान दोगे तो अपनूकु पता चलेगो के 'बुभुक्षा'में अपनूकु इच्छा दिखलाई दे रही हे पर इच्छा हे कहां? इच्छा हे ही नहीं. अपन् कोई इच्छा नहीं कर रहे हें. वो तो शरीरकी वा तरीकेकी मांग हे. जैसे 'पिपासा' अपन् प्यास कहें हें. गुजरातीमें क्या कहेंगे? 'तरस'. तो 'तरस'में देखो संस्कृतमें कहें 'तृषा' वा 'तृषा'को अपभ्रंश भयो हे 'तरस'. तृषामें भी पाछी इच्छा बोल रही हे. 'पातुम् इच्छा' पीवेकी इच्छा वो 'तृषा' हे. वहां भी इच्छा बोल रही हे. जहां जहां भी अपने ऐसे बहोत सारे फन्क्शन् हें, जहां अपन् यों समझ रहे हें के इच्छा गुजरातीके शब्दमें नहीं बोल रही हे, हिन्दीके शब्दमें नहीं बोले हे पर मूल संस्कृतमें देखोगे तो वहां इच्छा बोल रही हे. बाबजूद याके के इच्छा बोल रही हे इच्छाको कोई रोल् नहीं हे वो तो अपने शरीरकी डिमान्ड् हे. जो चीज कम हो गई वाकु शरीर मांग रह्यो हे. या प्रकारसु शरीरके कारणसु इच्छा पैदा होवे है.

अब कभी शरीरको कोई कारण नहीं हे पर अपने भीतर कछु वासनायें हें. वो वासनायें अपनूकु इच्छायें पैदा करें. ये इच्छा को इनरकोज़् (आन्तरकारण) हैं आउटरकोज़् (बाह्यकारण) नहीं हैं. 'वासना'को शुद्ध मतलब ये हे के कोई शरीरकी वा तरीकेकी डिमान्ड् नहीं हे. शरीर नहीं चाह रह्यो हे. पर क्योंके अपन्ने जो अनुभव कियो

हे, वा अनुभवकी अपनूकु स्मृति हे. वो स्मृति वासनाकी तरहसु अपने भीतर भरी भई हे. वो पाछी इन्वोक् होवे जा बखत स्मृति जागे तो वा बखत वो कहे हे 'लाओ'. अब वो कोई वाकी (शरीरकी) आवश्यकता तो हे नहीं सिर्फ वासना जगी हे. यासुं जो इच्छा वासनानूसु पैदा होती इच्छायें ही सच्ची इच्छायें हैं. क्योंके वो इन्टरनल् इच्छायें हें 'इच्छति'. जामें तुम सचमुचमें इच्छा कर रहे हो. क्यों इच्छा कर रहे हो? क्योंके तुम्हारे भीतर वा वस्तुकी वासना जगी, या लिये तुम इच्छा कर रहे हो यासु वो तो प्रोपर इच्छायें हें क्योंके वासनासु पैदा हो रही हें. पर ये सब इच्छायें तो हो रही हें और अपन् वाके बारेमें अवेर् हो गये हें यासु अपनूकु लग रह्यो हे के इच्छा पैदा हो रही हे. दरअसल तो वामें कोई इच्छा पैदा हो ही नहीं रही हे. जैसे गुजरातीमें कहें हें "सुवा मांगु छुं. सुवा जाऊं छुं". "सुवा क्यां जाओ छो? त्यांने त्यां पड़ी जाओ छो. जावो छो क्यां ?" वो 'जावुं', 'मांगुं', ये सारे प्रयोग क्योंके शरीरकी डिमान्ड् हे, वा डिमान्ड्कु अपन् कोई तरहसु रेसीप्रोकेट् कर रहे हें. ये डिमान्ड् शरीरमें पैदा भई हे, वाकु अपन् रेसीप्रोकेट् करनो चाह रहे हें करके अपन् वाकु यों केह रहे हैं "मांगु छुं". ये तो अपनी भाषाको ऐसो चमत्कार हे "बन्ध पड़वा मांगे छे. आ बिल्डिंग पड़वा मांगे छे". बिल्डिंग थोड़े ही कोई पड़वा मांगे छे? "आ वृक्ष पड़वा मांगे छे". मांगे छे शुं? वृक्षने मांगवानु शुं होय? जो बात होवे जा रही हे, वा होवे जाती बातमें अपनूकु इच्छाको बोध होवे हे. क्योंके इच्छा वाकु रेसीप्रोकेट् करे हे. अपने शरीरमें जो बात होवे जा रही हे, वाकु अपनी इच्छा रेसीप्रोकेट् करे हे.

कोई संगीतकार गाना गातो होय और श्रोता वाकी आहा आहा!! वाह वाह!! करें ना! ऐसे ही अपनी इच्छा तुरत आहा! केह दे. भूख लगी हे तो वाने कही वाह वाह! प्यास लगी हे तो वाने

कही वाह वाह!! क्या बात हे प्यास लगी हे! अपनी इच्छा वाकु तुरत वाह! वाह! केह दे. वो वाह! वाह! केह दे तो अपनूकु लगे के इच्छा हो रही हे. पर इच्छा तो कुछ हो ही नहीं रही हे. वो तो अभी एक तान लगानो शुरु कर रह्यो है और तुम तो खाली वाह! वाह! कर रहे हो. तो वाह! वाह! केहनो एक अलग फिनोमिना हे और गानो एक अलग फिनोमिना हे. गा तो वो रह्यो हे और तुमने वाह! वाह! केह दी. ये उर्दुके मुशायरा होवें तो वामें देखवे लायक होवे हे जेसै वह कुछ भी केह दे "उसने मुझे देखा" तो वाह! वाह! वाह! मुकर्रर! मुकर्रर! फिर "उसने मुझे देखा" तो तुरत ही इरशाद! इरशाद! करवे लग जाय. तुम तो बैठके खाली वाह! वाह! कर रहे हो. कोईकु इच्छा नहीं हो रही हे. ऐसे अपनी इच्छायें हें शरीरकी मांगमें खाली वाह वाह इरशाद! इरशाद! वन्स् मोर करते रहें. वो अपनूकु लगे के बड़ी भारी इच्छा हो गई. इच्छा विच्छा कुछ नहीं हे. वो तो बोडीको अपने ऊपर पैदा होतो भयो प्रेशर् है. सचमुचमें तो वासनासु पैदा होती इच्छा ही प्रोपर् इच्छा हे. क्योंके भीतर वासना भरी भई हे. वा चीजके पैदा होवेको सचमुचमें बाहर कोई कारण नहीं हे. भीतरसु पैदा होती भई इच्छा होवे तो वो प्रोपर इच्छा होवे. पर तकलीफ यामें यही हे के वासनासु पैदा होती इच्छा क्या चेतनाको फन्क्शन् हे? क्यों? वासना काहेसु पैदा होवे हे? अनुभवसु. अनुभवसु मिलते सुख और दुःख सु. जैसे अनुभवमें कोई चीजमें अपनूकु सुख मिल्यो तो फिर वाकु पावेकी वासना पैदा हो जाय, अतृप्त होवेके कारण. अनुभवमें अपने कोई चीजसु दुःख मिल्यो तो वाकु निरन्तर अवोइड् करते रेहवेकी अपनूकु वासना बन जाय के जब ये आवे तब याकु अवोइड् करो.

पेहले पार्लामें एक बहेन आती हती. वो आके बैठ जाय. जब बैठ जाय तो वाकु कैसे ना पाड़नो! मोकु पता हतो के अब

ये मेरो लोही पीयेगी, तब मैं तबला बजाऊं, केसियो बजाऊं, कछु करूं. पर करनो क्या! कैसे अवोइड् करनो? थोड़ी देरमें फिर वो रोनो शुरु करे. "हू हू हू..... मैं कह्यु के शुं थयु?" तो बोली "शुं थाय घेर घेर माटीना चूला." मर गये. फिर सारी रामायण घरकी सुनावे. अब म्हारे क्यां जावु? म्हारा घरमां पण माटीना चूला छे. अब रोये बिना वाकु चले नहीं. अब जब वो रोवे तो अपनूकु कंटाला आवे पर अपन् कर क्या सकें? फिर मैंने अपनो एक व्यु फाइन्डर बना लियो. जब वो बाहर आवे तो अन्दर जाके बैठ जाऊं, दीखूं ही नहीं. ऐसे आदमीकु रिट्रीट करनी पड़े क्योंके संगीत बजातो होऊं तो भी माने ही नहीं. वो बजातो होऊं तब भी बोले. नहीं बोलें तो रोवे फिर. तो करनो क्या! तो या तरीकेके प्रेशर होवें, अपन् कछु काम करते होवें अवोइड् करवेकेलिये पर वो तो अपनेकु काम नहीं करवे दे. वो कोर्नर करके बात वहीं ले आवे पाछे. ये अपनी चेतनाकी मुश्किल हे. ये श्यामबावाकी मुश्किल नहीं हे, चेतनाकी मुश्किल बता रह्यो हूं के चेतनाकी या तरहकी मुश्किल हे के वो कछु करनो चाहती होय और वापे कछु कछु और प्रेशर आते होवें. जब प्रेशर आ जायें तो फिर वाकु सरेन्डर् करनो पड़े. जा बखत अपने भीतरकी वासनायें इच्छा पैदा कर रही हें तो वो वासनायें मूलमें तो चेतनाको गुणधर्म हे नहीं. सुख-दुःखको अनुभव भयो हे, वाकी स्मृति संस्कारके रूपमें अपनेमें काम कर रही हे और संस्कारके रूपमें अपने भीतर भरी भई हे. वो पाछी कभी कभी टाईम् टु टाईम् साईक्लिकली अपने भीतर जगे हे और पाछी फिर अपनेमें इच्छा पैदा करे हे. शुद्ध चेतनाको धर्म तो इच्छा भी नहीं हे. जानाति इच्छति करोति चेतनाके धर्म नहीं हे; ये दोनों जानाति इच्छति चेतनाके बिना अपने भीतर हो नहीं सकें और न ही प्रकृतिके बिना अपने भीतर हो सकें हें. ये जो कछु हो रहे हें चेतना ओर जड़, पुरुष और प्रकृति के आपसमें क्रिस्क्रोस्सु पैदा होते भये फन्क्शन्स् हें. या क्रिस्क्रोस्सु पैदा होते भये फन्क्शनूकु

कोई भी एक आदमी कहे के मेरो हे तो **''अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते''**. क्रिया पैदा हो रही हे डेफिनेट्ली पर या बातकु समझो; क्रिया पैदा हो रही हे वाके कारण, तुम पैदा कर रहे हो ये जरूरी नहीं हे. ये तो कैसो पचड़ा भयो के जैसे डाइमन्ड्को बड़ो व्यापारी, वाको बेटा जैनमुनि भयो. ये जैनमुनिनूमें तो उनको प्रोसेशन् निकले. प्रोसेशनूमें पाछो एक बेण्ड वालो होवे; कल बेण्ड्वालो अपनूकु उठाके केह दे ''पेला महाराजजीने जैनमुनि तो मैं बनाव्या''. अब बेण्ड्वालो महाराजजीने जैनमुनि केवी रीते बनावी शके? प्रोसेशन् निकल्यो हतो तो मैं बेण्ड वगाड्यो हतो ना! महाराजजी जब जैन मुनि बनवे जा रहे हते तो बेण्ड कौनने बजायो हतो? महाराजजी आये हते गुरु महाराज! मैंने ही बजायो हतो. अब महाराजजी बनवे जा रहे हते और कोईने बेण्ड बजायो तो क्या वाके बेण्ड बजावेसु वो महाराजजी बने? भई! महाराजजी बनवे जा रहे हते ते बखते बेण्ड वगाड्यो ने! एटले एम लागे के ''में महाराजजी बनाव्या''. वो डायमन्ड्के मर्चेन्ट्को बेटा, वो जैनमुनि होवे जाय तो बेण्ड्वालो वाकु मुनि बनायगो!! पर बना दे. क्योंके वो **''अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते''**. अब मुनिजीकी बजाय वाके बेण्ड्की जोर जोरसु आवाज आवे तो वाकु लगे के वाने महाराजजी बनाये. ये प्रक्रिया या ढंगकी हे. या तरहसु अहंक्रियासु चेतना विमूढ़ हो जाये हे और विमूढ़ होवेके बाद अपनेकु कर्ता माने हे.

(अहंकारके द्वारा ही अपनेमें कर्तृत्व ज्ञातृत्व भोक्तृत्व को भाव जगे)

यामें समझवेकी बात ये हे के ''अहंक्रियाविमूढात्मा'' ही सिर्फ तथ्य नहीं हे; ये तो उपलक्षण हे. ''अहंज्ञप्तिविमूढात्मा 'ज्ञाताहम्' इति मन्यते''; ''अहंभुक्तिविमूढात्मा 'भोक्ता अस्मि' इति मन्यते''. इन् तीन फेक्टरनूकु बराबर ध्यानसु समझो. अब क्योंके अहंकारमें तीनों तरहके फन्क्शन् क्रिस्क्रोस् होके आ गये हें, अहंकार कुछ क्रिया भी कर रह्यो हे; अहंकार कुछ जान भी रह्यो हे; अहंकार कुछ

भोग भी कर रह्यो हे. जैसे कर्ता होवेको भाव जग जाय; ज्ञाता होवेको भाव जग जाय; ऐसे जब भोग कर रह्यो है तब भोग करवेकी क्रियाके कारण वामें भोक्ता होवेको अहंभाव जग जाय के ''मैं भोक्ता हूं''. वस्तुतः अकेली चेतना न तो कर्ता हे, न ज्ञाता हे, न भोक्ता हे. चेतना तो एक कोलोबोरेटर् हे, एक कोन्स्टीट्युटिंग् फेक्टर हे, जा फेक्टरमें और भी सारे मल्टीफेक्टर्स् काम कर रहे हें. जो कर्ता ज्ञाता और भोक्ता हे; वाके भोक्ता, कर्ता और ज्ञाता होवेमें चेतना भी वन् ऑफ् द कोन्स्टीट्युएन्ट् फॅक्टर हे. इतनी बात अपनूकु ध्यानसु समझनी पड़ेगी. अकेली चेतना रिस्पोन्सिबल् हे ऐसो मानवेकी कोई जरूरत हे. न अकेली प्रकृति वामें रिस्पोन्सिबल् हे, ऐसो मानवेकी भी कोई जरूरत हे. अपन् शास्त्रचिंतन कर रहे हैं करके ये बात अपन् शास्त्रीय भाषामें केह रहे हें. पर ये बात आजकी मेडिकल् भाषामें भी याही तरहसु कही गई हे के कहीं न कहीं हर फन्क्शन् माने अपनी अन्डरस्टेन्डिंग्के फन्क्शन्, अपने वोलिशन्के फन्क्शन्, अपने एक्शन्के फन्क्शन्, सब अलग अलग सोर्सिससु पेदा हो रहे हें. वाके बावजूद कहीं न कहीं कोई एक बाइन्डिंग् फेक्टर् हे जो उन् सब अलग अलग होती भई चीजनूकु पाछे बांधके उनमें एकपनो दिखा रह्यो हे. दररअसल वो सब एक नहीं हें. सबके सोर्स अलग हे, उनके केमिकल् कम्पोनेन्ट् अलग हें. जा केमिकल् कम्पोनेन्ट्सु अपनूकु इच्छा पैदा हो रही हे, ज्ञानके कम्पोनेन्ट् इच्छाके केमिकल् कम्पोनेन्ट्सू अलग हें. ब्रेन्में ज्ञान जिन न्युरोनूसु पैदा हो रह्यो हे, वाके कुछ दूसरे कॉम्पोनेन्ट् हें. एक्शन् जो अपनी केलरीके खर्चवेसु पैदा हो रह्यो हे, वाके सोर्स् कुछ दूसरे हें. ज्ञान इच्छा और प्रयत्न सबके सोर्स आधुनिक मेडिकल् शास्त्रमें भी अलग अलग हें. वे सबके अलग अलग होवेके बावजूद भी अपनूकु मेडिकली भी ये भान हो रह्यो हे के नहीं के ''ये सब मैं कर रह्यो हूं''. यह माननो कोई शास्त्रकी ही कथा हे ऐसो मत समझियो; आधुनिक शरीरविज्ञान और आधुनिक मनोविज्ञान

भी याही बातकु केह रहे हें के यामें सचमुचमें कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता कोई एक नहीं हे; ज्ञान क्रिया और भोग के सोर्सिस् अलग अलग हें. पर वो सब सोर्सिस् अलग होते भये भी उन सबनूको एक कोरपोरेट् नेचर् बन जाय हे के सब एक दूसरेके कोओर्डिनेशनूमें होवेके कारण सबमें एक ऐसो भाव जग जा रह्यो हे "अच्छा! तो ये मैं कर रह्यो हूं". दरअसल तो मैं कुछ भी नहीं कर रह्यो हूं. अहं क्या करे हे? कुछ भी नहीं करे हे. जो कुछ हो रह्यो हे वाकु अहंसु अपन् पो देवें (पिरो देवे) हें, बस. वा पोवेके अलावा अहं कुछ नहीं कर रह्यो हे. अपने आप सब हो रह्यो हे पर वामें अहं पुरो (पिरो) गयो तो अपनूकु लग रह्यो हे के "ये मैं कर रह्यो हूं". जब अपनो अहं नहीं पुरोवाये वह क्रिया चाहे अपने भीतर ही क्यों न हो. जैसे मैने बतायो के पेटमें गुड़गुड़ हो रही हे तो अपनूकु अहं कर्ता नहीं लगे. हार्ट अपनो धड़कवे लग जाये तो अपनूकु अहं कर्ता नहीं लगे. अपनूकु केन्सर हो जाये तो कोई बाहरसु थोड़े ही भयो हे, भीतरसु केन्सर भयो हे; कुछ न कुछ तो कारण होंयगे ही तभी तो भीतर भयो हे, वामें अपनूकु लगे के अपन् कर्ता हें? (कभी नहिं लगे.) सिर्फ सिगरेट फूंकवेके कारण या तम्बाकु चाबवेके कारण ही होतो होय तो बाहरको भयो माने; पर भीतरसु भी केन्सर कई बखत हो जाय तो वा केन्सरको कर्ता कौन हे? अपने भीतर ही क्रिया पैदा हो रही हे. वो केन्सर्के वायरसूनकु बढ़ा कौन रह्यो हे? अपनो शरीर बढ़ा रह्यो हे. वामें अपनूकु कर्तापनेको भाव आवे? क्यों नहीं आवे? क्योंके अपने ज्ञान, इच्छा और प्रयत्न वा ओर्डरमें नहीं आ रहे हें. अपनूकु ज्ञान होवे हे, अपनूकु नेगेटिव् इच्छा भी होवे के केन्सर नहीं होनो चहिये; प्रयत्न भी कोई न कोई दवाई लेके करते होंयगे; मगर कर्तापनेको भाव जगे नहीं. या रहस्यकु समझो. ये भागवतने जो "**अहंक्रियाविमूढात्मा**" शब्द वापर्यो हे वो कितनो केअरफुली वापर्यो है. यह कितनी सिग्निफिकेन्ट टर्मिनोलोजी हे के वो अहंक्रिया होवेके

कारण जो क्रिया तुम नहीं कर रहे हो, वो अहं जा बखत क्रियासु क्रिसक्रोस् भयो वा बखत लगे "मैं कर रह्यो हूं". जैसे पैर चल रह्यो हे तो लगे के "मैं चल रह्यो हूं".

(जेम्स्-लेन्ग् थिअरी)

विलियम् और जेम्स् कार्ल लेंग् बडे सायकोलोजिस्ट् भये हें. उनकी थिअरीमें उनने याको बड़ो सुन्दर विचार कियो "आदमी डरे हे या लिये दौड़े हे के दौड़े हे या लिये डरे हे?" नोरमल् अन्डरस्टेन्डिंग् अपनी ऐसी हे के अपन् डरें हें या लिये दौड़े हें. जेम्स् लेंग् कहे हे के नहीं ये खोटी बात हे. डरें हें वा लिये दौड़ नहीं रहे हें. दौड़ रहे हें वा लिये डर लगे हे. उनने बहोत सारे एक्स्पेरिमेंट् करके ये बात सिद्ध करी हे; ये कोई उनकी फितूर नहीं हे. आप या थिअरीकु समझोगे तो ख्यालमें आयगो जेम्स्-लेंग् क्या केहनो चाहे हे. जेम्स् लेंग् ये केहनो चाहे के तुम्हारे शरीरके भीतर एक या तरीकेको बिल्टइन् प्रोग्राम् हे के जो तुम्हारे शरीरके लिये डेन्जरस् होय, वो डेन्जर क्रियेट होते ही शरीर भागनो शुरु करे. अब जब शरीर भागनो शुरु कर रह्यो हे तो वो तुमसु पूछवे नहीं जायगो "सर! मे आई रन् अवे?" इट इज् टू लेट्. बाय द टाईम् वो तुमसु पूछे और तुम कहो के "यस् आई एलाऊ यू टू रन्." तब तो इट इज् टू लेट्, तब तो मर गये. शरीर इतनो नहीं करे शरीर दौड़नो शुरु करे. जा बखत शरीर दौड़ रह्यो हे, वो दौड़ते भये शरीरकु तुम अपनी कोई काउन्टर् कन्डीशन्सूसु रोक न दो याके लिये भयकी फीलिंग पैदा करे हे. यों जेम्स् लेंग् कहे हे के तुम वामें मनसु इन्टरफीयर् मत करो, शरीरकी आवश्यकता हे सर्वाइवल्की और जो भी शरीरके लिये डेन्जरस् फिनोमिना हे, जैसे शरीरकु अनाजकी आवश्यकता हे, भोजनकी आवश्यकता हे, केलोरीकी आवश्यकता हे और केलोरी तुम्हारी खर्च हो गई हें, तो तुरत शरीर तुमकु भूख लगायगो. अब भूख लगायगो और तुम

टी.वी. देखवेमें मशगूल हो तो शरीर क्या करेगो? वो भूख लगायगो मतलब वो बुभुक्षा पैदा करेगो. खायवेकी इच्छा पैदा करेगो. अब तो मानेगो के नहीं? जायगो कहां! इच्छा तुमकु या लिये पैदा भई हे के खावेकी तुमकु आवश्यकता हे, शरीरकु केलोरीके इनटेक्‌की आवश्यकता हे वाकु तुम अटेन्ड् नहीं कर रहे हो, वाके लिये शरीर तुम्हारे भीतर बुभुक्षा पैदा करे हे के जाकु तुम रोक नहीं सको. ऐसे तुम्हारे शरीरकु सर्वाइवल्‌की इच्छा हे वा इच्छाके लिये तुम कहीं रोको नहीं खोटे अहंकारके कारण भागेंगे तो कोई हमकु डरपोक तो नहीं केह देगो, अरे कहेगो तो कहेगो! पर या बखत तो भागो. तो जो अपन् भागे ना! तो वाके लिये जेम्स्-लेंग् कहें हें के अपन् निरन्तर् बहोत कोशिश करके जैसे योगप्रक्रिया हे और वा प्रक्रियासु अपन् वा सिच्युएशन्‌मेंसु भागनो बंद कर दें, तो धीरे धीरे डर डिमिनिश् होवे लग जाय.

जो अपन्‌कु दुःखके आवेग आवें हें उन् आवेगन्‌के कारण अपनी आँखमें अपने आपही आंसू आते होवे हें, दुःखी नहीं होंय तो भी, क्योंके सिस्टम् ही ऐसी हे साइकोलोजीकली. आंसू आ रहे हें वा बखत एक डिजिटल् प्रोग्राम्‌के तहत् मन वा बिहेवियर्‌को एक और काउन्टरपार्ट उभार दे हे के सचमुचमें तुमकु ऐसी ऐसी बात याद आवे लग जायें. अब ऐसो लगवे लगे "कढ़ी न खाधी हाय हाय! ढोकला न खाधा हाय हाय! मरी गया हाय हाय!!" और फिर ज्यादा आंसू आवें. अब जो आंसू आ रहे हें वो कोई अन्य कारणसु पर वाकु कोरस्पोन्डिंग् रेपो पैदा करवेके लिये वा तरहकी फीलिंग तुम्हारे भीतर पैदा हो जाये और वा फीलिंगकु अपन् आंसू आयवेके कारणतया समझे हें. पाछी फिर वही **"अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते"**. वो अहंक्रिया तुम्हारे भीतर पैदा हो गई, वासु तुमकु ऐसो लग रह्यो के मोकु ढोकला इतनो प्रिय हे और ढोकला खाये बिना मर गये! पेहले ढोकलाके लिये रोनो आ रह्यो

हतो पर अब वो बात तो गई! अब वाके लिये रोनो नहीं आ रह्यो हे. वो तो मनको खड़ो कियो तुम्हारे रोवेको जो प्रकार हे, जाकु रोवेसु तुम आउटलेट् देनो चाह रह्यो हे, वाके लिये तुम्हारे भीतर एक स्युडोफीलिंग् पैदा कर दी, जाके कारण वा रोवेकी प्रक्रियाकु तुम रोको नहीं. ये सिर्फ डरवेकी बात ही नहीं हे. जेम्स्-लेंग्‌की ये बात सिर्फ डरके भागवेमें या शोकसू रोवेमें ही सीमित नहीं हे. हर बातमें जेम्स्-लेंग्‌ने वेल् फाउन्डेड् थिअरी बताई हे के जो भी कुछ अपन् अपनी बोडीके लिये फन्क्शन् कर रहे हें, तो उनके साथ अपनो मन संवाद कर रह्यो हे, वोही अपनी फीलिंग हे. वो संवाद करनो बंद कर दे तो फीलिंग बंद हो जाये. जैसे क्रोधके बारेमें भी जेम्स्-लेंग् क्या कहेगो के जो व्यक्ति तुमकु नुक्सान पहोंचा रह्यो हे, वाकु तुम खतम करनो चाह रहे हो, वो शरीरकी आवश्यकता हे. ये अपन्‌कु कैसे पता चले? देखो! शरीरपे मच्छर बैठ्यो होय और तुमकु क्रोध आवे के नहीं आवे पर वाकु मारवेकु हाथ चल जाये ना! बहोत बार क्रोध तो बादमें आवे पर वाने काट्यो और तुरन्त वाकु मारवेकु हाथ चल जाये. अब वो मच्छर मरे नहीं तो वाके बाद फिर तुमकु और मारवेकी इच्छा हो रही हे; अब तो ये मारवेकी इच्छाके कारण क्रोध आ रह्यो हे. वो मारवेकी इच्छा बंद कर दो तो क्रोधभी बंद हो जायगो.

(सुख-दुःखको चक्कर)

जैसे योगमें (योगाभ्यासमें) और श्रीशंकराचार्यजीके यहां भी और अन्य सब जगह ये प्रक्रिया बताई गई हे के संन्यासीकु मच्छर काटे वाकु सहन करनो आनो चहिये. वो संन्यासी निरन्तर सहन करे तो धीरे धीरे मच्छर काटवेपे गुस्सा आनो बंद हो जाय. अपन्‌कु मच्छर काटे तो गुस्सा आवे. क्योंके मच्छर काट रह्यो हे वाकु मारवेकी अपनी इच्छा हे, वो इच्छा हे वाके कारण क्रोध आ रह्यो हे. वो इच्छा नहीं होय तो क्रोध आनो बन्द हो जाये. मैंने

आँखन् ये बात देखी, गोकुल गयो, सुरेश बावाके पास सोयो, कोई सो डेढ़सो मच्छर उनकु काट रहे हते पर खुर्राटायें उनके निकल रहे हते. मोकु तो नींद ही नहीं आवे. उनकु क्रोध ही नहीं आ रह्यो हतो मच्छरनूपे! दिन भर साथ रेह रेहके उनके शरीरकुं उन मच्छरनूसु दोस्ती हो गई. इतने मच्छरनूसु मेरी दोस्ती नहीं हती करके मोकु नींद नहीं आ रही हती. मैं चकित हो गयो के ये कैसे सो पा रहे होंयगे!! एकदम खुर्राटा बुलाके सो रहे हते सुरेशबावा!. क्योंके दोस्ती हो गई मच्छरनूसु. वहीं यमुनाके किनारे रेहनो तो कबतक मच्छरनूकु अवोइड करनो! तो उनकी बोडीने मच्छरनूसु दोस्ती कर ली.

अपनो शरीरभी जिन चीजनूसु दोस्ती कर ले तो वापे फिर गुस्सा नहीं आवे. बम्बईको जो क्लाईमेट हे वामें राजस्थानके और सूखे प्रदेशके लोग आवें तो उनकु तुरत गुस्सा आवे के चिपचिपो हे, ये हे वो हे. अपनूकु वहां जावेपे लगे हे के ओहो इतनी गरमी! इतनी ठण्डी! क्योंके अपनी बोडीने वहांकी क्लाईमेट्सु दोस्ती नहीं करी हे. यहांकी क्लाइमेट्सु दोस्ती कर रही हे. यहां बम्बईमें अपनूकु चिपचिपो लगे कभी! बम्बईवालेकु कभी नहीं लगेगो. बाहरवालो आयो नहीं और वाकु तुरत चिपचिपो लगे के "यहां बहोत ह्युमिडिटी हे, बहोत चिपचिपो शरीर हो रह्यो हे. याके बजाय तो हमारी सूखी गरमी अच्छी". अरे भई! गरमी हमकु तो लग ही नहीं रही हे. क्यों नहीं लग रही हे? क्योंके शरीरने वा क्लाईमेट्सु दोस्ती कर ली हे तो गुस्सा आनो बंद हो गयो. उनकु तुरत गुस्सा आतो होवे.

तो हर बात एसी हे. दौड़ रहे हो या लिये भय लग रह्यो हे; भय लग रह्यो हे या लिये दौड़ नहीं रहे हो; ये बात जेम्स-लेंग्ने कही हे. बात उलटी हे हों! अपन् जा तरहसु सोच रहे हें वासु

टोटली रिवर्स्में हें. पर थिओरीटिकली अपन् शरीरशास्त्र और मानवशास्त्र को अध्ययन करें तो ये एक्स्पेरीमेन्टली प्रूव्ड् हे. योगशास्त्रके हिसाबसु भी अपन् आनन्दसु एक्स्पेरीमेन्ट् करके देख सकें हें के जा तरहकी चीज अपन् सहन नहीं कर सकते होंय, थोड़ो सो यौगिक अभ्यास् करवेसु वा चीजसु तुरत अपनो कोओर्डिनेशन् हो जाये और फिर तुरत अपनूकु वो फीलिंग पैदा होनी बंद हो जाये. जैसे गीतामें भगवान् कहें हें "**दु:खेषु अनुद्विग्नमना: सुखेषु विगतस्पृह: वीतरागभयक्रोध: स्थितधीः मुनिर् उच्यते**" (भग.गीता.२।५६). दु:खमें वाको मन उद्विग्न नहीं होवे हे, सुखकी वाकु स्पृहा नहीं होवे हे, ऐसो वीतरागभयक्रोध स्थितधी मुनि हो सके हे. वो सब क्या हे, कैसे होयगो? वा बोडीकु वा तरहसु अपन् योगसु अभ्यस्त करेंगे, ट्रेन्ड करेंगे तो हो जायगो.

तुमने शायद पढ़्यो होय के नहीं पढ़्यो होय पर जब ईराकने कुवैत्कु पचा लियो तो कुवैतके तो सब शौकीन् जीवड़ा हते. उनकु लड़नो तो आतो ही नहीं हतो. ईराकी लड़ाकू हते. तो कुवैत्ने अमेरिकाकु गुहार लगाई के "बचाओ! बचाओ!" तो अमेरिकन् लोग आये कुवैत्कु बचावेके लिये तो उनने कुवैतकु छुड़ायो. छुड़ायो वहां तक तो ठीक बात हती क्योंके पेट्रोल्को वहां सब फायदा हतो. कुवैती सैनिकनूकु ट्रेनिंग देवेके लिये अमेरिकन सैनिकनूने उन सबकु जमीनपे लिटायो और बूट पेहरके उनके ऊपर नाचे. पेहले तुम ट्रेनिंग लो. या ऐय्याशीमें पड़े रेहके तुमकु जूता खावेकी आदत नहीं हे. जूता खाओ. तकलीफ सहन करो. जितनी तकलीफ सहन करोगे तो तुम लड़ सकोगे. तुमने तकलीफ ही सहन नहीं करी तो तुम लड़ोगे कैसे? हर छोटी मोटी चीजपे तुमकु तकलीफ होती होय; ए.सी. में तुम रेहते होव और कभी तकलीफ सहन ही नहीं करी तो तुम लड़ोगे कैसे?

ग्रीसमें याही लिये स्पार्टन् हते. उनके यहां ये नियम हतो

के बच्चाके जनमवेके बाद पहाड़के ऊपर रख आते. दूसरे दिन जिन्दो मिलतो तो अपनी सोसायटीको मेम्बर बनाते अन्यथा ये सोचते के ये अपनी सोसायटीको मेम्बर बनवे लायक नहीं हतो. वा बच्चाकु पाछो घरमें तो रखते नहीं. एक वाड़ा बनाते गाय घोड़ान् के जैसो. वा वाड़ामें खुलेमें वो बच्चा रेहतो, जामें धूप, बरसात सब कुछ बच्चाकु सहन करनो पड़तो. तो वो बच्चा सहन कर करके और उनकी जो ट्रेनिंग हती वामें पिटाईको भी एक कार्यक्रम हतो. आधा पौना घण्टा उनके यहां पिटाईको पीरियड् चलतो. कुछ काम नहीं सिवाय पिटाईके. तो वो रोज पिटाई खा-खाके स्पार्टन् ऐसे हते के उनकु पीटो तो उनके शरीरपे लगती ही नहीं करके तीनसो स्पार्टन बीस हजार ईरानी सैनिकनूके सामने खड़े हो गये. क्योंके लड़नो उनके लिये लाइफ स्टाईल हती; कोई एक्स्ट्राकेरीक्युलर् एक्टीविटी नहीं हती. उनने वो सारी मार खावेकी ट्रेनिंग ली हती, खुलेमें रेहवेकी, भूखे रेहवेकी, ठण्ड सहन करवेकी, धूप सहन करवेकी तो उनकु कोई प्रोब्लेम् ही नहीं हती. या लिये स्पार्टन् बहोत आइडियल् रेस् केहलाती हती. छेल्ले तीनसो स्पार्टन मर गये बीसहजार ईरानी सैनिकन्सु लड़के पर जबतक स्पार्टन जिन्दा हते तबतक ईरानी सैनिक घुस नहीं सके. शरीरकी अपनी आवश्यकतायें हें.

आजकल तो यहां कम हो गयो हे पर भूलेश्वरमें और वा तरफ वो आते हते माथेपे देवी लेके नाचवेवाले; टोंय टोंय टोंय... और फट हन्टर मार दे. जब हन्टर मारे तब बाकायदा वामें लहु चमके. तो अपनूकु क्यों दूःखे और वाकु क्यों दूःखे नहीं? रोज हन्टर खायो हे ना! तो हन्टर खावेपे दुःख होनो बन्द हो जाये. ये सुख हे और ये दुःख हे, ये सारो फिनोमिना याही तरीकेको हे. मेरी ढब्बू छोटी हती तो मैं वाके साथ येही खेल खेलतो. 'थ' माने थप्पड़ तो गालपे एक थप्पड़ लगा ही देतो. 'च' माने चूटियां तो चूटियां भर ही लेतो. 'म' माने मुक्का तो मुक्का मार

देतो. सचमुचमें वाको नाम ढब्बू सार्थक के वो हंसती रेहती हा हा हा.... 'थ' माने थप्पड़, 'च' माने चूटियां, 'म' माने मुक्का. वाकु पता ही नहीं चलती के क्या हो रह्यो हे! ऐसे कोई प्रेमसु नहीं मारतो अच्छी खासी ताकतसु गालपे लप्पड़ मारतो. पर वाकु यों लगतो के काकाको खेल ही या ढंगको हे. वाकु सब बारहखड़ी या तरहसु सिखाई. मारवेपे कोई तकलीफ ही नहीं होती हती. सचमुचमें हंसती रेहती. और फनीएस्ट बात आपकु बताऊं के टीकूकु मैंने कभी नहीं मार्यो, वो देख देखके ही डरती हती. बनारसमें दोनों बच्चीयें आये तो टीकू बर्थके नीचे घुस गई. मैंने पूछी "टीकू कहां गई?" जीजी भी घबरा गये के "अभी तो यहां ही हती डब्बामें!" फिर पता चल्यो के बर्थके नीचे घुसी भई हती के काका आ जायेंगे और पीटेंगे तो! वाकु तो मैंने पीट्यो ही नहीं. देखो जाकु पीट्यो वाकु दर्द नहीं हे और जाकु पीट्यो नहीं वो डरे. अपने शरीरकी सिच्युएशन् ऐसी होवे. या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझो के बहोत सारे जो अपने शरीरके रिस्पोन्स् हें, वो रिस्पोन्स् शरीर ओलमोस्ट ओटोनोमस् नर्वसूसिस्टमूसु दे रह्यो हे. पर सर्वाइवलूके लिये वा ओटोनोमस् सिस्टमूसु जा बखत शरीर रिस्पॉन्स् दे रह्यो हे तब वाके साथ रेपो क्रियेट् करवेके लिये कोरोस्पोन्डिंग् कोई कोई इमोशन्स् हें. उन इमोशन्सूकु अपन् अपने मान रहे हें, उनको अपन् बिहेवियरको गवर्निंग फेक्टर मान रहे हें. दरअसल वो इमोशन्स् अपने गवर्निंग फेक्टर हें ही नहीं. माने अपन् दुःखी हें या लिये नहीं रो रहे हें, रोनो आ रह्यो हे या लिये दुःख हो रह्यो हे. रोनो आनो बन्द हो जाय तो दुःख भी बहोत सारो बन्द हो जायगो. अकेले रोवेकी ही बात नहीं कर रहे हें. अपनी बोडीके ऐसे बहोत सारे आउटर् एक्स्प्रेशन और अपने इमोशन्के या तरीकेको रिलेशन् हे. एक्जेट् वो हीबात यहां भागवत अपनूकु समझा रह्यो हे "**अहंक्रियाविमूढात्मा**" जा बखत तुम्हारे भीतर हो रही हे, वा बखत वाको रेपो देवेके लिये तुम्हारे भीतर अचानक कर्तापनेको भाव जग जाये के इमोशन्

जग जाये के ''हुं करूं छुं''. अब वो नरसी मेहता केहते रहे **''हुं करूं हुं करूं एज अज्ञानता शकटनो भार जेम श्वान ताणे''** केहतो रहे तो केहतो रहे नरसी मेहता, पर वाकी बात अपने गले नहीं उतरेगी; क्योंके अपने भीतर कर्ता होवेको भाव, अहंक्रियाके कारण इतनो स्ट्रोंग हो गयो हे; अपने भीतर ज्ञाता होवेको भाव अहंज्ञानके कारण इतनो स्ट्रोंग हो गयो हे; अपने भीतर भोक्ता होवेको भाव अहंभोगके कारण इतनो स्ट्रोंग हो गयो हे. या रहस्यकु समझो तो अपनूकु अहंकारको एक अलग डायमेंन्शन् दिखलाई देगो के अहंकार अपनी चेतनामें कैसे कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व या इन तीनोंनूको भाव पैदा करे हे. जाके कारण आत्मा कर्ता, ज्ञाता और भोक्ता बने हे. या रहस्यकु समझो. दरअसल चेतना अपने आपमें न तो कर्ता हे न ज्ञाता हे और न ही भोक्ता हे. अहंकार जो अंत:करण हे वाकी अहंक्रियाके कारण चेतनामें पैदा होते भये मोह हे. ये अहंकार एसी डिवाईस् है.

(प्रच्छन्न बौद्ध और प्रच्छन्न शांकर)

ये बात अपनेकु पसन्द नहीं आवे क्योंके ऐसे सोचवेमें ही अपने ईगो हर्ट हो जायें . तो ''मैं क्या हूं?'' ''क्या मैं कुछ नहीं!'' अरे भई! सचमुच तू हे ही नहीं कुछ सच्ची बात समझ! अहं हे क्या? पेहले ही खोटी भ्रान्ति हे और भ्रान्तिके अलावा कुछ भी नहीं हे.

अपन् जब या तरीकेके मोड़पे आ रहे हें तो सबसु बड़ी एक इम्पोर्टेंट् एनेलेसिस् अपनूकु ये करनी पड़ेगी के तो फिर अपनेमें और शांकरमतमें अन्तर क्या? अपनेमें और बौद्धमतमें अन्तर क्या? वोही बात तो शंकराचार्यजी केह रहे हैं, वोही बात भगवान् बुद्ध केह रहे हैं; क्या अपन् वोही बात केह रहे हैं या कुछ दूसरी बात हे? ये एक मुख्य बात या मोड़पे (सोचनी पड़ेगी). बुद्ध

केह रहे हें ये सारी बात भ्रान्ति हे. श्रीशंकराचार्यजीके मायावादमें जीवको कर्ता भोक्ता होनो भ्रान्ति हे. या बातकी शुरुआतके जो तीन सूत्र हें, उन्हींको महाप्रभुजीने जमके क्रिटिसिज़म् कियो हे के ये मिसगाइड् कर रहे हो. अब देखो बड़ी भारी कोम्प्लेक्सिटी पैदा हो गई. एक बाजु अपन् बौद्धनूको शांकरनूको या प्रश्नपे विरोध कर रहे हें; बात पाछी अपन् वाकेही आस-पासकी कर रहे हें. तो क्या महाप्रभुजीके एप्रोचूमें सेल्फ-कोन्ट्राडिक्शन् हे? या महाप्रभुजी ही वो झांसा फैला रहे हैं और शंकराचार्यजीको विरोध करके पाछी बात वोही करनो चाह रहे हैं. जाकु महाप्रभुजी यों कहे हें ''शंकराचार्यजी प्रच्छन्न बौद्ध हैं''. तो क्या अपन् प्रच्छन्न शांकर हैं? जैसे शंकराचार्यजी प्रच्छन्न बौद्ध हें, ऐसे अपन् प्रच्छन्न शांकर हैं? 'प्रच्छन्न शांकर'को मतलब ढक्यो भयो शांकर; माने तुम उघाड़े नहीं पड़ रहे हो के तुम शांकर हो. भीतर खानेसु तुम भी शांकर हो. वो उघाड़े नहीं पड़ रहे हें के हम बौद्ध हें पर भीतरखानेसु वे बौद्ध हैं. ये अपने सामने एक प्रश्न हे. या प्रश्नको क्लिअर् कट खुलासा अपनूकु समझनो पड़ेगो.

(अहंक्रियाकी कार्यपद्धति = विभिन्न करण और कार्य को एकीकरण/यूनीफिकेशन्)

मैं फिरसु रिकेपिच्युलेट् कर रह्यो हूं. अपनूने भागवतके श्लोकके आधारपे इतनो तो देख्यो **''अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते.''** देखो! **'अहंक्रिया'** जो अपने भीतर पैदा हो रही हे वो क्या कर रही हे देखो!, जो बोडीमें अलग अलग फन्क्शन्स् हो रहे हें; ज्ञानको फन्क्शन् अलग हे, इच्छाको फन्क्शन् अलग हें क्रियाको फन्क्शन् अलग हे. खावेको छीवेजावेको सोवेको जागवेको घूमवेको ये सभी फन्क्शन् अलग अलग हे. नाकको कानको स्पर्शको फन्क्शन् अलग हे; ब्रेनमें सबके सेन्टर भी अलग अलग हैं. सब कोई एक ही सेन्टरसु गवर्न् नहीं हो रहे हें. वैज्ञानिकनूने भी यहां तक खोज्यो हे के ब्रेनके कोई एक पार्टकु डेमेज् करो तो तुम्हारो विजन् डेमेज्

हो जाये पर तुम्हारो सुननो बन्द नहीं होवे क्यों? जो विज़न्को सेन्टर् अलग हे. ऐसे ही ब्रेनमें हाथ पैर के काम करवेके सेन्टर् भी अलग अलग हैं. यहां तक फ्रन्टललोब् बुद्धिको सेन्टर हे के यहां बुद्धिसू गवर्न होवे हे यासूं पीछे मारो तो दिखलाई देनो बन्द हो जायगो, कुछ और कार्य बन्द हो जायगो पर अक्कल तो चलती रहेगी. यहां मार दियो तो अक्कल चलती बन्द हो जाय. ऐसे ब्रेन्में अलग अलग फन्क्शन्के सेन्टर अलग अलग हें. जब सेन्टर अलग अलग हें और सारे फन्क्शन्स् अलग अलग हो रहे हें तो उनकु यूनीफाई कौन कर रह्यो हे? कोओर्डिनेट् कौन कर रह्यो हे? **'अहंक्रिया.'**

उपनिषद्ने याकु बहोत सुन्दर ढंगसु समझायो हे, समझवे लायक बात हे. उपनिषद्ने एक याको उदाहरण बतायो हे के एक बखत सब इन्द्रियन्में झगड़ा भयो के मैं अच्छी के तू अच्छी? आँखने कही "मैं नहीं होऊं तो कोई देख कैसे सकेगो? चल कैसे सकेगो? खा कैसे सकेगो?" जीभने कही "चुप रेह. खाऊंगी तो मैं, तू थोड़े ही खायेगी! मैं नहीं खाऊं तो तुम कितने दिन तक देख पाओगी?" कानने कुछ और बात कही. हाथने कुछ और बात कही "मौंहसु थोड़ेही खाओगे, खाओगे तो हाथसु ही. हाथ नहीं होगें तो खाओगे कैसे?" ऐसे सब इन्द्रियन्में महान् झगड़ा हो गयो. झगड़ाको कोई सोल्युशन् नहीं आयो, तब सब इन्द्रियें ब्रह्माजीके पास गईं. ब्रह्माजीने कही "क्यों झगड़ रहे हो आपसमें! एक काम करो के एक एक करके शरीरमेंसु थोड़े दिन निकल जाओ. इनएक्टिव् हो जाओ. अपने आप पता चल जायगो." आँख निकल गई तो आदमीने अंधेकी तरह चलनो फिरनो शुरु कर दियो. कान निकल गयो तो बेहरेकी तरह काम करनो शुरु कर दियो. सब चीजन्को सब्स्टीट्युट् अपने पास है. आँख चली जाय तो अपन्कु कोई मरवेको थोड़े ही होवे. अंधो आदमी भी कोई न कोई सब्स्टीट्युट् निकाल ले जैसे लकड़ी लेके चले. बल्कि अंधो आदमी अपन्सु ज्यादा

सुने. इतनो अपन् नहीं सुनते होवें. अंधे आदमीकु पैरकी आवाजसु पता चल जाये के कौन आदमी आ रह्यो हे? वैसे अपन्कु पता नहीं चले के कौन आदमी हे? अपन्कु तो खाली घुसर घुसर आवाज सुनाई पड़े. अंधे आदमीकु वो भी सुनाई देगो के फलाने आदमीको घिसड़का हे ये. क्योंके कान ज्यादा फन्क्शन् कर रह्यो हे. तो जितनी भी इन्द्रियें निकलवे लग गईं. थोड़े दिन बाहर रेहके आई पर शरीर तो चलतो ही रह्यो. अंतमें प्राण निकले; जब प्राण निकले तो वहां उपनिषद् बहोत अच्छो वर्णन करे हे के जैसे तूफानी बछड़ा खूंटा उखाड़के भगे, ऐसे सब इन्द्रियन्के खूंटायें उखड़ गये. सब इन्द्रियन्ने मान्यो "हम सबमें प्राण सबसु बड़ो हे!". क्यों! जो जब प्राण निकल्यो तब सब इन्द्रियें खूंटासु उखड़के चली जा रही थी.

ऐसे सब चीजें जो काम कर रही हें उन सबन्कु बांधवेवालो अहंकार हे. वो अपनी अहंक्रिया कर रह्यो हे वाके कारण अपन्कु लग रह्यो हे के मैं देख रह्यो हूं. भई! देख तू नहीं रह्यो हे पर आँख देख रही हे. अपन्कु लगे के ऐसे कैसे तुम बोले! आँख देख रही हे तो मैं ही तो देख रह्यो हूं! एक बात ध्यानसु समझो. कोई भी डॉक्टरके पास जाके पूछो तो मर जावेके बाद भी थोड़ी देर आँख देखती होवे हे. मर जावेके बाद भी थोड़ी देर कान सुनतो होवे. तो देख तो आँख रही हे, सुन तो कान रह्यो हे; पर अहंकार क्या कर रह्यो हे के जो आँख देख रही हे, वाकी देखवेके क्रियासु अहंकारकी क्रिस्-क्रॉस् करके तुमकु बता दे के मैं देख रह्यो हूं, मैं सुन रह्यो हूं. वो अहंकार सबमें कॉमन् फिनोमिना हे करके सब अलग अलग फन्क्शन् हो रहे हैं फिर भी एक हो रहें हैं. एक बात समझो! आदमी बेहोश हो जाये जाकु कुछ भी ख्याल नहीं हे, पर वाके पेशाबको फन्क्शन् चलतो होवे हे के नहीं होवे हे? तो पता चल गयो ना के आदमीकी

इच्छा काम नहीं कर रही हे. ऑटोमेटिकली काम हो रह्यो हे. अपन् क्या कहें के छीवे जानो हे. अरे जानो कहां हे तेरेकु? वो तो अपने आप आ रही हे. बेहोश आदमीके सब ही अपने आप होवें हें; कोई जावेके कारण होवें? अपनूकु क्या हे के होशमें हें या लिये लग रह्यो हे के हमकु जानो हे. तो जो अहं पुरोयो भयो हे वाके कारण अपनूकु लग रह्यो हे के मोकु जानो हे. अरे कहीं नहीं जानो हे! ये तो कोई दूसरो फन्क्शन् हे. तुम्हारो याके साथ कोई सम्बन्ध ही नहीं हे. फनी बात हे पर रहस्य सच येही हे. यदि ये सत्य नहीं होय तो बेहोश आदमी कैसे सू सू जावे? बेहोश आदमी कैसे छीवे जाय? अरे भई! सीधीसी बात हे तुम तो कर ही नहीं रहे हो. ये फन्क्शन् तो अपने आप बोडीमें वा तरहसु हो ही रह्यो हे पर तुम होशमें हो तो तुमकु लगेगो के तुम कर रहे हो वरना बोडी तो सब काम अपने आप करती रहेगी. बोडी कोई थोड़े ही तुमसु पूछके करेगी! पर अहंक्रियाने तुमकु एक कोरोस्पोन्डिंग फीलिंग पैदा कर दी के मोकु जानो हे. अहंक्रिया या तरीकेको रोल् अदा करे हे. वो रोल अदा करवेमें अपन् प्रच्छन्न शांकर हें के नहीं, या फिनोमिनाकु अपन् सोच रहे हें.

मैंने अपने पेहले दिनके प्रवचनमें आपकु ये समझावेकी कोशिश की हती के करण कुछ ऐसे कर्म पैदा करें हें के जो सचमुचमें पैदा भये नहीं हें, अपनूकु सिर्फ पैदा होते भये दीख रहे हें.

आपकु याद होय तो ये बात प्रतीत्यसमुत्पाद और विवर्तवाद के एन्नालसु बताई हती. दरअसल वो पैदा हो नहीं रहे हें पर वो पैदा होते भये दीख रहे हें. कुछ करण ऐसे होवें हें के जो कुछ पैदा कर रहे होवें हें. उनमें मूल बात यहां समझवेकी हे के करणसु कोई क्रिया पैदा हो रही हे कोई भी करण कुछ क्रिया पैदा करेगो. वो जो क्रिया पैदा हो रही हे करणसु पैदा होती क्रिया कृत्रिम क्रिया होवे है और क्रिया अकृत्रिम् भी हो सके हे. जैसे

आपने अक्सर सुन्यो होयगो के आदमी मर जाये ना! तो वाके कानमें, नाकमें, मुंहमें रुई ठौंस दें. क्यों ठौंस दें? क्योंके हवा अन्दर जायगी और भीतरको जो फ्लुइड़ हे वो बाहर आ जायगो. अब वो जो बाहर आ रह्यो हे वो इच्छासु नहीं आ रह्यो हे. अपने भीतर वा तरीकेकी सिस्टम् हे जाकु वो बाहर नहीं आवे दे रह्यो हे. शरीर फूलवे लग जाय. क्यों फूलवे लग जाय? क्योंके अभी अपने पास कन्ट्रोल् हे के अपन् उतनी ही हवा अन्दर लें के जितनी चहिये हे. मरवेके बाद शरीर हवा एब्सोर्ब करतो ही जाये क्योंके छेद तो सब खुले भये हें ना! तो शरीर हवा एब्सोर्ब करतो जाय और फूलतो चल्यो जाय. फ्लुइड़ बाहर आनो शुरु कर दे क्योंके वाकु रोकवेकी कोई सिस्टम् नहीं हे. अपने आप शरीरमें होती क्रिया वो कृत्रिम् नहीं हे, वो अकृत्रिम क्रिया हे.

(नेचरल् और आर्टिफिशियल् के विभेद)

क्रियायें दोनों तरहकी हो सकें हें. १. अकृत्रिम (नेचरल्) क्रिया माने अपने आपमें होती क्रिया. २. कृत्रिम (आर्टिफिशियल्) माने करी भई क्रिया. जैसे अपन् पश्चिमीघाटपे जायें; वहां एक जोनूकी नोज़ हे. जोन्सन् बम्बईको गवर्नर हतो वाकी नाकके जैसो एक पहाड़ हे. अब वो कोई आर्टिस्ट्ने वाकी मज़ाक उड़ावेके लिये थोड़े ही बनाई हे! पूनाकी तरफ जाते ही घाट चढ़ोगे तो दिखेगो के वा पहाड़को शेप् ही ऐसो हे. ये माथेरानूके आसपास, हाजीमलंग और माथेरान् के बीचमें कोई एक बोटलूनेक्को पहाड़ हे. वाको बोटल् शेप् कौनने बनायो? कोई आर्टिस्ट्ने बनायो? नहीं. नेचरली वा तरीकेको वामें शेप् आ गयो. पर आर्टिस्ट बनावे तो अपन् वाकु क्या कहेंगे कृत्रिम्, आर्टिफिशियल् कहेंगे. नेचरसु बने तो नेचरल् कहेंगे. There is difference in between what is natural and what is artificial.

(क्या आर्टिफिशियल् और मिथ्या तथा सत्य/नेचरल्?)

अब वो जो आर्टिफिशियल् हे, वो मिथ्या भी हो सके हे.

जैसे स्क्रीनूपे जो भी कुछ सीन् प्रोजेक्ट हो रह्यो हे, वो स्क्रीनके लिहाजसु आर्टिफिशियल् हे. ग्राफके या लेटरके या सीन्के कोई भी एलीमेन्ट् स्क्रीन्में नहीं हें, सीन् (दृश्य) आर्टिफिशियली पैदा हो रह्यो हे. आर्टिफिशियली पैदा होवेके बाबजूद भी वो फिर प्रोजेक्शन् हे तो सत्य नहीं होके मिथ्या दीखेगो. स्क्रीनूपे जो ग्राफ़ या लेटर् पैदा भये वे आर्टिफिशियल भी हे और मिथ्या भी हे. पर या व्हाईट्बोर्डपे जा बखत मैं कोई ग्राफ बना रह्यो हूं तो वो प्रोजेक्शन् नहीं हे. माइन्ड् इट्, वो आर्टिफिशियल हे पर सत्य हे मिथ्या नहीं हे. स्विच् ओफ़् करते ही यहां स्क्रीनपेसु वो ग्राफ़ वो लेटर वो सब गायब हो जायेंगे. पर कल मैं जो या बोर्डपे लिखके चल्यो गयो हतो वो आज तक यहां मौजूद हतो के नहीं? ये आर्टिफिशियल् हे पर मिथ्या नहीं हे. या बोर्डपे जो पैदा हो रहे हें ग्राफ या लेटर, वो आर्टिफिशियल हे पर वो मिथ्या नहीं हे. करणके द्वारा दोनों तरीकेके फन्क्शन् हो सकें हें. कुछ कृत्रिम् भी हो सकें हें और कुछ अकृत्रिम करण भी हो सकें हें. कुछ मिथ्या भी हो सकें हें, कुछ सत्य भी हो सकें हें.

जब या बातपे ध्यान दोगे, तो आपकु भेद समझमें आयगो. जब अपन् यों केह रहे हें ''**अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अस्मि इति मन्यते**'' मिथ्याके अर्थमें अपन् वाकु नहीं केह रहे हें, सचमुचमें वो आर्टिफिशियली हो जाय हे पर वो वाको खुदको नेचर नहीं हे. अपन् इतनीसी बात केह रहे हें. सचमुचमें चेतनाको नेचर कर्ता ज्ञाता या भोक्ता होवेको नहीं हे, पर आर्टिफिशियल् डिवाइज़् जो वाके इर्दगिर्द रखी हें, जैसे यहां बोर्ड हे, कलम हे तो इन सबके कारण कोई एक आर्टिफिशियली चीज पैदा हो गई. वा अर्थमें अपन् वाकु इन्कार कर रहे हें. अपन् आर्टिफिशियल् तो माने ही हे पर शंकराचार्यजी और बुद्ध भगवान् क्या केह रहे हें ''कर्ता भोक्ता ज्ञाता मिथ्या हें''. माने सारो जड़ जगत्भी मिथ्या है मायाके द्वारा खड़ो कियो

गयो एक फोल्स् प्रोजेक्शन् हे. अपन् क्या केह रहे हें? फोल्स् प्रोजेक्शन् नहीं हे पर आर्टिफिशियल् हे. जैसे कोई भी ओनमिन्ट्में हीरा आर्टिफिशियल् ही होयगो शेप्के लिहाजसु पर जो वा डायमन्डको कन्टेन्ट् हे, वामें वो रीयल् हे.

अक्सर क्या होवे हे बोलचालकी भाषामें रीयल् और आर्टिफिशियल् कु अपन्ने कोन्ट्रास्ट् मान लियो हे, दरअसल आर्टिफिशियल् वस्तु भी रीयल् हो सके हे के नहीं हो सके हे! एक बात समझो! ढोकला आर्टिफिशियल् हे के रीयल् हे? आर्टिफिशियल् हे. अपने आप ढोकला थोड़े ही बन जाय? बनाओगे तब बनेगो ना! यासु ढोकला आर्टिफिशियल् हे पर मिथ्या तो नहीं हे. हे सब सत्य. सत्य हे याको मतलब ये नहीं के वो नेचरल् हे. सत्य होते भये भी वो आर्टिफिशियल् हे. जिन चीजन्सु ढोकला बने हे उन चीजन्में ढोकला होवेको केरेक्टर् बाय डिफोल्ट् नहीं हे, कुछ कुछ ऊधम वाके साथ करो तो वो ढोकला बन जा रही हे. ऊधम नहीं करो तो वो ढोकला नहीं बने. रहस्य वाको ये हे. ऐसे चेतनाके साथ कुछ कुछ ऊधम हो रहे हें, जिन ऊधमन्के कारण चेतना कर्ता ज्ञाता और भोक्ता बन रही हे. अपने आपमें चेतना न ज्ञाता हे, न कर्ता हे और न भोक्ता हे पर जो बन रही हे वो आर्टिफिशियली रीयल् बन रही हे, जैसे ढोकला बन रह्यो हे. अपनी चेतना आर्टिफिशियली कर्ता ज्ञाता और भोक्ता बन जाय हे पर वो मिथ्या नहीं रीयल हे.

शंकराचार्यजीके और भगवान् बुद्धके मतमें वो रियल नहीं हें, मिथ्या हे. आर्टिफिशियल् तो हे ही पर एट्र द सेम् टाईम् मिथ्या भी हे. यहां अपन् और शंकराचार्यजी में बेसिक डिफरेन्स् आ गयो हे. वाके कारण अपन् समझ सकें हें के भगवान् जैसे कहें हें ''**भूमिः आपो अनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च. अहंकार इति इयं मे भिन्ना प्रकृतिर् अष्टधा.**'' (भग.गीता.७।४) माने ''गन्ध मैं हूं'',

"रूप मैं हूं", "रस मैं हूं", "स्पर्श मैं हूं", "शब्द मैं हूं", "सब कुछ मैं हूं, इनकु ग्रहण करवेवाली इन्द्रिय मैं हूं", "उन इन्द्रियनूकु प्रेरणा करवेवालो मन मैं हूं". "वा मनकु पैदा करवेवालो अहंकार मैं हूं". "वा अहंकारकु पैदा करवेवाली बुद्धि मैं हूं". सब कुछ मैं हूं तो सभी चीज भगवान् हें. जो कन्टेन्ट् हें वाके, कोन्स्टीट्युएन्ट् फेक्टर् सब रीयल् हें, पर केलिडोस्कोपिक् नेचरमें सब चीज रीयल होते भये भी एक डिज़ाइन आर्टिफिशियलि क्रियेट् हो रही हे, जो सीन् सचमुचमें हें नहीं वहां, केलिडोस्कोप्की चूड़ियें भी सच्ची, वो तीन मिरर भी सच्चे, पीछेको दूधिया ग्लास् भी सच्चो, आगेको पारदर्शी ग्लास् भी सच्चो, वाको जो कागजको या मेटलको रेपर् हे वो भी सच्चो, वामें लाईट जो पास् हो रही हे वो भी सच्ची, तुम देखवेवाले भी सच्चे, सब सच्चो, झूठो क्या हे वामें? ये सारे सच्चेनूको मिलके जो एक चोंचोंको मुरब्बा बन्यो हे वो सचमुचमें हे नहीं. ऐसे ये चोंचोंको मुरब्बा झूठो हे. ऐसे कर्ता ज्ञाता और भोक्ता झूठो हे पर या अर्थमें झूठो नहीं हे के वो हो नहीं रह्यो हे, खोटो दीख रह्यो हे, या अर्थमें नहीं, सचमुचमें वैसो ही दीख रह्यो हे. अपनूकु पता कैसे चले? देखो सीधीसी बात बताऊं. एकदम क्लिअरकट् एक्स्पेरीमेन्ट्की बात हे. केलिडोस्कोप्में तुमने एक डिज़ाइन् पैदा करी. नोरमली सबकी समझ क्या हो जायगी के मिथ्या होवेके कारण वो कल्पना हे. जैसे शंकराचार्यजी और भगवान् बुद्ध कु हर बखत येही तकलीफ होवे हे के कोई भी चीज उनकु मिथ्या लगी नहीं, तो तुरत वाकु कल्पना मानें. मायाके द्वारा पैदा की भई कल्पना हे. ऐसे केलिडोस्कोप्में जो डिज़ाइन् पैदा भई वो तुम्हारी कल्पना हे. अब एक काम करो के केलिडोस्कोप्के व्यु फाइन्डरमें केमराकु क्लिक् करो, वो डिजाइन्को फोटो पड़ेगो के नहीं पड़ेगो? तुम्हारी कल्पना होय तो फोटो तो नहीं पड़नो चहिये हतो. जबके फोटो तो पड़ रह्यो हे. फोटो पड़के एक्जेट् वैसेही ढंगको फोटो पड़ेगो जैसे फोटो कोई बाहरकी सच चीजको पड़े.

अबजब फोटो पड़ रह्यो हे तब तो वो तुम्हारी कल्पना तो नहीं हे न!. अब तुम्हारी कल्पना नहीं हे बावजूद याके तुमकु वा तरहसु दीख रह्यो हे तो कुछ और कारण होनो चहिये. कई सत्य वामें मिलके जो चोंचोंको मुरब्बा बन्यो हे वो नेचरल् नहीं हे; वाकी हर चीज वाकी हर आइटम् तो सच हे, या बातकु अपन् इन्कार नहीं कर सकें. अपनो वो फंक्शन हे याके लिये सबसु पेहले मैने आपकु केलिडोस्कोप् समझायो हतो. वा दिन आपकु ये लग्यो होयगो के ये क्या क्या लफड़ा हो रह्यो हे! क्योंके ये बात देखोगे तो आपकु समझमें आयगी के आखिर अपने अहंकारसु अपनेकु जो भी कर्तृत्व भोक्तृत्व ज्ञातृत्व को भास हो रह्यो हे वो केलिडोस्कोपिक व्यू हे जो के आर्टिफिशियल् हे, हन्ड्रेड परसेन्ट आर्टिफिशियल् हे, नेचरल् नहीं हे. पर अनरीयल् या अर्थमें नहीं हे के वो फोल्स् प्रोजेक्शन् हे, वो या अर्थमें अनरीयल् हे के सचमुचमें वा तरीकेकी कोई डिज़ाइन् पैदा नहीं भई हे, वो सब ओरगेनाइज्ड् या तरीकेसु कर दियो हे के लग रह्यो हे के बहोत बड़ी डिजाइन् हे. हे कुछ भी नहीं वहां. ऐसे अपने भीतर कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व की एक डिज़ाइन केलिडोस्कोपिक् बन जा रही हे. वो अनरीयल् या अर्थमें नहीं हे के कल्पना हे, अनरीयल् या अर्थमें हे के वो नेचरल् नहीं हे, आर्टिफिशियल् हे. वा बातकु भगवान् गीतामें समझा रहे हें **"प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः अहंकारविमूढात्मा 'कर्ता अहम्' इति मन्यते"** (भग.गीता.३।२७). (भगवान् भागवतमेंभी याकु समझा रहे हें **"स एष यर्हि प्रकृतेः गुणेषु अभिविषज्जते अहंक्रियाविमूढात्मा 'कर्ता अस्मि' इति अभिमन्यते"** (भाग.पुरा.३।२७।२). अपन् याकू उपलक्षण मानें तो आसानीसु समझ सके हें "अहंज्ञप्तिविमूढात्मा 'ज्ञाता अहम्' इति मन्यते" और "अहंभुक्तिविमूढात्मा 'भोक्ता अहम्' इति मन्यते"; ये आखो वाको रहस्य हे करके अपने अहंकारके कारण अपनी चेतनामें कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता के गुण धर्म प्रकट हो रहे हें, या रहस्यकु अपनूकु समझनो चहिये. सवाल ये हे के

ये गुणधर्म परमेनन्ट् हें के इम्परमेनन्ट् हें? बुद्धिके डिब्बान्की हर वक्त तकलीफ क्या होवे हे के अपन् डायकोटोमी करते होवें, (उदा.) परमेनन्ट् विज़ा इम्परमेनन्ट् विज़ा. फिर अपन् परेशान हो जायें के जो परमेनन्ट् हे वो इम्परमेनन्ट् नहीं हे; जो इम्परमेनन्ट् हे वो परमेनन्ट् नहीं हे. अरे भई! पर बीचकी क्रिसक्रोसूमें कोई चीज ऐसी भी तो हो सके हे के ऐसे इम्परमेनन्ट् होवे पर वैसे परमेनन्ट् होय. ऐसे नहीं हो सके! क्रिसूक्रोसिंग् ऐसी हो गई जैसे ज्ञान और क्रिया ऐसे नहीं पर वैसे तो होवे हे के नहीं? अहंकारके सारे तामझामके कारण अपनी चेतनामें भोग ज्ञान और क्रिया को प्राकट्य होवे हे के नहीं? जैसे वो हो सके हे ऐसे परमेनन्स् और इम्परमेनन्स् को भी विचार ये बन्द डिब्बाको विचार हे यासू खोटो हे.

पुरुषोत्तमजीने प्रस्थानरत्नाकरमें बहोत ही एम्फेटिकली या बातकु समझायो हे के कोई चीज इम्परमेनन्ट् हे वाको मतलब ये नहीं के वो इम्परमेनन्ट् ही हे. जो इम्परमेनन्ट् हे वाको मतलब ये नहीं के वो परमेनन्ट् हो ही नहीं सके हे. रिलेटिवली जो परमेनन्ट् हे, वो कल मैंने आपकु बात बताई हती के स्वभावमें कोई तरहकी परमेनन्सी लावे हे; कर्म हर चीजमें कोई तरहको इम्परमेनन्स् लावे हे. अब जैसे ये परमेनन्ट् तो मैं यहां ही परमेनन्ट् हूं स्वभाववश. पर यहां आ गयो तो कर्मके कारण थोड़ो इम्परमेनन्स् आयो ना! (परमेनन्ट्ली यहां नहीं हूं पर यहां आ गयो याके लिये इम्परमेनन्ट्ली यहां हूं.) ऐसे नहीं रिलेटिवली इम्परमेनन्ट् यहां हूं. रिलेटिवली परमेनन्ट् भी यहां हूं. वा बातकु अपनेकु समझनो पड़ेगो. वो बन्द डिब्बाके चिन्तनवाले लोग समझ नहीं पावें. हर वक्त इम्परमेनन्ट् हे तो परमेनन्ट् नहीं हे; परमेनन्ट् हे तो इम्परमेनन्ट् नहीं हे. ऐसी बात नहीं हे. अपनी चेतना में कर्ता भोक्ता और ज्ञाता, अपनी जबतक भी संसारकी अवस्था हे, जबतक भी मुक्तिकी अवस्था नहीं हे, जबतक प्रलयकी अवस्था नहीं हे, तबतक अपनूमें वो परमानेन्ट् कर्तापनो भोक्तापनो

और ज्ञातापनो हे पर यों पाछो परमानेन्ट् नहीं हे क्योंके वो आर्टीफिशियल् हें. या लिये जा बखत अपन् मुक्त हो जायें, और मुक्त होवेकी भी क्या जरूरत हे! बेहोश ही हो जायें, तो कर्ता, ज्ञाता और भोक्ता सब खतम. कोमामें गये और न कर्ता रेह जाये, न ज्ञाता रेह जाये और न ही भोक्ता रेह जाये. रिलेटिवली जबतक अपन् कोमामें नहीं गये हें, तबतक तो अपनेमें ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता परमेनन्ट् नहीं हे इम्परमेनन्ट् ही हे, ऐसे मत सोचो. रिलेटिवली परमेनन्ट् हें और रिलेटिवली इम्परमेनन्ट् हें. घड़ीको जो कांटा हे ना! ये इम्परमेनन्स्को उदाहरण हे. पर ध्यानसु देखो के हर कांटा, छोटे छोटे परमेनन्स्में चल रह्यो हे. यों थोड़े ही चले हे; छोटी छोटी परमेनन्स्में चले हे घड़ीको कांटा भी. जो इम्परमेनन्स्को परफेक्ट् उदाहरण हे, वो भी थोड़ी तो परमेनन्स् दिखा ही रह्यो हे ना! ये झटका हर जन्क्चरपे अपनी एक छोटीसी माइक्रोपरमनेन्सी तो दिखा रह्यो हे के नहीं? या तरीकेकी बाइफरकेशन्/डायकोटोमी जो हे परमेनन्स् और इम्परमेनन्स् की, ये अपने बन्द डिब्बा जैसे दिमागकी उपज हे. बाहरकी हकीकत नहीं हे. या रहस्यकु समझो. अब जब या रहस्यकु समझोगे तब ये बात आपकु अच्छी तरहसु समझमें आ जायगी के अपनो अहंकार घड़ियालके कांटा जैसो हे; घड़ियालके कांटामें अपने पास आज जो पद्धति हे वो घंटा, मिनट् और सेकन्ड्की हे. पर अपन् इन तीनके अलावा दिनको कांटा भी तो बना सकें हें. जब दिनको कांटा बना सके हें तो महीनाको भी कांटा बना सके हें. और बनानो होय तो बरसको भी कांटा बना सके हें. तो साईकलीकली ये पूरो साईकल अपनो चले हे. एक बात समझो के कोई बरसको कांटा होय घड़ियालमें तो कितने दिन परमेनन्ट् रहेगो? तीनसो साठ दिन एक ठिकाने परमेनन्ट् रहेगो. तीनसो साठ या पैंसठ दिनके बाद वो इम्परमेनन्ट् होयगो. सेकन्ड्को कांटा सेकन्डके परमेनन्स्में भोगेगो, मिनट्को कांटा एक मिनके परमेनन्स्में भोगेगो. घंटाको कांटा एक घंटाके परमेनन्स्में भोगेगो. एक घंटा तक वो कांटा परमेनन्ट्ली

वहीं होयगो.

ऐसे अहंकारको परमेनन्स्के भी कई सेकन्ड, मिनट्, घंटा, दिन, बरस युग वगेरहके रिलेटिव परमेनन्स् और इम्परमेनन्स् हें. वामें ये अहंकार कर्तापनो अपनो प्रकट करे हे; भोक्तापनो प्रकट करे हे; ज्ञातापनो प्रकट करे हे. जैसे अभी अपन् ज्ञाता हें, आप मोकु देख रहे हो, पर अभी जब प्रवचन पूरो हो जायगो फिर? न मैं आपकु देखूंगो और न आप मोकु देखोगे तो ज्ञातापनो कहां गयो? अब ज्ञातापनो इम्परमेनन्ट् हे या लिये झूठो हे, ये बन्द डिब्बाको चिन्तन हे. हे वो या लिये इम्परमेनन्ट् हे के वो ज्ञातापनो आर्टिफिशियल् हे नेचरल् नहीं हे. बाइडिफाल्ट् नहीं हे. आर्टिफिशियल् होवेके कारण जबतक मैं आपके सामने खड़ो हूं तबतक मैं आपकु दीख रह्यो हूं, जबतक मैं दीख रह्यो हूं तबतक आप मेरे ज्ञाता हो, जब मैं आपके सामनेसु सरक गयो तो आपकु मोकु जानवेको ज्ञातापनो भी पाछो स्विच् ओफ हो जायगो. क्योंके आपको ज्ञाता सिर्फ आपके ज्ञानकी फेकल्टीपे डिपेन्ड नहीं कर रह्यो हे, वामें मेरो भी कुछ शेयर हें ना! मैं आपकु दीख रह्यो हूं वामें सिर्फ मेरो ही रोल् नहीं हे, आपके देखवेकी फेकल्टीको कुछ शेयर हे, जैसे केमेराको डिज़ीटल् इमेज् वामें केमेराको भी रोल् हे और बाहरके व्युको भी रोल् हे. दोनोंके साथके कोलोबोरेशन्में वो एक सीन् पैदा हो रह्यो हे. एक्जेट्ली अपने अहंकारमें भी या तरहके कोलोबोरेशन्सु सब काम हो रह्यो हे, या रहस्यकु समझोगे तो एक बहोत खूबसूरत बात ख्यालमें आयगी के कितनी फेसिलिटी अपने अहंकारमें हे के चहिये जितनो कर्तृत्व हो सके हे. सेकन्ड तो बहोत बड़ो टाईम् हे, सेकन्ड्के हजारवें हिस्साको भी कर्तृत्व, ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व हो सके हे. और हे सो ''**सहस्रपरिवत्सरमितकाल**'' तकको अपनो कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व हो सके हे. स्काई इज़ द लिमिट अपने कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व की; वो उतनो भी अपनो कर्तृत्व,

ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व हो सके हे और एक क्षणभंगुर कर्तृत्व, ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व भी हो सके हे. वा तरीकेकी फेसिलिटी वा अहंकारके करणमें कितनी फाईन् अवेलेवल् हे याकी खूबसूरती देखोगे तो पता चलेगो के एक ही अहंकार हे वो घड़ीके सब कांटान्को रोल निभा रह्यो हे; अब नक्की करो के तुमकु क्या देखनो हे? घंटा देखनो हे तो घंटा दिखावे हे, मिनट् देखनो हे तो मिनट् दिखावे हे, सेकन्ड देखनो हे तो सेकन्ड दिखावे हे, बरस देखनो हे तो बरस दिखावे हे, दिन देखनो हे तो दिन दिखावे हे, महीना देखनो हे तो महीना दिखावे हे; तुम क्या देखनो चाह रहे हो, वो चीज अपनो अहंकार अपनेकु दिखावे. क्या चीज भोगनो चाह रहे हो, वो चीज तुमकु भुगवावे, जो चीज तुम करनो चाह रहे हो वो चीज तुमसु करवावे, ऐसी बात नहीं हे के वामें क्षणभंगुरता ही हे मिथ्या होवेके कारण, ये रहस्य अहंकारको ब्राह्मिक रहस्य हे जो याकु ''**सहस्रशिरसं देवं यम् अनन्तम् प्रचक्षते**'' बनावे हे. जो बात मैने पेहले दिन आपकु बताई हती के अहंकार अपनो हजार माथाको एक देव हे; तो ये फेक्टर वाकु ''**सहस्रशिरसं देवम्**'' बनावे. क्योंके कितनी वामें मल्टीपल् फन्क्शन्की पोसिबिलिटी हे ये अपनेकु वामें ख्याल आ सके हे.

(अहंकारके फ्ल्यक्च्युअेशन्/और फ्लेक्सिबिलिटी)

छोटे छोटे अहंकार अपने भीतर पैदा होवे हें; जैसे ट्रेनमें अपन् बैठ गये. सीट कौनकी हे? मेरी हे. अरे तेरी सीट! क्या घरसु लायो! नहीं नहीं! पर वो रिज़र्वेशन् करायो हे. तो रिज़र्वेशन्को मतलब क्या, वो तो खाली एक चिट हे. एक आदमी धक्का मारे, दो डण्डा मारे और पूछे ''बोल कहां हे तेरो रिजर्वेशन्?'' तो अपन् कहें ''ले तू बैठ''. नहीं मार रह्यो हे, सब लोग सभ्य हें या लिये मेरी हे. वो हरीयाणाकी रामलीलामें ऐसो भयो के हनुमानजीने रावणकु जाके कही ''अबे रावणे! सीता देणी के नहीं देणी?' उनने

कही “नहीं देणी.” हनुमानजीने कही “कैसे नहीं देणी, देणी पड़ेगी, सीता.” रावणने कही “नहीं देणी.” फिर रावणने कही “या बन्दरकी पूंछमें आग लगा दो.” तो हनुमानजी बोले “अरे! आग काहेकु लगाओ. तू ही रख सीता. हमें नहीं लेणी.” ये अहंकार पाछो ऐसो हरियाणवी हनुमान हे. कोईने डण्डा नहीं मार्यो हे करके अपनेकु लग रह्यो हे “मेरी रिजर्वड् सीट हे.” मारे डण्डा तो सीट वीट सब गायब. नहीं तो खींच पकड़ मेरेकु जोर आता हे. नहीं तो अपन् कहेंगे “हट! हमारी सीट रिजर्व हे. तुम्हारी नहीं हे.” और वोही कोई गन् पोइन्टपे टेररिस्ट आ गयो कोई और कहे “चल उठ”. तब अपन् कहें के सीट रिजर्व हे! वो गन दिखाके कहे के “चल उठ” तब फिर रिजर्व रहेगी? फिर अहंकार खतम्. कितनी फ्लेक्सिबिलिटी हे. या अहंकारकी फ्लेक्सिबिलिटी देखो. अपन् कहें के पैसा दिये हें कोई मुफ्तमें थोड़े ही बैठे हें. पर वो कहें अरे पैसा दीये होंयगे पर चल उठ! गन् धरी नहीं सामने के अपन् कहें “चल बैठ. कौन मना कर रह्यो हे!” तुरत वाको सॉल्युशन् आ जाय. अहंकारको इतनो फाईन् फन्क्शन् हे. या तरीकेकी फ्लेक्सिबिलिटी हे; परमेनन्स् इम्परमेनन्स्की या तरहकी रिलेटिविटी हे. अभी मैंने एक मजेदार जोक् पढ़यो. कोई बिज़नेसहाउस्में लेटरड्राफ्ट करवेवाले सेक्रेट्रीको जोब् खाली हतो. वाके लिये एप्लीकेशन्स् इनवाईट किये गये. एकने एप्लीकेशन् दियो. वाकु आफिस्की तरफसु कोई एक लेटर ड्राफ्ट करवेकु कही. वाने पूछी के क्या हे? अब लेटर ड्राफ्ट करनो होय तो भाषापे कमान्ड् तो होनो चहिये के नहीं? जो इन्टरव्यु लेनो चाहतो हतो वाने कही “तुम्हारो हम इन्टरव्यु लेंगे के तुम्हारो भाषापे कमान्ड हे के नहीं?” ‘भाषापे कमान्ड्’को मतलब क्या के जो भी शब्द आ रहे हें वाके तुमकु सिनोनिम् (समानार्थी शब्द) आवें के नहीं? एन्टिनोम् (विरुद्धार्थी शब्द) आवें के नहीं? वाके दुर्भाग्यसु वा इन्टरव्युवालेने पूछी “चलो तुमसु एन्टोनिम् पूछ रह्यो हूं. मैं जो शब्द बोलूं वाको तुम एन्टोनिम् बताओ.” वाने कही “पूछो.” वाने

कही ‘बेड’ याने कही ‘गुड.’ वाने पूछी “अगली”. वो भाई यू.पी. के हते वाने कही “पिछली” वाने फिर पूछी “अगली” वाने कही “पिछली” उनने कही “सुन नहीं रह्यो हे के ‘अगली’.’ वाने कही “सुन नहीं रह्यो हे के ‘पिछली’.” इन्टरव्युवालेने सोची “ये क्या बला हो गयी! ‘अगली’को ‘पिछली’ कैसे हो गयो?” समझमें आई बात? अंग्रेजीमें ‘अगली’को कुछ और मतलब हे. अब वो यू.पी. को हतो तो वाने कही “‘अगली’को एण्टीनोम ‘पिछली’.” तो वाने कही “तुम समझदार नहीं हो.” वाने जवाब दियो “देखो मैं समझदार हूं.” अब इन्टरव्युवालो घबरा गयो के यासु छुटकारा कैसे पानो!! वाने कही “योर एप्लीकेशन् इज़् रिजेक्टेड्.” वाने कही “माई एप्लीकेशन् इज़् ऐक्सेप्टेड्.” वाकु बतायो गयो हतो के एन्टोनिम् तुमकु बोलनो हे. वाने कही “यू आर फूल्.” वाने कही “आई एम् वाईज़.” एन्टोनिम् हें सब. अब अहंकार कितनो सो के “जो बात वो बोलेगो वाको एन्टोनिम् मोकु बोलनो हे.” बस इतनोसो ही तो अहंकार हे ना. अब वो अहंकार पनप गयो तो वाके अलावा और कोई दूसरी बात सूझे ही नहीं हे. जो बोले तो वाको ओपोज़िट बोले. तो या अहंकारपे कैसे पोहोंचे कोई? अहंकार पनप गयो सो पनप गयो. या तरीकेके अहंकारके परमेनन्ट् और इम्परमेनन्ट् रोल हें, ये देखो तो अपनेकु मजा आवे के अहंकार कैसे काम करे हे. अहंकार क्षणभंगुर भी हो सके हे और **“सहस्रपरिवत्सरमितकाल…‘दासोऽहं”** वालो अहंकार भी हो सके हे. वामें हर अहंकारकु ईक्वली ट्रीट करवेकी भ्रांति नहीं करनी चहिये. अहंकारके अपने अपने केरेक्टर हें.

(अहंकारके विभिन्न पहलुन्में कोओरडिनेशन्/डिसकोओरडिनेशन्)

अहंक्रियाकु अपने यहां मोहजनक कही हे; अहंकरण अपने यहां मोहजनक नहीं हे. या रहस्यकु समझो. एक सीधीसी बात समझो के अपने भोगको, ज्ञानको और क्रियाको जो अहंकार हे; उन अहंकारनूकु भी पाछो जरूरी नहीं हे के वो सारे अहंकार आपसमें कोऑरडिनेटेड्

ही होंय, कभी कभी वो डिसकॉरडिनेट् भी हो सकें हें; कैसे डिसकॉरडिनेट् हो सकें हें वाको एक रहस्य समझो के अपन् करनो कुछ चाह रहे हें, इच्छा कुछ और हे, भोग कुछ और हो रह्यो हे. जैसे दुर्योधन कहे हे **''जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानामि अधर्मं न च मे निवृत्तिः केनापि देवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि.''** जान रह्यो हूं धर्म पर करनो नहीं चाह रह्यो हूं. अहंकारमें देखो पाछी एक बात आ रही हे, धर्मको ज्ञाता हे पर धर्मको वो कर्ता बननो नहीं देनो चाह रह्यो हे. **''पुण्यस्य फलम् इच्छन्ति, पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः. फलं नेच्छन्ति पापस्य, पापं कुर्वन्ति वै सदाः.''** ऐसो भी कह्यो जाय हे शास्त्रमें. अपनेकु पुण्यको फल चहिये पर पुण्य नहीं करनो हे. पापको फल नहीं चहिये पर करनो पाप हे. ये सारो अपने अहंकारको कर्तृत्व, भोक्तृत्व और ज्ञातृत्व के क्रिसक्रॉसिंग्के कारण ये डेवलप् होते भये सारे ये पॅटर्न् हें अपने बिहेवियरमें के अपन् कितने तरहसु अपनो भोक्तृत्वको अहंकार पाछे कुछ और ढंगसु काम करतो होय; कर्तृत्वको अहंकार कुछ और ढंगसु काम करतो होय; ज्ञातृत्वको अहंकार कुछ और ढंगसु काम करतो होय; कई बखत ये तीनों अहंकार, यद्यपि अहंकार एक ही हे, पर अहंकारके एक होवेके बावजूद भी तीनों अहंकार आपसमें एक दूसरेसु टकरा जाते होवें.

(ईगोस्प्लिटिंग्)

एक जर्मन् राईटर भयो हे स्टेफिन ज्वाईख करके, वाने एक बहोत अच्छी स्टोरी लिखी हे 'द चैस् प्लेयर'. नाज़ी लोग एक डॉक्टरकु अरेस्ट करके वाकु टॉरचर करें हें. जेलमें वाकु अकेले एक कोठरीमें रख दियो हे. वाकु कुछ करवे नहीं दें. एक दिन क्या होवे के वाकु टॉरचर करवेके लिये बुलायो होवे तो वो बाहर खड़ो होवे और बाहर कोई पुलिस ऑफिसरसु मिलवे कोई बड़ो पुलिस् ऑफिसर वाके ओवरकोट्की जेबमें कुछ फूल्यो फूल्यो देखें

हें. तो ओवरकोटकी खीसामें हाथ डाल्यो तो एक किताब मिले. वा पॉकेटबुककु वो छिपाके रख ले. जब वो अपनी कोठरीमें/सेल्में जावे तो वो किताबकु खोलके देखे तो शतरंज कैसे खेलनी वाके सारे नक्शायें हें. अब वाकु शतरंज पता नहीं हे. शतरंजमें इन्टरेस्टेड् नहीं हे. शतरंज खेलनो नहीं जाने हे. पर वाकु कुछ करवे नहीं देवे हें तो टाईम कैसे पास करनो? जेलकी कोठरीमें और कोई स्टिम्युलेशन् नहीं हे, मन बेहलावेको कोई साधन नहीं हे, करके वो शतरंज खेलवेकी पुस्तककु पढ़नो शुरु करे हे. धीरे धीरे वाकु समझमें आनी शुरु होवे हे. धीरे धीरे समझमें आवेके बाद सारे नक्शायें वाकु बायहार्ट हो जायें हें; फिर वो आपसमें खेलनो शुरु करे हे. खेलनो शुरु करे जा बखत वा जन्कचरपे जाके वाकु सफेद गोटी और काली के हिस्सामें चेतना स्प्लिट् हो जाये. खुद खुदसु झगड़तो रहे के ''भई! तुम्हारे मोहराके चलवेमें कितनो टाईम लगेगो!''; फिर वो कहे के ''भई! थोड़ी देर बाट देखो सोचवे दो हमकु''. क्योंके कालेकी चाल भी वाकु चलनी हे और सफेदकी चाल भी वाकु चलनी हे. दोनोंकी चालमें दोनोंको काउन्टर सोचनो हे. तो गेम बड़ी कॉम्प्लीकेटेड् हो जाय. वो गेम कॉम्प्लीकेटेड् होवेके कारण जैसे जैसे टाईम लगनो शुरु होवे सोचवेमें, तो काली कॉन्शियस् हल्ला मचावे के इतनी देर तुम सोचवेमें लगाओगे तो खेल नहीं चलेगो. सफेद कॉन्शियस् कहे के तुमने भी तो इतनी देर सोच्यो हतो के नहीं? वो धीरे धीरे पागल हो जाय. या पागलपनके कारण वाकु छुट्टी मिल जाय. पर जो बात मैं समझानो चाह रह्यो हूं वो ये हे के वाको ईगो एक ही हे पर दो रोल् अदा कर रह्यो हे. काले मोहराको और सफेद मोहराको. दोनों एक दूसरेसु खेल रहे हें **''स इममेव आत्मानं द्वेधा पातयत् ततः पतिश्च पत्नी च अभवताम्.''** (बृह.उप.१।४।३) मने कृष्णश्च शुक्लश्च अभवताम् और सारी सृष्टि वाकी वामें पैदा होवे. फॅन्टास्टिक स्टोरी हे स्टेफिन ज्वाईखकी. पढ़ें तो मजा आ जाय. इतनी जबरदस्त स्टोरी हे. अंतमें वाकु

हेल्युसीनेशन् हो जाय वामें; जैसे स्केयर होवे, तो वापे खड़ो होय तो वाकु लगे "देखो शह आ रही हे ऊंटकी" तो आदमीकु उठा उठाके रखे "हट यहांसु शह आ रही हे." इतनो पागल हो जाय क्योंके वाके "**तन्मनस्काः तदालापाः तद्विचेष्टा तदात्मिकाः तद्गुणानेव गायन्त्यौ नात्मागाराणि सस्मरुः**" (भाग.पुरा.१०।२७।४४) जैसी वाकी स्थिति हो जाय शतरंजके साथ. ब्लॅक और व्हाईट् दोनों वो खुद ही हे. खुद ही वो ब्लॅक हे और खुद ही व्हाईट् हे, खुदके सामने षडयन्त्र करे हे, खुद चाल सोचे हे, या तरीकेको खेल वाको चले हे. तो या बातकु सोचो के अपने अहंकारमें भी या तरहकी स्प्लिटिंग् होवे है. या स्प्लिटिंगकु प्ले समझो या डिसीज़् समझो या और कोई भी कारणसु समझो, पर अपने अहंकारमें वो ब्राह्मिक केरेक्टर हे के वामें स्प्लिटिंग आवे हे. जैसे ब्रह्म अपने आपकु दो भागनूमें बांट सके हे; जड़ और जीव बन सके हे, जड़ और ईश्वर बन सके हे; जीवात्मा परमात्मा बन सके हे; वो कॅपेसिटी अपने अहंकारमेंभी बिल्टइन् सिस्टम्के तहत् मौजूद हे.

स्टेफिन ज्वाईखने तो एक इतनो बड़ो साईकिक कॅरेक्टर बता दियो हे पर ये अपनेकु रेडीमेड अवेलेबल फॅसिलिटी हे; अपनी कार ट्रेफिक्में फंस जाय और अपन् सारी गाड़ीनूकु देखके कहें "ट्रेफिक बहोत बढ़ गई हे." पर तू वामें हे के नहीं? अपन् अपनेकु काउन्ट् करनो भूल जायें. ट्रेफिक् जो बढ़ गई हे वामें तेरी कार हे के नहीं? तो अपनो अहंकार वामेंसु स्प्लिट् हो जाय और अपनेकु लगे "ट्रेफिक् बहोत बढ़ गई हे. गाड़ी कैसे चलाई जाय!" गाड़ी तो तुम भी चला रहे हो और दूसरो भी चला रह्यो हे तभी तो ट्रेफिक बढ़ी हे; तुम गाड़ी नहीं चलाते तो ट्रेफिक् नहीं बढ़ती. तुरत अपने पास ये स्प्लिट् होवेकी फॅसिलिटी रेडीमेड अवेलेबल हे.

स्प्लिट् ईगोको अच्छो भी उपयोग हो सके हे; याको दुरुपयोग

भी हो सके हे. ईगो जा बखत स्प्लिट् हो जाय वा बखत; हर आर्टिस्ट्को ईगो स्प्लिट् होवे हे. हर नोवलिस्ट्को ईगो स्प्लिट् होवे हे; आपकु क्या तकलीफ हो रही हे वामें वाको ईगो इन्वोल्व् नहीं होतो होय तो वो स्टोरी अच्छी लिख ही नहीं सके. कई बखत् अच्छो कहानी-लेखक हे, अच्छो गीत-लेखक हे, अच्छो चित्रकार हे, वो आपके ईगोमें इन्वोल्व होके, अपने ईगोकु स्प्लिट् करके एज़् ऐ कॅरेक्टर, एज़ ऐ चित्रकार, एज़ ऐ डायरेक्टर आपमें वो डाईव् लगावे हे और जो आपकी प्रोब्लम् हे वो अपनी प्रोब्लम् सोचके, शायद आपकी बात इतनी संवेदनाशील नहीं होयगी, इतनी खूबसूरत नहीं होयगी, इतनी असरदार नहीं होयगी जितनीके वो सरस बनाके दे सके हे. ईगोके स्प्लिट् होवेको भी बड़ो पॉज़िटिव् रोल् भी हो सके हे, आर्टिस्टिक् रोल् भी हो सके हे; साईकोथेरापिक् रोल भी हो सके हे. या तरहसु कितनी सारी अपने अहंकारमें फॅसिलिटीस् अवेलेबल् हें, जब अपन देखें तो अपनेकु चमत्कार लगे के सचमुचमें अहंकार ब्रह्मको खूबसूरत पहेलु हे. माने कितनी मल्टीपल् पॉसिबिलिटीस् अपनेकु अवेलेबल् कराई गईं हें, या बातकु अपन् देखें तो अपनेकु आश्चर्य होवे.

बहोत अच्छो एक आर्टिटिस्ट हे वाने एक बड़ी अच्छी गज़ल गाई हे. देखो ईगो स्प्लिट्की बात मैं बता रह्यो हूं. वो कहे हे "**उसकी गलीमें फिर मुझे एक बार ले चलो. मजबूर करके मुझको मेरे यार ले चलो. मुझको निकाल करके शायद वो पछता रहा होगा. शायद वो मेरी यादमें चश्मेनम होगा. उसने भी तो किया था इकरार! उसकी गलीमें मुझको मेरे यार एक बार ले चलो.**" अब देखो ईगो हर्ट हो गयो हे. निकाल्यो गयो हे याकु कह्यो गयो हे "गेट आउट". गेट आउट होवेके बाद भी पाछे एक ईगो कायम हे. "**मुझको निकाल करके शायद पछता रहा होगा वो.**" अरे काहेकु पछतायेगो जब निकाल दियो तोकु! एक ईगो पाछो

वो भी कायम हे. "**उसने भी तो किया था इकरार, ले चलो, मजबूर करके मेरे यार मुझको ले चलो.**" मैं जाऊंगो तो शायद फिर निकाल देगो, तुम टांगाटोली करके ले जाओ. "**उसकी गलीमें मुझको एक बार ले चलो.**" ये बात ईगो स्प्लिट्की हे. ईगो स्प्लिट्की कहानी पोयट्रीमें कितनी खूबसूरत लग रही हे के नहीं लग रही हे! अपन् ईगो स्प्लिट्कु हर बखत रोग समझें हें, ऐसो नहीं हे, ईगोको स्प्लिट्र होनो हेल्दी भी हो सके हे और साईकोलोजिकल डिज़ीस् भी हो सके हे.

(ईगोस्प्लिटिंग्की भक्त्युपयोगिता)

भक्तिमें सेवामें भी अपन् ईगोकु स्प्लिट् करे हें. एक बाजु अपन् सोचे हें यशोदाजीके भावसु अपन् ठाकुरजीकु जगा रहे हें. एक बाजु अपन् सोच रहे हें के अपन् गोपीजनन्के भावसु दर्शन् करवे आये हें. एक बाजु अपन् केह रहे हें के नहीं नहीं मंगलभोग तो अपन् वो ही धरेंगे जो सामग्री हमारे पास होयगी. दूध और मक्खन और घी कहांसु लायेंगे? हमारे पास सूको मेवा होयगो तो सूको मेवा धरेंगे. तर मेवा होयगो तो तर मेवा धरेंगे. ईगो स्प्लिट् भयो के नहीं भयो तुम्हारो? ईगोस्प्लिटिंगको सेवामें ये कितनो खूबसूरत रोल् हे! जो महाप्रभुजीने बतायो हे "**यद् यद् इष्टतमं लोके यच्चातिप्रियम् आत्मनः येन स्यान् निर्वृतिः चित्ते तद् कृष्णे साधयेत् ध्रुवम्.**" (त.दी.नि.२।२३६) एक बाजु कह रहे हें "**सर्वदा सर्वभावेन् भजनीयो व्रजाधिपः.**" (चतु.१). व्रजाधिपको भजन् करनो हे, भजन कौनसी वस्तुसु करनो हे, जो तुमकु पसन्द लगे वासु भजन करनो हे. जो तुमने अपनो लॉफुली, एथिकली कमायो हे वासु भजन करनो हे. भई! व्रजाधिपकु तुम्हारे एथिकस् और तुम्हारे लॉ सु क्या मतलब? ये सारो फन्क्शन् सेवाको हे. यदि अपन् अपनी ईगोकु स्प्लिट् नहीं करेंगे पोयटिकली, इमोशनली, के अपन् व्रजभक्त भी हें, एट द सेम् टाईम् अपन् व्रजभक्त नहीं भी हें; 'मैं' मैं भी हूं और व्रजभक्त

भी हूं. 'मैं' मैं हूं और यशोदाजी हूं. 'मैं' मैं हूं और ठाकुरजीको सखा भी हूं. ऐसो सखा भी नहीं हूं के जामें 'मैं' श्याम मनोहर गोस्वामी मिट जातो होऊं, श्याम मनोहर गोस्वामी रेहते भये सखा हूं. ठाकुरजीकी मां यशोदा हूं. ऐसी यशोदाजी भी नहीं हूं के मोकु दाढ़ी मूंछ मुड़ाके और घूंघट काढ़के यशोदाजी बननो पड़े. ये दाढ़ी मूंछ रखे भये भी मैं यशोदाजीकी तरह ठाकुरजीकु जगा सकूं हूं. या तरीकेको ईगो स्प्लिट् होनो पोयटिकल भी हो सके हे, स्पिरिच्युअल् भी हो सके हे, ये सब फॅसिलिटी अपनेकु कौन प्रोवाईड करेगो यदि ईगो नहीं होयगो तो? कहांसु आयेंगी ये फॅसिलिटी जो अपनेकु ईगो प्रोवाईड नहीं करेगो तो? या तरीकेकी एक बात नहीं, देखोगे तो सेवाकी डेप्थमें (भावनामें) कितनो ईगोस्प्लिट्को उपयोग हे. सदुपयोग दुरुपयोगतो हर चीजको हो सके हे. ऐसो नहीं हे के ईगोस्प्लिटिंगको दुरुपयोग नहीं हो सके. मैं बहोत अच्छी तरहसु जानूं हूं, मैं तो याको बहोत अच्छो शिकार हूं, कितने लोगनूने शपथ खाई हती के अपन् देवद्रव्यको प्रसाद नहीं खायेंगे, व्यावसायिक हवेलीके दर्शन करवे नहीं जायेंगे, व्यावसायिक भागवतसप्ताह नहीं सुनेंगे पर सब गयो!!! "**बजार वच्चे वगाडियो सासरिया नो ढोल.....**" तो सब भाग गये. क्यों जो ईगो स्प्लिट् हे. तो मैं या बातमें वाको आनन्द लऊं के भगवान्की या बातमें कैसी लीला हे के एक बाजु महाप्रभुजीकी कंठी पेहन रहे हें और एक बाजु महाप्रभुजीकी ही बेक्स्टैबिंग् कर रहे हे! ये भी लीला हे. या रहस्यकु अपनेकु समझमें तो आनो चहिये के ईगोस्प्लिट्को पॉज़िटिव् रोल् भी हो सके हे और ईगोस्प्लिट्को नेगेटिव् रोल भी हो सके हे. ईगो स्प्लिटिंग् साइकोलोजिकल् डिसीज़् भी हो सके हे. ईगोको स्प्लिट् होनो स्पिरिच्युअलिटीकी हाईट भी हो सके हे. या बातकु अपनेकु समझनो चहिये. ये सारी फॅसिलिटी अपनेकु कोई प्रोवाईड करतो होय तो वो अपनो अहंकार करे हे. याकु अपन् सोचें ना तो अपन् चकित हो जायें के सचमुचमें याको "**यम् अनन्तं प्रचक्षते.**" ये अहंकार मूलमें अनन्त हे यासू कितनो

यामें भर्यो भयो हे! क्या क्या नहीं भर्यो हे! जो कछु हे सो या अपने अहंकारमें भर्यो भयो हे.

प्रश्न : (अहंकार **सहस्रशिरसं देवम्** कैसे हे?)

उत्तर : मूलमें देखो बात ऐसी हे के जा बखत अपने क्रियाकी फॅकल्टी माने अपने बिहेवियरकी फॅकल्टी, अपने अन्डरस्टेन्डिंगकी फॅकल्टी, अपने सॅन्टिमेंट्की फॅकल्टी, कॉरडिनेट् नहीं हो पाती होंय, तो एक टेन्शन् क्रियेट होवे हे. क्योंके जो अपन् समझ रहे हें, वो कर नहीं पा रहे हें, जो कर पा रहे हें वाकु अपन् इमोशनली एन्टरटेन् नहीं कर पा रहे हें. ये जो टेन्शन् क्रियेट होवे हे वाकु झेलेगो कौन? यदि अहं स्प्लिट् नहीं होवे तो. एक बात समझो के इन्टरनली अपने भीतर बुद्धि हे. बुद्धि जितनी भी यामें भीतर जायगी ना! उतनो हल्ला मचायेगी के लेक् ऑफ ट्रांसपेरेन्सी क्यों हे? जो तुम सोच रहे हो सो कर नहीं रहे हो. जो कर रहे हो वा तरीकेको तुम्हारे भीतर सेन्टीमेंट् नहीं हे. तो बुद्धि या विरोधाभासकु झेल नहीं सके हे. क्योंके बुद्धिकी जो मेथड् हे काम करवेकी वो ऑलमोस्ट् मेथेमेटिकल् हे. मेथेमेटिकल् कौनसे अर्थमें? के वन् प्लस् वन् इज़ ईक्वल् टु टू. बुद्धि या तरहसु काम करे हे. अब एक मुर्गी और एक मुर्गा टू होंयगे के कितने सारे मुर्गा हो जायेंगे? बहोत सारे मुर्गा हो जायेंगे. तो बुद्धि वा पचड़ामें पड़वे जाय तो पागल हो जायगी. उतनो कॅल्कुलेशन् करवेके लिये न तो बुद्धिके पास टाईम हे और न ही बुद्धिकु इन्टरेस्ट् हे. बुद्धिने अपने नोर्म्स् बना रखे हें के वन् प्लस् वन् इज़ ईक्वल टु टू और बुद्धि याही तरहसु काम करे. कई फिनोमिना ऐसे होंय आपसमें एक दूसरेकु कॅन्सल् करवेवाले के वन् प्लस् वन् करते ही टू होवेके बजाय वो वन् भी कॅन्सल् हो जाय. वैसे फायर और वॉटर; वन् प्लस् वन् टू नहीं हो जायगो वन् भी नहिं रह जायगो. ऐसे कई फिनोमिना हे कॅमिस्ट्रीमें भी, फिज़िक्स्में भी जहां वन् प्लस् वन् टू होवेके बजाय

वन् ही रह जाय.

अभी रीसेन्टली तुमने अखबारमें बहोत इन्टरेस्टिंग् आयो हे यदि पढ़यो होय तो के अपनी गेलेक्सी जो हे वो ऐन्ड्रोमीडा गेलेक्सीकु खानो चाह रही हे. कछु वर्षनूके बाद ऐन्ड्रोमीडा गेलेक्सी और अपनी गेलेक्सी दोनों क्लब् हो जायेंगी. जा दिन क्लब् हो जायेंगी वा दिन दो नहीं रहेगी एक हो जायगी. तो वन् प्लस् वन् = टू (१ + १ = २) जरूरी तो नहीं हे ना! यदि मेथेमेटिक्स् इन पचड़ानूमें पड़ेगी तो न तो एडीशन् हो सकेगो, न सबट्रेक्शन् हो सकेगो, न मल्टीप्लिकेशन् हो सकेगो और न डिवीज़न ही हो सकेगो. पर होवे के नहीं होवे पर अपनूकु वन् प्लस् वनूकु टू ही मानके चलनो पड़ेगो. इन् रियलटी वन् प्लस् वन् टू भी हो सके हे और ज़ीरो भी हो सके हे. और इन् रियलटी वन् प्लस् वन् कॅन बी थाउजन्ड ऑलसो. पर वा लफड़ामें मेथेमेटिक्स् नहीं पड़नो चाहे हे. ऐसे ही या लफड़ामें बुद्धि नहीं पड़नो चाहे हे. जा बखत अपने अलग अलग जो मोटिवेशन् हें अन्डरस्टेन्डिंगके, इमोशनूके, बिहेवियरके एक दूसरेसु कोऑरडिनेट् नहीं होते होंय तो बुद्धि क्या करे के वा विषयकु सोचनो बंद कर दे.

(जाके नामको मार्ग वाके मार्गकी विकृति पसंद पर उनके आदेश पसंद नहीं!!)

पुष्टिमार्गमें बहोत सारे वैष्णव यों कहें के सिद्धान्त नहीं सुनेंगे. सुनेंगे तो पाप लगेगो. क्यों पाप लगेगो? क्योंके सुनोगे तो तुमकु लगेगो के तुम गलत कर रहे हो, नहीं सुनोगे तो "जावा दो नी नौका किनारे किनारे." सुनेंगे तो तकलीफ होयगी ना! अब ये क्या हे के बुद्धिको एक विड्रोअल् सिस्टम् हे. अब देखो! सिद्धान्त कौनके हें? महाप्रभुजीके. पुष्टिमार्ग कौनको हे? महाप्रभुजीको. पर महाप्रभुजीके नामपे पुष्टिमार्गमें पैदा भई विकृति अपनेकु पसन्द आ रही हें. खुद महाप्रभुजीके कलमसु लिखे गये महाप्रभुजीके आदेश अपनेकु पेलेटेबल्

नहीं रेह गये. अब समझ कछु रहे हें, चाह कछु रहे हें, कर कछु रहे हें. या बातकु सोचवेके लिये बुद्धि तो तैयार होवे नहीं हे, नहीं सोचे तो बुद्धि क्या करे? उनकी बुद्धि यों समझा दे पड़ना ही नहीं सिद्धान्तके झमेलेमें. नहीं पड़ो तो ही महासुख हे. अचानक महासुख कैसे हो गयो! ये एग्ज़ेक्टली वोही फिनोमिना हे जैसे बच्चाकु कारमें ले जाओ; जिद करके बच्चा आवे, अपन् नहीं ले जावें तो रोवे; अब जब जिद करके आयो तो बैठ ना! बच्चा जग नहीं सके क्योंके बच्चाकी आंखें उतनो फास्ट सीन् जो जा रहे होय पीछे, उतने फास्ट जाते सीन्कु झेलवेके लिये वाकी कोमल आखें तैयार नहीं होवें. टायर्ड हो जायें. तो फिर क्या करें? सबसु अच्छो एक ही सॉल्युशन् हे के आंख मींच लो. खुली होय आंख तो थकान आवे ना, मीच लो बस. सो जाय बच्चा. थोड़ी बहोत देर बहोत उमंगसु देखे यहां वहां, पर सीन इतनो फास्ट जावे के बच्चाकी कोमल आंख झेल नहीं सके वाकु तो थक जाय और फिर बच्चा सो जाय. वो क्या हे के दोनों तरहको बिहेवियर हे आंखको. क्युरिओसिटी भी हे जो बाहर जाके देखनो हे और वो क्युरिओसिटी जा तरहसु फ्लड्की तरहसु जावे सामने, वाकु झेलवेकी शक्ति नहीं हे. तो फिर बॅस्ट सॉल्युशन् ये हे के आंख बन्द कर लो. ऐसे अपन् प्रवचनमें कान बन्द कर लें. ऐसे अपन् कई चीजें बन्द कर लें. ऐसे ही बुद्धि भी बन्द हो जाय. जब अपनी शक्ति नहीं रह जाय तो बुद्धि बन्द हो जाय.

(इमोशनल् और इन्टेलेक्च्युअल ईगो)

बहोत बुद्धि चलाओ तो इमोशन् अपनो नम हो जाय. मैंने एक ऐसे बहोत अच्छे ओथरकु पढ़यो. अन्डरस्टेन्डिंगको और इमोशन्को रेतीके घड़ियालके जैसो खाता हे. अन्डरस्टेन्डिंगको ऊपर रह्यो तो वो इमोशनमें नीचे घुस जायगो. घड़ियालमें भरी भई रेती स्थिर नहीं रहे. क्योंके अपने भीतर दोनों फॅकल्टी काम कर रही हें, इमोशनकी

भी और अन्डरस्टेन्डिंगकी भी, अब वो एक दूसरेके साथ कोऑरडिनेट् होवें तो स्प्लिट् होवेकी जरूरत ही नहीं होवे. जब कोऑरडिनेट् नहीं हो रही हें तो या टेन्शन्कु झेलेगो कौन? अहम् अपनेकु असिस्ट करे के ऑलराईट. अहं कहे के मैं तुम्हारेमें दो तरहके अहं पैदा कर दऊं. एक इमोशनल् ईगो और एक इन्टलेक्चुअल् ईगो. सब लोग यों सोचे के इन्टलेक्चुअली बात सच्ची हे पर इमोशनली हमकु सूट नहीं होवे. **"उसकी गलीमें मुझको फिर एक बार ले चलो."** इन्टलेक्चुअली समझ रह्यो हे कि एक बार फिर जावेसु जूता ही पड़नेवाले हें पर वो इमोशनल् ईगो पाछे केह रह्यो हे **"उसकी गलीमें मुझको फिर एक बार ले चलो. मजबूर करके मुझको मेरे यार ले चलो."** अरे भई! जब निकाल दियो तो फिर जावेकी क्या जरूरत हे? तो कहे "नहीं नहीं ले चलो", वो इमोशनल ईगो कछु और बात केह रह्यो हे और इन्टलेक्चुअल् ईगो कछु दूसरी बात कह रह्यो हे. मैं खुद जाऊंगो तो शायद फिर जूता मारे! तो कहे के मैं अपने आप नहीं जाऊंगो पर तुम मोकु टांगाटोली करके ले जाओ. **"मजबूर करके मुझको एक बार फिर ले चलो. उसकी गलीमें मुझको एक बार ले चलो."** ये ईगो स्प्लिट् होवेको उदाहरण हे. जो टेन्शन् अपन् नहीं झेल सकें हें वा एक चीजकु अपनो ईगो तुरत स्विच् ऑफ कर दे हे. स्विच् ऑफ करते ही वो ईगो टेन्शन् झेल ले हे. जैसे शोक्-एब्सोर्वर होवे ना रेलमें, देख्यो इंजिनमें, वो स्टेशनपे भी होवें हें, अब सीधी ट्रेन टकरावे तो ट्रेन टूटेगी ना! वो शोक्-एब्सोर्वर एअर-बेग आ रही हें कारमें, वो मूलमें क्या काम करे? जब कार टकरावे जावे तो वो फूलके बीचमें आ जावे तो वो शोक्कु झेल ले और तुम्हारे हाड़ पसलियें टूटें नहीं. ऐसे ही वो ट्रेनके शोक्-ऐब्सोर्वर झटकाकु झेल लें और तुमकु वो शोक् झेलनो नहीं पड़े. वो अपनो अहं सब झेले हे अपने कारण. अहंकी सर्विस् देखो कितनी अच्छी सर्विस् हे. जा चीजकु तुम नहीं झेल पाओ, अहं तुरत स्प्लिट् होके वाकु झेल

ले के तुम नहीं झेल पा रहे हो, तुम्हारी बुद्धि नहीं झेल पा रही हे कोई कॉन्ट्राडिक्शन्कु तो मैं अपने आपमें स्प्लिट् हो जाऊंगो दो तरहसु; एक इमोशनल् ईगो अलग हो जायगो और एक इन्टलेक्चुअल् ईगो अलग हो जायगो, वो अलग होके झेल लेयगो.

अब वो बात अपने सोशयल् बिहेवियरमें भी हे, स्पिरिच्युअल् बिहेवियरमें भी हे, सब तरहके बिहेवियरन्में हे. अपने ग्रोथ्को जो ब्लुप्रिन्ट हे वामें ये बात रही भई हे के जा बखत तुम झेल नहीं सको हो तब ऐसो बिहेवियर् कर सको. एक बहोत अच्छी बात बताऊं. अपन्ने ईगोकु ये सामर्थ्य प्रोवाईड् करी हे पर जो सबह्युमन स्पिसीस् हें उनमें बहोत अच्छी तरीकेके फॅसिलिटी नेचरने प्रोवाईड् करी हें के वाके सामने कोई भी एक डेन्जर पैदा होवे तो अपनो कोई एकाध अंग तोड़के तुमकु खावेकु दे दे और खुद भग जाय. वाकु खुदकु ये फॅसिलिटी अवेलेबल हे. वाकु पता हे के तुम खाओगे. अब झांसा कैसे दे? तो वाकु अपनो हाथ तोड़नो आवे, पैर तोड़नो आवे, फटाकसु तुमकु तोड़के दे दे और खुद भग जाये. वाके पाछे उग और जाये दूसरो हाथ क्योंके बचनो हे. और यदि कोई मेंढककु खावे आयो तो क्योंके कमजोर भी हें तो नहीं भी बच सकें तो मेंढककु नेचरने खुद ये फॅसिलिटी प्रोवाईड् करी के जैसे ही कोई अटेक वापे होवे तो तुमकु ललचावेके लिये अपनो कोई अंग तोड़के दे दे, दूसरो जानवर खाते रहे तबतक वो भग जाय. अपनेकु ये फॅसिलिटी प्रोवाईडेड् नहीं हे. अपनो कोई दूसरो तोड़े हाथ तो टूटे, अपनी इच्छासु हाथ नहीं तोड़ सकें. जैसे इच्छासु बाल तोड़ सकें, नख काट सकें पर हाथ नहीं तोड़ सकें इच्छासु. अगर तोड़ेंगे तो पता नहीं क्या क्या होयगो? तो मैंढककु बहोत रेडीमेड् फॅसीलिटी अवेलेबल् हे के कोई आयो और वाने देख्यो के भाग नहीं पा रह्यो हूं तो तुरत वो अपनो एकआध हाथ पैर तोड़के वाकु खावेकु दे दे और खुद भाग जाय. अक्सर

तुमने देख्यो होयगो तितलीके पीछेकी तरफ आंख होवे, वासु चिड़ियाकु भ्रान्ति हो जाय के आंख यहां हे पर वहां कछु होवे ही नहीं पंखके अलावा. वापे चोंच मार दे तो तितली उड़ जाय. वो या लिये वा तरीकेको कॅमोफ्लाज जो पैदा करे हे, वो आंख पीछे होय तो तुरत चिड़िया पकड़वे आवे तो वहां चौंच मारे पर वहां कछु हे ही नहीं, तुम खाओ पंखकु तो खाओ और पाछे वो भग जाय उड़के. उतनोसो टुकड़ा तुम्हारे मौंहमें आ जाय. छिपकली अपनी पूंछ भी या लिये तोड़ती होवे हे. नेचरने या तरीकेकी फॅसिलिटी प्रोवाईड् करी हें, उनकु बोडीमें. अपनी बोडी ज्यादा कॉम्प्लेक्स् काम करे हे करके इतनी कॉम्प्लैक्सिटीमें इतनी तोड़ फोड़ माफिक नहीं आयगी करके अपने ईगोको वो पार्ट दे दियो के तू सारे शोक्कु एब्सौर्व् करतो रह. बॉडी फिर अपनो काम करती रहेगी.

(ईगो और भावना)

तो ईगो उन सारे शोक्सकु ऐब्सोर्व् करे हे. क्योंके सचमुचमें अपन् देखें या सवालके कॉन्टेक्स्ट्में के ब्रजभक्त अपने गुरु हें. तो गुरु क्यों हें? क्योंके अपनेमें वो लायकात् नहीं हे. दूसरी बाजु अपन्कु ऐसो प्रिटेन्ड् करनो के अपन् ब्रजभक्तनके भावनसु सेवा कर रहे हें. तो तुम एज़्युम् कर रहे हो के तुममें वो लायकात हे. अब लायकात हे के नहीं हे ये अगर बुद्धिकु पूछवे जाओगे तो बुद्धिको तो दीवाला निकल जायगो ना! ईगो तुमकु तुरत अवेलेबल् हे के भावनाकी दृष्टिसु अपन् ब्रजके हें और समझकी दृष्टिसु अपन् 'अपन्' हें. तो अपनो भावनात्मक ईगो तुरत स्प्लिट् हो जाय वा मेंढककी तरह; भावनाकी दृष्टिसु अपन् ब्रजभक्त हें पर वैसे तो अपन् अपन् हें ही. ठाकुरजीकु जगानो होय तो यशोदाजी हें. खेलनो होय तो कोई गोपबालक हें. कभी नन्दरायजी हें कभी कछु हें कभी कछु हें. तो भावनाके लेवलपे कहां स्प्लिट् होयगो आके? या कॉन्ट्राडिक्शन्कु

या पॅराडोक्सूकु रिज़ोल्व कैसे करनो? तो अपने ईगोमें बाई डिफॉल्ट वो फॅसिलिटी प्रोवाईड्ड करी गई हे के ऑलराईट, तुम दो तरहको अपनो ईगो बना लो; भावनाकी दृष्टिसु तुम अपने आपकु यों सोचो के तुम ब्रजभक्त हो और समझकी दृष्टिसु तुम समझो के तुम 'तुम' हो. ब्रजभक्त तुम्हारे गुरु हें. तुम उनकी कॉपी करवेवाले, उनको अनुकरण करवेवाले, उनकी भावनासु ठाकुरजीकी सेवा करवेवाले एक भक्त हो. माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ़ स्नेह अपनी भक्ति हे. ब्रजभक्तनूकु तो माहात्म्यज्ञान हतो नहीं, खाली सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेह हतो. उनकी शुद्धपुष्टि हती अपनी बढ़ बढ़के कितनी होयगी! पुष्टि-पुष्टि तक वो भी माहात्म्यज्ञानपूर्वक तो अपन् उनको कॉपी कैसे कर सकेंगे? उनकु वो फॅसिलिटी अवेलेबल् हती शुद्धप्रेम होवेके कारण. अपनेकु माहात्म्यज्ञान होवेके कारण हर बखत स्पीड ब्रेकर आयगो. अब जब वो स्पीड ब्रेकर आवे वा बखत गाड़ी जम्प् नहीं करे, उछल नहीं जाय उतनी स्पीड स्लो होनी चहिये और जब अपन् स्पीड ब्रेकरकु पास कर लें तो पाछी वा स्पीड्कु बढ़ाती आनी चहिये. तो वा माहात्म्यज्ञानके स्पीड ब्रेकरसु अपने आपकु हर बखत ये रियलाईज़् करवानो के यहां डेन्जर ज़ोन् हे यहां गाड़ी स्लो चलाओ, फिर जब वो डेन्जर ज़ोन निकल जाय तो गाड़ीकी स्पीडकु बढ़ाओ, वा तरहसु वो दो फॅसिलिटी रोडपे प्रोवाईड्ड होवें के नहीं होवें हें? स्पीड ब्रेकर क्यों आवे? जब बेलगाम तुम्हारी गाड़ी दौड़वे लग गई तो कहीं वो दूसरेकु न मार दे या लिये. तो एक स्पीडब्रेकर रख दियो जाय के सिटीमें घुस रहे हो या स्कूलके पाससु गुजर रहे हो तो एक स्पीडब्रेकर आ जाय तो ऑटोमेटिकली तुम्हारी गाड़ी स्लो हो जायगी तो तुम वापे कन्ट्रोल् कर सकोगे. ऐसे माहात्म्यज्ञानके स्पीडब्रेकर रखे गये हें के सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेहकी गाड़ी बेलगाम दोड़े तो तुम वाकु रोक सको, और स्पीड ब्रेकर ऐसो नहीं होवे कभी भीतकी तरह तुम्हें ब्लाइंडली तुमकु रोकदे के आगे जावेको रोड ही नहीं हे. ऐसे रोडक्लोस्ड्ड नहीं हे माहात्म्यज्ञान खाली स्पीडब्रेकरको काम

करे, रोडकु बन्ध करवेको काम नहीं करे ये फॅसेलिटि है. माहात्म्यज्ञान वाही तरहकी स्प्लिट् करवेकी फेसिलिटी हे. सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेह अपनो इमोशन् हे. वामें अपनूकु दो तरहके ईगो मेन्टेन् करने पड़ेंगें ना! ये स्पिरिच्युआलीटी फेसिलिटी अपनी झेलेगो कौन? कौन झेलेगो आखिर ईगो नहीं झेलेगो तो? या तरहसु याको रोल हे. तो मैं समझूं के तेंने अच्छो सवाल कियो. खूब खूब बधाई.

(बौद्ध शांकर और वाल्लभ मतानुसारी ज्ञाता ध्याता कर्ता भोक्ता)

प्रश्न : बुद्ध और शंकराचार्यजी महाप्रभुजीसु कैसे अलग पड़े फिलोसिफिकली, उदाहरणसु तो समझ गयो पर फिलोसिफिकली कैसे अलग पड़े वो क्लीयर नहीं भयो.

उत्तर : क्योंके भगवान् बुद्ध खुद और उनके फिलोसिफीसु बायस्ड जो हिन्दुस्तानको पॉप्युलेशन् हतो वा बखत, वाकु अपीलिंग वेमें वेदान्तकु कन्विन्सिंग् बनानो ये काम शंकराचार्यजीने कियो, वा एप्रोचके कारण शंकराचार्यजीने और बुद्ध भगवान् दोनोंनूने अपनी आखी जो थॉट् प्रोसेस् हे, वाकु इतनी रिजिड बनाई, मेथेमेटिकली रिजिड के वन् इज़ वन्, वन् केन् नॉट बी टू. टू इज़ टू, टू केन् नॉट बी वन्. या तरीकेकी रिजिड मेथेमेटिकली बनाई करके वो एक ऐसी फिलोसिफी दे सके के जो हर बखत बुद्धिकु अपील् करे सच्चाईमें वो होयके नहीं होय. जाको अपनो थोड़ो भी इन्टलेक्चुअल् ईगो हे वाकु तुरत वो अपीलिंग लगे. वाको कारण क्या? के दुनियां ऐसी होयके नहीं होय, पर अपनूकु बुद्धिमान होवेको जो अभिमान होय, तो बुद्ध भगवान् सचमुचमें अपनूकु काफी अपीलिंग लगेगो, भले दुनियां वैसी होयके नहीं. जैसे सामान्य बात कहूं के **'सर्वम् दुःखम्.''** सब दुःख हे कौन दुनियां मान रही हे? मान रहे हे कोई? बुद्ध भगवान्के खुदके चेलानूने नहीं मान्यो. जबतक बुद्ध भगवान् बिराजे ना, तबतक चेलायें बड़े सुखी हते. जा बखत बुद्ध भगवान्ने

देह छोड़ी तो सब चेलायें रोवे लग गये. तो बुद्ध भगवान्ने पूछी ''तुम रो क्यों रहे हो?'' तब चेलान्ने कही ''आप छोड़के जा रहे हो वो कैसे पोसायगो? दुनियांमें दुःख हे तो वामें ये और एक एडीशनल् दुःख हे.'' तो कहें ''वो दुःख अलग हे और ये दुःख अलग हे.'' मतलब बात तो बदल गई ना! उनके चेलान्कु वो बात माफिक नहीं आई. अपनी उपनिषद्की जो विचारधारा हती वो मेथेमेटिकली कम्पार्टमेन्टलाईज्ड विचारधारा नहीं हती पर **''सर्वं खलु इदं ब्रह्म''** की विचार धारा हती. राईट फ्रॉम् ऋग्वेद. जैसे ऋग्वेद यों कहे हे ''वरुण कहो, के मातरिश्वा कहो, के यम कहो, ये एक ही तो देव हे.'' अब इतने सारे देव एक देव हें? तो इतने सारे देव क्यों हें? इतने सारे देव हें तो एक कैसे हो सकें हें? तो अपने वेदकु याकी परवाह नहीं हे क्योंके वन् इज़ ईक्वल् टु इनफाइनाईट मानके वेद चल रह्यो हे. शंकराचार्यजीके यहां वन् इज़ नॉट् ईक्वल् टु टू. तो मेथेमेटिकल् कम्पार्टमेंन्टलाईजेशन्के कारण उनकु वो माफिक नहीं आवे. क्योंके बुद्ध भगवान्कु उपनिषद्के या बायस्कु अटेक करनो हतो तो उनने सारी फिलोसोफी वा तरहसु घड़ी के जो एकदम रिजिड् इन्टलेक्चुअल् हे. अब जाको थोड़ो भी इन्टलेक्चुअल् ईगो हे वाकु वो तुरत पसन्द आयगी. पर जो साईन्टिफक् या स्पिरिच्युअलस्टिक् एप्रोच् वालो हे वाकु तो लगेगोके यामें तो गड़बड़ हे. कैसे ये एक्सेप्टेबल् हो सके, दुनियां तो ऐसी हे ही नहीं. सो कौन **''सर्वम् दुःखम्''** मानेगो! एक सीधी सी बात बताऊं, **''सर्वं स्वलक्षणम्''** कोई भी चीजके कोई भी दूसरी चीजके साथ कॉमन् फीचर नहीं हें. बिना बुद्ध भगवान्के कौन या बातकु मानेगो? दो जुड़वां बच्चान्के कॉमन् फीचर नहीं होवें. दो गाय कॉमन् फीचरकी नहीं होवें. अरे भई! सौराष्ट्रकी गाय और जरसी गाय तुम देखके पेहचान सको के नहीं के ये सौराष्ट्रकी गाय हे, ये जरसी गाय हे. कॉमन् फीचर बिना तुम कैसे पेहचान गये? अब पेहचान जायें तो बुद्ध भगवान् कहें ''ये तुम्हारी वासना हे.'' अरे वासना होय के कुछ और होय,

जो कुछ भी होय कॉमन्फीचर तो हे के नहीं हे. उनको सिद्धान्त हे **''सर्वं स्वलक्षणम्''** जो चीज जैसी हे वैसी हे वो अपने फीचरकु कोई भी दूसरेके साथ शेयर नहीं करे हे. Every Individual phenomenon has a absolute individuality. No common feature. अब मेथेमेटिक्स् तो याही तरहसु चलेगो के हर फिगरकी अपनी एक इन्डिविज्युआलिटी हे, तभी मेथेमेटिक्स् चल सके. वाकी वोही इन्डिविज्युआलिटी तुमने छीन ली वा फिगरकी तो गड़बड़ हो जायगी ना. तुम कॅलक्युलेशन् ही नहीं कर सकोगे. ये तुम्हारो कॅल्क्युलेटर काम करनो बन्द कर देगो. रिक्वायरमेन्ट् हे बुद्धिकी के जा तरहसु कोईकु डिफाइन् कर दियो तो बस वो फाइनल्. But the problem is that you have defined it, but does the thing follow it? Not necessarily. तुम कोई चीजकु डिफाइन् कर दो जैसे सोक्रेटीस् ने मनुष्यकु डिफाइन् कर दियो के Man is a rational animal. मनुष्यकु दूसरे जानवरन्सु छुट्टो कौन समझावे? तो रेशनेलिटी. पर मनुष्यमें कितने परसेन्ट आदमी रेशनल् हें और ईर्रेशनल् कितने हें? माने सर्वे करेंगे ना तो ९० परसेन्ट् मनुष्य ईर्रेशनल् निकलेगो, हार्डली १० परसेन्ट् रेशनल् निकलेगो. वामें भी पाछे कुछ लोचा निकलेंगे. तो वो रेशनल् या लिये होयगो के वासु कुछ ईर्रेशनल् डिज़ायर्स् फुलफिल् होती होंयगी. कोई न कोई ईर्रेशनल् डिज़ायर या ईर्रेशनल् सर्कम्स्टान्सेस् वाकी सेटिस्फाई हो रही हे, वा रेशनलिटीके कारण वो रेशनल् हे. वो यालिये रेशनल् नहीं हे के वो बाई डिफोल्ट रेशनल् हे.

जैसे स्मग्लरकु झूठो माल स्पलाई करनो नहीं पोसावे, कारण क्या? यदि स्मग्लर खोटो माल स्पलाई करेगो तो वाको धन्धा नहीं चलेगो. मटकाको पेमेन्ट इतनो फास्ट् होवे बिना लिखा पढ़तके, वाको कारण क्या? अगर उतनो फास्ट् पेमेन्ट नहीं करो तो धन्धा चल नहीं सके. वालिये वो मोरल् हे. वो धन्धा नहीं चले यालिये वो मोरल् हे. धन्धा नहीं चले यालिये वो मोरल् हे धन्धा खोलके

दुकानपे रसीद फाड़ रहे हें, वो कुछ न कुछ बदमाशी किये बिना नहीं माने. वाको कारण क्या? क्योंके उनकु पता हे के ये बदमाशी करवेसु धन्धाको कोई नुकसान होवेवालो नहीं हे बल्कि प्रोफिट् ही होयगी. जितने भी मंजनके डिब्बा, जितने भी तेलके डिब्बा, उनमें देखो जानकरके डिब्बा बड़ो बनावें, माल खाली रखें. भरें नहीं पूरो. साईज़ बड़ी दिखा देंगे तुमकु, अन्दरसु वाकु देखो तो वाकी केपेसीटि ज्यादा होवे और चीट करें वामें. हर व्यवस्थित दुकान जो चला रह्यो हे वोही आदमी चीट करे. क्योंके वाकु पोसावे के एक बखत तुमने वापर लियो तो बस तुम फंस गये. अब वामें सब झूठ चलेगो. पर स्मग्लरकु ये बात पोसावे नहीं. यालिये स्मग्लर सच्चो धन्धा करे. यालिये मटकावालो सच्चो धन्धा करे. तो वो जो रेशनल् हे वो भी यालिये रेशनल् हे के वाकु ईर्रेशनलीटि पोसा नहीं रही हे. ईर्रेशनलीटि पोसावे तो वोभी ईर्रेशनल् ही निकलेगो. **''कैस् तस्वीरके परदेमें भी उरियां निकला शौख हर रंग रकीबे सरो सामां निकला.''** तो वो तस्वीरके परदेमें भी उरियां निकलेगो पर क्या हे के डिफाइन् कर दियो हे के ''मॅन इज़् रेशनल् एनीमल्'' तो सबकु भ्रमणा हो गई के जानवर ईर्रेशनल् हें. अरे! जानवर बिचारो बहोत रेशनल् हे. मनुष्य जैसो ईर्रेशनल् नहीं हे. ये सारी डिफीकल्टीयें हें. पर इन सबनूकु झेले कौन हे? या बातकु समझो. इन सारी विविधतानूकु, ये सारी **''एकोऽहं बहुस्याम्''** कु झेलवेवालो यदि कोई हे, तो वो अपनो ईगो हे. ब्रह्म यदि विरुद्धधर्माश्रिय हे तो वाने कोई शेर नहीं मार्यो क्योंके ब्रह्म ही तो सब कछु बन्यो हे. वो तो विरुद्धधर्माश्रिय होयगो ही. अपन् तो सब कुछ बन नहीं सकें हें, अपनी लिमिटेशन् हे, वामें यदि अपनो अहंकार विरुद्धधर्माश्रिय प्रकट करे तो सचमुचमें अपनूने शेर मार्यो ना. तो अपने लिये वो एचीवमेन्ट् हे. ब्रह्मके लिये तो साधारण फिनोमिना हे. कॉमन् फिनोमिना हे वामें क्या हे? विरुद्धधर्माश्रिय होवेमें क्या बड़ी बात हे! ब्रह्म विरुद्धधर्माश्रियके अलावा और कुछ हो ही नहीं सके हे. अपनूकु विरुद्धधर्माश्रिय होवेमें

कोई न कोई मेंढककी तरह अपनी टांग हाथ तोड़ने पड़ेंगे. तो वाके लिये फेसिलिटी प्रोवाईड कर दी के तुम दो ईगोमेंसु एककु तोड़ दो और दूसरीकु सम्भाल लो. इन्टलेक्चुअल् ईगो तोड़ दो मेंढककी तरह, इमोशनल् रख लो. इमोशनल् तोड़ दो तो इन्टलेक्चुअल् ईगोकु रख लो. ''अब उसकी गलीमें यार मुझको ले चलो.'' अब वाने इन्टलेक्चुअल् ईगो तोड़ दियो ना! इमोशनल् ईगो सम्भाल लियो हे. या तरहसु अपन् एडजेस्टमेन्ट् करके जी रहे हें. सारी हकीकत ये हे.

जन्मभूमिको जो सम्पादक हतो ना हरीन्द्र दवे!, वाने बहोत अच्छो लिख्यो हे. **''म्हारू स्वमान रक्षवा जाता कदी कदी हूं करगरी गयो छूं पण मने ख्याल तो नथी. एक रण तरी गयो छूं मने ख्याल तो नथी.''** ये कौन करे? भई! तुम्हारो मान नहीं झुका सको तो तुम माथा झुकाके भी आत्मसम्मान सम्हाल लोगे. अक्सर सब लड़कीनूकी माँ होवें ना! वो बहूकु येही सीख दें के पतिके सामने झुकियो. अब पांच दस साल झुकेगी ना तो वाके बाद अपने आप वाको माथा झुक जायगो. **''म्हारुं स्वमान रक्षवा जाता कदी कदी हूं करगरी गयो छूं पण मने याद तो नथी.''** वो वा तरहसु डिप्लोमेसीसु समझाके ही विदा कर्यो जाय. वो पांच दस साल झुकी रहे और फिर माथापे सवार हो जाये, चलो आओ. जायगो कहां अब! ये तो रहस्य हे वा डिप्लोमेसीको. या तरीकेकी ईगो स्प्लिट्नेस्कु सम्भालेगो कौन? हर्ट नहीं होतो होयगो ऐसी बात तो नहीं हे, हर्ट तो होतो होयगो ही पर वा ईगोकु मेंढककी तरह निकालके फेंक दे. भई! पीहरमें चले ससुरालमें नहीं चले. जब नहीं चले तो फिर पूरो वाको रिवेन्ज् ले ले वो बादमें. एक बखत तुम ट्रेप् भये तो फिर पूरो रिवेन्ज् ले ले. ऐसे ही करनो पड़े ना फिर, सारी दुनियां ही ऐसे चल रही हे. यामें ईगोमें ये सारी फॅसिलिटी अवेलेबल् हें. नहीं तो आदमी सुसाईड कर ले. याको टेन्शन् इतनो ज्यादा

होवे के ईगोकु स्प्लिट होनो नहीं आतो होय तो वा टेन्शन्कु अपन् झेल नहीं पायेंगे. अक्सर सुसाइड वो ही करें हें के जो या तरीकेकी स्प्लिटिंग्कु झेल नहीं पाते होंय. जो झेल पायें वो तुरत मेंढककी तरह हाथ पैर तोड़के अपने भाग जायें और प्राण बचा लेवें हें. तो यहां अहंकारको बहोत बड़ो मेजर रोल् हे. करणकी तरह देखो, क्रियाकी तरह देखो अभी या फेसेटकु अपन डील करेंगे एक दो दिनमें और तब तुमकु और पिक्चर साफ होयगो. अभी तो मैंने या पेहलुकु समझायो के सिर्फ कर्ता ही नहीं ज्ञाता और भोक्ता कैसे हे? आज अपन् यहां रखें.

०००००००००

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

अपने अहंकारकु कल मैंने ये समझावेको प्रयास कियो के, अहंकार पुरुषको प्रकृतिके गुणनूमें अभिविषक्त होनो हे, इन्वोल्व् होनो हे और वा इन्वोल्वमेन्ट्के कारण जो अहंक्रिया पुरुषमें पैदा होवे वाके कारण पुरुष अपनेकु अहंकार करवे लगे हे. ''**अहंकारविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते.**'' कर्ता मानवे लगे हे. वा प्रसंगमें मैंने आपकु ये बात बताई के यहां कर्ता जैसे प्रकृतिके गुणनूमें इन्वोल्वमेन्ट्के कारण हो रह्यो हे; ऐसे ज्ञाता भी प्रकृतिके गुणनूमें इन्वोल्वमेन्ट्के कारण ही हे. पुरुषके भोक्ता होवेकी कॅपेसिटी भी प्रकृतिमें इन्वोल्वमेन्ट् होवेके कारण हे. क्योंके शुद्ध चेतना न अपने आपमें कर्ता हे, न अपने आपमें भोक्ता हे, ये बात बताई. कर्ता, ज्ञाता, भोक्ता नहीं हे; या बातको जो अपन निषेध कर रहे हें, वाके दो पेहलु हो सके हें. एक पेहलु ये हो सके हे के यासु पुरुषको कर्ता होनो, भोक्ता होनो या ज्ञाता होनो कोई कल्पना हे, कोई भ्रमणा हे पर वो सिद्धान्त अपनो नहीं हे. वो सिद्धान्त बौद्धनूको और शांकरनूको सिद्धान्त हे.

अपने सिद्धान्तमें अपन् वाकु ये मान रहे हें के पुरुष कर्ता, ज्ञाता, भोक्ता नहीं हे ये बात सच्ची हे, पुरुषकु केवल पुरुषके रूपमें लेवेसु वो कर्ता, ज्ञाता और भोक्ता नहीं हे. परन्तु पुरुष जब प्रकृतिके गुणनूसु मिन्गल् हो जाये वा बखत प्रकृतिके गुणनूके कारण वामें वस्तुतः कर्तापनो, ज्ञातापनो और भोक्तापनो आवे हे. अकेले पुरुषकु देखोगे तो ये बात नहीं हे पर मिन्गल् होवेके कारण आ रही हे. वो बिल्कुल वैसे ही है जैसे अपन् ताशको एक पत्ता खड़ो करनो चाहें तो नहीं कर सकें हें पर यदि दोनोंनूकु एक दूसरेपे टिका दो तो खड़ो हो जायगो. वा तरहसु उन कार्डनूको

जो शेप् खड़ो हो रह्यो हे तम्बूके ढंगको, वामें कौन कारण हे? यदि कोई एककु भी अपन् कारण मानेंगे तो गलत हे. या बाजूके कार्डकु अथवा वा बाजूके कार्डकु, क्योंके थ्योरिटिकली लॉ ऑफ़ ग्रेविटेशनूके कारण ये कार्ड भी गिरनो चाह रह्यो हे और दूसरो कार्ड भी गिरनो चाह रह्यो हे. ये कार्ड गिरनो चाह रह्यो हे तो यामें वो कार्ड आड़े आ रह्यो हे. वो कार्ड गिरनो चाह रह्यो हे तो वामें ये कार्ड आड़े आ रह्यो हे. दोनोंनूके गिरवेमें एक दूसरे कार्ड आड़े आ रहे हें तो दोनों टिक जा रहे हें. एक बड़ी नाजुक कथा हे. दोनों ही गिर सकें हें क्योंके जा कोणमें कार्ड खड़े हें वा कोणमें वो कार्ड खड़े नहीं रह सकें, गिरेंगे ही. पर जब वो गिरवे जाय तो ये आड़ो आ जाये, जब ये गिरवे जाय तो वो आड़ो आ जाये. लिहाजा एक दूसरेके गिरवेमें दोनों एक दूसरेके आड़े आ रहे हें तो दोनों खड़े हो रहे हें, गिर नहीं रहे हें. या तरहसु प्रकृतिके गुण पुरुषकु अकर्ता, अभोक्ता, अज्ञाता होवेमें आड़े आ जायें. प्रकृतिके गुण, क्रिया या ज्ञान या भोग, वो पुरुषके आड़े आवें हें, पर यदि प्रकृति अचेतन हो जाय तो न कछु क्रिया कर सके हे, न कछु भोग कर सके हे और न ही कछु समझ सके हे. तो वो अक्रिय, निष्क्रिय, अज्ञान रूप या अभोग रूप बनवेमें वाके पुरुषको चेतना गुण आड़ो आ जातो होवे हे और वो दोनों टिक जायें हें. पुरुषकु चेतनाके गुण प्रकृतिके निष्क्रिय, अभोगात्मिका, अज्ञानात्मिका होवेमें आड़े आ जायें हें.

अब यामें देखवेकी बात ये हे के अपने आपमें ये गुण दोनोंमेंसु कोई एकमें नहीं आ रहे हें. एक दूसरेके कारण आ रहे हें करके ये अज्ञानजन्य भ्रान्ति हे, यों बौद्धनूको भी मत हे और शंकराचार्यजीको भी मत हे. पर प्रकृतिके अज्ञानरूपा होवेमें पुरुषको चैतन्य गुण आड़ो आ रह्यो हे. पुरुष प्रकृतिकु अज्ञानरूपा नहीं होवे दे हे करके अपने यहां प्रकृति अज्ञानरूपा नहीं हे. यदि ज्ञानके

सारे करण जैसे महद्, अहंकार, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, मन, बुद्धि ये सब प्रकृतिके प्रोडक्ट् हैं, तो अज्ञानरूप कैसे हो सकेंगे? शांकरमतमें भी यदि ''**अहं ब्रह्मास्मि**''कु ज्ञान मानते होंय, तो वो ज्ञान भी अप्राकृत ज्ञान तो नहीं हे; बुद्धिजन्य ज्ञान हे. यदि चेतना बुद्धिरहित हो जाय, यदि चेतना अंत:करणरहित हो जाय शांकरमतमें भी तो वाकु ''**अहं ब्रह्मास्मि**'' ज्ञान नहीं होयगो. यदि ''**अहं ब्रह्मास्मि**'' ज्ञान हो रह्यो हे, मतलब प्रकृतिको वामें कॉन्ट्रीब्युशन् हे. जब अपन् ये फील् कर रहे हें के ''मैं ब्रह्म हूं'' तो अहंकारको कॉन्ट्रीब्युशन् हे. 'हूं' केह रहे हें तो वो निश्चयात्मक 'हूं' हे. निश्चयात्मक 'हूं' हे तो बुद्धिको वो हे. वो निश्चय यदि अपनूकु स्थायी रखनो हे तो मनकु वामें लगानो पड़ेगो करके स्पष्ट उनकी प्रक्रियामें भी ये बात समझाई हे के ''**श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:**''. 'मैं ब्रह्म हूं' पेहले ये सुनो, फिर वाको मनन करो और फिर वाको ध्यान धरो. तो एक सीधीसी बात समझो के श्रवण करवेमें श्रवणेन्द्रिय काम आयगी; मनन करवेमें मन काम आयगो; बुद्धि भी काम आयगी और ध्यान धरवेमें भी मन और बुद्धि के बिना ध्यान कैसे हो पायगो? ध्यान् अपन् कायको करेंगे के 'मैं ब्रह्म हूं'को तो वो अहंकारके बिना कैसे हो पायगो? लिहाजा ''**अहं ब्रह्मास्मि**'' में भी प्रकृतिको रोल तो स्पष्ट दिखलाई दे रह्यो हे. अपन् ऐसे नहीं कह सकें के ''**अहं ब्रह्मास्मि**'' या तरीकेके ज्ञानमें प्रकृतिको कोई रोल नहीं हे. अब वो प्रकृति उनके यहां अज्ञानात्मिका होय तो ''**अहं ब्रह्मास्मि**'' ज्ञान भी कोई न कोई तरहसु अज्ञानात्मक हो जायगो, या रहस्यकु समझो.

महाप्रभुजी कह रहे हें ''प्रकृति अज्ञानात्मिका नहीं हे. प्रकृति भगवान्‌के सर्वभवनसामर्थ्यसु पैदा भयो प्रभुको एक सदंश हे. सच्चिदानंद ब्रह्मने अपनी सत्ता, अपनी चेतना और अपने आनन्दकु सत् रज तमो गुणके रूपमें कन्वर्ट् कियो हे, ट्रांसफॉर्म कियो हे.'' जब अपनी

सत्ता, अपनी चेतना और अपने आनन्दकु सत्त्व, रज और तमो गुणमें स्प्लिट् कियो हे और तो वा स्प्लिट्‌के कारण थोड़ो ट्रांसफॉरमेशन् भी वामें भयो हे. वो ट्रांसफॉरमेंशन् मूलमें तो ब्रह्मकी सत्ता, चेतना और आनन्द रूपी गुण हे पर ये स्प्लिट् होवेके कारण वाकु अपन् प्रकृति केह रहे हें. यदि वो होमोजीनियस् एकरस हो जायें, अनस्प्लिटेड्, तो ब्रह्मके सच्चिदानंदरूप हो जायेंगे. स्प्लिट् होवेपे वो प्रकृति हो जा रहे हें.

(सर्वभवनसामर्थ्यसु प्रकट सृष्टिकु मिथ्या माननो इंटेलेक्च्युल् हेस्ट्)

अब ये ब्रह्म क्यों स्प्लिट् हो पावे हे, तो वाको महाप्रभुजीने जस्टिफिकेशन् दियो हे क्योंके ब्रह्ममें सर्वभवनसामर्थ्य हे; क्योंके अपने आपकु स्प्लिट् करवेकी, सेल्फ डिवीजनकी वामें पोटेन्शिलियेटी हे. ब्रह्म अपने आपकु डिवाइड् कर सके. अब ये एक रहस्य हे के जो अपने आपकु डिवाइड् करे वो सर्वाइव करे के खतम हो जाय? कहीं भी कोई चीज जा बखत अपन् डिवाइड करें तो अपनी पेहली फीलिंग् ये होवेके वो खतम हो जाय. जैसे कारकु तोड़ दो तो कार खतम हो गई. प्लेनूकु तोड़ दो तो प्लेन् खतम हो गयो. पर अपन् या रहस्यकु बायोलोजिकली अच्छी तरहसु जानें हें के डिवाइड् होवेके बाद और ज्यादा ग्रोथ् हो जाय. बीज वृक्षसु डिवाइड हो जाय स्प्लिट् होके तो वो और ज्यादा वृक्ष पैदा करे. कलम भी काट लो और कहीं रोप दो तो फिर पाछो वृक्ष हो जाय. तो वो रहस्य कौनसो हे? वो जो फॉर्म् हे जो डिवीजन् करवेपे टूट जाय, वो नॉन्‌बायलोजिकल् फॉर्म हे; बायोलोजिकल् फॉर्म् तो नहीं हे के जो डिवाइड् होवेपे टूट जाय. फिज़िकली ऐसो होवे हे, पर अपन् या बातकु सिर्फ बायलोजीमें ही समझें ऐसी बात नहीं हे; बहोत सारी साईन्स्‌की ब्रांचमें बहोत सारे एलीमेन्ट् डिवाईड् होवेके बाद सर्वाइव् करें हें के नहीं करें हें? जैसे अपनी रेडियोवेव हे. ये टी.वी. की वेव्, ये मोबाईलकी वेव; ये सारी वेव्स् इन्स्ट्रुमेन्ट्पे

डिवाईड् हो रही हें के नहीं? वासु क्या उनको मूल रूप खो जा रह्यो हे? तुमने अपने इन्स्ट्रुमेन्ट् ऑन कियो तो वो डिवाईड् होके तुम्हारे यहां भी प्रकट हो जाय. अब मेरेमें जो प्रकट हो रही हे वो आपके यहां प्रकट नहीं हो रही हे; आपके यहां जो प्रकट हो रही हे वो मेरे यहां प्रकट नहीं हो रही हे. सबमें वो स्प्लिट् होके सेल्फ मल्टीप्लिकेशन् कर रही हे पर खतम तो नहीं हो रही हे. ये सिर्फ बायोलॉजीकी ही मोनोपोली हे, ऐसी बात नहीं हे. जगत्के बहोत सारे पदार्थनमें अपन् या फिनोमिनाकु देख रहे हें, पर ज्यादा बुद्धिमान् होके उन् सारे फिनोमिनानूकु नहीं देखके केवल घड़ाकु देखनो के घड़ा टूट जाये तो घड़ा नहीं रेह जाय. अरे भई! एक घड़ाकु ही क्यों देखो हो तुम और भी कई चीजनूकु देखो ना! कारणसु बहोत सारे कार्य पैदा हो रहे हें. बहोत सारे कारणनूसु बहोत सारे कार्य पैदा हो रहे हें, उनमेंसु एक कारण कार्यमें डिवाइड् होवेसु टूट जातो होय वाके लिये सब जगह वैसो समझके वाहीकु प्रिंसिपल् मान लेनो, ये पाछो बुद्धिको काम तो नहीं लगे ना अपनूकु! एक सामान्य बात समझो के जैसे मनुष्यकु डिवाइड् कर दो तो मनुष्य मर जाय. या स्टेट्मेन्ट्की भी एक लिमिट हे के डिवाइड् कर दो तो खतम हो जाय. क्योंके वाकी कॉम्प्लेक्सिटी डिवीजनूकु सहन नहीं कर पा रही हे. वाही मनुष्यके भीतर वाको हर सेल् डिवाइड् होके भी सर्वाइव् करे हे के नहीं करे हे! वाही मनुष्यके पूरे बायोलॉजिकल् स्ट्रक्चरमें जो सेल् हे वो डिवीजनकु सहन करे हे के नहीं करे हे! सेलसु कॉन्स्टिट्युटेड् स्ट्रक्चर डिवीजन सहन नहीं करे हे. वाकु डिवाइड् करो तो वो खतम हो जाय पर वाको कॉन्स्टिट्युटिंग् सेल तो डिवीजन् सहन कर ही रह्यो हे. सहन कर रह्यो हे करके ये प्रिंसिपल् ऐसो कोई प्रिंसिपल् नहीं हे के डिवाइड् कियो तो खतम हो ही जायगो. एक तरहकी इन्टलेक्चुअल् हेस्ट्में ऐसो मान लियो के डिवाइड् करवेपे चीज खतम हो जाय तो ब्रह्म भी यदि डिवाइड् हो रह्यो हे तो ब्रह्म भी खतम हो जायगो.

भगवान् बुद्धको ये सिद्धान्त हतो के कारणके खतम होये बिना कार्य पैदा नहीं हो सके हे. **''नानुपमृद्य बीजो अंकुरसम्भव:''** बीज जबतक टूटे नहीं, बीज जबतक फूटे नहीं, तब तक अंकुर पैदा नहीं होवे. ठीक बात हे भगवान् बुद्धकी, बात वहां गलत नहीं हे. बीजके फूटवेसु अंकुरण होवे हे, वो बीजके केसमें बात सच्ची हे पर दूसरे और कई चीज ऐसी हें जहां फूटवेसु कछु भी खतम नहीं होवे हे. जैसे पाराके आपने सो टुकड़ा कर दिये तो भी सब के सब पारा ही हें ना? वो कोई अपारा थोड़े ही हो जायेंगे? भई! बीजको ही उदाहरण क्यों पकड़ रहे हो, पाराको उदाहरण क्यों नहीं पकड़ रहे हो? ये भी तो प्रश्न उठेगो के नहीं? ऐसे बहोत सारे ह्युमन् एक्स्पीरियेन्स् हें, बायोलॉजीके, कॅमिस्ट्रीके, इलेक्ट्रोनिक्स्के, ये फील्ड्के जामें डिवीजनके कारण मूलवस्तु स्प्लिट् हो रही हे पर खतम तो नहीं हो रही हे. जब खतम नहीं हो रही हे तो फिर ब्रह्मको सिर्फ इतनेसे एक सेल्फस्प्लिटिंग् मानोगे तो वो भी खतम हो जायगो, याके लिये जगत्कु पैदा करवेके लिये अज्ञानकी जरूरत हे एसे भी लगेगो. वो अज्ञान अज्ञानके कारण आ रह्यो हे.

सारी पॉसिबिलिटीज़्को अपनने ज्ञान नहीं कियो करके अज्ञान आ रह्यो हे. सारी पॉसिबिलिटीज़् चॅक्अप् करो. सारी पॉसिबिलिटीज़्कु चॅक्अप् करोगे तो अज्ञानकी जरूरत नहीं पड़ेगी. या लिये महाप्रभुजीने कही ''प्रकृति अज्ञान नहीं हे. प्रकृति प्रभुके सर्वभवनसामर्थ्यके कारण पैदा भई सेल्फ्स्प्लिटिंग् हे.'' मोर और लॅस् मॉडल वोही हे जो स्टेमसेल्को हे. स्टेमसेल्में अपने आपकु मल्टीप्लाई करवेकी सामर्थ्य हे. वो सामर्थ्य एनकोडेड् हे. तो जैसे वामें (अंशरूप) सर्वभवनसामर्थ्य हे, ऐसे ब्रह्ममें (अंशीरूप पूर्ण) सर्वभवनसामर्थ्य हे जा सामर्थ्यके कारण वो ब्रह्म प्रकृति और पुरुष के रूपमें स्प्लिट् भयो हे. प्रकृतिमें भी पाछो होमोजीनियस् स्प्लिट् नहीं भयो हे; अपने सच्चिदानंदके सत् चित् और आनन्द तीनोंनूकु स्प्लिट् करके जो सत् रूप पैदा भयो

वा रूपकु 'प्रकृति' कहें हें. एक दूसरे रूपमें जामें वाने आनन्दकु तिरोहित कर दियो सत्ता और चेतना रखी वो फिनोमिना पुरुष बन गयो. अब उनको पाछो इन्टरएक्शन् होवेके कारण सारे अहंकारकु पैदा होवेकी प्रोसीजर अपनूने देखी.

(पुरुषको प्रकृतिमें इन्वोल्वमेन्टको प्रकार)

यामें खास ध्यान देवेकी बात हे के इन गुणनूमें पुरुष जा बखत इन्वोल्व् होवे हे तो ये इन्वोल्वमेन्ट् कई तरीकेके हो सके हें. एक इन्वोल्वमेन्ट् ऐसो होवे मोटो एग्ज़ाम्पल् दे रह्यो हूं. पड़ौसीके घरमें झगड़ा हो रह्यो हे. अपन् बारीमेंसु देख रहे हें. अब अपन् यामें इन्वोल्व् हो रहे हें के नहीं हो रहे हें? न तो वा झगड़ाकु पतानो चाह रहे हें, न झगड़ाकु बढ़ानो चाह रहे हें. खाली इन्वोल्वमेन्ट् हे के क्या हो रह्यो हे ये जानवेकु. ऐसो भी इन्वोल्वमेन्ट् होवे हे. अपने घरमें झगड़ा होवे तो कोई पड़ौसी सुन ना जाय, तो जैसे ही झगड़ा शुरु होय तो अपन् फटाफट बारी दरवाजायें बन्द करें के पड़ौसी कहीं सुन ना ले. अपने घरके झगड़ामें भी अपनो इन्वोल्वमेन्ट् हे देखो. ऐसो कौन होयगो के झगड़ा शुरु होते ही दरवाजाएँ बारीयें सब खोल दे? ऐसे कोई झगड़ा नहीं करे. घरमें झगड़ा होते ही फटाफट बारी दरवाजा बन्द करके झगड़ा करें. क्योंके दूसरो वामें इन्वोल्व् नहीं होवे. अपने घरमें अपनो वा तरीकेको इन्वोल्वमेन्ट् हे. एकमें अपन् पार्टी भी हें, झगड़ा करवेवाली और इन्वोल्व् होवेवाले साक्षी भी हें. एकमें अपन् पार्टी नहीं हें, Just keep safe distance. Do not kiss. वो टेक्सीनूपे लिख्यो होवे हे ना! वहां जावें नहीं पर बारीमेंसु सुननो के क्या झगड़ा हो रह्यो हे! तुमकु वाकु सुनवेमें फायदा क्या? पर इन्वोल्व् हो जाये आदमी. प्रकृतिके गुण हें ना! प्रकृतिके गुणमें प्रकृति यदि झगड़ रही होय तो पुरुष इन्वोल्व् हो जाय. पर पुरुषको इन्वोल्वमेन्ट् या पड़ोसीकी तरह नहीं हें के बाजूकी बारीमें क्या हो रह्यो हे! वो पुरुष और प्रकृति को घरमें झगड़ा

हो रह्यो हे क्योंके एक अक्षरके घरमें ये मियां बीबी दोनों रेह रहे हें. प्रकृति रूपी बीबी और मियां रूपी पुरुष दोनों अक्षरके घरमें रेह रहे हें. झगड़ा हे तो उनकु आपसमें हे, प्रेम - प्रणय हे तो उनको आपसमें हे, ये उनको म्युच्यल्-इन्वोल्वमेन्ट् हे. म्युच्यल्-इन्वोल्वमेन्ट्को अपने यहां मॉडल कैसो बतायो ?

अब मनमें एक एक्सरसाईज़ करके देखो. जब भी अपनूकु शेव् करनी होय, मेकअप् करनो होय, काजल लगानो होय, पाउडर लगानो होय, तिलक लगानो होय तो अपन् अपने रिफ्लेक्शनूमें इन्वोल्व् होवें. होवें के नहीं? बिना रिफ्लेक्शन् भये ये सारे काम अपने फेसूपे हो नहीं सकेंगे. वो इन्वोल्व्मेन्ट्को मॉडल कौनसो हे? पर एक अपन् खुद मेकअप् कर रहे होंय या करवा रहे होंय, जैसे पार्लरमें अपनी ब्राईडल् मेकअप्की तैयारी होवें हें पार्लरमें, तो वामें जो अपन इन्वोल्व् हो रहे हें, वामें हर जो प्रोसेस् हो रही हे फेसपे, बालपे, होंठपे, गालपे, ठुड्डीपे, माथेपे, उन सबमें अपन् पर्सनली इन्वोल्व् हो रहे हें. खाली देख नहीं रहे हें. वो ब्युटीपार्लर चलावेवाली हे, वो जो भी कछु एक्शन् कर रही हे वामें अपन् अपने फेससु, अपनी बॉडीसु, अपनी पर्सनेलिटीसु वामें इन्वोल्व् हो रहे हें. तो वो इन्वोल्वमेन्ट् मिररमें देखवे जैसो इन्वोल्वमेन्ट् नहीं हे पर अपनो पर्सनल्-इन्वोल्वमेन्ट् हे क्योंके पर्सनली अपन् वाके कारण ट्रांसफॉर्म् हो रहे हें. वो अपनेपे कछु प्रोसेस् कर रही हे ब्युटी पार्लरवाली, वा प्रोसेसूमें अपन् इन्वोल्व् हो रहे हें, वा इन्वोल्वमेंन्ट्के कारण अपनेमें कछु ट्रांसफॉरमेशन् आ रह्यो हे. कालो चेहरा गोरो हो जाय. लाली नहीं होय तो लाली आ जाय. होंठ भी लाल हो जायें. भौहें अगर एकाध सफेद भी होय तो वो काली हो जाय. भौंह जो भौण्डी होंय तो नुकीली हो जायें. वा ट्रांसफॉरमेशनूमें अपने कई तरहके इन्वोल्वमेन्ट् हो जायें. ये सारे ट्रांसफॉरमेशनूमें अपनो रिफलेक्शनूके जैसो इन्वोल्वमेन्ट् नहीं हे. ऐसे पुरुषको इन्वोल्वमेन्ट् या प्रकृतिको इन्वोल्वमेन्ट्, ब्युटीपार्लर

टाईप्को इन्वोल्वमेन्ट् हे. जो प्रोसेस् वापे की जा रही हे वा हिसाबसु वो सचमुचमें कछु ट्रांसफॉर्म् हो रहे हें जो पहले नहीं हते. जो रूप पेहले नहीं हतो वो रूप वहां वा ट्रांसफॉरमेशन्के कारण धारण कर रह्यो हे. अब आप लोग तो जानो हो के कई लोगन्कु अपनो चेहरा तेलिया पसन्द आवे हे; कई लोगन्कु अपनो चेहरा एकदम चमकतो पसन्द आवे. वाके तरीकेके भी वो पार्लरमें तेलिया चेहरा बना दें ना! के तेल जैसो चमकतो रहे चेहरा एकदम. नहीं हे तेल तो भी पैदा हो जाये तेल, वो कछु ऐसे लोशन वोशन लगा दें के तेल जैसो चेहरा चमके. ये जो सारो चक्कर हे ये पर्सनल् इन्वोल्वमेन्ट्के द्वारा पर्सनल ट्रांसफॉरमेशन्को चक्कर हे.personally we are involved. जो कछु पार्लरवालो कर रह्यो हे प्रोसेस्, वामें अपन् पर्सनली इन्वोल्व् होके We allow to get ourselves transformed. माने सीधे बाल होंय तो कर्ली हो जायें. ये सब क्या हे? आजकल तो वो गजनीकी तरह अक्षरें और लिखे जा रहे हें. अक्षर कहां बालनमें हते? ब्लेक् बोर्डकी तरह वो कटर लेके अक्षर भी लिख दें. अक्षर बालमें लिखे भये हें कहा! पर आ जायें. या तरीकेको ट्रांसफॉर्मेशन् वो आर्टिफिशियल् हे पर अनरियल् नहीं हे. मैं जो कछु बात समझानो चाह रह्यो हूं के ये जो कछु ट्रांसफॉरमेशन् अपने फेसमें हो रहे हें ब्युटीपार्लरमें वो आर्टिफिशियल् हे रीयल् नहीं हें या अर्थमें के वो अपने नेचुरल् नहीं हें. अनरियल् या अर्थमें नहीं हें के वो ट्रांसफॉरमेशन् अपनेमें सचमुचमें भयो नहीं हे. वा तरीकेकी ट्रीटमेन्ट्के कारण, वा तरीकेकी प्रोसेस्के कारण, चेहरामें वा तरहको ट्रांसफॉरमेशन् आवे हे. वा तरीकेको इन्वोल्वमेन्ट् प्रकृति और पुरुष को इन्वोल्वमेन्ट् हे. प्रकृतिमें चेतना नहीं हे पर पुरुषमें इन्वोल्व् होवेके कारण वो सचेतन हो जाये हे. चेतनामें ज्ञातृत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व नहीं हे पर प्रकृतिके इन्वोल्वमैन्ट्के कारण वो ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता बन जाये हे. ये आर्टिफिशियल् हे एट द सेम टाईम् रियल हे, या रहस्यकु समझो.

(अयोगोलकन्याय)

महाप्रभुजीके मतकु बौद्धमतसु और शांकरमतसु डिफरेन्टशियेट करवेके लिये ये सारी बातें मैने कल आपकु बताईं, स्पष्ट नहीं भईं होंय तो आज पूछ लो. कन्सेप्ट्में कोई तकलीफ होय तो आज दूर कर लो. पुराने जमानामें याकु अयोगोलकन्याय बतायो हे. अयोगोलकन्यायको मतलब क्या के जैसे इलेक्ट्रिक सिगड़ी हे वाको अपन् स्विच् ऑन करें; या ये बिजलीके बल्बन् में जब अपन् करेन्ट छोड़ें तो क्या वाके फिलामेंन्ट्में प्रकाश देवेकी सामर्थ्य हे? नहीं हे. फिलामेंन्ट्में बिजली पास नहीं होती होय तो क्या वो लाईट एमिट् करे हे? नहीं करे हे. फिलामेंन्ट्में जा बखत करेन्ट पास होवे, वा बखत बल्बके फिलामेंन्ट्में लाईट पैदा हो जाय. जो इलेक्ट्रिसिटी लाईट एमिट् नहीं करती होय वो लाईट एमिट् करती हो जाय. वो दोनोंके एक दूसरेके कोलोबोरेशन्में पैदा होतो भयो एक आर्टिफिशियल् कॅरेक्टर हे. अनरियल् अपन् कहेंगे तो बल्बसु जुड़ती भई लाईट्कु अपन्कु अनरियल् माननो पड़ेगो. पर बल्बसु जुड़ती लाईट तो रियल ही हे, अनरियल् तो नहीं हे. It really produces light, Not naturaly but artificially. याके ऑपोजिट जो वो कॅमिकल लगा दें तो वापे लाईट पड़े तो चमके. ऐसो चमके के जैसै खुद बिजली होय. यदि लाईट नहीं पड़ती होय तो? वो रोडपे लगावें ना फ्लोरोसेन्ट्. वो लाईट पड़े तो चमके नहीं तो नहीं चमके. वामें जो लाईट आ रही हे वो कौनसी लाईट आ रही हे? सचमुचमें वाको लाईट्में ट्रांसफॉरमेशन् लाईट प्रोड्युसिंग एलीमेंन्ट्में वाको ट्रांसफॉरमेशन् नहीं हो रह्यो हे. ये तो खाली लाईटकु रिफ़्लेक्ट् (कर रह्यो हे) , एक इल्युज़न् हे के ये चमक रही हे. अपनो वा तरीकेको कर्ता नहीं हे. अपनो कर्ता कैसो हे के जो बल्बके भीतर रह्यो भयो फिलामेन्ट् हे, वा फिलामेंन्ट्में पास् होतो भयो जो बिजलीको करेन्ट हे, जो लाईट प्रोड्युस कर रह्यो हे, हीट प्रोड्युस् कर रह्यो हे. या बिजलीके जो भी या तरीकेके प्रोड्क्शन् होते होंय, रिज़ल्ट आते होंय, वा मॉडलपे

पुरुष कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता बने हे. या रहस्यकु अपनूकु एकदम क्लीयर कट समझ लेनो चहिये.

"**अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अहं इति मन्यते.**" वो अहंक्रिया वामें होवे लग जाय हे करके वाकु कर्ता होवेको भान होवे हे. वा दिन झालाने पूछी हती के जब क्रिया होवे लग गई तो कर्ता तो होयगो ही. वाकु भी मैंने समझायो हतो के हर क्रियामें ऐसो नहीं होवे. बहोत सारी क्रियाएँ ऐसी होवें हें के क्रिया जहां घटित हो रही हे, वहां क्रियाके आधारमें कर्तापनेको भाव नहीं प्रकट होवे हे. कर्तापनेको भाव कब प्रकट होवे वाकी मैंने आपकु शर्त बतायी के वो जानाति, इच्छति और यतते, ये तीन शर्त पूरी हो जायें तो क्रियाके आधारमें कर्तापनेको भाव प्रकट हो जाय. उनमेंसु एक भी शर्त ड्रॉप् भई तो क्रिया वहां प्रकट होयगी, क्रियाको आधार होयगो पर क्रियाको कर्ता होवेको भाव प्रकट नहीं होयगो. ये बात भी मैंने आपकु दो दिनके वा प्रवचनमें समझाई हती.

(तच्छक्त्या अविद्यया तु अस्य जीवसंसार उच्यते)

प्रश्न : जो एनर्जी हे वाके जगहपे अपनी चेतना हे? जो मशीन हे वाकी जगह प्रकृति हे. यहां जो भी ट्रांसफॉरमेशन् हो रह्यो हे वो प्रकृतिमें ही हो रह्यो हे. चेतना तो एज़ इट इज़ रेह रही हे. तो एनर्जीमें भी तो कछु न कछु चेन्जेस् आ रहे हें? जैसे बल्बमें प्रकाश आ रह्यो हे तो एनर्जी एक रूपमेंसु दूसरे रूपमें आ रही हे. बिजलीके रूपमेंसु वो लाईटके रूपमें आ रही हे. एनर्जीकि रूपमें रह रही हे. पर यहां जो चेतना हे वामें तो कछु भी अन्तर आ नहीं रह्यो हे. जो अन्तर आ रह्यो हे वो तो प्रकृतिमें ही आ रह्यो हे?

उत्तर : देखो, ये बात ऐसी हे के ऐसी शंका या आक्षेप

अपनेकु यापे हो सके हे. पर हर वक्त या बातकु साफ समझनो चहिये के यदि चेतनामें कछु भी अन्तर नहीं आतो होय, तो चेतनाको बंधमोक्ष होनो ही नहीं चहिये. जा बखत अपन् कबूल कर रहे हें "**अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते**", भागवतकार यों कह रहे हें तो अहंकार विमूढ होवेके कारण कर्तापनेको वामें भाव आवे और कर्तापनेको भाव ही नहीं आवे, भोक्तापनेको भाव आवे और भोक्तापनेको भाव ही नहीं आवे वाके कारण वामें बंधन भी आवें हे. वो ऐसो बंधन आवे हे के अपन् चाहें तो भी छूट नहीं सकें. बंधन इतनो सरल होतो जैसे कहें हें "**यद्बद्धो याति संसृतिम्**" माने अविद्यामें तू बंधवेके कारण संसृतिमें जावे हे. समझो के जो बंधनो चाहतो होय, वाकु तो कोई प्रोब्लम् नहीं हे पर कोई विरागी, कोई ज्ञानी, कोई बौद्ध, कोई शांकर मुक्त होनो चाहतो होय तो मुक्त होनो चाह रह्यो हे तो क्या वासु जल्दीसु मुक्त हो जायगो? अपन् चाह रहे हें के मुक्त हो जायें, अपन् समझो के कोई पुष्टिमार्गमें ही मुक्त होनो चाहतो होय, तो क्या वो मुक्त हो जायगो? क्यों मुक्त नहीं हो पायगो? अपने यहां स्पष्ट कह्यो हे याही लिये "**तत्छक्त्या अविद्यया तु अस्य जीवसंसार उच्यते**" (त.दी.नि.१।२३) अपनी शक्तिसु जीव बंध्यो होय तो अपनी शक्तिसु मुक्त हो सके हे. जब अपन् अपनी शक्तिसु नहीं बंधे हें, तो अपन् अपनी शक्तिसु मुक्त नहीं हो सकें. जैसे तुम अपने हाथसु अपनूकु बांधो, जैसे अपने गलामें टाई बांधें हें, कमरमें बेल्ट बांधे हें; अपनी शक्तिसु बांध रहे हें तो जब चाहें तब छोड़ भी सकें हें. यदि कोई दूसरो हथकड़ी बांध दे अपनेकु तो जब वो छोड़े तो छूटे ना, अपने छोड़े तो छूटे नहीं. दूसरो जा बखत बांधे हे तो वामें अपनेमें छोड़वेकी स्वतन्त्रता खतम हो जाय. अपन् अपने आपकु अपनी शक्तिसु बांधें तो हर बखत वो फॅसिलिटी अपनेकु अवेलेबल् रहे हे. तो क्या ये फॅसिलिटी अपनेकु संसारमें अवेलेबल् हे? ये तो प्रभुकी कितनी कृपा हे, ध्यानसु सोचो, के फॅसिलिटी

अवेलेबल् नहीं रखी हे. क्योंके स्मशान्‌में मुर्दा फूंकके आवें वा दिन सबकु वैराग्य आतो होवे हे. अचानक वैराग्य आ गयो और अपन् भी मर गये तो! परिवारमें फूंकवेको खर्च कितनो बढ़ जाये? वो थोड़ी देर वैराग्य आ जाये अपनेकु के जीवन क्षणभंगुर हे यामें कछु हे नहीं, अभी कल तक बोल रहे हते आज चले गये. अरे चले गये तो तुरत वैराग्य आ जाय और घर तक नहीं पहोंचे तब तक ही वैराग्य रहे. घर पहुंचते ही कहें ''चाय लाओ भई सुबहसु चाय ही नहीं पी, मशानमें बैठे बैठे.'' वो पाछी संसृति आ गई ना! घरमें जाके पहलो काम क्या करें? ''माथु भारे थई गयु, चाय तो लाओ.'' ''हवे तो माथु भारे थई गयु'' बोलो के नहीं बोलो? अपन बंधे भये हें. वैराग्य आवे वासु अपन् छूट नहीं जायें. जरा भी नहीं छूटें. समझो के वो फॅसिलिटी अवेलेबल् होती तो सत्यानाश हो जातो. अभी वैराग्य आयो और अभी छूट गये. प्रोब्लम् क्रियेट हो जाती. तो अपन् छूट नहीं सकें. **''यद्बद्धो याति संसृतिम् तच्छक्त्या''** अपनी शक्तिसु अपन् बंधे नहीं हें. या लिये अपनी शक्तिसु अपन् छूट नहीं पावें. बांधवेवालेने जो बांध्यो हे वो जब चाहेगो तब अपन्‌कु छोड़ सके हे.

(स्वत:मोक्षको सिद्धान्त)

एक बात ध्यानसु समझो के महाप्रभुजीने भी स्वत:मोक्षको सिद्धान्त मान्य रख्यो हे. वाको मॉडल ऑलमोस्ट कैसो हे? जैसे ऑपरेशन्‌के टांका लगावें और वो गल जायें. वो टांकामें ही वा तरहको नेचर हे के डॉक्टरके पास पाछे खुलवावेकी जरूरत नहीं पड़े. ऐसे वो सांख्यसु और योगसु स्वत:मोक्ष होवे हे वो टांकामें फॅसिलिटी अवेलेबल् करी हे करके अपन् छूट जा रहे हें. बाकी अपने पास वो फॅसिलिटी अवेलेबल् नहीं हे. यदि दूसरे टांका लगाये होंय वहां भी तो वहां भी अपन् छूट नहीं सकें हें. या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझो. जब डॉक्टर भी वो टांका नहीं लगावे जो ऑपरेशन्‌के बाद अपने

आप गल जायें तो डॉक्टरके पास टांका खुलवावे जानो ही पड़े के नहीं! एक छोटो सो टांका लगे वो अपन् नहीं खोल पावें सोचो! बन्धन कितनो हे? अपनी पराधीनता कितनी हे? या बातकु सोचो! जब या बातकु अपन् सोचें तो अपन्‌कु पता चले के ये जो संसार हे, संसार माने ''मैं कर्ता हूं, मैं ज्ञाता हूं, मैं भोक्ता हूं,'' ये अपने भावको संसार अपने इन्वोल्वमेन्ट्‌के कारण पैदा भयो हे, पर वो इन्वोल्व् होनो के नहीं होनो, वामें भी अपन् स्वतन्त्र नहीं हें. जब स्वतन्त्र नहीं हें तो अपनो बन्धन भी सचमुचमें एक बन्धन हे. कल्पित बन्धन नहीं हे. कल्पित बन्धनको मॉडल् क्या हे वाको ध्यानसु समझो. उनको बन्धनको मॉडल ऐसो मॉडल हे के सपनामें तुमकु ऐसो आयो के चार डाकूनने तुमकु बांध दियो. वो बंधन तुम्हारो कितनी देर तक रहेगो जितनी देर तक नींद नहीं उड़ी उतनी देर. नींद खुलते ही वो डाकू भी गायब हो जायेंगे और बंधन भी छूट जायगो. उनके बंधनको मॉडल या तरीकेको हे के तुमकु सपना ऐसो आयो के डाकूनने तुमकु बांध दियो; तुम्हारी नींद उड़ गयी तो तुम बंधनसु छूट गये.

पर ये बंधन ऐसो नहीं हे. मजेदार बात बताऊं. बद्रीनाथ गये तो स्लीपिंग बेग् बच्चानकु प्रोवाईड करी. बच्चानकु स्लीपिंग बेग प्रोवाईड करी तो ठण्ड लग रही हती. सब स्लीपिंग बैगमें घुस गये. अब बच्चायें स्थिर तो सोवें नहीं. स्लीपिंग बैगके मौंहपे एक बच्चा सो गयो. अचानक दुसरेकी नींद उड़ी. वो निकलवेको प्रयास करे तो निकल ही नहीं सके. तो वो रातकु रोयो ''मैं कहां फंस गयो हूं बचाओ बचाओ बचाओ!!'' अचानक घबराहट हो गई के क्या हो गयो रातकु! पता ही नहीं चले के भयो क्या? बाकायदा घरमें लोक करके सोये, सब ठीक ठाक हतो.' वो क्या भयो के स्लीपिंग बैगके मौंहपे दूसरो बच्चा सो गयो तो पहलो बच्चा निकल ही नहीं सके. स्लीपिंगबेगमें कैद हो गयो.

एक स्लीपिंगबेग जैसी चीजमें आदमी फंस जाये ना तो निकल नहीं सके. ये सोचो. तो या बंधनमें, ये स्लीपिंगबेग अपनीमें फंसो भयो तो जब उठे तब ही तो निकल सके ना! नहीं तो बचाओ बचाओ करतो रहें. त्राहि मच गयी रातकु, अचानक ये क्या हो गयो?

ये एक रहस्य हे के ये अपनी भी एक स्लीपिंगबेग हे जामें अपन् घुस तो गये हें; वाकु बंद कोई दूसरेने कर दी हे. प्रथमेश काकाजीकु पहली बार मैंने अपनी स्लीपिंगबेग दिखलाई के देखो कितनी अच्छी फॅसिलिटी हे. व्यर्थमें अपनो बेडिंग-वेडिंग लेके क्यों जानो? स्लीपिंगबेग लेके जानो. हलको फुलको रहे काम. ठण्ड भी लगे नहीं बिछावेको भी जरूरत नहीं. सब बात देखके काकाजीने मोसु कही 'बावा! ये सब बात ठीक हे पर तुम यामें घुसके सोते होओ और कोई तुमकु उठाके ही ले जाये तो! कर क्या सको हो? बेडिंग होयगी तो कछु हाथ पैर तो हिला सकोगे. यामें घुसके सो गये और कोई उठाके ले गयो तो क्या करोगे?' ये प्रोब्लम् तो हे ही ना! एक बखत स्लीपिंगबेगमें अपन् घुसे, या (शरीर रूपी) स्लीपिंगबेगमें घुसे तो कोई भी उठाके ले जाय. अपनूकु तो पता ही नहीं चले क्योंके अपन् तो सोये भये हें वामें. बस कोईके उठावेकी देर हे, वाके बाद तो अपने हाथभी अन्दर हें, पैर भी अन्दर हें, माथा भी अन्दर हे; कोई उठाके ले गयो तो ले जा. फिर तो कछु भी नहीं कर सकें.

ये एक रहस्य हे याको के बंधन जो हे वाके वामें कछु कछु या तरीकेके लिमिटेशन्स् हें. बंधन यदि अपनूने अपनी सामर्थ्यसु बांध्यो हे तो तो अपन् वाकु खोल सकें हें. अपनी सामर्थ्यसु अपनने बंधन नहीं बांध्यो हे और कोई दूसरेने अपनूकु बांध्यो हे.

तो वाकु अपन् खोल नहीं पायेंगे. जब अपन् वाकु खोल

नहीं पायेंगे तो बंधनके बारेमें कुछ और स्वरूप हो जाये हे. कोईकु वो अज्ञानजनित बंधन हो सके हे. पर अपने यहां बंधन अज्ञानजनित नहीं हे. भगवान्की रमणेच्छासु बंधन हे. भगवान्की विविध प्रकारसु क्रीड़ा करवेकी इच्छाके कारण अपन् बंधे भये हें. वा इच्छाके कारण जब अपन् बंधे भये हें तो भगवान् अपनेसु क्रीड़ा नहीं करवानो चाहें तो अपन् बंधनसु मुक्त होंयगे. बाकी अपनूसु भगवान् जबतक क्रीड़ा करवानो चाह रहे हें या अपनूसु भगवान् जबतक खेलनो चाह रहे हें, तबतक अपन् वा बंधनसु मुक्त कैसे हो सकें हें?

हरिवंशराय बच्चनकी एक बड़ी अच्छी कविता हे. ''**बद्ध तुम्हारे भुजपाशोमें और कहो क्या बंधन मानूं.**'' जब भगवान्ने अपने भुजपाशनूमें अपनूकु बांध रख्यो हे तो वामेंसु अपने पास छटकवेको कोई उपाय नहीं हे. उनने अपनी क्रीड़ाके लिये अपनूकु या स्लीपिंग बेगमें बांध दियो, पधरा दियो हे ''पोढ़ो आनन्दसु.'' हम पोढ़े भये हें. लीलाही वा तरीकेकी चल रही हे. या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझोगे ना! तो महाप्रभुजीको शांकरनूके साथ और बौद्धनूके साथ अपने मतको जो कॉन्ट्रास्ट हे, वो क्लीयर कट समझमें आयगो.

(कृत्रिम और स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया)

याके अलावा एक बहोत इम्पोर्टेन्ट फीचर, या कॉन्टेक्स्टमें, महाप्रभुजीके मतको हे और वाको आज अपन् खास चिन्तन करेंगे. कल मैंने आपकु बताई बात के प्रकृतिकी क्रियाके कारण अपन् कर्ता हो रहे हें. प्रकृतिकी ज्ञानकी क्वालिटीके कारण अपन् ज्ञाता हो रहे हें. प्रकृतिकी भोगकी क्वालिटीके कारण अपन् भोक्ता हो रहे हें. यामें एक गंभीर रहस्य हे और वा गंभीर रहस्यपे अपनूकु ध्यान देनो पड़ेगो. वासु पेहले एक ये बात और समझ लो क्लीयर कट जैसे ब्रह्मके बारेमें अपने यहां उपनिषद् यों कहे हे ''**परास्य शक्तिर् विविधैव श्रूयते स्वभाविकी ज्ञान बल क्रिया च.**'' (श्वेता.उप.६।८)

या ब्रह्ममें पराशक्तियें हें. पराशक्ति एक तरहकी नहीं हे. विविध प्रकारकी शक्तियें हें. "**परास्य शक्तिः विविधैव श्रूयते**" और सारी शक्ति वामें कैसी हें? स्वाभाविकी. अब देखो आर्टिफिशियल्को अनरियलिटीको नहीं संबंध हे. आर्टिफिशियल्को अपोज़िट माने एन्टीनोम् हे स्वाभाविक. स्वाभाविक और कृत्रिम्. कृत्रिम् माने आर्टिफिशियल्. वाको अपोज़िट् स्वाभाविक हे. वहां उपनिषद् ये बात समझा रह्यो हे "**परास्य शक्तिर् विविधैव श्रूयते स्वभाविकी ज्ञान बल क्रिया च.**" ज्ञान बल क्रिया परमें माने ब्रह्ममें आर्टिफिशियल् नहीं हें, स्वाभाविक हें. वाके स्वरूपमें ही ज्ञान, बल और क्रिया स्वाभाविक हें. याकु अपन् अलग अलग नहीं बता सकें हें. जैसे अपनेमें ज्ञान हे क्योंके अपनूने दो चार पुस्तकें पढ़ी हें, कुछ इन्फोरमेशन् गॅदर किये हें यहांसु वहांसु; "कहींकी ईंट कहींका रोड़ा, भानुमतीने कुनबा जोड़ा." वा तरहसु अपनूने कुनबा जोड़के इन्फोरमेशन् गॅदर करी हें वासु अपनेमें ज्ञान हे; पर स्वाभाविकी ज्ञान अपनेमें नहीं हे. वैसो शक्ति को भी है. अपनें थोड़ी बोहोत एक्सरसाईज़् करी होंयगी, थोड़ो बोहोत बुलवर्कर कियो होयगो, थोड़ो बोहोत स्ट्रेच्वर्क कियो होयगो, थोड़ी बोहोत वेटलिफ्टिंग की होयगी तो वो शक्ति आ रही हे. अपनेमें ज्ञान होय के शक्ति होय के क्रिया होय. क्रिया भी अपनेमें तब होवे जब अपन् बहोत एक्सरसाइज़् करें तब जाके क्रिया होवे. नहीं तो क्रिया कहांसु आवे अगर वाकी एक्सरसाईज़् नहीं करो. बच्चाकु बोलवेकी क्रियामें कितनी एक्सरसाईज़् करनी पड़े! यह कभी अपन् सोचें ना या रहस्यकु तो अपनूकु ख्याल आवे. अपन् तो आज बोलवे लग गये यासु याद नहीं रह्यो, पर बच्चाकु बोलवेकी प्रक्रियाकी क्रिया करवेके लिये कितनी मशक्कत करनी पड़े! मनुष्य एक प्राणी हे जो बोल रह्यो हे, वाके बाबजूद अपनी बोलवेकी सामर्थ्य कितनी आर्टिफिशियल् हे या बातपे ध्यान दो.

आजतक कोई बच्चा ऐसो नहीं भयो के जनमते ही सारी

बात बोलवे लग जाये. बच्चा क्या करे? बड़ेनूको मुंह देखे. लिप्सूमूवमेन्ट देखे. अन्दर क्या हो रह्यो मुंहमें, गलामें, जीभमें, दांतमें, अब दांततो बच्चामें होवे ही नहीं, तो वाकु पता भी नहीं चले के क्या लफड़ा हो रह्यो हे. तो बच्चायें सबसु पेहले कौनसे शब्द बोलें? जैसे आ, मम्मा, पप्पा, दादा, काका! क्योंजो उनकु वो लिप्सूमूवमेन्ट पता चले. या लिये ऑलओवर वर्ल्ड देखो जहां भी 'माँ' शब्द हे ना, मुहं खोलके हे. 'मम्मा' इंग्लिशमें देख लो, 'अम्बा' संस्कृतमें देख लो, 'माँ' देख लो, 'माता' देख लो, जहां भी वो शब्द हे वो क्या हे? क्योंके लिप्सूमूवमेन्ट पेहली केच् होवे ना! और पेहली लिप्समूवमेन्ट केच् होवेके कारण पेहले शब्द 'बाबा', 'दादा', 'काका', ये शब्द हें ना! वा लिप्सूमूवमेंन्ट्कु बच्चा पेहले पकड़े. अन्दर क्या हो रह्यो हे वो बच्चाकु समझ नहीं पड़े. समझ नहीं पड़े तो बच्चा बोल नहीं पावे. अपन् जो कुछ बोल रहे हें वाकु देखके वाकी वो एक्सरसाईज़् करे. बड़े दिनन् तक 'बाबा', 'दादा', 'काका', बोले तब जाके धीरे धीरे वाकी वोकेब्युलरी डेवलप् होवे. वोकलसिस्टम् डेवलप् होवे. कितनी एक्सरसाइज़् करवेके कारण अपनूकु बोलनो आ रह्यो हे. ध्यानसु सोचोगे तो पता चलेगो के बोलवेकी अपनी सामर्थ्य इतनी स्वाभाविक और इतनी एक्सक्लुसिव् समझें के ये तो मनुष्यकी खासियत हे. पर देखो तो! बच्चाकु कितनी एक्सरसाइज़् करनी पड़े. कितने बरस तक बच्चा बिचारो तुतलाके बोलतो होवे क्योंके वो बोल नहीं पावे, वाकु समझ नहीं पड़े के तुम अन्दर क्या कर रहे हो, वाकु दीखे तो नहीं. तुम कुछ कुछ ढंगसु बोल दो. कभी दांतसु जीभ लगाओ, कभी तालुआसु जीभ लगाओ, कभी यों करो कभी कुछ करो तो वाकु बच्चा समझ नहीं पावे. जितनी वो ओब्सर्व करे उतनी वो रिपीट करे. तो वो सारी एक्सरसाइज़् करे करके बोल पावे हे. चलवेकी देखो; बच्चाकु घुटरुअन चलनो पड़े, घुटरुअन चलवेके पेहले पेटके बल चलनो पड़े. जानवरनूकी जितनी स्टेजेस् हें न!, सरिसृप, पक्षी, सब प्रोसेस्मेंसु बच्चाकु गुजरनो

पड़े. रेंगवेकी, कूदवेकी, चोपाया बनवेकी, तुम लोगनूने देख्यो होय के नहीं देख्यो होय, बच्चानूकु समझ नहीं पड़े. चलवेकी प्रक्रियामें उनकु ख्याल नहीं आवे के क्या हो रह्यो हे. बड़े कैसे चल पा रहे हें. वो क्या करें के वो दो हाथ और दो पैर सु ऊंटकी तरह चलवे लग जायें. घुटुरुअन चलवेकी उनकी स्वाभाविक प्रक्रिया होवे हे. मैंने कई बच्चानूकु ऑब्सर्व कियो हे के वो बड़ेनूकी कोपी करवेके चक्करमें बिचारे ऊंटकी तरह चलवे लग जायें. बड़ी मुश्किलसु अपनूकु चलनो आवे. बड़ी मुश्किलसु अपनूकु बोलनो आवे. पलनामें सोये बच्चाके सामने ऊपर घूघरा या डोलू लटकतो भयो होय वाकु वो छोटो बच्चा हाथ उठाके पकड़नो चाहे. पर वाके हाथमें नहीं आवे. माने रीचेबलू भी होय तो वाकु वो हाथ नहीं लगा सके क्योंके वाकी मसलूसूकु वो अभ्यास ही नहीं होवे के जा दिशामें जो चीज दीख रही हे तो वाकु मैं पकड़ सकूं. तो बिचारो हाथ हिलाके रेह जाये पर पकड़ नहीं पावे. वाकु पकड़वेके लिये भी बच्चाकु एक्सरसाइज़् करनी पड़े. यहां जो कछु दीख रह्यो हे वाके पास हाथ हिलाओ और जा दिन बच्चाकु हाथ लग गयो वासु तो फिर बच्चा वाकु पकड़ेगो विदाउट् मिस्टेक् पकड़ेगो, फिर खींचेगो, फिर तोड़ेगो, फिर तो सब कुछ करेगो. कभी बच्चानूकु घोड़ियामें देखोगे तो पता चलेगो के बच्चानूकु कितनी एक्सरसाइज़् करनी पड़े. जिन क्रियानूकु अपनू स्वाभाविक समझ रहे हें उन क्रियानूकु करवेके लिये भी अपनूकु कितनी आर्टिफिशियलू एक्सरसाइज़् करनी पड़ें हें. कोई भी अपनो ज्ञान, अपनो कोई भी बल, अपनी कोई भी क्रिया स्वाभाविक नहीं हे. माईन्ड इटू हर चीज आर्टिफिशियलू हे. स्वाभाविक अपने पास कुछ भी नहीं हे. पर आर्टिफिशियलू हे तो याको ये मतलब मत समझो के वो अनरियलू हे. आर्टिफिशियलू हे पर रीयलू हे.

इन लोगनूने क्या समझ्यो के जो भी चीज आर्टिफिशियलू

हे वो अनरियलू हे. अपने महाप्रभुजी अपनूकु ये समझा रहे हें "नहीं! नहीं! आर्टिस्ट वो हे और वा आर्टिस्टूने ये आर्टइफेक्टू पैदा करी हे जाके कारण तुम्हारी सारी पर्सोनेलिटी आर्टिफिशियलू हे, तुमकु या तरहसु घड्यो गयो हे या लिये तुम या तरहसु बिहेवू कर रहे हो." हर वाके कॉम्पोनेन्टू फॅक्टरकु छुट्टे छुट्टे पाड़ देंगे तो कोई भी कॉम्पोनेन्टू फॅक्टरमें ये एलीमेन्टू तुमकु नहीं मिलेगो, ये रिज़ल्ट तुमकु नहीं मिलेगो, जो रिज़ल्ट तुमकु आज ह्युमन पर्सोनेलिटीमें मिल रह्यो हे. ह्युमन पर्सनालिटीमें ट्रेमेन्डसू रिज़ल्ट मिले हें. महाप्रभुजी एक ठिकाने आज्ञा करे हें या बातकी के मनुष्यमें इतनी सामर्थ्य हे, ये आर्टिफिशियलू सामर्थ्य के दुनियांकु खतम कर सके हे. एक एटमूबॉम्ब फोड़ दो, एक न्युक्लियरबॉम्ब फोड़ दो, दुनियां खतम हो सके के नहीं, मनुष्यमें हे के नहीं ऐसी सामर्थ्य? इतनी बड़ी सामर्थ्य भी अन्तमें हे तो आर्टिफिशियलू. अपने भीतर स्वाभाविक नहीं हे.

प्रश्न : स्वाभाविक होतो तो क्या होतो?

उत्तर : यदि स्वाभाविक होतो ना तो कभी स्वीचू-ऑफ नहीं होतो. कभी लकवा नहीं होतो; कभी जॉइन्टपेइनू नहीं होते; कभी बेहोशीमें जुबान लड़खड़ावे नहीं लग जाती; कभी आदमी अन्धो नहीं हो जातो; कभी बेहरो नहीं हो जातो. ये सब हो रह्यो हे के नहीं? क्यों हो रह्यो हे क्योंके जोड़ तोड़ बैठाके रिज़ल्ट ला दियो हे, पर वा जोड़-तोड़में जरा भी फर्क पड़यो तो एडवर्सू इफॅक्ट तुरत प्रकट होवे लग जायें. स्वाभाविक नहीं हे.

बड़े मंदिरमें हेमराजभाई हते, उनकु आखो पुरुषोत्तमसहस्रनाम बाईहार्ट हतो. आज ६८ बरस भये मोकु अभी तक पुरुषोत्तमसहस्रनाम याद नहीं हे. पाठ कियो कितनी बखत पाठ किये, एक बार नहीं पच्चीसनू बार पाठ कियो होयगो पर आखो पुरुषोत्तमसहस्रनाम याद नहीं हे. उनकु पुरुषोत्तमसहस्रनाम याद हतो. पर डिफिकल्टी उन बिचारेनूकी

क्या हती के उनकु इन्सोम्निया हतो. सो पुरुषोत्तमसहस्रनाम पाठ करते करते उनकु झोका आ जातो. ''**पुराणपुरुषो विष्णुः...**'' केहते और झोका आ जातो और फिर भूल जाते के कहां छूट्यो पाठ! फिर पाछे पुरुषोत्तमसहस्रनाम शुरु हो जातो. तीन बजे तक पूरो ही नहीं होतो हतो. उनके साथ तकलीफ ये हती के झोका आयो नहीं के; दाऊजीके दर्शन करवे आते तो गरदन यों करके पाठ करते और फिर भूल जाते के कहां छूट्यो? फिर पाठ शुरु हो जातो. रातकु नींद नहीं आती करके उनकु दिनभर झोका आते; दिनभर झोका आते तो पुरुषोत्तमसहस्रनाम पूरो ही नहीं होतो हतो. देखो अपन् याद भी कर लें ना, तब भी लफड़ा हे. मेरे जैसे व्यक्तिकु याद नहीं होय तो वो बात तो ठीक हे के पुरुषोत्तमसहस्रनामकी कड़ी नहीं याद आ रही हे; उनकु तो बाईहार्ट हतो. आर्टिफिशियल् होवेको ये प्रभाव! उनको पाठ पूरो ही नहीं होतो. हमारे बड़े मन्दिरमें खास सोहिनी करते. सोहिनी करते करते सो जाते. फिर पुरुषोत्तमसहस्रनाम भूल जाते. फिर प्रारम्भसु ''**पुराणपुरुषो विष्णुः पुरुषोत्तम**'' पाठ शुरु करते. बहोत ट्रेजेडी हती बाईहार्ट होवेके बाद भी वो कोई तरहसु पूरो नहीं होतो. सोचो के बाईहार्ट नहीं होवे तो क्या होवे! उनकु ये तकलीफ पता चलती होयगी सो पुस्तकमें पढ़ रहे हें पर ''आवतु नथी, अरे आवे क्यां थी! आवशेज् नहीं.'' हर ज्ञानकी ये बेसिक प्रोब्लम हे, जो अपने हर आर्टिफिशियल् फन्क्शन् हें वो आवे तो कछु भलतो ही याद आ जावे. आर्टिफिशियल् होवेके कारण ये सारी प्रोब्लम्स् अपने साथ आवें हें. क्योंके ये स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं हें. तो ब्रह्मके बारेमें ये बात कही ''**परास्य शक्तिः विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च.**'' ज्ञान बल क्रिया की विविध शक्तियें वामें आर्टिफिशियल् नहीं हें, स्वाभाविक हें.

(महत्‌को रोल् = युनिवर्सल् अवेयरनेस् केओस् या कोसमोस्)

अब एक बात ध्यानसु समझो के वा, विविध शक्तिवाले ब्रह्ममेंसु

वाकी सर्वभवनसामर्थ्यके कारण, वाके सत्यसंकल्पके कारण, वाने जो सृष्टि पैदा करी, वा पैदा करी सृष्टिमें वाने शक्तियें डालीं हें. एक चेतना पुरुषके माध्यमसु डाली हे. एक क्रियाशक्ति वाने प्रकृतिके माध्यम्सु डाली हे. उनकी क्रिसक्रोसकी आर्टिफिशियलिटीसु पुरुषकु और प्रकृतिकु भी कर्ता बना दिये.अब ये वाकी आर्टइफॅक्ट हे.

याके कारण जैसे प्रकृतिसु क्रिया आई हे, ऐसे ही पुरुषसु कुछ कुछ ज्ञानकी भी प्रोग्रामिंग वामें आई. वो ज्ञान कौनसो? महद्‌के कारण, प्रकृति और पुरुष के इन्टरमिन्गल् होवेसु महत्तत्त्व पैदा भयो. महत् आखे जगत्‌की ब्लुप्रिन्ट हे करके जो कछु भी जगत्‌में हो रह्यो हे, वाकी ब्लुप्रिन्ट महत्‌में रही भई हे. वो एक यूनिवर्सल् अवेयरनेस् हे. ऐसे अपन् केह सके हें के सबसु पेहले यूनिवर्स्‌के पैदा होवेके पेहले एक यूनिवर्सल् अवेयरनेस् पैदा भई हे. कोई भी चीजकु जब पैदा होनो हे, तो जो पैदा होवेवाली हे वाके बारेमें अवेयरनेस् होयगी तब तो वो चीज पैदा होयगी ना! आज भी साईन्स्‌के अलग अलग जो ब्रांचिसकी फिलोसिफी हें उनमें ये झगड़ा बहोत तीखो चल रह्यो हे ''ये सृष्टिके पैदा होवेमें कोई प्रोग्राम हे के नहीं हे? केओस् हे के कॉसमोस् हे?'' कई लोग कहें हें ''केओस् हे.'' कुछ लोग कहें ''नहीं, केओस् नहीं कोसमोस् हे.'' कुछ लोग कहें हें ''कोसमोस् हे पर एक्सीडेन्टल् हे.'' कुछ लोग कहें ''नहीं नहीं, केओस् हे पर सिस्टमेटिक केओस् हे.'' जैसे ये टेररिस्ट् केओस् पैदा करे हें. एकदम केल्कुलेटड् सिस्टमेटिक् केओस् पैदा करें. जैसे बसस्टॉपपे अपन् क्यू तोड़के सिस्टमेटिक् केओस् पैदा करें हें वो केओस् हे. बसमें क्यूकु तोड़नो केओस् हे पर वामें भी कुछ प्लान होवे हे के कब अपनूकु क्रोस् मारनो हे आगेवालेके सामने, कब ओवरटेक कर जानो हे, तबतक अपन् क्यूमें बड़े सभ्य बनके खड़े रहें. जैसे ही बस आई नहीं, तुरत ओवरटेक करके घुसो बसमें.

ये डिफरेन्ट थ्योरीज़् साईन्स्में डिस्कस् हो रही हें के सिस्टमेटिक् केओस् हे; के एक्सीडेन्टल् कोसमोस् हे; के प्योर कोसमोस् हे; के प्योर केओस् हे; कोसमोस्को मतलब हर चीजको ऑरगेनाईज्ड् होनो. जैसे शहरमें एक झोंपड़ा बन्यो, दूसरो झोंपड़ा बन्यो, तीसरो झोंपड़ा बन्यो; कभी क्या होवे! एक झोंपड़ा यहां बन्यो हे तो वाने टाउनप्लानिंग तो करी नहीं होवे, तो दूसरेके रास्तामें अपनो झोंपड़ा बना दे. तो दूसरेकु निकलवेको रास्ता कहांसु जायगो? जैसे पुरानी गलीन्के रास्ता कैसे होवें? रास्ता आवे तो अचानक बीचमें गली आ जाय, मज़ार आ जाये, गणपति आ जाये, ये सब रास्तामें पैदा भयो केओस् हे. अपन् जा रहे हें, अचानक कोई चीज आ गई; तो रास्ता तो सीधो होनो चहिये हतो के नहीं. यदि ऑरगेनाईज्ड् होयगो तो अपन् पेहले रोड बनायेंगे, प्लॉट्र् काटेंगे. मकान होंयगे वो वा प्लॉट्में होंयगे वा रोडपे नहीं होंयगे. पुराने अनसिस्टमेटिक बसे भयेमें क्या होतो? मैंने यहां मकान बनायो, दूसरेने वहां मकान बनायो और तीसरेने दोनोंके रास्ताके बीचमें मकान बना दियो. रोक लो अब रोक्यो जा सके ये तो! कैसे रोकोगे! अब तुम घूमधामके जाओ, बाहर जावेके लिये. तो वो केओस् हो गयो.

हर पुष्टिमार्गीय हवेलीमें पब्लिक्को केओस् होवे. हर चर्चमें और मस्जिदमें भक्तन्को कोसमोस् होवे. कभी भी चर्चमें या मस्जिदमें केओटिक् सिच्युएशन् नहीं मिलेगी. जब नमाज़ पढ़ेंगे तो एक एक मील लम्बी लाईन होवे पर एकदम कॉसमोस् होवे. अपने यहां दस जने भी दर्शन करवे हवेलीमें आयेंगे तो वो वाकु धक्का मारेगो, वो वाकु धक्का मारेगो, सब कोहनियां मारेंगे. ये सब क्या हे ये पूरो केओस् हे, कोसमोस नहीं हे. और सिस्टमेटिक् केओस् हे सृष्टिकी या तरहसु अलग अलग वैरायटी होवें.

प्रश्न : प्रकृतिसु कुछ ज्ञानको गुण आवे हे वो समझमें नहीं

आयो, क्रियाको तो फिरभी समझमें आयो.

उत्तर : मैंने पेहले शुरुआतमें येही बात कही के ब्रह्म जो के सच्चिदानंद हे, वो सच्चिदानंदमेंसु सत्तामेंसु सत्त्वगुण प्रकट्यो; चैतन्यमेंसु राजस्गुण प्रकट्यो; और आनन्दमेंसु तमोगुण प्रकट्यो. वो स्प्लिट् भये. सच्चिदानंद ब्रह्म जा बखत स्प्लिट् होवे वा बखत वो सत्त्व, रज और तमो गुण बन जाये. वो स्प्लिट् होवेके कारण सत्त्व, रज और तमो गुण बने हे. वा सत्त्वमें कोई भी चीजको रिफ्ेक्शन् अपनेमें करवेकी मिरर जैसी सामर्थ्य हे. ज्ञानको पेहलो सिद्धान्त् ये हे; देखो आँखकु चेक करो. आँखमें अपने वा तरहकी ट्रांसपेरेन्सी हे के वस्तुपे जो लाईट पड़ रही हे, वो रिफ्लेक्ट होती लाईट अपनी आँख अन्दर ले सके हे और वो डिजीटल् इमेज अंदर पैदा कर सके हे; करके अपनूकु दीखे हे. बाहर पैदा होतो भयो साउन्ड्, वो साउन्ड् बाहर पैदा हो रह्यो हे, साउन्ड्को जो सोर्स् हे वहां, जैसे साउन्ड् यहां पैदा हो रह्यो हे, पर तुम्हारे कानमें जो सामर्थ्य हे वामें एक परदा हे और वो साउन्ड वा परदापे टकटक करे हे और तुम्हारे कानके भीतर तुमकु सुनाई पड़े हे. साउन्डके फन्क्शन् बाहर कुछ और ढंगके होवें हें और कानके अन्दर वो वायब्रेशन्स् कुछ और ढंगके हो जायें हें. वामें बायोलॉजिकल् वायब्रेशन् आवें. बायोकॅमिकल् भी आवें, वामें रस भी भर्यो होवे. वा तरीकेके वायब्रेशन्के कारण अपने भीतर एक डिजीटल्इमेज पैदा होवे. गन्धको भी एग्ज़ेक्ट येही प्रिंसिपल् हे के जो पराग बाहर उड़ रहे हें, वो तुम्हारे नाकमें जावें और कॉरोस्पोन्डिंग उन गन्धकी कोई डिजीटल्इमेज् नाकमें पैदा होवे हे. जो चीज रिफ्लेक्शन् केरी कर सकती होय वो ज्ञान कर सके. जामें रिफ्लेक्शन् नहीं होवे; याहीलिये संस्कृतमें बड़ो मजेदार श्लोक हे, तुम अपनेपे मत ले लीजियो; गुरु तो सबकु बराबर ज्ञान दे; पर समझमें सबकी अपनी अपनी बुद्धिके मिररके कारण आवे. वाको उदाहरण कैसे दियो हे के प्रकाश तो सबपे पड़े पर कांचपे पड़े तो रिफ्लेक्शन् पैदा होवे, घड़ापे पड़े तो कोई रिफ्लेक्शन् पैदा नहीं होवे. क्योंके वामें

वा प्रकाशकु पूरे तरहसु अपने भीतर डुप्लीकेशन्की फॅसेलिटी नहीं हे. वो रिफ्लेक्ट कर दे पर वो अपने भीतर वाको डुप्लीकेशन् कुछ नहीं करे. नहीं करे तो वाको इमेज रिफ्लेक्शन् वामें नहीं आवे. हर बखत जहां भी ज्ञानकी सामर्थ्य हे, वाकी सबसु पेहली शर्त हे, स्वाभाविक ज्ञानकी नहीं हों, माइन्ड इट ये बात मैं स्वाभाविक ज्ञानकी नहीं केह रह्यो हूं. आर्टिफिशियल् ज्ञानमें हर वक्त् येही सिद्धान्त काम कर रह्यो हे के बाहर होते भयेको तुम्हारे भीतर रिफ्लेक्शन् आनो चहिये. अब वो लाईटरिफ्लेक्शन् होय, चाहे साउन्ड्रिफ्लेक्शन् होय, स्मेलरिफ्लेक्शन् होय, टेस्टरिफ्लेक्शन् होय, स्पर्शको रिफ्लेक्शन् होय, जैसो भी रिफ्लेक्शन् होय वो तुम्हारे भीतर रिफ्लेक्ट् होवे तो वाको तुमकु वो ज्ञान होवे, तुम्हारे भीतर वो रिफ्लेक्ट् नहीं होवे तो तुमकु ज्ञान नहीं होवे, करके प्रकृति वैसे जड़ हे पर वाके सत्त्वगुणमें क्योंके रिफ्लेक्ट हो रह्यो हे, करके वो ज्ञान पैदा कर दे. प्रकृतिको तमोगुण पाछो घड़ाको जैसो हे. तुम तुम्हारी कितनी बेट्री वा घड़ापे डालो पर वापे कोई रिफ्लेक्शन् होवेवालो नहीं हे. कांचपे थोड़ी भी लाईट आई नहीं तो कांच तुरत रिफ्लेक्शन् पैदा कर दे. अब वो आर्टिफिशियल् ज्ञान पैदा होवेको तरीका हे.

प्रश्न : सत्त्व रज तम के गुणनूसु प्रकृति घड़ी भई हे तो फिर जड़ क्यों हे? और पुरुष चैतन्य क्यों हे?

उत्तर : मैं समझूं के तू गलत सवाल पूछ रही हे. मोकु ऐसी समझ आ रही हे के यदि रिफ्लेक्शन् मेरेमें अच्छी पड़ी हे तो शायद तू ये पूछनो चाह रही हे के सच्चिदानंदसु घड़ी भई हे तो जड़ क्यों हे? सत्, रज, तम् तो जड़ ही हें तब उनसुं घड़ी भई तो जड़ ही होयगी ना!

याकु ध्यानसु समझो. अभी जड़ चेतन की बात छोड़ दे. अपन् सजीव और निर्जीव की बात पकड़ें. अपनो दांत, अपनो

नख, अपने बाल, अपने सजीव सेलसु बने भये हें के नहीं? ये सजीव हें के निर्जीव हें? एक तरहकी कॉमाकी स्टेट्में हें. काटो तो सजीवकी तरह बढ़नो उनकु आवे हे पर तोड़ो तो दर्द नहीं हे. नख काटो तो दर्द हे? दर्द नहीं हे करके क्या वो बिल्कुल निर्जीव हे? निर्जीव हे तो बढ़ कैसे रह्यो हे? तो ये एक आर्टिफिशियल् व्यवस्था शरीरने पैदा करी हे. क्यों पैदा करी? क्योंके नेचरमें जीवनके लिये अपने शरीरकु ये आवश्यकता हती के अपनी स्किन् एक्स्पोज् न हो जाये बाहरके एक्स्ट्रीम कोल्ड या एक्स्ट्रीम हीट्की क्लाईमेट्सु. शरीरने एक आर्टिफिशियल् डिवाइस् पैदा करी. खूब रुआंटाये उग गये. जो ठण्डी या गरमी आ रही हे, अब तो क्या हे अपन् कपड़ा पेहरवे लग गये करके रुआंटाये कम हो गये; पर मूलमें ये बाल क्यों उगे? के अपनी स्किन् एक्स्ट्रीम् क्लाईमेट्में एक्स्पोज् न हो जाये. वापे एक शीट रहे. वाके लिये रुआंटाये भये. वो शरीरने ही या तरहसु प्लान् कियो के एक्स्ट्रीम् क्लाईमेट मेरेकु असर नहीं करे. अब वो सजीव हे के निर्जीव हे; उन दोनोंके बीचकी कोई एक स्टेट हो गई ना! अपन् वाकु एब्सोल्युट निर्जीव तो केह नहीं सकें. निर्जीव केहते भये भी वामें जीव तिरोहित हे, अपनी टरमिनोलॉजीमें अपन् ये ही तो कहेंगे के नहीं? ऐसे प्रकृतिके सत् रज तमो गुणनूमें ज्ञान तिरोहित हे. शतप्रतिशत नहीं हे यों अपन् नहीं केह सकें पर तिरोहित हो गयो हे. विड्रो कर गयो हे. अब ये बात खाली नख या बालके लिये ही नहीं हे. अपनी पैरकी जो चमड़ी हे ना, वाकी भी येही सिच्युएशन् हे. बच्चान्की चमड़ी कितनी कोमल होवे? अपने हाथसु ज्यादा कोमल होवे. छोटो बच्चा होवे ना तो अपनी जीभसु ज्यादा कोमल वाकी पगतली होवे हे. कितनी सेन्सिटिव् होवे. अपन्ने चल चलके वाकु हार्डन् कर दी हे. अब हार्डन् कर दी माने कितनी हार्डन् कर दी के थोड़ी एक परत काट भी लो ना तो कोई फरक नहीं पड़े. अपन् नख काटें वैसे चमड़ी भी काट सकें हें. अब चमड़ी सजीव हे के निर्जीव

हे? पाछे फिर वोही प्रश्न आयो. पगतलीकी चमड़ीमें जीवनको अभाव नहीं हे; पर जीवितता पीछे रिट्रीट कर गई हे. एग्ज़ेक्ट सच्चिदानंदको जो नेचर हे होमोजीनियस होवेको, स्वाभाविक ज्ञान क्रिया बल होवेको. होमोजीनियस् कॅरेक्टर वाको वो रिट्रीट कर गयो हे या स्प्लिट् कर गयो हे. खुशी भई मोकु अच्छो सवाल कियो तेंने.

(ब्रह्मके स्वतः सामर्थ्य स्वाभाविक ज्ञान बल क्रिया)

''**परास्य शक्तिर् विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च.**'' (श्वेता.उप.६।८) या उपनिषद्के वर्णनके अनुसार, ब्रह्ममें जो भी कुछ क्रिया, जो भी कुछ ज्ञान, जो भी कुछ बल प्रकट हो रह्यो हे वो सबसु पेहले आर्टिफिशियल् नहीं हे, स्वाभाविक हे. अब अपन् आर्टिफिशियल्को मतलब तो अच्छी तरहसु समझ गये आर्टिफिशियल्को मतलब क्या? के अपने आपमें कोई भी एक कॉम्पोनेन्ट फॅक्टरसु अपन्कु रिज़ल्ट नहीं मिल रह्यो हे. पर सबकी जोड़-तोड़ बैठाओ तो वो रिज़ल्ट मिल जाये. जैसे खिचड़ीको स्वाद न दालमें हे, न चावलमें हे पर खिचड़ी पकाओ तो अपन्कु एक अलग टेस्ट खिचड़ीको आवे. वो टेस्ट अकेली दालमें भी नहीं हे, वो टेस्ट अकेले चावलमें भी नहीं हे. खीर पकाओ तो एक अलग टेस्ट आवे खीरको जो न चावलमें हे और न दूधमें हे. पर दूध और चावल एक साथ पकके एक नयो फ्लेवर डॅवलप् करे हें. ये आर्टिफिशियल् हे. चावलको खुदको एक स्वाद हे, दूध और चावल मिलाके अपन्ने जब खीर पकाई, वो तीसरो स्वाद आर्टिफिशियल् स्वाद हे. तो अपने जो गुण हें, अपने कर्म, अपनो ज्ञान, अपनी क्रिया, अपनो बल वो या तरीकेको टोटली आर्टिफिशियल् हे. पर ब्रह्ममें अपन् आर्टिफिशियल् मानें तो टॉप फ्लोर अपनो वेकेन्ट् समझनो. वेकेन्ट् होय तो ही ऐसी बात अपन्कु समझमें आवे; नहीं तो जरूरत नहीं हे.

एक बात समझो सीधोसो एक उदाहरण तुमकु दऊं. जैसे बच्चाकी

बात अभी मैने बताई के बच्चा मम्मा बोले, पप्पा बोले. 'प, फ, ब, भ, म' ये होंठसु टकरावे तो ये शब्द निकलें. अब स्पीकरमें जो आवाज आ रही हे वामें कौनसे होंठ कौनसे होंठसु टकरा रह्यो हे? कोई होंठ कोई होंठसु टकरा नहीं रह्यो हे. 'आ' बोलवेकी लिये अपनूकु मुंह फाड़नो पड़े, 'ऊ' बोलवेके लिये अपनूकु होंठकु गोल करनो पड़े. स्पीकरमें तुम जाके देखोगे के कहां हे होंठ? 'ऊ' कहांसु निकलेगो? होंठ तो या स्पीकरमें हें नहीं. अब देखो स्पीकरमें कोई और सिस्टम्के कारण साउन्ड निकल रह्यो हे माइन्ड इट! अपने यहां आर्टिफिशियल्के लिये वो व्यवस्था या तरहसु पैदा करी हे. ये कैसो चक्कर हे, जैसे अपन् पोपटके सामने मिट्टू मिट्टू करें. अब वो पोपट जो बोल रह्यो हे तो होंठ कहां हें वाके? 'म' तो बिना होंठके बोल्यो ही नहीं जा सके! तो पोपट मिट्ठू काहेसु बोलेगो? चोंचसों बोले. अब 'म' कैसे निकल रह्यो हे वहां? वहां बिना होंठके भी 'म' निकल रह्यो हे मिट्ठूको. पोपट तो होंठसु होंठ टकरावे तो 'पो प' होवे; वाके होंठ ही नहीं हे तो पोपट निकल कैसे रह्यो हे? जिन जानवरनूकु होंठ हें घोड़ाकु, गधाकु वो पोपट बोल ही नहीं पावें. उनकु पचास बखत पोपट बोलो तो नहीं बोल पावें; हिंकारेगो या रेंकेगो पर पोपट नहीं बोल पायगो. अब ये क्या चक्कर हो गयो! अपन् अपने पॅरामीटरसु सब जानवरनूकु नहीं नाप सकें हें, तो भगवानूकु कैसे नापेंगे? अपने जो पॅरामीटर हें, अपनी जो आर्टिफिशियल् सामर्थ्य हें, वो या तरीकेके प्रोग्रामूसु अपनेमें जनरेट् कर दी गईं हें. वाके कारण अपन् वाकु एकमेव एब्सोल्युट प्रोपर्टी मानें के एकमेव के पोपट बोलवेके लिये होंठ टकरानो जरूरी हे, तो बहोत मुश्किल हे. सब जगह मिलनो मुश्किल हे. भगवानूमें; अपनेमें ये आर्टिफिशियल् सामर्थ्य हे तो जरूरी नहीं हे के सब जगह वो अपने ही नेचरमें होय. अलग अलग जानवरनूमें भी वो अलग अलग नेचरमें हे तो भगवानूमें भी कोई अलग ढंगसु (स्वाभाविक) क्यों नहीं हो सके!. घोड़ा गधा 'पोपट!' बोल ही

नहीं पावें. उनकु पचास बखत 'पोपट!' बोलो तो नहीं बोल पावें; हिंकारेगो या रेंकेगो पर 'पोपट!' नहीं बोल पायगो. अब ये क्या चक्कर हो गयो? अपन् अपने पॅरामीटरसु सब जानवरनूकु नहीं नाप सकें हें, तो भगवानूकु कैसे नापेंगे! अपने जो पॅरामीटर हें, अपनी जो आर्टिफिशियल् सामर्थ्य हें, वो या तरीकेके प्रोग्रामूसु अपनेमें जनरेट् कर दी गईं हें. वाके कारण अपन् वाकु एकमेव एब्सोल्युट प्रोपर्टी मानें के 'पोपट' बोलवेके लिये होंठ टकरानो जरूरी हे, तो बहोत मुश्किल हे. सब जगह मिलनो मुश्किल हे. अपनेमें ये आर्टिफिशियल् सामर्थ्य हे, तो जरूरी नहीं हे के सब जगह वो अपने ही नेचुरके अनुसार होय. अलग अलग जानवरनूमें भी वो अलग अलग नेचुरमें हे तो भगवानूमें भी कोई अलग ढंगसु क्यों नहीं हो सके हे?

या बातकु समझावेके लिये उपनिषद्ने एक बड़ी गजबकी बात कही हे. "**अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यति अचक्षु सः शृणोति अकर्णः**" (श्वेता.उप.३।१९) '**अपाणिपादो**' न तो वाके हाथ हें, न वाके पैर हें, पर बहोत तेज दौड़ सके हे. चहिये वहांसु वो कोईकु भी पकड़ सके हे. आँख नहीं हे पर एकदम क्लीयरकट देख सके हे. बिना कानके भी सारी बात अच्छी तरहसु सुन सके हे. वामें ये स्वाभाविक क्रिया हे. ये क्रियाएँ अपनेमें आर्टिफियशली प्रोग्राम्ड् हें. जो बात वामें स्वाभाविक हें, अपनेमें वो आर्टिफियशली प्रोग्राम्ड् हें. याहीलिये आँख फूट जाये तो दीखनो बंद हो जाये. परदा फट जाये तो सुनाई देनो बन्द हो जाये.

तिरुपतिबालाजीमें एक बड़ी मजेदार बात हुई, आप लोगनूने भी शायद पढ़ी होयगी के कोई एक महाराज हते. वो सबको रोग ठीक करते हते चरण लगा लगाके; एक भक्त आयो और चरण ही काटके ले गयो. वाने मनमें कही "ये चरण तुम्हारे पास नहीं मेरे पास होने चहियें." महाराजने पुलिसकु फरियाद करी "कोई भक्त

मेरो पैर ही काटके ले गयो.'' पुलिसने डिस्क्रिप्शन् मांगी तो अब वहां भीड़ इतनी हती के कौन काटके ले गयो वाको पता ही नहीं चल्यो. अब उनने कही ''अब आशीर्वाद कैसे देनो?'' सबको रोग पैर लगा लगाके ठीक करते हते. तो एक भक्त पैर ही काटके ले गयो. या पैरकी तुमकु क्या जरुरत हे! हम दुःखी हें तुम तो दुःखी हो नहीं ना! तुमतो अलौकिकसामर्थ्यवान 'अपाणिपादो' हो. पुलिसने उनसु डिस्क्रिप्शन पूछी तो उनकु येही नहीं पता के कौन काटके ले गयो! काट जाय पादो! क्योंके अस्वाभाविक हे ना! स्वाभाविक होय तो कोई काट नहीं सके पर अस्वाभाविक कोई एक सामर्थ्य पैदा हो गई तो एक थोड़ेसे झटकामें कोई भी दूर कर सके हे. अब वो महाराज परेशान के कौनकु पैर लगाऊं? भक्तकु भाव आ गयो. ओहोऽऽऽहो ऐसे चरण! ये चरण तो मैं अपने पास संग्रह करके रखूंगो. खेल खतम और बाबाजी दुःखी.

तो ब्रह्ममें कोई या तरीकेकी सामर्थ्य नहीं हे. ज्ञानकी, कर्मकी, बलकी सब सामर्थ्य वामें स्वाभाविक हें. अपनेकु ऐसो लगेगो कि ब्रह्मकी कोई अलौकिक बात अपन् कर रहे हें. वैसे तो ब्रह्म खुद लोकमें बद्ध नहीं हे, लोकमें पैदा नहीं भयो हे, वा अर्थमें ब्रह्म अलौकिक हे. एक बार नहीं सत्रहसो साठ बार. पर ये फिनोमिना अलौकिक नहीं हे, लोकमें भी ये फिनोमिना अवेलेबल् हे. जैसे अपनो ब्लडसेल् खावे हे, कोई भी वासु पूछ लो. मुंह हे? कोई भी एलीमेन्ट वामें आवे तो ब्लड्सेल केच करे हे. तो वाके हाथ हें? ब्लड्सेलकु जा डायरेक्शन्में जानो होय वा डायरेक्शन्में जावे हे. जावे हे तो अपनेकु तो नाक हे तो पता चले के नाककी सूधमें जाओ. पर क्या सेलकु नाक हे? कौनसी सूधमें जानो? सब काम करे के नहीं? अपन् यों समझें के नहीं करे. जैसे ग्रहण करे हे वैसे विसर्जन् भी सेल करे हे. जिनने माइक्रोबायोलॉजी पढ़ी होयगी उनने पढ्यो होयगो के जैसे सेल ग्रहण करे हे, जैसे अपन्

अन्न खावें और मलमूत्र त्याग करें वैसे सेल भी विसर्जन् करतो होवे. तो कहां हें वाके अंग? **''अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यति अचक्षुः स शृणोति अकर्णः:''** पेड़कु आँख हे के प्रकाश कहांसु आ रह्यो हे? जा तरफसु प्रकाश आतो होय वा तरफ पेड़की डाली मुड़ जाय के नहीं मुड़ जाय? मुड़ जाय. मेरे यहां बालकनीके ऊपर वड़को पेड़ उगे. अब वड़को पेड़ उस्तादी क्या करे, उगे ऊपर और डालियें नीचे डाले. मेरे कुंडामेंसु पानी लेवेके लिये नीचे आवे. मोकु बड़ी चेलेन्जिंग बात लगी के ये तो बहोत बदमाशी हे. तो मैंने एक नियम बनायो के जबभी डाली नीचे आवे तो वाकु काटनो. चार छे महीना काट्यो डालियां फैलानी शुरु कर दी. जब भी नीचे आती डालीकु काटूं तो वाने इधर उधर डालियें फैलानी शुरु कर दी. तो वड़कु कैसे पता चली? काट रह्यो हूं वो तो खैर पता चल सके, पर नीचे शैतान बस रह्यो हे तो अब या बाजू चलो. वाने अपनी जड़ें नीचे डालवेके बजाय तिरछी डालनी शुरु कर दी. कहांसु ये समझ आई? बुद्धि कहां हे वाकी? वाकु सेन्स् कहां हे? वाकु डायरेक्शन् कैसे पता चल्यो? **''अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यति अचक्षुः स शृणोति अकर्णः:''** वाकु पता चले के नीचे कोई शैतान बस रह्यो हे, जो हर बखत जड़ काटे तो अब या डायरेक्शन्में नहीं पर यों जानो. जाके देखियो के अभी वो पेड़ चल रह्यो के मर गयो. वो भी केह रह्यो होयगो ''उसकी गलीमें मुझको एक बार ले चलो. मजबूर करके मुझको मेरे यार ले चलो. उसके कुंडेमें मुझको एकबार ले चलो.'' वाकु भी शायद मेरी याद आ रही होयगी क्योंके मेरे कुंडान्मेंसु जल खींच ले. ऐसो उस्ताद वड़को पेड़. या रहस्यकु समझो के **''अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यति अचक्षुः स शृणोति अकर्णः''** अपने लोकमें भी ये फिनोमिना अवेलेबल् हे के नहीं? ये सारे उदाहरण हे जिनपे तुम निगाह रखोगे तो तुमकु दीखेगो के ऐसी कोई बात अपने उपनिषद्ने नहीं कही हे जो कोई अनहोनी होय. सब बातें ऐसी हें के जो

अपन् अनुभव कर सकें, अपन् स्वीकार सकें हें. अपन् अपनी निगाह रखें तो पता चले नहीं तो पता नहीं चले. ब्रह्ममें सामर्थ्य हे के वो सारी क्रियायें स्वाभाविक रूपमें करे हे.

अब मैं अपने टॉपिक्पे आ रह्यो हूं, तुमकु लगे के बात कहांसु कहां चली गई, कहीं भी नहीं गई जहां जानी चहिये हती वहीं मैं आ रह्यो हूं. याको मतलब ये भयो के बिना करणके सारी क्रिया कर रह्यो हे. हाथ पैरके बिना तेज दौड़के पकड़ सके हे. माने तेज दौड़वे और पकड़वेके करणनूके बिना वो क्रिया कर सके हे. ''**पश्यति अचक्षु स शृणोति अकर्णः**'' मतलब देखवेके करणनूके बिना वो देखवेकी क्रिया कर सके हे. सुनवेके करणनूके बिना भी वो सुन सके हे. अब अपनूकु आश्चर्य होयगो के ऐसे कैसे सुन सके हे? एक बात ध्यानसु समझो के ये बात केवल ब्रह्ममें ही अवेलेबल् नहीं हे, वृक्षनूमें अवेलेबल् हे बॉसने प्रयोग करके सिद्ध कियो के वृक्षनूके कान नहीं हे पर वृक्ष संगीत सुने हे. अकर्णः श्रुणोति वृक्षः. पेड़ संगीत सुनें हें. गीत सुनके वृक्ष भी अच्छो खिले हे. अब अपनूकु कानसु सुनवेकी करण मौजूद हे करके अपन् क्या मानें हें के जो भी सुन रह्यो हे वाकु कान होयगो. ये जरूरी नहीं हे. जो भी देख रह्यो हे वाकु आँख होनी चहिये. आँख बिना कैसे दीखेगो? अरे तुम्हारे पलंगमें खटमलकु आँख नहीं हे पर वाकु बराबर पता चले जब लाईट जुड़े तो बिना आँखके. पीठपे पता चले. वाके आँख नहीं हे पर वाकु पीठपे पता चले के लाईट जुड़ी. लाईट जुड़वेके साथ ही वो छुप जाये. अपन् अपनी बात सोचें, एक साधारण बात सोचो, घरमें जो क्रोक्रोच घुसे ना, टेरेरिस्टनूकु तो कितनो प्लान् करनो पड़यो; पेहले भेजनो पड़यो, फोटो लेने पड़े, तब जाके ताजकी डिज़ाइन् समझनी पड़ी; पर क्रोक्रोच तो घुसवेके साथ ही कहां छुप जाये पता ही नहीं चले. टेरेरिस्ट्को बाप हे क्रोक्रोच; टेरेरिस्ट्कु ट्रेनिंग लेनी होय तो क्रोक्रोचसु लेनी

चहिये. घरमें घुस्यो नहीं और फट गायब. अब वो घुस्यो नहीं तो वाकु पता कैसे चले के कहां छुपनो हे? वो बोलतो होतो तो सचमुचमें सवा रुपया नारियल धरवेकी इच्छा होवे के भई ये ब्रह्मज्ञान तो दे के अभी तो तू घरमें घुस्यो और घुसवेके साथ ये रहस्य तोकु कैसे पता चल गयो के याके पलंगके नीचे छिपनो हे? अपन् जबतक सोचें तबतक तो वो गायब हो जाये. कहांसु आई इतनी बुद्धि? बिना बुद्धिके वो कितनो सोच रह्यो हे, बिना प्लानिंग्के वाके पास कितने रेडीमेड प्लान्स् अवेलेबल् हें, ये टेरेरिस्ट्नूकु सब प्लान् बताई गई हती, सारे फोटो दिये गये हते, तब जाके भी वो सक्सेसफुल् नहीं हो पाये. क्रोक्रोच कितनो सक्सेसफुल् हे यामें. क्रोक्रोच बिना बुद्धिके कितनो सोच पा रह्यो हे, या रहस्यकु समझो. ये ऐसो फिनोमिना नहीं हे, जा फिनोमिनाकु समझवेकेलिये अपनूकु ज्यादा जोर लगानो पड़तो होय. थोड़ोसो ऑब्सर्व करेंगे या सृष्टिमें तो वो सारे गुण मौजूद हें ''**अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यति अचक्षु शृणोति अकर्णः**'' ब्रह्ममें ये सारी क्रियायें स्वाभाविक हें पर सृष्टिमें वो सारी क्रियायें करणके द्वारा सम्पन्न करी गईं हें. वहांसु सृष्टि और सृष्टा को भेद प्रकट हो रह्यो हे. सृष्टिमें जबभी कोई क्रिया प्रकट हो रही हे तो वाको कोई एक करण फिक्स् कर दियो गयो हे. ऑलमोस्ट ये बात कैसी हे? अपन् याकु समझ सकें हें के जैसे पुराने डॉक्टरें हते ना! वो लफड़ा नहीं करते. पेशेन्ट्कु चेक् करते और दवाई दे देते और मरीज ठीक हो जातो; पर आज डॉक्टरके पास गये नहीं और महापंचायत; ये टेस्ट कराओ, वो टेस्ट कराओ. रिज़ल्ट तो पाछो वैसोको वैसो ही हे कोई ठीक होवे कोई मरे. सब कोई जी नहीं रहे हें, सब कोई मर नहीं रहे हें. वो पेहले भी वैसो ही हतो के कोई जीतो हतो कोई मरतो हतो. पर टेस्ट बहोत हो गये. क्यों टेस्ट ज्यादा हो गये वाको रहस्य समझो. क्योंके दवाकी, इलाजकी जो सिम्प्लिसिटी हती वो नहीं होके कॉम्प्लेक्सिटी प्रकट भई. जब कॉम्प्लेक्सिटी प्रकट भई

तो वा कॉम्प्लेक्सिटीको कॉपूअप् करवेके लिये सारी टेस्ट भी तो लेनी पड़ेंगी ना. वा बखत दवायें भी सिम्पल हती. पता नहीं रोग सिम्पल हते के नहीं हते पर मेडिकेशन् भी सिम्पल हतो. कोई टेस्ट्की जरूरत नहीं पड़ती. एक डॉक्टरके पास जाओ वो दवा देतो. वाके बाद जीवेवालो जीतो मरवेवालो मरतो. आज भी वोही कथा हे. पर इलाजके पेटर्नमें कॉम्प्लेक्सिटी आ गई हे, वा कॉम्प्लेक्सिटीकु अपन् डिफरेन्ट टेस्ट्के बिना कॉप-अप् कर ही नहीं सकें.

(कॉम्प्लेक्स करणके बिना शक्तिनूके खिलवेसु आतो सामर्थ्य)

कॉम्प्लेक्सिटीके अपने स्ट्रक्चरमें आवेके कारण अपनूकु करणकी जरूरत पड़े हे. तिब्बतमें कभी भी जाओ ना! सिक्किममें जाके देखियो के तिब्बतमें चीनी लोगनूने बौद्धनूके गुम्फानूकु डिस्ट्रॉय करनो शुरु कियो, बौद्धनूके स्क्रिप्ट्सूकु खतम करनो शुरु कियो, एक बुद्धसाधु वहांसु भाग आयो. चीनी लोगनूने पुस्तक तो लावे दी नहीं, तो तीस हजार श्लोक वाने खुद आके सिक्किममें लिख दिये. बाईहार्ट तीस हजार श्लोक. एक दो श्लोक नहीं हों. अपनेसु एक कीर्तन याद नहीं होवे, एक पुरुषोत्तमसहस्रनाम याद नहीं होवे, षोडशग्रन्थ याद नहीं होवे, तीनसो पैंसठ दिन अपन् ठाकुरजीके आगे कीर्तन गावें और वो कीर्तन याद नहीं होवें और वाने भगवान् बुद्धके मन्दिरमें पूरे तीसहजार श्लोककी गाथा लिखी हे वहां रखी हे. सिक्किममें रखी भई हे. पुस्तक नहीं लावे दी तो वाने कही ''कोई चिन्ताकी बात नहीं हे, सारी पुस्तक तैयार हे.'' अबके वाने लकड़ापे लिख दी हे के जाकु चहिये, वा बखत कम्प्युटर आयो नहीं हतो नहीं तो वाको डिजिटलाईज्ड करवा दियो हतो, लकड़ापे पुस्तक लिख दी हे जाकु चहिये वो ले जाओ. तीसहजार श्लोक बाईहार्ट. कैसे आई मेमोरी? अब जाके पास हे वाके पास ऐसी भी सामर्थ्य अवेलेबल् हे. या रहस्यकु समझवेको प्रयास करो के ब्रह्ममें वो सामर्थ्य बिना करणके अवेलेबल् हे. अपनूकु वो सामर्थ्य आर्टिफिशियली प्रोवाइड्

करी गई हे. वाको कोई एक इन्स्ट्रुमेंन्ट दियो गयो हे.

एक बात समझो के अभी ही बड़ी बड़ी गेदरिंग् होवें, ऐसी बात नहीं हे. ये जब माईक् नहीं आयो हतो तब भी इतनी बड़ी बड़ी गेदरिंग् होती हती. तबके जो वक्तायें होते हते ओरेटर, उनके वोइस् इतने बुलन्द होते हते के दस पन्द्रह हजार आदमी सब सुन सकते हते. इतनी बुलन्द आवाज काढ़ते हते. गावेवाले ऐसे आवाजमें गाते हते के जंगलनूमें गाते तो शेर सामने दहाड़तो. जब माइक् इन्ट्रोड्युस् भये हते वाकी हिस्ट्री बताऊं. हिन्दुस्तानकी म्युज़िककी हिस्ट्रीमें ये बात नोटेड् हे के पुराने जितने गावेवाले हते वो सब बिना माईक्के गाते हते. जब तान लगाते तो माईक्में साउंड फट जातो हतो. उन गावेवालेनूकी इतनी बुलन्द आवाज हती. अब गावेवालेनूने भी माईकके हिसाबसु अपनी वोइसूकु नीचे उतार दियो. वा जमानामें हमारे दादाजी आजकलके गावेवालेनूकु पसन्द नहीं करते. केहते ''सबकी बकरी जैसी आवाज हे.'' ''तो आप कैसी आवाज सुननो चाहो?'' तो बोले ''हम ऐसी आवाज सुने भये हें के जैसे शेरके दहाड़वेकी आवाज होय.'' हम केहते ''सुन्दरता कैसे आती होयगी?'' दादाजी केहते ''तुम मूरख हो तुमकु समझमें नहीं आयगी.'' सचमुचमें उनके गावेमें सुन्दरता ही उनकी बुलन्द आवाजकी हती. अभी भी गाँवकी तीजन् बाई जो मध्यप्रदेशकी हें ना, तुमने शायद सुनी होयगी, अपने यहां भी एक काठियावाड़िन् हे बम्बईमें दिवालीबेन, बिना माईकके चहिये जैसो वैसे वो गा सके हे.

या रहस्यकु समझो के अपनूकु करण दिये गये हें करके उन करणनूके हिसाबसु अपनो कर्तृत्व प्रकट होवे हे. माईक दियो गयो हे करके आज माईकमें गावें, अच्छी तरहसु माईकके बारेमें गावेवालो जो सेंन्सिटिव् हे, वाकु अपन् अच्छो गावेवालो समझें. पुराने लोग यों समझते के माईक्में गानो उनके कण्ठको अपमान हतो. वो केहते

क्या ऑडियन्स् सुन नहीं पायगो जो हम माईकमें गायें? ऐसी तान लगाते के सारो ऑडियन्स् सुन लेतो. अब वो सामर्थ्य नहीं हे अपनेमें क्योंके अपन् करणके लाचार हें वो करणके लाचार नहीं हते. हर करण, करण तो हे, वा करणसु अपन् क्रिया भी करें हें. पर उन क्रियानुके कारण अपनेमें कोई न कोई एक तरहकी लाचारी आवे हे. एक बात सीधीसी समझो के पुराने हर बुजुर्गकु टोटल् मारवेकी कहो तो बिना केल्कुलेटरके वो टोटल् मार ले. अपनकु कोई टोटल् मारवेकी कहे तो खोपड़ी खाली हो जाय, बिना केल्कुलेटरके टोटल् निकले ही नहीं. क्यों? करण आ गयो ना! जब भी तुम करण वापर रहे हो तब वामें तुम्हारी लाचारी आवेगी, आवेगी और आवेगी ही. ये एक बातकी कथा नहीं हे. जैसे पुराने लोगनुकु एक दूसरेकु मिलनो होतो तो घरपे जाके मिलते. अब मोबाईल करण आ गयो, खतम हो गई बात. लाचारी आ गई ना! अब कोईसु कोई मिलवे नहीं जाय. भई काहेकु खोटे लफड़ा करने. ''आयो जो मोबाईल ताते कामदेव लाज गयो, एस.एम.एस करके बॉयफ्रेन्ड पटायो हे.'' वो प्रेमालाप करवेकी जरूरत ही नहीं. वो प्रेमको एस.एम.एस. कर दियो तो बॉयफ्रेन्ड पट गयो. अब वो बॉयफ्रेन्ड पटावेकी अन्य रीतकी क्या जरूरत हे? बस, एस.एम.एस.क्लिक् करो, रेडीमेड हे. जायगो एस.एम.एस. और काम पूरो. ज्यादा लफड़ा काहेकु करनो. करणकी लाचारी या ढंगकी होवे हे. पुराने बिचारे जाते हते. **''उसकी गलीमें मुझको फिर एक बार ले चलो.''** अरे गलीमें काहेकु जाय हे? एस.एम.एस. कर दे ना! आज काहेकु गलीमें जावेको रिस्क भी लेनो, एक एस.एम.एस. करो ना! लो लाचारी आ गई. वा जमानामें दूसरी पद्धति हती. ये पद्धति नहीं हती. जबभी करण जितनो अपने पास बढ़तो जाय, उतनो अपनो कर्तृत्व लाचार होतो चल्यो जाय. वा करणके आधीन होतो चल्यो जाय.

अब तेंने जो पूछ्यो वा संदर्भमें मैं ये बात केह रह्यो हूं

के स्वाभाविक होतो तो क्या होतो? येही होतो के अपन् खुद जाके गाना गाते **''उसकी गलीमें मुझको एक बार ले चलो.''** अब काहेकु जानो खाली एक एस.एम.एस. भिजवादो. बस काम पट जायगो. ये एक रहस्य हे के जबभी अपन् करणपे डिपेन्डेन्ट होवें तो वाके कारण लाचारी आवे. पर ब्रह्मके पास कोई करणकी जरूरत नहीं हे. ब्रह्मकु एस.एम.एस. करवेकी जरूरत नहीं पड़े. ''साक्षात् भगवता प्रोक्तम्'' भगवानुकु महाप्रभुजीकु एस.एम.एस. नहीं करनो पड़यो **''ब्रह्मसम्बन्धकरणात् सर्वेषां देहजीवयो: सर्वदोषनिवृत्तिः हि''** (सि.र.२) वाको महाप्रभुजीकु एस.एम.एस. नहीं करनो पड़यो. ब्रह्मके साथ करणकी कोई लाचारी नहीं हे. या रहस्यकु अपन् अच्छी तरहसु दिलमें समझ जायें तो आजकी अपनी बात एकदम क्लीयर हो जायगी और वो बात हे क्रिया; क्रियाकु सम्पन्न करवेको कोई करण होय; जो प्रोग्रामिंग् भई हे वो कैसी भई हे? ब्रह्ममें ये सब स्वाभाविक हे. अपनेमें क्रिया यदि कोई करनी हे तो हर क्रियाकु करवेको कोई न कोई करण हे. देखवेको करण कुछ और हे, सुनवेको करण कुछ और हे, बोलवेको करण कुछ और हे, छूवेको करण कुछ और हे, सबके करण अलग अलग हें. चलवेको करण कुछ और हे, पकड़वेको करण कुछ और हे. अपन् अपने स्वरूपसु कोई भी क्रिया सम्पन्न नहीं कर सकें जैसे ब्लड्सेल करे हे. ये सारी क्रियायें ब्लड्सेल करणके बिना सम्पन्न करे हे. अपनुकु करणके बिना वो क्रिया सम्पन्न नहीं हो सके. जबभी कोई क्रिया करनी हे तो कोई न कोई करण अपनुकु वापरनो पड़ेगो. जबभी कोई ज्ञान अपनुकु हासिल करनो हे; ज्ञानके भी कुछ करण हें. वो वापरने पड़ेंगे. जबभी अपन् भुक्ति मने भोगकी क्रिया कर रहे हें, तो भोगके भी कुछ अपने करण हें, जब उन करणनुकु अपन् वापरेंगे तो अपन् भोग कर सकेंगे. वाके कॉरोस्पोन्डिंग कुछ कार्य पैदा होवे हे, कोई ज्ञेय पैदा होवे हे, जब अपन् क्रियाकु करणसु सम्पन्न करें हें, तो वाके रिज़ल्ट्में कोई कार्य, कोई ज्ञेय, कोई भोग्य पैदा होवे हे. वो जब पैदा

हो जाय; वामें ऑर्डर ये हे - ये याको मूल रहस्य हे. क्रिया हो रही हे, तुम करो के मत करो, पर क्रिया तो हो रही हे. यदि तुम्हारे करणकु वापरके तुम क्रिया कर रहे हो तो तुम्हारो ज्ञान, तुम्हारी इच्छा, तुम्हारो प्रयत्न वामें इन्वोल्व् होवे हे. वो ज्ञान, इच्छा और प्रयत्न इन्वोल्व होवे करके जो कार्य वासु पैदा हो रह्यो हे वा क्रियासु जो कार्य पैदा हो रह्यो हे, वा क्रियासु वा कार्यकु पैदा करवेमें बाई नेचर तुमकु कर्ता होवेको भाव जग जाय हे. या कारणसु ये कर्ता होवेको जो भाव जग्यो हे, वो आर्टिफिशियल् हे.

अब ये जो सारी प्रोसेस् यों जा रही हे क्रियासु करण, करणसु कार्य और कार्यके कारण कर्ता. ये अपनी अन्डरस्टेन्डिंग्को रिवर्स् हे. अन्डरस्टेन्डिंग्में अपन क्या समझें हें ''मैं कर्ता हूं'' मैं कर्ता हूं, मैं अपने करणकु वापर रह्यो हूं. मैं अपने करणकु वापरके कुछ क्रिया कर रह्यो हूं. वासु कार्य पैदा हो रह्यो हे. ''**अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते.**'' ये बात भागवत् समझानो चाहे हे. वास्तवमें हो ऐसो रह्यो हे, पर तुमकु समझ ऐसे आ रही हे. मैं एक सामान्य बात कहूं. कल भी शायद बताई हती ये बात के अपनूकु भूख लगी. भूख लगीमें अपनूने बुभुक्षा कही. भोग करवेकी इच्छा. भूख लगी जा बखत अपन् केह रहे हें वा बखत अपनूकु भोजनको ज्ञान, भोजन करवेकी इच्छा, भोजन करवेको यत्न करवेके कारण, भोजन करवेपे अपनूकु ऐसो लगे के भोजन करवेको मैं कर्ता, भोक्ता. पर समझो के अपन् बेहोश हें तो शरीरकु जा बखत केलोरीके इनटेक्की जरूरत हे, वा बखत जरूरत नहीं हे क्या? प्रोसेस् तो वोही होयगी. क्रिया तो चल ही रही हे. मैंने कल एक उदाहरण दियो. जैसे अपन् मलमूत्र त्याग कर रहे हें तो अपन् कहें जरूर हें के ''जाजरू लागी'' ''म्हारे टॉयलेट जाउ छे'' अरे जाउ छे के थवानु छे? यदि या बातमें सचमुचमें कर्ता होवेको भाव नहीं होतो तो बेहोश आदमीको मलमूत्र त्याग तो होनो ही नहीं चहिये!

अब मलमूत्र त्याग हो रह्यो हे के नहीं हो रह्यो हे? वहीं अपनो सिद्ध हो जा रह्यो हे ना! के अपन् कर्ता नहीं हें. अपन् जब बेहोश हें, कॉमामें गये हें तब भी शरीरके फन्क्शन् तो एज़् इट इज़् हो ही रहे हें. जो क्रिया तो ऑलरेडी चल ही रही हे, वा क्रियाकु एकॉम्प्लिश् करवेकेलिये तुमकु एक इन्स्ट्रुमेंन्ट और दे दियो गयो हे, वा इन्स्ट्रुमेंन्ट्के कारण तुमकु कोई रिज़ल्ट दिखलाई दे रह्यो हे. पर रिज़ल्ट्के कारण तुम्हारे भीतर रिवर्सल् ऑफ़ पिक्चर खड़ो हो रह्यो हे. जैसे हर लेन्स्में इमेज् उलट जाये, सामने खड़े होंय यों ऐसे वो इमेज् उलट गई हे, जो क्रिया कन्सॉलिडेट् होके करण बन्यो, जो करण कन्सॉलिडेट् होके कार्य बन्यो, जो कार्य करवेके कारण तुम्हारेमें कर्तृत्व आयो, वाकी रिवर्सइमेज् तुमकु हो गई. तुमकु लगे कि ''मैं कर्ता हूं'', मैंने क्रिया करी, मैंने करणसु क्रिया करी, मैंने कार्य कियो, याके लिये ''मैं कर्ता हूं''. ये तो बेहोशीमें अपनेकु मलमूत्र लग रह्यो हे, याहीसु सिद्ध हो जा रह्यो हे के इतनी छोटीसी क्रियाके भी अपन् कर्ता नहीं हें.. अपनेकु सिर्फ कर्ता होवेको झांसा दियो गयो हे ये इन्स्ट्रुमेन्ट् प्रोवाईड् करके ''अच्छा यूज़् इट!'' जब या अहंके इन्स्ट्रुमॅन्ट्कु तुम वापरोगे, तो तुमकु ऐसो लगेगो के तुम कर्ता हो. वा अहंके इन्स्ट्रुमॅन्ट्कु नहीं वापर रहे हो तो भीक्रिया तो हो ही रही हे.

(भोक्ता होवेको रहस्य)

''**क्रीडार्थम् आत्मनः इदं त्रिजगत् कृतं ते स्वाम्यं तु तत्र कुधियोऽपर ईश कुर्युः.**'' (भाग.पुरा. ८।२२।२०) ब्रह्मने अपने आपकु एन्जॉय् करवेकेलिये ये सृष्टि पैदा करी. वा सृष्टिमें वाकु खुदकु एन्जॉय् करवेकी क्रिया अपनेमें भोगक्रिया बनके प्रकटी हे. जब अपनेमें वो भोगक्रिया प्रकटी हे करके भोग मनुष्यकी सबसु बड़ी लाचारी हे. ज्ञान इतनी लाचारी नहीं हे, क्रिया इतनी लाचारी नहीं हे, लकवामें पड़्यो भयो होय छे बरससु पर खावेकु तो चहियेगो ही. कम्फर्ट् तो चहियेगी ही.

ये चहिये वो चहिये, अरे भई जाओ ना! जानो नहीं चहिये. क्यों जानो नहीं चहिये? वो जो वाको आत्मरमण हे, वो आत्मरमण वा रेडियो फ्रीक्वेन्सीकी तरह चारों तरफ अवेलेबल् हे, वाके एन्जॉय् करवेकेलिये अपनेकु ये भोगके इन्स्ट्रुमॅन्ट् प्रोवाईड् कर दिये गये हें. कोई चीज अपनेकु अच्छी लगे हे, कोई चीज अपनेकु अच्छी नहीं लगे हे. अच्छी लगे हे तो अपन् वाकु और एन्जॉय् करनो चाहें हें. बुरी लगे वासु बचनो चाहें. दुनियांकी कोई भी बुरी चीज ऐसी नहीं हे जो तुमकु बुरी लग रही होय और दूसरेकु अच्छी नहीं लगती होय. तुमकु मूला नहीं भातो होयगो तो कोईकु मूला भातो होयगो; तुमकु मच्छी नहीं भाती होयगी पर कोई दूसरेकु मच्छी भाती होयगी. तुमकु गटर नहीं भाती होयगी पर कोई दूसरेकु गटर भाती होयगी. कोई भी चीज दुनियांकी ऐसी हे नहीं जो एककु पसन्द और दूसरेकु नापसन्द ना होय. कोई भी एक चीज ऐसी बताओ के जो कोईकुभी नहीं भाती होय? ऐसी कोई आइटम् नहीं हे. तुम्हारे इन्स्ट्रुमॅन्ट्के हिसाबसु तुमकु कोई चीज भा रही हे दूसरेकु नहीं भा रही हे. कोईकु वॅस्टर्न म्युज़िक अच्छो लगे, कोईकु ईस्टर्न म्युजिक, कोईकु गाँवको म्युज़िक, कोईकु कन्नड़ म्युज़िक, कोईकु फ्युज़न्, तो कोईकु कन्फ्युज़न् अच्छो लगे. सबकु सब चीज अच्छी नहीं लगे क्योंके सबके अपने अपने लिमिटेशन् हें. ऐसी कोई चीज नहीं हे दुनियांमें जो कोईकु भी अच्छी नहीं लगती होय. क्यों नहीं हे? वाको मूल कारण हे के सृष्टि वाके आत्मक्रीडाके लिये प्रकट भई हे. ब्रह्म खुदकु खुद भा रह्यो हे करके सृष्टि प्रकट भई हे, क्योंके ब्रह्म अपने भीतर भरी भई सारी पोटेन्शियलिटीकु एन्जॉय करनो चाह रह्यो हे.

अभी मैंने एक बहोत अच्छी एड्वर्टाइज्मेन्ट् देखी. वाने वा एड्में लिख्यो हे ''तुम्हारे दांत पीले होंयगे तो हम सफेद बना देंगे; तुम्हारे हंसवेकी अदा यदि अच्छी नहीं होयगी तो वो भी सुधार

देंगे;'' वो सारी ट्रीटमेन्ट् हम कर देंगे तुम हमारे यहां आओ. ''कहत सबनूसों आओ, आओ'' एक बात समझो के अपनेकु हंसवेको इन्स्ट्रुमेन्ट खड़ो कर दियो हे, कुछ प्लास्टिक् सर्जरी वगेरह कर देगो जासु हंसवेको एक्सप्रेशन् ठीक हो जायगो. अब वो मोहक हंसनो आर्टिफिशियल् होयगो. नेचरल् नहीं होयगो. ऐसे जो भी अपने पास एन्जॉयमेन्ट्के, रॅलिशमेन्ट्के इन्स्ट्रुमेन्ट् हें, उनसु जो भी अपन् एन्जॉय कर रहे हें वो सब आर्टिफिशियल् एन्जॉय कर रहे हें. रियल् एन्जॉय अपन् कर नहीं रहे हें. रियल एन्जॉयमेन्ट् तो सिर्फ ब्रह्मकु हे क्योंकि वो खुदकु खुदसु एन्जॉय कर रह्यो हे. वामें कोई भी आर्टिफिशियलिटी नहीं हे. वो अपने आपकु एन्जॉय करे वामें कुछ आर्टिफिशियल् हे नहीं, पर अपन् सब कुछ न कुछ आर्टिफिशियल इन्स्ट्रुमेन्ट्सु एन्जॉय कर रहे हें, करके अपने हर एन्जॉयमेन्ट्में एक लाचारी हे. हर एन्जॉयमेन्ट्में या तरीकेकी लाचारी हे.

प्रश्न : अपन् जब यों कहें के अपनूकु जब एक चीज नहीं अच्छी लगती होय तो वो दूसरेकु अच्छी लगती होय, लेकिन या आर्टिफिशियल एन्जॉयमेन्ट् या रॅलिशमेन्ट्को एक पार्ट ब्रह्ममेंसु डिराइव् भयो हे, तो अभी अपन् अगर टॅररिस्टको उदाहरण लेवें तो वो दूसरेपे वायलेन्सूको इन्फिलिक्ट् करे तो वो उनकु अच्छो लगे पर दूसरेकु नहीं लगे. जब वो सेल्फ् इन्फिलिक्ट् हो जावे के अपनेपे कोई खुद वायलेन्स् इन्फिलिक्ट् करे या कोई दूसरो करे तब जब अपनेपे वो बात आवे तो वो चीज तो कोईकु अच्छी नहीं लगे. कोइकु भी ले लो तो वो अच्छी नहीं लगेगी तो या बातकु कैसे समझनो?

उत्तर : हू सेड इट? देख मैं तोकु बताऊं के जैनमुनि और जितने जैन लोग हें वो अट्ठम तप करें, एक एक साल भूखे रहें. पर तुमकु कोई भूखो मारेगो तो अच्छो लगेगो? वो जितनो

भूखो रहे ना, उतनो उनकु मजा आवे. वो कहे के ''पानी...''. तो दूसरे कहें ''धन तारी वाणी जेणे लाखो कुल तार्या.'' घिनचिक् घिनचिक् कर दें और वो प्यासके मारे पानी मांगतो रहे, पर उनकु अच्छो लगे. कौनने कही के अच्छो नहीं लगे! बहोत सारे गलत अन्दाज़ अपनूने पकड़ लिये हें. कम्फर्ट्में जीवेके कारण अपनेकु कम्फर्ट् पसन्द हे, पर बहोत सारे ऐसे आदमी मिलेंगे के जिनकु कम्फर्ट् बिल्कुल भी पसन्द नहीं हे. हिमालयपे चढ़ेंगे, लॅक् ऑफ् ऑक्सिजन्की सिच्युएशन्में जायेंगे, शार्कके यहां जायेंगे. समुद्रके भीतर जायेंगे, जंगलन्में जायेंगे, मच्छरनूसु खुदकु खवायेंगे. नेशनल् ज्योग्राफिक्की सीरीजमें आवे, मधुमक्खीनूकु मुंहपे बैठायेंगे, पूरे शरीरपे मधुमक्खी बैठी होंयगी. तेरेपे एक मक्खी बैठे ना तो तेरेकु नहीं फायेगी और वो पूरे मौहड़ापे मधुमक्खी बैठा लें. क्यों भा रही हे? कौनने कही के नहीं पसन्द आवे? एक बखत भयंकरसु भयंकर चीज, गन्दीसु गन्दी चीज, एक्स्ट्रीम् तकलीफ देवेवाली चीज, कोईकु तो पसन्द आ ही रही होवे हे.

(वीरकु वीरताकी मोत भी अच्छी लगे पर कायरपनेंसु जीनो नहीं)

अपने इन्डियाकी हिस्ट्रीको सबसु ज्यादा रिमार्केबल् स्टेट्मॅन्ट् मान्यो जाय के पुरुके शरीरपे सोलह घाव हते और जब वाकु कैद करके सिकन्दरके सामने लायो गयो, तो सिकन्दरने वासु पूछी ''देख तेरे क्या हाल भये? तू क्या चाहे के तेरेकु क्या ट्रीटमॅन्ट् दऊं?'' वाके हाथमें बेड़ियां हती तो वाने कही ''तोकु पूछवेकी तमीज नहीं हे. राजा जो राजाके साथ करे वो कर'' वाने यों नहीं कही ''माफी मांगु हुं'' या ''मोकु छोड़ दे.'' वाने कह्यो ''हारे भये राजाकु जो करें वो कर'' माने काट दे! ये भी कोई पूछवेकी बात हे! ये तो भारत सरकारने प्रतिबन्ध ला दियो और कई औरतनूकु जबरदस्ती भी जलायो जातो हतो, पर कितनी सतियें होती हतीं. पाई लेना नहीं देना नहीं काहेकु सती हो रही हो व्यर्थमें! पर होती हती. कौनकु पसन्द आवे!

जा बखत फ्रांसके अगेन्स्ट् जब वियतनामने रिवोल्ट् कियो, वहां जबरदस्ती क्रिश्चियनिटी लादनी चाहते हते, वाके ॲपोज़ीशन्में पैंतीस बुद्धसाधु अपने आपपे पेट्रोल डालके जलके मर गये. पसन्द आवे? पर आदमीकु पसंद आवे. अपने यहां स्वतन्त्रतासंग्रामके बखत बहोत पॉप्युलर गीत हतो "**सरफरोशीकी तमन्ना अब हमारे दिलमें हे. देखना हे जोर कितना बाजुए कातिलमें हे.**" सरफरोशी समझी? गला कटवावेकी इच्छा अब हमारे दिलमें हे. हमकु येही तो चेक करनो हे के हमकु कत्ल करवेवालेके हाथमें कितनी ताकत हे? क्यों नहीं आवे? सब आवे. भयंकरसु भयंकर त्रासवाली, भयंकरसु भयंकर गन्दी, भयंकरसु भयंकर एभोरिंग् सिच्युएशन्में भी कोई तो ऐसो मिलेगो ही के जाकु वो पसन्द आती होय. या बातकु भूल जाओ. मूल कारण ये हे के ब्रह्म खुदकु एन्जॉय् करनो चाह रह्यो हे करके हर चप्पा चप्पापे वाको सेल्फ्-एन्जॉयमेन्ट् भर्‍यो भयो हे. अब जाकु जो इन्स्ट्रुमेन्ट् प्रोवाईड कर दियो गयो हे; अपनेकु अक्सर ये जो वॅजीटेरियन्वाले होवें ना, यों कहें के मनुष्यके दांत ऐसे नहीं हें के वो नॉन्वॅज् खावे. जानवरन्के दांत होंय ना! आगेके वो कुछ ऐसे होवें टेढ़े नुकीले, उनको पेटको भी सिस्टम कुछ ऐसो होवे के वो नॉन्वॅज् खा सकें. अपन् क्योंके नॉन्वॅज् खा सकें ऐसे नहीं हें, नहीं हें तो नहीं हे पर वाकु तलके, सेकके, तमाम् लफड़ा करके खावेवालो तो खावे हे ही के नहीं! तेंने पढ़्यो होय तो आज भी चीनमें एक आदमी रोज एक जिन्दो सांप पकड़के खा जाये. वाकु सांपको ही स्वाद आवे. हे तेरेकु ट्राई करवेकी इच्छा? वो बेवकूफ हे और तू समझदार हे और ढोकला खा रही हे? वो भी समझदार हे. वाकु सांपमें ही ढोकलाको स्वाद आ रह्यो होयगो, कच्चो सांप वो भी जिन्दा. वाको फोटो छापामें आयो हे. ऐसी कोई चीज नहीं हे जो कोईकु नहीं भावे. भोगकी वृत्तिके इन्स्ट्रुमॅन्ट् करण अलग अलग हें करके भोग्य अलग अलग हो गये हें. बाकी भोगमें मिलतो आनन्द तो ब्रह्मकु खुदको खुद एन्जॉय् करवेको आनन्द हे. क्योंके अपने करण लिमिटेड् हें,

याके लिये अपनेकु हर बखत होवे हे के ढोकला भी दस दिन रोज बने तो मम्मीके साथ झगड़ा हो जाये "रोज नी रोज एक आइटम केम बने छे? आजे फाफड़ा बनाओ." बिचारो पती गयो. अरे तुम तो केह रहे हते के ढोकला अच्छे लगें तो खाओ ना ढोकला, अब फाफड़ाकी जरूरत क्यों आ गई! पर नहीं भावे.

ये सब क्या हे! अपनी इन्स्ट्रुमॅन्ट्सपे डिपेन्डेन्स्की लाचारी हे. अपन् हर बातमें, हर एन्जॉयमॅन्ट्में अपनेकु जो इन्स्ट्रुमॅन्ट् प्रोवाईड् कियो गयो हे और वा इन्स्ट्रुमॅन्ट्में बाईडिफाल्ट् ये सिस्टम् रखी गई हे के कोई भी बातकु तुम, जैसे बहोत देर तक कोई चीजकु तुम देखो तो आँख थक जायेगी. अब चाहे ऐश्वर्या राय होय या शाहरुख होय, आँख गड़ाके देख तो आँख थक जायेगी. कितनो भी सुंदर होय आँख थक जायेगी. कोई कितनो भी मधुर गातो होय, वाकु बहोत देर तक सुनो तो कान थक जायेगो. कितनी भी स्वादिष्ट कोई आइटम् होय, वाकु चाबते ही रहो, चाबते ही रहो तो वामें वोमिटिंग सेन्सेशन् आयगो. ये सब काहेकी लाचारी हें? जो इन्स्ट्रुमॅन्ट् अपनेकु प्रोवाईड् कियो गयो हे, वाकी लाचारी हे. क्योंके अपने इन्स्ट्रुमॅन्टमें इतनी कॅपेसिटी नहीं हे के सचमुचमें अपन् कोई नेचरल्कु रॅलिश कर सकें. वा इन्स्ट्रुमॅन्ट्में जितनो प्रोविजन दियो हे उतनो अपन् रॅलिश कर सकें हें. वासु ज्यादा अपन् रॅलिश नहीं कर सकें. सगो बच्चा, ध्यानसु बात समझो, सगो बच्चा कितनो प्यारो लगे. पर चौबीस कलाक गोदीमें बैठे तो माँकु नफरत् हो जाये. छोड़े ही नहीं माँकी गोदी, जाने जन्यो हे ना, वो त्राहि त्राहि पुकारे. सगो बच्चा, जा बच्चाकु पैदा करवेके लिये डॉक्टरके पास पचास चक्कर मारे होंयगे वो बच्चा यों कहे "तुमने ही तो मोकु पैदा कियो हे अब छोडूंगो नहीं;" मर गये, मर गये, सगे बच्चाने मार दियो, हत्यारेकी जरूरत नहीं हे. सिच्युएशन् ऐसी हे, इन्स्ट्रुमॅन्ट्की ये लिमिटेशन् हे. बात समझमें आई ना! इन्स्ट्रुमॅन्ट्की

अपनी लिमिटेशन् लगे हे के अपनकु जो चीज अच्छी लगे वो भी अपन् अपने इन्स्ट्रुमॅन्ट्की कॅपेसिटीके हिसाबसु ही एन्जॉय् कर सकें हें. वा इन्स्ट्रुमॅन्ट्की कॅपेसिटीके बाहर गई नहीं बात और अपन् तुरत फॅडअप् हो जायें. तो ये जो भुक्त, भोग्य और भोक्ता होवेको जो अपनो भाव हे वो अपनेमें आर्टिफिशियल् हे; ब्रह्मको कर्ता, ज्ञाता, भोक्ता होनो स्वाभाविक हे.

(करण क्रिया कर्ता और मिथ्यात्व)

प्रश्न : कल अपनूने ये देख्यो हतो याही संदर्भमें **''अहंकारविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते''**, वामें आपने ये समझायो हतो के अहं मोहजनक नहीं हे. अहंक्रिया मोहजनक हे. और यहां जो ऑर्डरमें देख्यो के करण मिथ्या नहीं हे, क्रिया मिथ्या नहीं हे, कार्य मिथ्या नहीं हे पर जो वो कर्तापे आवे तो वो आपने मिथ्या बतायो हतो. वो स्पष्ट नहीं भयो ?

उत्तर : थोडो और सुनलो हो जायेगो.

प्रश्न : ये भोगकी वृत्ति जो आपने कही के कोईकु पसन्द आवे कोईकु पसन्द नहीं आवे. तो ऐसे कोई कॉमन् वृत्ति भी हो सके हे ? माने, जो सबकु पसन्द आवे और सबकु पसन्द नहीं आवे.

उत्तर : सबकु पसन्द आवे ऐसी दुनियांमें कोई चीज नहीं हे. और कोईकु भी पसन्द नहीं आवे ऐसी भी कोई चीज नहीं हे. वाको मूल कारण क्या ? अपने इन्स्ट्रुमॅन्ट् लिमिटेड् हें. कोईकु भी पसन्द नहीं आवे वाको भी कारण ये हे के सबके अपने इन्स्ट्रुमॅन्ट् अलग अलग नेचर्के हें. करके अपने इन्स्ट्रुमेन्ट्के नेचरके हिसाबसु ही कोई चीज कोईकु पसन्द या नापसन्द आ रही हे.

कल मैंने जो ये बात कही हती वामें ये बात बहोत कॅल्कुलेटेड्

एक वर्ड यूज़ कियो हतो के क्रिया कन्सॉलिडेट् होके करण बने हे. करणसु करी जाती क्रिया कोई न कोई रिज़ल्ट्कु पैदा करे हे. अब वो क्रिया, करण और कार्य जब ये तीनों मिलके एकॉम्पलिश् हो जायें तो ज्ञान, इच्छा और प्रयत्न की कर्ता होवेकी एम्बीशन् फुलफिल् हो जाये करके क्रियाके कारण **''अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते''**. करण कुछ भी नहीं हे. कन्सॉलिडेटेड् क्रिया एक हे, कार्य कुछ भी नहीं हे, करण और क्रिया को पाछो जो इन्टएक्शन् भयो वाको कोई एक रिज़ल्टेन्ट् हे वो. क्रिया करण और कार्य ये तीनों जा बखत एकॉम्पलिश् हो जायें तो वा बखत; क्योंके करण तुमकु प्रोवाईड् कियो भयो हे. रेडियो फ्रीक्वेन्सीकी तरह क्रिया तो व्यापक हे. क्रिया और करण सु सारे कार्य एकॉम्पलिश् हो ही रहे हें. हो रहे हें करके ज्ञान, इच्छा और प्रयत्न की जो कन्डीशन् हे वो फुलफिल् हो जावेके कारण तुमकु रिवर्स् इमेज् खड़ी हो जाये के ''मैं कर्ता हूं या लिये मैंने क्रिया करी''.

एक बहोत सरल उदाहरण दऊं तो समझमें आयेगो. समझो के चलवेके लिये तू पैर उठाके धर रह्यो हे, तो तू कर्ता हे के नहीं ? विल् लॉ ऑफ् ग्रेविटेशन् नॉट एलाउ यू ? ग्रेविटेशनल्लॉ तेरेकु एलाउ नहीं करेगो यदि पैर नहीं धरेगो तो. तो जो पैर उठाके धर रहे हो वो तो अदरवाईज भी होवेवाली घटना हे; पर तोकु एक करण प्रोवाईड् कर्यो गयो हे, तो वासु तोकु हो रह्यो हे के ''मैं चल रह्यो हूं'' ''मैं चलवेको कर्ता हूं'' चलवेको मतलब क्या ? पैर धरनो. ये अपन् कहें हें ना के ''पधारो पधारो'' वो क्या हे के पग धारो = पधारो. पग धरो, तेंने कौनसो पग धर्यो ? नहीं धरतो तो क्या उड़ जातो ! लॉ ऑफ् ग्रेविटेशनूसु पग जमीनपे धरनो ही पड़ेगो. धराके ऊपर पग धरनो ही पड़ेगो. देयर इस् नो वे आउट. पग कोई भी दिशामें उछाल, **''कथम् अयथा भवन्ति भुवि दत्तपदानि नृणाम्''** (भाग.पुरा.१०।८४।१५) पग तो पृथ्वीपे धरनो

ही पड़ेगो. उछलके देख ले तू. लॉन्ग् जम्प् करके देख. हाई जम्प् करके देख. अन्तमें पग तो जमीनपे धरनो ही हे. पर तेरेकु इन्स्ट्रुमेन्ट् प्रोवाईड् कियो गयो हे, वासु तोकु ऐसो लग रह्यो हे ''मैं कर्ता हूं'' क्रिया तो होवेहीवाली हे. तू करे के मत कर. जो क्रिया हो रही हे वो तो होवेहीवाली हे. तू इन्स्ट्रुमॅन्ट्सु कर रह्यो हे, याके लिये तोकु ऐसो लग रह्यो हे के तू कर्ता हे. जैसे सांस तो तू ले ही रह्यो हे, तू चाहे के मत चाहे, पर तू इच्छासु वाको लेगो. पेशाब तो हो ही रही हे तू करे के मत कर. तेरेकु इन्स्ट्रुमॅन्ट् प्रोवाईड् कियो गयो हे यासु तोकु लग रह्यो हे के ''मैं पेशाब कर रह्यो हूं'' यामें भी अपनो स्वातन्त्र्य नहीं हे. वो अपने अन्दरकी किडनी स्टोर करे और फिर वो प्रेशर करे तो वाकु तो बाहर निकलनो ही हे. फुग्गामें भी तो वोही सिद्धान्त हे. वोही पेशाबमें हे. इच्छाको वहां रोल कहां हे? ऑटोमॅटिक सिस्टमूसु होवेहीवालो हे. बच्चाकु इच्छा नहीं होवे. बच्चा अपने आप करे हे के नहीं करे? वो तो इन्स्ट्रुमॅन्ट् प्रोवाईड् कर दियो गयो हे करके अपनेकु ये भ्रान्ति हो जाये के हां ''मैं स्वतन्त्र हूं'', ''मैं कर्ता हूं'' वो रिवर्सल् इमेज् हे. जो घटना घट रही हे वाकी रिवर्स इमेज् हे और कुछ नहीं हे. ये आखो रहस्य समझो.

(बाह्यक्रिया और आन्तरक्रिया में कर्तृत्वबोध)

प्रश्न : ये बाह्य क्रियासु जो कछु हो रह्यो हे वामें अपनेकु कर्तापनेको मोह हे पर भीतरसु जो कल बतायो आपने के वासनाजन्य जो हो रह्यो होय तो वामें क्या करेंगे?

उत्तर : अरे वासनामें अपन् कौनसे स्वतन्त्र हें! वासना भी तो वाही प्रोसेस्को पार्ट हे ना. वासनाको शुद्ध मतलब समझो. तुमने स्प्रेयर अपनेपे छांट्यो. स्प्रेयर उड़ गयो. वाकी गन्ध तुम्हारेमें रेह जाय. वो वासना फिनोमिना हे. जो अनुभव तुमकु भयो लाईक् स्प्रेयर, वो स्प्रेयरको जो लीक्वीड हे, वो तो इवोपोरेट् हो गयो

पर वो अपनी गन्ध छोड़ गयो. वो वासना हे. हर विषय अपनी कुछ गन्ध छोड़ जाये हे, ''वो अपनी याद दिलानेको रूमाल अपना छोड़ गये'', वासना अपनी बन जाय. ''जेबमें तो उनके कुछ भी न था पर माल पुराना छोड़ गये''. छोड़ गये तो अपने लिये वासना हो गई तो संग्रह करके रखें. वासनाको मतलब इतनो ही हे. ये वासना पार्ट ऑफ् द सिस्टम् ही हे ना!

(महाप्रभुजीको अभिप्राय)

प्रश्न : जैसे यहां बात हुई के क्रिया व्यापक हे; तो क्रिया व्यापक हे और कर्ताकु अपन् आर्टिफिशियल् और रियल; यहां करण और कार्य ....?

उत्तर : जहां क्रिया और करण को इन्टरएक्शन् हो रह्यो हे तो वहां कार्य तो पैदा हो ही रह्यो हे. अपन् कर्ता होंयके नहीं होंय. एक बात समझो. बाथरूममें एग्ज़ोस्ट पंखा लगायो भयो होय के नहीं? अपन् बिजलीको बटन् जोड़ें तो पंखा चले. पर कभी हवा आती होय तभी तो बिजलीके बिना भी पंखा चले . देख्यो हे! वो चले क्यों जो करण हे और पवन चलवेकी क्रिया होवे तो चलवेको कार्य हो जाये. वा बाजू हवाकी एनर्जीसु चल रह्यो हे या बाजू बिजलीकी एनर्जीसु चल रह्यो हे. पर दोनों स्थितिमें वो चल तो रह्यो हे के नहीं? वामें कर्ताकी जरूरत कहां हे? हमारे घरमें एक मजेदार बात बताऊं. पंखा हमने लगवायो और ब्लेड उलटी लगा दी. फर्र फर्र पंखा चले पर हवा आवे नहीं तो मैंने कही के हवा कहां जा रही हे? हवा तो आ ही नहीं रही हे. इतनी जोरसु पंखा चल रह्यो हे. फिर बादमें पता चली के ब्लेड उलटी हती तो हवा सब ऊपर फैंक रह्यो हतो. करण हे और यदि क्रिया हो रही हे तो कार्य तो होयगो ही; अब हवा नीचेके बजाय ऊपर जा रही हती. ऊपरके सब मच्छर उड़ गये. नीचेको मच्छर परेशानके हवा कहां गई? अब पंखा लगावेवालो

पंखा उलटो लगा गयो. वो बिजली जुड़ते ही पंखा उलटो चले. नीचे हवा आवे नहीं और नीचे डोबाकी तरह खड़े होके देखें के हवा आयेगी, हवा आयेगी, भावना करें के हवा आयेगी, मानसी थोड़ी देर करी और तो क्या करें! अब हम सोच रहे हें के हवा आयेगी पर हवा तो आ ही नहीं रही हती. हमकु कबूल करनो पड़यो के पंखा चालू हे पर हवा तो आ ही नहीं रही हे. पीछे खबर पड़ी के ब्लेड उलटी लग गई हती. करण हे और क्रिया हो रही हे तो रिज़ल्ट् तो आयेगो ही. यहां नहीं आयेगो तो वहां आयेगो, नीचे नहीं आयेगो तो ऊपर आयेगो. ''ए भाई जरा देखके चलो, ऊपर ही नहीं नीचे भी, दायें ही नहीं बायें भी.''

मैं समझूं हू **''अहंक्रियाविमूढात्मा कर्ता अहम् इति मन्यते''** भगवान्ने क्यों कही वा पॉइन्टकु मैंने एनेलाईज़् कियो. ये आखी प्रोसेस् हे जामें अपनेमें कोई तरहको मोह पैदा हो रह्यो हे. या फिनोमिनाकु या या प्रोसीज़रकु ख्यालमें रखोगे तो ये तात्पर्य समझमें आयेगो के कैसे मोह पैदा होवे हे? कर्ता आर्टिफिशियल् होवेके बाबजूद भी रियल कैसे हे, और कर्ताको कॉम्पोनेन्ट् फॅक्टर, पार्टस् वो सब रियल हें, कुछ भी अनरियल नहीं हे. सब कुछ रियल् होते भये भी कर्ता कैसे वासु आर्टिफिशियल् खड़ो हो जावे हे. ऑलमोस्ट लाईक् ए पेन्टिंग के सब कलर सच्चो हे पर सब कलरसूकु पोतके जो पेन्टिंग बनी हे वो आर्टिफिशियल् हे.

ये महाप्रभुजीको या विषयमें अभिप्राय हे. ये अभिप्राय महाप्रभुजीने गीता और भागवत के आधारपे घड़यो हे. वाकु अपनूने गीता और भागवत के वचननूसु भी देख्यो. अगर पॉसिबल् भयो तो सुबोधिनीके रेलेवेन्ट् पॅसेज् भी देख लेंगे जासु बात और साफ हो जाये. आजको अपन् यहां रखें.

०००००००००००

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीन भावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

कुछ प्रश्न आये हें जो पेहले अपन् देख लें.

(आर्टिफिशियल् और एक्वार्यड् में भेद ?)

प्रश्न : आर्टिफिशियल् और एक्वायर्ड एक हें के अलग अलग ?

उत्तर : अब यामें एक सहज विवेक समझो के कोई चीज आर्टिफिशियल् नहीं होय तो वो भी अपन् एक्वायर कर सकें हें. एक्वायर करवेके बाद अपनो स्वरूप घड़ा रह्यो हे तो वो नेचुरली आर्टिफिशियल् हो जायगो. क्योंके वो एक्वायर्ड करायो स्वरूप अपनो आर्टिफिशियल् हो जायगो मगर जाकु अपन् एक्वायर कर रहे हें वो आर्टिफिशियल् भी हो सके हे और नेचरल् भी हो सके हे. या अर्थमें अपन् आर्टिफिशियल् और एक्वायर्ड कु सिनोनिम् नहीं मान सकें. अलग अलग बात हें.

(व्यापकक्रिया)

प्रश्न : 'व्यापक-क्रिया'को मतलब क्या ?

उत्तर : क्रिया जबभी कहीं सम्पन्न होवे हे तो वाको कोई रेडियस् होवे हे के या रेडियस्में ये क्रिया सम्पन्न हो रही हे. अपन् या बातकु समझ सकें हें के शॉर्टवेव् वन, शॉर्टवेव टू, मीडियमवेव् या एफ.एम्. ये सारी फ्रीक्वेन्सीज़्के अपने अपने एरिया होवें हें; वैसे तो आसमान खुलो हे पर उनके लेवल हें जा लेवलपे वो क्रियायें हो रही हें. सब एक लेवलपे नहीं होवे. थोड़ोसो अपन् अध्ययन करें तो पृथ्वीके वातावरणमें हवा और बद्दल की कई लेयरस् हें. उन लेयरनूपे वाही तरीकेको बद्दल होवे. नीचेके लेवलपे कोई दूसरी तरेहको बद्दल होवे. सब मिलाके ऐसे छे सात लेयर हें. आसमान खुलो हे, पर हवाके प्रभेदके कारण बद्दल और हवा

दोनोंके प्रभेद होवें हें. क्योंके जैसे जैसे हवा नीचे होय वैसे वैसे गाढ़ी होती चली जाय. जैसे जैसे अपन् ऊपर जायें वैसे वैसे हवा पतली होती चली जाय. पतली हवा हो जावेके कारण भी बद्दलके फॉरमेशन्में अंतर आवे हे. ये कोई इतनी साईन्स्की बात नहीं हे, अपन् कोई भी प्लेन्में मुसाफरी करें तो जब टेक्ऑफ करे तब अपन् देख सकें के पेहले टेक्ऑफमें ही प्लेन् नीचेके बद्दलनूसु बाहर निकल जाय, वाके बाद एक दूसरो लेवल और आवे और फिर तीसरो आवे. ऐसे सब मिलाके बद्दलनूके छे या सात लेवल होवें हें. एक लेवलपे बद्दल नहीं होवें. न हवाकी ही एक लेयर होवे हे पर कई लेयर होवें. उन सबके नाम अलग अलग हें, उनके फन्क्शन् अलग अलग हें, उनके परिणाम भी अलग अलग हें. व्यापकक्रियाकी दृष्टिसु सोंचे तो आउटरमोस्ट् लेयर ज्यादा व्यापक हे और पृथ्वीके समीपके लेयर् इतने व्यापक नहीं हे. वाकी अपनेकु सरल समझ हासिल करनी होय तो देख सकोगे के जा बखत बद्दल घिरे, तो बरसवेवालो बद्दल एकदम नीचे होवे. और जो बद्दल नीचे होवें, वासु ऊपरके बद्दल अन्य प्रकारके होवें हें, वो बरसवेवाले नहीं होवें, वो यात्रावाले बद्दल होवें. अगर अपन् देखें तो वो यात्रा करते भये बाकायदा दीखें. जो बरसवेवाले बद्दल होवें वो घिर घिरके नीचे आते होवें. जो नहीं बरसवेवाले बद्दल होवें वो ऊपरसु जाते होवें. उन सारे बद्दलनूके लिये खुलो आकाश हे. एक बद्दलकु दूसरे बद्दलसु डिवाइड् करवेकेलिये कोई फ्लोर डिवीज़न नहीं हे. पर तो भी वे बद्दल या तरीकेकी कई लेयर्स्में सारे भेद निभावे हे. अलग अलग बद्दलनूके शेप् अलग होवें हें; डेन्सिटी अलग होवे हे; उन बद्दलनूको परिणाम माने आसमान कैसो दीखेगो अलग होवे हे, अलग अलग लेयर्सके कारण इन सबपे गेहरो असर पड़तो होवे हे. आउटरमोस्ट लेयर व्यापक हे पर लोअरमोस्ट लेयर् इतनो व्यापक नहीं होवे. याहीलिये यहां (कांदीवलीमें) बरसात होती होवे तो सहज संभव हे के वहां फाउन्टेनूमें बरसात न होती होय.

नासिक, पूना और सूरत तो दूर पर पार्लामें बरसेगो, कांदीवलीमें बरसेगो और फाउन्टेन्में नहीं बरसे. ऐसे कैसे हो सके? जो बरसवेवालो यदि ऊपरको बद्दल होय तब तो वो सबकु कवर करेगो, पर नीचेके बद्दलके नीचे जितनो एरिया होयगो वापेही तो वो बरसेगो न! जो एरिया वाके नीचे नहीं हे वापे वो बरसेगो नहीं. अब उन बद्दलन्को कम्पार्टमेंन्ट्ल डिवीज़न नहीं दीखे हे, पर बद्दलें या तरीकेकी अपनी व्यापकता और अव्यापकता निभावें हें. एकदम हायरअल्टीट्युड्के बद्दल तो बम्बईपे रुकनो ही नहीं चाहेंगे, वो तो सीधे जायेंगे और सैंकड़ों मीलकी यात्रा करके कहीं कहीं जाके अटकें. नीचेके बद्दल घाटसु टकरावें, पर ऊपरके बद्दलन्सु तो घाट बहोत नीचे हे. उनकु घाटसु टकरावेकी जरूरत नहीं पड़े. कभी भी घाटपे जाओगे तो बाकायदा (नीचेको) बद्दल तुमकु ऊपर चढ़तो दिखलाई देगो. बरसातके दिनन्में घाटपे जाओ तो दूरसु देखोगे तो बाकायदा जैसे अपनी गाड़ी चढ़े ना! ऐसे बद्दल भी जो नीचे होवे वो जाके घाटसु टकरावे, फिर धीरे धीरे घाट चढ़ें. घाटपे ज्यादा बरसात होवेको मूल कारण येही हे के नीचेके बद्दलन्कु घाट पेहले रोक ले. जैसे कोई गुण्डा रोक ले तो पाकिट खाली करके ही जानो पड़े ऐसे ही बद्दलन्कु भी खाली होके जानो पड़े. जबतक वो पूना पोंहचें तो बद्दलन्की अच्छी खासी पाकिट खाली हो गई होवे (क्यों जो) घाटने निचोड़ लियो. पर ऊपरवाले हायर अल्टीट्युड्की बद्दलन्की क्रियायें, (ज्यादा) व्यापकक्रियायें होवें हें.

कोई भी क्रियाकु, रेडियोफ्रिक्वेन्सीके लेवलपे देखो, चाहे हवाके लेवलपे देखो, चाहे बद्दलके लेवलपे देखो, ऐसी बहोत सारी बातें हें. पानीमें भी अपन् खोज सके हें, पृथ्वीमें भी खोज सकें हें. सब जगह जो व्यापक होवे वो ज्यादा एरिया कवर करे. जो कम होय वो थोड़ो एरिया कवर करे. जैसे हम जानें हें अच्छी तरहसु के ये जो भी मोबाइलके टॉवर लगे हें, इन टॉवरन्की एक रेन्ज्

होवे, जा रेन्ज्में तुमकु मोबाइलके सिग्नल मिलें हें. मोबाईल यदि वा टॉवरकी रेन्ज्के बाहर निकल गयो तो वो टॉवर सर्विस् नहीं देगो. तो वो व्यापकक्रिया नहीं हे. अभी जैसे आप लोगन्ने सुन्यो होय तो वो एक सेटेलाईट्को रेडियो चल रह्यो हे 'वर्ल्ड स्पेस्'. वो बहोत व्यापक हे. वाकु इन सब क्षुद्र टॉवरन्की जरूरत नहीं पड़े. वामें अगर थोड़ीसी बरसात पड़े तो वाकी साउन्डमें डिस्टर्बन्स् आवे, वो एकदम ऊपरसु आवे तो बद्दल वाको कुछ भी नहीं बिगाड़ सकें. वर्ल्डस्पेस्, सेटेलाईट्सु अपने सिग्नल् ले रह्यो हे और ले रह्यो हे करके वो व्यापकक्रिया हे तो वो ज्यादा शक्तिशाली क्रिया होयगी. जो सीमितक्रिया हे वाकी शक्ति सीमित एरिया होवेके कारण ही कम हो जावे. तो क्रियायें एक लेवलपे ही नहीं, कई लेवलपे व्यापक हो सकें हें.

(जड़में उदा.टेबलमें व्यापकक्रिया कैसे हे?)

प्रश्न : ये जो अहंक्रियाकु बतायी वामें करणसु क्रिया, क्रियासु कर्ता वो जो साईकल बताई तो वा दृष्टिसु देखें तो ये टेबल हे वामें तो कोई क्रिया दीख नहीं रही हे. अभी जो आपने बतायो वा संदर्भमें मैं ऐसो समझ्यो के प्रकृतिमें क्रिया प्रधान हे, वा एन्गलसु या सृष्टिको व्यवहार चल रह्यो हे. याके कारण अपनेकु कोई भी जड़ वस्तुमें हे तो क्रिया दीख नहीं रही हे. मेरो कन्फ्युज़न् ये हतो के कोई क्रिया कन्सॉलिडेट् होके करणमें जा रही हे, करणसु फिर कर्ता और कर्तामेंसु फिर कार्य हो रह्यो हे. तो व्यवहारमें तो ऐसो लग रह्यो हे के टेबलकु मैं देख रह्यो हूं, टेबल मोकु दीखे हे तो वा टेबलमें कोई क्रिया तो प्रकट नहीं हे, तो आँख करण हे और करणको और कर्ताको कुछ सम्बन्ध हे. वो बाहरसु क्रियाके कर्ताको और कर्तासु क्रियाके तरफ आवे, ऐसो लगे हे.

उत्तर : यामें एक बात समझो खास. ये बहोत पुराने ख्याल

हें. इन ख्यालनूको कबसु गणपति बापा मोरिया (विसर्जन) हो गयो हे. आज ये मान्य ख्यालात नहीं हें. क्योंके जो न्युक्लियरस्ट्रक्चर हे, न्युक्लियरस्ट्रक्चरमें इलॅक्ट्रॉन् प्रोटोन् और न्युट्रॉन्की परिक्रमा करें. उनको समूह टेबल हे. जा स्पीड्में इलॅक्ट्रॉन् प्रोटोन् और परिक्रमा कर रहे हें, वो स्पीड; अपने पास कोई भी ऐसी एनर्जी नहीं हे के वा स्पीड्में अपन् कोई चीजकी परिक्रमा कर सकें. उनसु घड़्यो भयो जो ये टेबल होय तो या टेबलमें भयंकर व्यापकक्रिया चल रही हे. क्योंके टेबलकु कोई करण प्रोवाईड् नहीं कियो गयो हे, तो टेबल बिचारेकु कर्ता होवेको अभिमान नहीं हे. करके टेबलके पास ऐसो कोई इन्स्ट्रुमेन्ट नहीं हे के जा क्रियाके साथ तुम्हारे साथ वो इन्टरएक्ट् कर सके. व्यापकक्रिया चल नहीं रही हे, ऐसो नहीं हे. साईन्स्के हिसाबसु कोई भी चीज जो पैदा भई वामेंसु कार्बन् एमिट् होनो शुरू होवे. कन्टीन्युअस् कार्बन् यामेंसु एमिट् हो रह्यो हे. और कोई भी चीज जो बनी हे, पैदा भई हे, वाकी एज् मापनी होय तो वाकी कार्बन् मापके तुरंत पता चल जाय के याने कितनो कार्बन् एमिट् कियो वासु वो कितनी पुरानी हे. चाहे तो पथ्थर होय, चाहे तो मुर्दा होय, चाहे तो चित्र होय, चाहे तो पेड़ होय, चाहे तो टेबल् होय, पूछो तो भई के क्यों आवाज नहीं आ रही हे. ‘‘उनके आ जानेसे चेहरेपे आ जाती हे रोनक. वो समझते हें के बीमारका हाल अच्छा हे.’’ एक बात ध्यानसु समझो के क्रियायें तो जड़में भी बहोत चल रही हें. जा बखत अपन् प्रकृतिकु सक्रिय केह रहे हें, तो ‘‘**प्रतिक्षणपरिणामिनो हि भावा:**’’; (सांख्यकौमुदी.५) हर सेकन्ड्में वामें कुछ नयो हो रह्यो हे. वो अपनूकु मेहसूस होय के नहीं होय क्योंके अपनूकु सेकन्ड ही ऑब्सर्वेबल् नहीं होय तो ये तो सेकन्ड्के भी हजारवे हिस्साकी बात हे. तो वो अपनेकु ऑब्सर्वेबल् नहीं होय. जैसे केमरा सेकन्ड्के पांच हजारवे हिस्सामें फोटो ले तो अपनेकु ऑब्सर्वेबल् कहां होय के कब लियो? तो बात जब माईन्युट् लेवल्पे चली जाय तो ऑब्सर्वेबल् नहीं होय.

पर वाकु अपन् समझ सकें हें. संस्कृतमें याको एक बहोत अच्छो उदाहरण दियो हे **‘शतपत्रवेध’**. कमलके सो पत्ता रखे होंय और वामें एक सुई भौंक दो तो कौनसो पत्ता कब छिद्यो वो पता नहीं चलेगो. अपनेकु लगे के साइमल्टेनियस्ली विंध गये, पर जब सो पत्ता एकके नीचे एक रख्यो होय तो क्रमवार ही तो विंधे गये होंयगे न! एक झटकामें अपनेकु लगे के सुई आरपार हो गई पर लॉजिकली वो संभव नहीं हे. वो घटना क्षणके कौनसे हिस्सामें घट गई वो तो पता नहीं चले. वो ऑब्सर्वेबल् नहीं होवे. जड़में होती भई क्रियानूकु ऑब्सर्वेबल् नहीं होनो एक अलग कथा हे और क्रिया नहीं होनो एक दूसरी कथा हे. मैं समझूं के क्रियायें कुछ व्यापक भी होवें और जा इन्स्ट्रुमेन्ट्में या आधारपे क्रिया प्रकट हो रही हे, वा आधारकी लिमिट् कितनी हे, वाके हिसाबसु भी क्रिया तो प्रकट हो ही रही हे.

अपनूने कोई इन्स्ट्रुमेन्ट् ऐसो आजतक नहीं बनायो जो आउटर स्पेस्सु आती भई लाईट्कु रिफ्लेक्ट करे. क्योंके लाईट्को नेचर स्प्रेड् होवेको हे. वा सबकु कन्डेन्स्ड् करके वाकु रिफ्लेक्ट् कर पावेकेलिये सरफेस् साईन्टिफिकली अभी अवेलेबल् नहीं हे. पर क्या लाईट आउटर स्पेससु नहीं आ रही हे? जैसे दसकरोड़ प्रकाशवर्ष दूरसु, एक लाख पचास हजार मील प्रति सेकन्ड्के हिसाबसु प्रकाश चले तो दसकरोड़ बरस चले तो उतनी दूरसु लाईट आ रही हे, वो अपनेकु आँखसु तो दीख रही हे, वो तारा आँखसु दीख रह्च्यो हे, वो गेलेक्सी आँखसु तो दीख रही हे, वो आ तो रही हे, नहीं तो दीख नहीं सके. अपने पास कोई जड़ सरफेस् ऐसी नहीं हे के वाकु रिफलॅक्ट् कर सके. नहीं कर सके करके वाको यहां प्रतिबिम्ब नहीं पड़ रह्यो हे. पर समझो के कभी फ्युचरमें कोई एक सरफेस् अपनूने ऐसी बना दी के आउटरस्पेस्सु आती भई लाईट रिफ्लेक्ट् कर सके, तो अपनेकु यहां वाको रिफ्लेक्शन् दीखेगो. अपन् कहें के रिफ्लेक्शन्

दीख्यो तो वासु क्या फर्क पड़्यो? अरे भाई! बहोत फर्क पड़ गयो. दस करोड़ प्रकाशवर्षसु दूर आती भई लाईटकी मार यापे हे; इतनो माइन्युटली ऑब्सर्वेबल् न्युट्रॉन हे के वो अपनेकु ऑब्सर्व् हो नहीं रह्यो हे. यदि वा लाईटको मारा नहीं होय तो अपनी आँखसु भी नहीं दीखनो चहिये. आँखसु दीख रह्यो हे. टेलिस्कोप्में दीख रह्यो हे. फोटो पाड़ो तो दीख रह्यो हे. जरा क्लिक् करो तो भी वो दीख रह्यो हे.

अभी डेढ़साल पेहले पूरे एक आखे ब्रह्माण्डको, न जाने कितने साल दूर पैदा होते भयी गेलेक्सीके दो तीन दिन तक फोटो पाड़े. वाके पेहले नहीं दीख रह्यो हतो. अचानक तीन दिन दीखे करके फोटो पाड़े. इतनी दूरकी चीज भी दीख रही हें फोटोमें भी आ रही हें तो यामें भी वाको कुछ न कुछ मार (लाईटको आनो) तो चल ही रह्यो होयगो! तो जब प्रकाशकी यापे मार चल रही हे, तो ऐसे कैसे तू मान रह्न्यो हे के यामें चेन्जिस नहीं आयेगो? हर जगह क्रिया तो जबरदस्त चल रही हे. इतनो जगत् सक्रिय हे, जगत् माने प्रकृति, के माईन्डबोगलिंग हो जाये अपनो, के क्रिया कैसे चल रही हे! बहोत सारी बातें क्या हो जाये के अपन् वामें पैदा भये हें, वापे वोही बात के **"फुरसत किसे थी कोई मेरे हालात पूछता."** वो अपन् हालात पूछे नहीं करके अपनेकु पता नहीं चले. हालात् पूछो तो सब हाल बतायेंगे. हर चीज अपनी हालात बतायेगी के मैंने ये प्रकाश झेले हें. क्रिया तो चल रही हे. क्रिया अच्छी तरहसु चल रही हे.

अब रही बात महत्की. महत् सृष्टिकी ब्लु-प्रिन्ट् हे तो फिर याकी गणना काल, कर्म, प्रकृति, स्वभाव में हो सके? क्या कारणकोटिमें हे के कार्यकोटिमें? महत्तत्त्वसु लेके महत्, अहंकार, पंचतन्मात्रा, पंचज्ञानेन्द्रिय, पंचकर्मेन्द्रिय, पंचमहाभूत ये सब कारणकोटिके तत्त्व हें, ये कार्य कोटिके

तत्त्व नहीं हें. याकु निबन्धमें महाप्रभुजीने बतायो हे.

प्रश्न : क्रिया और कार्य को भेद कैसे समझनो?

उत्तर : क्रिया और कार्य; जैसे पंखा चल रह्यो हे तो पंखाको चलनो एक क्रिया हे. वाके कारण अपनेकु हवा मिल रही हे वो कार्य हे. "मैं बोल रह्यो हूं" ये क्रिया हे. वाके कारण मेरे दिमागमें चलते विचार तुमकु समझमें आ रहे हें वो कार्य हे. तो क्रिया और कार्य में अन्तर तो हे ही. कोई भी सरफेस्सु लाईट् जब रिफलेक्ट् हो रही हे, तो वो क्रिया कर रही हे. वो सरफेस् अपनेकु दिखलाई देवे लग जाये, ये वाको कार्य हे. केसेट् बज रही हे तो क्रिया हे, साउन्ड् प्रोड्युस् हो रह्यो हे तो वो कार्य हे.

प्रश्न : क्रियाको कॉन्सोलिडेशन् कैसे होवे?

उत्तर : क्रियाको कॉन्सोलिडेशन् ऐसे होवे के हर क्रिया जो चल रही हे, याकु कई सामान्य उदाहरणसु समझ सके हें. एक क्रिया कोई चल रही हे. वो लाईट कैसे स्प्रेड् होती चली जाये, पर वाकु स्प्रेड् नहीं होवे देके क्रियाकु अपन् कॉन्सेन्ट्रेट् करवावें, तो क्रिया कॉन्सेन्ट्रेट् हो जाये. जैसे अपन् आई ग्लास्सु कॉन्सोलिडेट् करें सूर्यकी किरणकु तो वो सूर्यकी किरणें रुईकु जला सकें. आईग्लाससु कॉन्सेन्ट्रेट् नहीं करें तो सूर्यकी किरणें रुईकु नहीं जला सकें. उन किरणन्के यहां आके पड़वेकी क्रिया वो फेलनेकी हो रही हती, वो सिकुडके कॉन्सोलिडेट् हो गई. जा बखत कोई कारणसु क्रिया कॉन्सोलिडेट् होवे हे, वा बखत वो ऑलमोस्ट् मॅटरकी तरह रूप धारण कर लेवे हे. कोई भी क्रिया विरल होती चली जाये तो एकदम छितरी होती चली जाये. जैसे पंखा जोरसु चल रह्यो हे, ब्लोअर पंखा चल रह्यो हे, छोटीसी लाईट कोईपे डालो. ये जो मेटलकु जोड़ें हें, तो वो क्या करें? गेसकु कॉन्सोलिडेट् करके आग लगाके छोड़ें तो मॅटल् भी काट सके नहीं तो वो मॅटल् नहीं

काट सके. जो ये ड्रिल् करवेवाले आवें, वो क्या करें? वो उंगली फिरायेंगे तो ड्रिल् नहीं होयगो. जब ड्रिलिंगमशीन इतनो फास्ट् फिरे तो भीत समझे वाके पेहले तो वो भीतमें घुस जाये. तो वहां क्रिया कॉन्सोलिडेट् हो गई ना. बोर करें, ड्रिल् करें येही सिद्धान्त वहां भी हे. यहांतक प्रयोग किये गये हें के खाली साउन्डसु, साउन्ड्में कोई फिनोमिना ऐसो नहीं हे, पर खाली साउन्डके जोरके धमाकासु कांचकी बारी टूट सके. साउन्ड वेव् तो कितनी छितरी वेव् हे. वो भी जब हवाके कारण आ रही हे, जैसे बहोत जोरको पटाखा फूटे तो कानको परदा फूट सके. वो आवाज करवेकी वायब्रेशन् कॉन्सोलिडेट् होवे हे, वो सिर्फ हिलाके ही नहीं रेह जायें पर फोड़के आ जावें. सारी क्रियायें आईग्लासकी (लाईट्की) तरह कॉन्सोलिडेट् होके एक तरफ आयेंगी तो वो कॉन्सोलिडेट् हो जायेंगी. नहीं तो नेचरली वो छिटकती चली जायें.

प्रश्न : मृत्यु आर्टिफिशियल् हे के स्वाभाविक?

उत्तर : अपने शरीरके एन्गलसु देखो तो आर्टिफिशियल् नहीं हे स्वाभाविक हे. क्योंके जो चीज जन्मी हे तो जनमते ही वाको एक ग्राफ बने. **उत्पद्यते अस्ति वर्धते.** और जितनो बढ़े वा बढ़वेके बाद **अपचीयते क्षीयते और नश्यति.** तो उत्पत्ति, स्थिति, अपचय और नाश, याको एक ग्राफ बने हे. तो वा दृष्टिसु जो भी चीज पैदा भई हे, पैदा होवेके बाद वो बढ़े हे और बढ़वेके बाद एक लेवलपे आके वो घटनी शुरु होवे हे और वाके बाद फिर खतम होवे हे. तो वो अपनो शरीर पैदा भयो हे, या लिये वाको बढ़नो भी स्वाभाविक हे, घटनो भी स्वाभाविक हे और खतम होनो भी स्वाभाविक ही हे. शरीरके एन्गलसु देखें तो मृत्यु स्वाभाविक हे, आर्टिफिशियल नहीं हे जबतक के कोई मर्डर न कर दे, पहाड़पेसु कूद न जातो होय; उन सब मृत्युनूकु अपन् एक्सीडेन्ट् कहें हें. वो शरीरके गुणनूके कारण शरीर खतम नहीं भयो, पर शरीरके बाहर

रहे भये कोई कारणसु शरीर जा बखत खतम होवे वा बखत वाकु अपन् एक्सीडेन्ट् कहें या मर्डर कहें. अब याकु एक्सीडेन्ट कहो के मर्डर कहो पर ये शरीरके बाहर रहे भये कारणसु घटित भई घटना हे; पर जब शरीरके खुदके स्वभावसु शरीर खतम हो रह्यो हे, वा बखत शरीरकी मृत्यु स्वाभाविक घटना हे. वो आर्टिफिशियल् घटना नहीं हे.

पर या मृत्युकु आत्मा यदि अपनी मृत्यु माने तो वो घटना पाछी स्वाभाविक नहीं हे, क्योंके आत्मा तो मर नहीं रही हे. मर तो शरीर रह्यो हे पर आत्मा अपनी मौत माने. जैसे सो शरीर रह्यो हे पर आत्मा यों माने के "मैं सो रही हूं" जाग शरीर रह्यो हे पर आत्मा यों माने के "मैं जग रही हूं" आत्माके एन्गलसु सोनो, जागनो, मरनो वो तो आर्टिफिशियल् हो गई ना! तो जो चीज आर्टिफिशियल् हे वो हमेशा आर्टिफिशियल् होयगी ऐसो नहीं हे. जो आर्टिफिशियल् हे वो कोईके लिये नेचरल् भी हो सके हे. जो नेचरल् हे वो कोईके लिये आर्टिफिशियल् भी हो सके हे. जैसे पहाड़ हें, पत्थर हें वाकु अपन् जाने हें के नेचरको पैदा कियो भयो फिनोमिना हे. पर अपने लिये पहाड़ पथ्थर नेचरल् हें. वामेंसु अपन् मूर्ति घड़े तो आर्टिफिशियल् हे. वामेंसु ईंट बनावें तो आर्टिफिशियल् हे. बाकी नहीं तो पहाड़ पथ्थर सब नेचुरल् हें. अपने लिये नेचुरल हें पर नेचरके लिये नेचुरल् नहीं हें. क्योंके अपन् जाने हें के जितने भी पहाड़ बने हें वो लावारस जमके बने हें. लावारस जमके बने हें मतलब वो आर्टिफिशियल् हें, नेचुरल् नहीं हे. पृथ्वीके मूलरूपमें पत्थर कहां हते. हते ही नहीं. अभी भी पृथ्वीके भीतर सो पचास मीलके नीचे अपन् जायें तो पथ्थर हे ही नहीं. लिक्विड् फॉर्ममें गरम उगलतो भयो लोहा हे. कहां हे पथ्थर? पथ्थर तो हे ही नहीं. नारंगीके ऊपर जैसे छिलका होवे, वैसे पृथ्वीके गोलापे छिलकाके जितनो पथ्थर हे. उतने छिलकाकी

इतनी तागड़धिन्ना हे. वो जैसे चायको अपन् प्याला रखें और वापे मलाई जम जाये; तो चायपे मक्खी बैठ नहीं सके पर मलाईपे मक्खी बैठ जाये. ऐसे पृथ्वीपे जमी भई मलाईके जैसे पथ्थरनूपे अपन् मक्खीकी तरह बैठे भये हें. ये अपनो माजना हे. जहांतक पृथ्वीको सवाल हे मक्खीसु बहोत ज्यादा ऊंची स्टेटस् अपनी नहीं हे. चायके ऊपर मलाई जमी नहीं और मक्खी आनन्दसु आके बैठ सके. फिर मक्खीकु तकलीफ नहीं आवे. मलाई नहीं जमी होय और बैठे तो बिचारी डूब जाये या फंस जाये. मलाईपे आनन्दसु बैठ जाये और मलाई खाती भी होवे, कभी देखियो. तो अपन् भी जो पृथ्वीकी मलाई खा रहे हें; वो चाहे दाल होय के चोखा होय के गेहूं होय के चना होय, वो सब अपन् मक्खीकी तरह मलाई खा रहे हें. बाकी कोई पृथ्वीकी तुलनामें अपनी ज्यादा हेसियत नहीं हे. चायकी मलाईपे आई भई मक्खीकी हेसियतके जैसी. तो स्वाभाविक भी हे.

प्रश्न : मृत्यु आर्टिफिशियल् हे के नेचुरल् हे के ट्रांसफॉरमेशन् हे, के प्रोसेस हे?

उत्तर : देखो, फॉरमेशन् मतलब कोई चीजको फॉर्मकु एक्वायर करनो. ट्रांसफॉरमेशन्को मतलब या फॉर्ममेंसु वा फॉर्ममें जानो. जैसे ट्रांसलेट्को मतलब क्या? या शब्दमेंसु वा शब्दमें जानो. ट्रांसक्रिप्ट्को मतलब क्या? गुजरातीमें लिखे भयेकु हिन्दीमें लिख देनो. ऐसे ट्रांसफॉरमेशन्को मतलब क्या के या फॉर्ममेंसु वा फॉर्ममें जानो. तो जबभी कुछ परिवर्तन आयो इतनो सब्सटेन्शियल् के फॉर्म बदला रह्यो हे तो ट्रांसफॉरमेशन् तो होयगो ही. हर ट्रांसफॉरमेशन् एक प्रोसेस् ही हे. कोई ट्रांसफॉरमेशन् ऐसो नहीं हे के जाकु अपन् प्रोसेस् नहीं केह सकते होंय. अब मृत्यु क्या हे? अगर ट्रांसफॉरमेशन् हे तो अपनो शरीर जीवित अवस्थामें जा तरीकेको हे वा तरीकेको मरवेके बाद रेह जाय हे? पता नहीं कितनी बास होंयगी अन्दर पर कोई बास बाहर नहीं निकले पर मरते ही शरीरकी सारी बास बाहर आवे

लगे. ट्रांसफॉरमेशन भयो हे; जीवित शरीरमें वा तरीकेकी विकृति नहीं दीखें जा तरीकेकी मुर्दामें दीखें. तो ट्रांसफॉरमेशन तो भयो हे. और ये ट्रांसफॉरमेशन् कोई झटकामें होवे नहीं हे, ये तो प्रोसेस्के द्वारा ही होवे हे. तो हर मृत्युमें ट्रांसफॉरमेशन् और प्रोसेस् इन्वॉल्व् तो हो ही रही हे.

प्रश्न : चार्टमें ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञप्ति समझमें नहीं आयो हे.

उत्तर : ये 'ज्ञाता' माने जानवेवालो. 'कर्ता' माने करवेवालो. 'कार्य' माने कर्ताके भीतर जो क्रिया, कर्ताकु जो करण अवेलेबल् हते, वासु जो क्रिया सम्पन्न करी, वा क्रियाको परिणाम कार्य. ऐसे ज्ञाताके पास जो करण या इन्स्ट्रुमेन्ट् अवेलेबल् हें, उनसु वाने जो भी ज्ञप्ति करी, वाको आतो भयो रिज़ल्ट् होवे हे ज्ञेय. जैसे आप आँखसु देख रहे हो, तो आँख देखवेकी क्रियाको करण हे; वा करणके कारण आप अपनी आँखसु देख रहे हो. आपकु ये टेबल दिखलाई दे रह्यो हे, तो टेबल आपके लिये ज्ञेय हो गयो. वैसे तो बहोत गम्भीर दार्शनिक समस्या हे और पांच दस हजार पेज यापे लिखे गये हें. ये इतनो डिबेटेबल् इश्यु हे. और पांच दस हजार मैं केह रह्यो हूं पर ज्यादा ही होंयगे. वस्तु वस्तु हे आपके ज्ञानको विषय बनेके नहीं बने. हर वस्तुको ज्ञेय होनो जरूरी नहीं हे पर हर ज्ञेयको वस्तु होनो जरूरी हे. ज्ञेय कोई ऐसी चीज हे, जाके साथ ज्ञाता इन्टरेक्ट् कर रह्यो हे. ज्ञाता जा बखत इन्टरेक्ट् करे, इन्टरेक्ट् मतलब 'आप-ले'; वस्तुसु कुछ ले और फिर वा वस्तुके प्रति अपनो कोई प्रतिभाव प्रकट करे. जा वस्तुके प्रति प्रतिभाव प्रकट करे, वा प्रतिभावके कारण वस्तु वस्तु नहीं रेहके, ज्ञेय बन जाती होवे हे. जैसे कर्ताके कॉरेस्पॉन्डिंग् कार्य हे, वैसे ज्ञाताके कॉरेस्पॉन्डिंग् ज्ञेय होवे हे. वो ज्ञाताके कॉरेस्पॉन्डिंग् ज्ञेय कैसे होवे हे? ज्ञाता कोई ज्ञप्तिकी व्यापकक्रिया हे. अब सरलतासु याकु याही तरहसु समझ सको हो के जो रेडियोकी और मोबाईल्की जो फ्रीक्वेन्सी हे, इन

सारी फ्रीक्वेन्सीकी क्रिया व्यापक हे. आपने अपनो टी.वी., आपने अपनो रेडियो, आपने अपनो मोबाईल, स्विच्ऑन कियो तो वा इन्स्ट्रुमेंन्ट्सु जो क्रिया सर्वव्यापक हे, वा क्रियाकु आप अपने यहां सम्पन्न कर सको हो. वा क्रियाकु आप जब अपने यहां सम्पन्न कर सको हो, तब वा क्रियाको कार्य आप पैदा कर रहे हो. करके ज्ञप्तिकी व्यापकक्रियाकु ज्ञाता जब कोई करणसु सम्पन्न करे, तो उतनी वस्तु वा ज्ञाताके रिलेशनूमें ज्ञेय बने हे. जैसे जो क्रिया चल रही हे, जैसे हवा निरन्तर सब जगह बेह रही हे तब एक दरवाजा खोलें और खोलके बन्द करें तो ढेर सारी हवा अन्दर आ जाय और ढेर सारी हवा बाहर निकल जाय. ये आपकु यों नहीं पता चलेगो. अपने बाथरूममें दरवाजाके सांधा होय. वापे हाथ रखके देखो, वाके पास थोड़ी देर चिपकके देखो तो आपकु पता चलेगो. अपन् समझें के दरवाजा बन्द हे, बाथरूममें कोई आयेगो नहीं पर हवा निरन्तर उन सांधानूमेंसु आती जाती होवे हे. की-होलूके पास जाके देखो तो वामेंसु भी हवा आ रही होवे हे. पंखा नहीं चल रह्यो होय तो भी, घरमें जाके प्रयोग करके देखियो. हवा निरन्तर चल रही हे. निरन्तर चलती हवाकु अपने पंखासु चलावें, पंखा अपने पास करण हे. निरन्तर चलती हवाकु जब अपन् पंखासु चलावें, तो अपनेकु कर्ता होवेको भान आवे के हवा कौन चला रह्यो के "मैं चला रह्यो हूं". अब ये तो इलेक्ट्रिकपंखा आ गये, पुराने जमानाके वो पंखा ले आओ तो तुरत कर्ताको भाव आयेगो के हवाकु चलाई कौनने? "मैंने चलाई" चलाई काहेसु? चलती हवाकु चलाई के बन्द हवाकु चलाई? जो हवा चल रही हे वा चलती हवाकु आपने पंखा हिलाके करणसु पैदा कर दी. अब वो आपके संदर्भमें पैदा भई हे, वो हवा सबकु नहीं मिलेगी. चलती हवा सबकु मिल रही हे, अभी दरवाजा खोलके बन्द करो तो चलती हवा घुस जायेगी और चलती हवा फटसु बछड़ानूकी तरह बाहर भी निकल जायेगी. पर पंखासु जो अपन् हवा चला रहे हें वो अपने पासके

करणसु ऑन ऑफ करके चला रहे हें तो वामें अपनेकु कर्ता होवेको भाव पैदा होवे. कर्ता होवेको जो भाव पैदा हो रह्यो हे, तो कौनसी क्रियाके कर्ता अपन् हें? जो क्रिया ऑलरेडी चल रही हे वाके. मैं मोबाईल खोलूं, मोकु तुरन्त कोईसु कॉन्टेक्ट हो जाय के कौन आदमी कहां हे? या कौनसो एस.एम.एस. कहांसु आयो? या कितने बजे आयो? वो व्यवस्था तो चलती क्रियाके कारण हे. पर जब मैं मोबाईलमें देखूंगो तो वो करण मैंने वापर्यो, मैंने ज्ञानको करण वापर्यो, वाके लिये वाको ज्ञाता मैं हो जाऊंगो आप नहीं होओगे. आप करण वापरोगे तो आप हो जाओगे. वो ज्ञप्तिकी क्रिया तो मैं स्विच् ऑन करूं के नहीं करूं, हो ही रही हे. एस.एम.एस. रातकु आयो होय और मैं अभी खोलूं, तो अभी मोकु दीखेगो. अभी खोलूं और मोकु अभी एस.एम.एस. दीख्यो याको मतलब ये थोड़े ही हे के एस.एम.एस. अभी आयो. एस.एम.एस. तो रातकु आ गयो. मैंने अभी खोल्यो तो अभी दीख्यो. तो जब मैं अपनो ज्ञानको करण वापर रह्यो हूं, तब वो ज्ञान पैदा होयगो. वा ज्ञानको ज्ञाता मैं होऊंगो. वाके ज्ञाता आप नहीं होओगे. अब जैसे सी.आई.डी.के पाकिस्तानसु एस.एम.एस. आ रहे हते वाकु इन्टरसेप्ट् करके वो एस.एम.एस. पढ़ लिये, ऐसे आपके पास वैसो इन्स्ट्रुमेन्ट् होय तो आप भी मेरो एस.एम.एस. सुन सको हो. यदि आपके पास व्यवस्था नहीं हे तो जैसे मैंने ऊपर कियो, आखिर वाने भी तो कोई इन्स्ट्रुमेन्ट् वापर्यो होयगो, सी.आई.डी.ने इन्टरसेप्ट् सुन लिये करके, तो वाने कोई न कोई इन्स्ट्रुमेन्ट् वापर्यो होयगो. जा बखत जो जा इन्स्ट्रुमेन्ट्कु वापर रह्यो हे, वो वाको ज्ञाता बन जाये. इन्स्ट्रुमेन्ट् यदि ज्ञानको हे तो ज्ञाता बन जाय, क्रियाको हे तो कर्ता बन जाय, भोगको हे तो भोक्ता बन जाय. भुक्तिकी क्रिया भी चल ही रही हे. ऐसे मत समझो के भुक्तिकी क्रिया चल नहीं रही हे. हर चीज निरन्तर एक दूसरेकु खा रही हे. प्रकाश पानीकु खा जा रह्यो हे. खानो नहीं केहनो होय तो पीनो कहो. वा प्रकाशकु पानी खा जा रह्यो

हे. हर पानी प्रकाशकु सोख ले हे. प्रकाशकु पृथ्वी खा जा रही हे. ऐसे हर चीज एक दूसरेकु खा ही रही हे. वामेंसु अपने पास ऐसो कोई इन्स्ट्रुमेन्ट् आ गयो, तो अपन् खा जायें और अपन् भोक्ता बन जायें. अपने पास वाको इन्स्ट्रुमेन्ट् हे तो अपनो हो जायेगो और नहीं हे तो ज्ञान, क्रिया और भुक्ति तो व्यापकताके साथ चल ही रही हे. अब खावेको मतलब क्या? अपन् ढोकलाकु खानो, ये मतलब समझें, ये खावेको मतलब नहीं. खावेको मतलब बाहरकी चीजकु अपने भीतर इनटेक् करके एब्सोर्व् कर लेनो. याको नाम खानो. लाईट भी येही काम करे हे. आप ध्यानसु समझो या रहस्यकु. कैसे अपन्ने पेड़कु पानी पिलायो. तो पेड़न्की भीतरकी जो नसें हें उनसु पानी पत्ता तक जावे. पत्ताके वहांसु प्रकाश वा पानीकु खींचे. पत्ता बदमाशी क्या करे के पानी तो खींच ले पर प्रकाश मोकु दे दे. वो प्रकाश खींचके पेड़के भीतर वाकी शुगर बना दे. प्रकाश क्या करे? पानीकु पत्तामेंसु खींचके हवामें छोड़ दे. करके जा एरियामें पेड़ होवें वा एरियामें अपन्कु ठण्डक लगे. क्योंके वा पेड़के आसपासके एरियामें हवामें, प्रकाशने जो पानी खींच्यो हे पेड़न्मेंसु वाकु हवामें छोड़ दियो हे. वो बहोत ऊपर तक नहीं ले जाय. प्रकाश या तरीकेकी हवाके लिये चेरिटी करे हे. खेंचे वो हे और खावे वो हे. भीम और शकुनि टाईपको रिलेशन् हे. भीम-शकुनिको रिलेशन् जानो? हर जगह भोगकी क्रिया चल रही हे. पर जो इन्स्ट्रुमेन्ट् आपके पास प्रोवाईड् कियो गयो हे, वा इन्स्ट्रुमेन्ट्कु आप वापर रहे हो तो भोग आपको केहलायेगो, नहीं वापर रहे हो तो भूखे रहो. सीधीसी बात हे.

प्रश्न : जैसे कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता में अहंकार हो रह्यो हे आर्टिफिशियल् या रियल्, वैसे क्या कार्य, ज्ञेय और भोग्य में भी अहंकार होयगो? अगर ये चेतन हे तो?

उत्तर : वाही विषयपे मैं आ रह्यो हूं. कल ये विषय नहीं

हो पायो हतो या लिये. मैंने अपने पेहले या दूसरे दिनके विवेचनमें ये बात स्पष्ट बताई हती अहंकारके सब तरीकेके स्वरूप होवें हें. क्रिया, कर्म, करण, फल सब तरीकेके रूप होवें हें. जाकु फल केह रहे हें, वो कार्य, ज्ञेय, भोग्य, ये फल हे. तो वो अहंकारको ही एक रूप हे. अहंकार ही भोग बन रह्यो हे, अहंकार भोगको करण भी बन रह्यो हे, अहंकार ये क्रियाको रूप भी हे. अहंकार वाके कारण अपनेकु फिर कर्ता होवेको भाव भी पैदा करे हे. या विषयकु अपन् डीटेलूमें भी देखवेवाले हें. चिन्ता मत करियो.

(अहंकारकी क्रियात्मकता और करणात्मकता)

अहंकारकी क्रियात्मकताकु अपन् अनुभव कर रहे हें के नहीं? कैसे अपनेकु पता चले के अहंकारकी क्रियात्मकता हे के नहीं? यों तो अपनेकु पता नहीं चले. कोई पेड़को पत्ता हिलतो भयो दीखतो होय या अग्निकी ज्वालायें उठती भई दीखती होंय या पानीकी कोई लेहरें बेहती भई दीखती होंय. ऐसो कोई फिनोमिना नहीं हे. क्यों नहीं हे? क्योंके अहंकार अपनी इन्टरनल् फॅकल्टी हे. अहंकार अपनी इन्टरनल् फॅकल्टी होते भये भी, अहंकारको क्रियात्मक रूप यदि अपनेकु समझनो हे तो एक तरहसु नहीं, सेंकड़ों तरहसु अपन् समझ सकें हें. वामें कई रूप, मैं आपकु बताउंगो, या समय पुस्तक नहीं हे जासु बता सकुं उन बहोत सारे रूपनूकु, पर थोड़ोसो पुष्टिमार्गके कॉन्टेक्स्ट्में आप देखोगे तो वाकी खूबसूरती समझमें आयगी. जितनी भी मर्यादामार्गकी मूर्तियें हें, उन मूर्तिनूके मुखारविको दर्शन करो तो अहंकारी लगे. ये निन्दाके अर्थमें नहीं केह रह्यो हूं. अपने यहां भगवानूके नेत्र झुके भये होवें. मूर्तिके दर्शन करें तो अपनेकु लगे के अपनो भगवान् अहंकार नहीं कर रह्यो हे. आँखें नीचे कौनकी होवें हें? जाको अहंकार डायल्युट हो गयो होय, लज्जाके कारण, संकोचके कारण, कोई अपराधवृत्तिके कारण, दैन्यके कारण, प्रेमके कारण, भयके कारण, आँखें नीची हर वक्त वाकी होवें. खाली

अपने ठाकुरजीको नेत्र सीधे धराके देखो के उनमें अहंकार प्रकट भयो के नहीं भयो? और ये नेत्र ही प्रकट करवेकी बात नहीं हे. आप कोई कोई नेत्र ऐसो देखोगे, अगर आपकी फियान्सी यों करके देखेगी तो आपकु लगेगो के क्या लफड़ा हे? और झुके नेत्रनूसु देखेंगे, सीधीसी बात हे सब जगह. जानवरनूके शिकारनूकी आप देखोगे ना फिल्म् बिल्ली चूहा होय, चाहे शेर बकरी होय, जा बखत वाकु शिकार करनो होय वा बखत आँखें झुकाके नहीं करे, पूरी फाड़के अहंकारसु करे. जा बखत भी मरतो होय ना जानवर शिकार जाको हो रह्यो हे, वाकी आँख मिंची मिंचीसी हो जायें क्योंके दया, लज्जा, भय, संकोच, दैन्य, प्रेम ये सारी बातें अहंकारके ऑपोज़िटरूपमें आती बातें हें और वो आँखकु नीची करें. ऐसी तो नेत्रके एन्गलसु ही नहीं, माथाके एन्गलसु भी, कोई यों माथा चढ़ाके चले तो आपकु लगेगो के अहंकारी हे. लगेगो के नहीं लगेगो बोलो! और जो माथा झुकाके चलतो होय तो! व्यवहारमें ही पता चल जायगो के अहंकारी हे के नहीं हे. एक सामान्य बात बताऊं. बोलचालमें ही अपन् (माथा उठाके) कहें "कैऽऽऽसे हो?" लगेगो के नहीं अहंकार? और (माथा झुकाके कहें) "कैसे हो भाई!" तो अहंकार नहीं लगेगो. अहंकारकी क्रियायें तो कितने ढंगसु प्रकट हो रही हें.

बम्बईमें एक बहोत बड़े मदनमोहन करके म्युज़िकडायरेक्टर हते. बोडी बिल्डर हते. सब आर्टिस्ट् बताते के जब म्युज़िकडायरेक्शन् करते ना! तो उनके भीतर पेहलवानीको अहंकार इतनो ज्यादा हतो के म्युज़िकडायरेक्शन् करते भये भी अन्तमें सम्पूर्ण दोनो हाथ उपर उठाके बोडिबिल्डिंगकी मुद्रा करते. तो वो अहंकार वाको जातो ही नहीं. म्युज़िककन्डक्ट् करवेमें उनकी ये प्रोब्लम् हती. वाके यहां जो लोग जाते हते, उनने खुद मोकु बताई के म्युज़िक कन्डक्ट् करे यों यों करके तो बोडिबिल्डरको अहंकार वाकु आ ही जातो. मसल्स्

होवें ना तो अहंकार आवे! और देखो अहंकार कहां प्रकट नहीं होवे! हर एक स्टेप् धरवेमें अहंकार प्रकट हो जाय. शादीमें हस्तमिलाप करवेके लिये आती वधूकु देखोगे ना! तो वाकी चालसु पता चलेगो कि अहंकारसु आ रही हे, डरी भई आ रही हे, शरमाती भई आ रही हे, क्रियात्मक अहंकार कितने ठिकाने प्रकट होवे हे. ऐसे नहीं हे के अहंकारकी क्रियायें होवें नहीं हें. कदम कदमपे अहंकारके क्रियात्मक स्वरूप अपनेकु देखवेकु मिलें हें. इन क्रियात्मक स्वरूपनूकु अपन् देख सकें हें.

अहंकार करण भी हे, जब क्रिया कॉन्सॉलिडेट् होवे हे तो करणकी तरह सॉलिड् हो जाय. सॉलिड् होवेके बाद वाको प्रभाव द्रव्यकी तरह प्रकट होवे हे. जैसे साउन्डवेव् हे. पर कॉन्सोलिडेट् होके वो कांचकु तोड़ भी सके हे. जब कॉन्सोलिडेशन् होवे तब तो वामें मेटरवालो केरेक्टर आवे. करणको भी रूप हे.

(अहंकारशृंखला)

करणको रूप ही नहीं कार्यको रूप भी हो जाय. क्योंके एक अहंकारसु दूसरो अहंकार पैदा होवे ही हे. कोई भी अहंकार आपने कियो, ये निन्दास्तुतिकी बात नहीं हे. जैसे आपने एक अहंकार पैदा कियो "मैं पति हूं" "मैं पिता हूं" वासु दूसरो अहंकार पैदा हो जायगो. वा अहंकारके कारण कोई और अहंकार भी पैदा हो जायगो. जैसे तुम्हारी जिम्मेदारी मैं लऊंगो. महाप्रभुजी ना पाड़ें "पोष्य-पोषण-रक्षणे अहंकार न कुर्वीत" पर अपनेकु तो अहंकार हो ही जायगो ना! अब जैसे ही अपनूने कोईकी जिम्मेदारी ली, तो जिम्मेदारी लेवेकी अहंक्रियाके साथ ही वाको कॉरोस्पॉन्डिंग् अहंकार तुरत पैदा हो जाय (कि मैं यह हुं और ये मेरो काम है). ये देखो कितनी एलर्टसिस्टम् हे. कोईकी छोटीसी रॅस्पॉन्सिबिलिटी लो तो अहंकार तुरत पैदा हो जाय.

आप लोगनूके यहां वरके साथ अणवर बैठे ना, बहोत छोटीसी क्रिया हे हों! बहोत थोड़ी देरकी क्रिया हे, पर वाके चेहराको भाव बदला जाये. अणवरकु तुरत एक अहंकार आ जाय. करके वाकु गाली देके सोबर करनो पड़े. अणवरकु गाली क्यों दी जाय? मूलमें वरकु देनी होवे, तो अणवरकु गाली देके अपनेकु सेटिस्फाई कर लें, जैसे बड़ी बड़ी मूर्ति होवें ना, जिनकी यात्रा नहीं निकल सके. उनकी गोदीमें एक छोटी भोगमूर्ति होवे तो वाकी यात्रा निकाली जाय. एक्च्युअली गाली तो विवाही वरकु देनी होवे पर वरकु गाली देवें कैसे? करके अणवरकु सब गाली दे दें. वासु हमारो मन सॅटिस्फाई हो जाय के हमारी लड़की ले रह्यो हे तो गाली तो कैसे देवें पर अणवरकु तो गाली दे सकें ना! मूल रहस्य वाको वो हे. गुस्सा वहां काढ़नो हे. अब वोही अणवर अहंकार करके बैठे के नहीं बैठे. कोई भी शादीमें जाके देख लिजो. एक रहस्य समझो. जाकु एक्सपेक्टेशन् होवे के मोकु अणवर बनायो जायगो, वाकु नहीं बनाओ और दूसरेकु बनाओ तो वाकु बुरो लगे के नहीं लगे? **मानापेक्षां विवर्जयेत्.** महाप्रभुजी कहें हें के मानकी अपेक्षा मत रखो पर वाकु एक्सपेक्टेशन् होवे के "याकी शादीमें मैं अणवर बनूंगो" और वाकु अणवर नहीं बनावो, तो तुरत वाको ईगो हर्ट् हो जाय "मेरेकु अणवर नहीं बनायो." अणवर क्या होवे हे? वरकी भोगमूर्ति अणवर होवे हे.

ऐसी छोटी छोटी बातनूमें एक अहंकारमेंसु दूसरो अहंकार प्रकटे हे के नहीं प्रकटे हे ये देखो. अपने व्यवहारमें या तरीकेके अहंकार व्यापकक्रियाके रूपसु भरे भये हें. बहोत छोटे छोटे हें, टॅम्पोरेरी हें, पर अवेलेबल हें. नॉन् अवेलेबल् नहीं हें. टाईम् टु टाईम् हरेककु अपन् वापरते ही होंय. जैसे बरसके बरस आर्टिस्ट्कु अच्छे परफॉरमेंन्स्के लिये एक शील्ड दी जाय ना! वाके लिये कोई आर्टिस्ट्कु मेरे द्वारा शील्ड दिवाई गई. मेरेकु तो ये रहस्य पता ही हतो, एक्च्युअली

वा आर्टिस्ट्को नाम भी मैंने ही रिक्मन्ड् कियो हतो. मैं तो भीतरकी सब स्टोरी जानतो ही हतो पर उनने कही के "तुमही शील्ड दे दो", तो मैंने कही के "दे दूंगो". वामें एक और चीफगेस्ट आये हते, वानें यों केह दियो "ये शील्ड गोस्वामीजीके हाथसु इनकु मिली हे या शील्डके स्टेटस्के अनुरूप ये आर्टिटिस्ट् अपने परफॉरमेन्स्को लेवल् निभायेंगे." आर्टिटिस्ट्कु इतनो बुरो लग गयो के निभायें के नहीं निभायें, एक बरसतो मेरे पास रहेगी पर ये होता कौन हे केहनेवाला? मैंने कही "हां सच बात हे!" देखो छोटीसी बात. एक शील्ड दी हे खाली, वा चीफगेस्टकु भी नहीं केहनो चहिये हतो. मैं तो ऐसी बात करूं नहीं कभी पर समझो के वाने केह भी दी तो वामें इतनी बुरी लगावेकी क्या जरूरत हे. पर आदमीकु अहंकार आ जाय. हर जगह आदमीको अहंकार प्रकट होही जाय. वाने तुरत कही "होता कौन हे केहनेवाला! साल भर तो रहेगी मेरे पास. मैं याको लेवल् निभाउं के नहीं निभाउं क्या फरक पड़े हे?" मैंने कही "सच बात हे कुछ फरक नहीं पड़ेगो, आपके पास एक साल तो शील्ड रेहवेवाली हे" तो अहंकार ऐसी छोटी छोटी बातनूमें भी प्रकट होवे हे के नहीं होवे हे या बातकु देखो. एक शील्ड मिलवेके कारण अहंकार कार्यरूपसु प्रकट हो गयो. अब वो साल भर चलेगो. अब आर्टिस्ट् अच्छो परफॉरमेन्स् करेगो तो, पाछो फिर वो आर्टिस्ट्कु पुशअप् करेगो, नहीं तो पाछे फिर वो शील्ड कोई दूसरेकु चली जायगी. ये (क्रिकेट)मेचमें भी तो ऐसे ही होवें ना!

हर चीजमें अहंकार पैदा होवे हे, पैदा नहीं होवे हे ऐसी बात नहीं हे, अहंकारकी क्रियाको रूप, करणको रूप, कार्यको रूप और कर्ताको रूप अपन् देख सकें हें, वो चाहे ज्ञानकी क्रिया होय, चाहे भोगकी क्रिया होय, चाहे वैसी क्रिया होय, ये रहस्य अपनेकु क्लीयर कट् समझ लेनो चहिये. मैं समझुं के या कन्सेप्ट्में आपकु

बहोत डिफिकल्टी नहीं होनी चहिये.

(भोक्तृत्वको अहंकार सबसु पावरफुल)

यामें जो सबसु मजेदार बात हे वो बात ये हे; कल मैंने आपकु थोड़ो इन्डिकेशन् दियो के ये जो अपनो भोक्तृत्व हे, 'भोक्तृत्व' माने भोगकी इच्छा, जो अपने भीतर रह्यो भयो अपनो आत्मरतिको एक रिवीलेशन् हे, वा आत्मरतिको प्रस्फुट होनो प्रकट हो रह्यो हे वो अपनी भोगेच्छाके रूपमें प्रकट हो रह्यो हे, मैंने कल वा बातके इन्डिकेशन् दिये हते. अब देखो भोगकी इच्छा, अपन् अपने अहंकारकु भोगनो चाहें हें के नहीं? डू वी रेलिश् अवर ईगो और नॉट? लाखमें या करोड़में कोई एक आदमी होयगो के जो अपने ईगोकु रेलिश् नहीं करतो होय. बाकी तो हर आदमी अपने ईगोकु, छोटे मोटे जातके ईगो होंयगे ना! वा हर ईगोकु रेलिश् तो करे हे. मतलब अहंकारको कोई भोग क्रियात्मकरूप भी हे, भोग करणरूप भी हे, भोग्यरूप भी हे, और वाके कारण अपन् भोक्ता भी बन रहे हें. ये भोक्ता बहोत बड़ो फिनोमिना हे. याको बड़प्पन क्या हे? वो कल मैंने आपकु समझावेको प्रयास कियो के ज्ञानकी आनुवंशिकता तो पुरुषसु और क्रियाकी आनुवंशिकता प्रकृतिसु आ रही हे पर ब्रह्मकी आत्मरतिसु अपने भोगमें आनुवंशिकता आ रही हे. भोग कर्तृत्वकु भी, ज्ञातृत्वकु भी इन सबनूकु सुपरसीड् करे हे, लिहाजा भोगको जो अहंकार हे, माने अहंकारको भुक्ति होवेको जो फॅसेट् हे, वो बहोत ही पॉवरफुल् हे. उन दोनों (ज्ञातृत्व और कर्तृत्व के) अहंकारके फॅसेट्सु भी पॉवरफुल् हे.

या रहस्यकु समझो क्योंके अपन् अपने ज्ञानकु भी दगा दे सकें हें वा भोगके अहंकारके जोरमें; अपन् अपने कर्मकु भी दगा दे सकें हें भोगके अहंकारके जोरमें; जो चीज भोगनी हे वो तो भोगनी हे वामें अपनो ज्ञान ना पाड़तो भी होय; अपनी क्रियाकी

सामर्थ्य नहीं भी होय तब भी अपनेकु भोगनी हे. भोगको अहंकार इतनो पॉवरफुल् हे, या भोगके अहंकारके सामने क्रिया और कर्म को अहंकार बहोत कमजोर पड़ें हें. माने डब्लु.डब्लु.एफ अगर इन तीनोंनूको करावें तो भोगको डब्लु, कर्ता और ज्ञाता को उठाके फैंक देगो. ऐसी पिटाई करेगो के हाथ पैर सब टूट जायें. भोक्ताको अहंकार खंडित होनो बहोत मुश्किल कथा हे. कर्ताको अहंकार फटसु खंडित हो जाय; ज्ञाताको अहंकार फटसु खंडित हो जाय. दो बात समझमें नहीं आई ना! ज्ञातापनेको अहंकार खंडित हो जाय. अपनूने थोड़ी टांग उछाली और अपन् कूदके वहां नहीं गये तो कर्ताको अहंकार खंडित हो जाय. अपन् जायें के नहीं जायें पर वो भोक्ताको अहंकार के ''ये मोकु चहिये'' (कायम रहे).

एक्च्युअली बात ध्यानसु समझो, के मनुष्यकु पक्षीनूकु और मछलीनूकु देखके, निरन्तर ये भोगेच्छा होती हती के हम कब आकाशमें उड़ें, हम कब पानीमें तैरें; करके वा भोक्ता होवेके अहंकारके कारण विमान और पनडुब्बी बनाई. पनडुब्बी क्यों बनी? मनुष्य मानतो हतो के पानीमें जाऊंगो तो मर जाऊंगो; वो जानतो हतो के उड़वे जाऊंगो तो टांग वांग सब टूटेगी; पर कर्ता और ज्ञाता के लेवलपे अपनूने या बातकु रियलाईज़् करी के नहीं ये बात अपने लिये सेफ नहीं हे, पर प्रेशर कहांसु आयो, अपने कर्तापे और अपने ज्ञातापे प्लेन् बनावेको, राईट बन्धुने या जाने कौनने भी पनडुब्बी बनाई, वो प्रेशर आयो कहांसु? अपने भोक्ता होवेके अहंकारसु; नहीं, नहीं, भोगनो हे. ये क्या बात हे के हम बुद्धिमान हें और हम उड़ नहीं सकें और कबूतर उड़े और उल्लू उड़ें. उल्लूकु देखके अपन् ठगा गये. कबूतरकु देखके ठगा गये, कौआकु देखके ठगा गये, मछलीकु देखके ठगा गये. वो अपने भोक्तृत्व अहंकारकु ठेस पहोंच गई के ये फॅसिलिटी वोही क्यों वापरें? हम क्यों नहीं वापर सकें हें? ये भोक्तृत्वके अहंकारने बहोत सारे प्रोडक्ट् पैदा किये हें. याही लिये

कोई भी चीजकी मार्केटिन्ग् करवेमें, आपके ज्ञातृत्वके अहंकारकु कभी इन्वोक् नहीं करेगो. टी.वी.को कोई भी सीरियल्; आपके कर्तृत्वकु कभी इन्वोक् नहीं करेगो पर हर वक्त आपके भोक्तृत्वके अहंकारकु इन्स्टिगेट् करेगो. तुम याकु भोग सको हो. तुम याकी मजा ले सको हो. क्योंके वो अपनो वीकेस्ट् पॉइन्ट् हे. वाके सामने अपनी कुछ नहीं चले. कर्ताकी कुछ नहीं चले. ज्ञाताकी कुछ नहीं चले. जैसे कछुआकी पीठ बड़ी मजबूत होवे पर पेट बड़ो कमजोर होवे, ऐसे भोक्तृत्वको अहंकार अपनी बड़ी भारी वीकनेस् हे. वाके कारण अपन् कुछ भी चीजकु सेक्रीफाईस् करवेकु तैयार हो जायें. यासु अपनेकु पता चले के अपने भीतर भोक्तृत्वको अहंकार कितनो मजबूत हे और वाको मूल कारण ये हे के वो कर्ता और ज्ञाता दोनोंके खंभापे खड़े होके भोक्तृत्व बने हे. कर्ता और ज्ञाता दोनोंके खंभापे खड़े होके भोक्ताको भाव आ रह्यो हे. क्योंके सृष्टिकी आत्मरतिकी प्रोसेस् व्यापकक्रियासु फोर्स्ड हे. वासु फोर्स्ड होवेके कारण वो स्ट्रोन्गेस्ट् फोर्स् हे. वाकी कम्पेरिज़न्में बाकी सारी फोर्स् कमजोर पड़ें हें.

भगवान्ने याहीलिये जा बखत गीतामें दैवी और आसुरी सम्पत्तिको विभाजन कियो, वामें भी भगवान् या बातकु भूले नहीं हें के भोक्तृत्वको भाव, एकदम उद्दामभोगको भाव है वो आसुरीभाव हे. बारहवें अध्यायमें **''यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये इति अज्ञानविमोहिता''** (भग.गीता.१६।१५). तो वहां **'यक्ष्ये'** कर्तृत्वको हे, **'दास्यामि'** भी कर्तृत्वको हे, पर **'मोदिष्ये'** में भोक्तृत्वको अहंकार वहां भगवान् बता रहे हें. अब देखो येही भोक्तृत्वको भाव भगवान्में आर्टिफिशियल् नहीं हे. भगवान्को कर्तृत्व ज्ञातृत्व भोक्तृत्व नेचुरल् हे, नॉन्आर्टिफिशियल् हे पर अपनेमें आर्टिफिशियल् हे करके ये सारे लफड़ा पैदा हो रहे हें. अपनूकु भोगनो हे, वो भोगवेके प्रेशरमें अपन् सारो प्रयास करें पर सचमुचमें भोग अपन् भोग नहीं पावें. जैसे भर्तृहरिने कही **''भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता.''** (भतृ.वैरा.शतक.१२) अपन् भोगकु भोगनो चाहें पर

भोग अपनेकु कहीं भोग कराके भोग रह्यो है. तुम पकौड़ा खावो, कचौड़ी खावो, रसगुल्ला खावो, अपन् समझ रहे हें के ये सब हम भोग कर रहे हें पर भीतर अपने बॉडीमें कोलेस्ट्रल् बढ़ाके अपनेकु खा रही हे. **''भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता.''** भोगको भाव इतनो स्ट्राँग् हे के डॉक्टर केह दे के मर जाओगे पर वा भोगपे कन्ट्रोल् नहीं आवे. मरेंगे तो मरेंगे पर खाके मरेंगे. डॉक्टरने कही हती ''तुम सिगरेट पीओगे तो मर जाओगे. हर सिगरेट्के कारण इतनी सेकन्ड् आयुष्य खतम होवे.'' ये एलिज़ाबेथ क्वीन् हे वाके बापकु केन्सर हो गयो हतो. वाने केल्कुलेशन् करके बतायो और डॉक्टरकु बेवकूफ सिद्ध कर दियो ''यदि तुम्हारी बात सच्ची होय तो इतनी सिगरेट मैंने पी हें तो अपने जन्मके पांच बरस पेहले मैं मर गयो होतो. इतनी सिगरेट ऑलरेडी पी चुक्यो हूं.'' मर्यो केन्सरसु पर भोक्तृत्वको भावार्थ पठ्ठेको इतनो स्ट्रोंग हतो. डॉक्टरकु बेवकूफ सिद्ध कर दियो ''यदि तुम्हारी बात सच्ची हे तो जनमके पांच बरस पेहले मैं मर गयो हतो इतनी सिगरेट तो मैं पी ही चुक्यो हूं.''

(भोक्तृत्वकु जबरदस्ती दबानो नहीं चेनलाईज़ करनो)

भोक्तृत्वको कितनो स्ट्राँग्भाव हे. यासु अपन् समझ सकें के यापे कोईको कन्ट्रोल आ नहीं सके. ड्राईव् याकु अपन् कर सकें हें, चॅनेलाईज़ कर सकें हें, महाप्रभुजी येही कहे हें के तुम याकु चॅनेलाईज़ कर सकोगे; ये बात महाप्रभुजीने सुबोधिनीजीमें बहोत अच्छी तरेहसु कही हे ''जा बखत भोक्तृत्वके अहंकारकु अपन् जबरदस्ती दबानो चाहें, तो सब देवता अपने भीतर बैठे भये नाराज हो जायें, पता नहीं कौनसे देवता हें पर सब देवता नाराज हो जायें.'' वाके लिये कहें हें ''याकु दबावेकी कोशिश मत करो पर याकु अच्छेमें लगावेकी कोशिश करो. ये एक तरहकी बाढ़ हे. बाढ़कु तुमने रोकनो चाह्यो तो यों रोक दोगे तो दूसरी तरफ जायगी पर बाढ़ रुकेगी

नहीं. भोक्तृत्वको भाव एक तरहकी बाढ़ हे. भोक्ता होवेको भाव बाढ़की तरेह आवे हे, वाके सामने अपनी क्रिया या अपनो ज्ञानको फोर्स् बहोत कमजोर पड़े. भगवान् गीतामें कहें हें **''सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर् ज्ञानवानपि प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति...धूमेन आव्रियते वह्निः यथा आदर्शो मलेन च यथा उल्बेन आवृतो गर्भः तथा तेन इदम् आवृतम्. आवृतं ज्ञानम् एतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा कामरूपेण कौन्तेय! दुष्पूरेण अनलेन च''** (भग.गीता.३।३३,३।३८-३९).

तो यामें मूल बात समझवेकी हे के ये भोक्तृत्वके भावके कारण, क्योंके अपनकु अपने भोक्तृत्वको मजा आवे हे, या लिये अपन् कर्तृत्वमें भी मजा माने हें. क्योंके अपनेकु भोक्तृत्वको आनन्द आ रह्यो हे या लिये अपन् अपने ज्ञातापनेके अहंकारको भी आनन्द ले हें. यदि भोक्तृत्वको आनन्द नहीं होतो ना! ऐसे तो बहोत रेयर स्पेसीमेन् आदमीके मिलेंगे के जो ज्ञाताके अहंकारको मजा लेवेके लिये कुछ भोग करते होंय. बात समझमें आई! कर्ताके अहंकारके कारण भोक्ताके अहंकारको कुछ वापरते होंय. जैसे ब्रिटेनको बर्टन्ड् रसैल करके एक बहोत बड़ो नास्तिक फिलोसोफर हतो वाकी बायोग्राफीमें मैंने पढ़यो के वाने जीवनमें सिर्फ दो फिल्म देखीं. वो भी फिल्म देखवेके लिये फिल्म नहीं देखी. वाकु आँखके कुछ वीज्युअल् फन्क्शन् कैसे होवें हें, वाकी स्टडी करनी हती, वो स्टडी करवेके लिये वाने फिल्म देखी बाकी वाने फिल्म देखी नहीं. एक फिल्म देखी जाकी अपने धर्मेन्द्रने या राजेन्द्रने एक फिल्म बनाई हती अणुबम्बके विरोधमें तो वामें वो बर्ट्रेन्ड् रसैल्को आशीर्वाद लेवे गयो हतो. वाने रिक्वेस्ट् करी हती के मैं आपको आशीर्वाद लेवे आयो हूं तो मेरी ये फिल्म भी देखो. तो वाने दूसरी फिल्म देखी. एक सौ बरस डोकरा जीयो पर अपनी इच्छासु वाने खाली एक फिल्म देखी. ये दूसरी तो याने दिखाई करके देखी अन्यथा फिल्म देखी ही नहीं. एक फिल्म देखी वो भी अपने कर्तृत्वके, ज्ञातृत्वके अहंकारके वश

समझवेके लिये देखी के ये फिनोमिना क्या हे? ऐसे बहोत रेयरस्पेसीमेन् होवें के जो जानवेके लिये कुछ भोग करनो चाहते हों य और कुछ करवेके लिये भोग करनो चाहते होंय; बाकी तो ९९.९ परसेन्ट् आदमी भोगके लिये कुछ करनो चाहे हे, भोगके लिये कुछ जाननो चाहें; जानवेके लिये कुछ भोगनो नहीं चाहे, करवेके लिये कुछ भोगनो नहीं चाहे. यासु अपनेकु पता चले के भोक्तृत्वको अहंकार कितनो जबरदस्त अपने भीतर भर्यो भयो हे.

एक सामान्य बात समझो. सब लोग अपने दिलपे हाथ रखके पूछो के अपन् कॉलेजकी एज्युकेशन् ले रहे हें, जो स्टडी कर रहे हें, वो विषय समझवेकेलिये कर रहे हें के अच्छी नौकरी मिले या अच्छी जॉब् मिले वाके लिये कर रहे हें. अच्छी नौकरी मिले, अच्छो जॉब् मिले वाके लिये पढ़ रहे हें. कोई विषयकु समझवेके लिये नहीं पढ़ रह्यो हे. तो अपनुकु पता चले के ज्ञान, या विषयको मैं जानकार हूं, वो जानकार होवेको अहंकार अपन् या लिये पैदा करनो चाहें के वा भोक्तृत्वको अहंकार अपनेकु कुछ केह रह्यो हे के ये काम आयेगो. कितनो आदमी जानवेके लिये जाननो चाहतो होयगो? भोगवेके लिये आदमी हर वस्तुकु जाननो चाहेगो. करवेके लिये भोगनो कौन चाहतो होयगो? कोई नहीं चाहेगो. जैसे पुरानी मोडलुस्टोरीमें तुमने पढ़्यो होयगो के वो बूढ़ो किसान आमको पेड़ लगा रह्यो हतो. वाकु जाके कोईने पूछी "कब तो ये पेड़ बड़ो होयगो और कब तू याको फल खायेगो?" वाने कही "नहीं, नहीं! मैंने अपने बोये भये आम नहीं खाये, मेरे बाप दादानूके बोये भये आम मैंने खाये तो मेरो भी ये कर्तव्य हे के मैं अपने आवेवाली पीढ़ीके लिये आंबा बोऊं." वहां भी देखो भोक्तृत्वको नहीं, कर्तृत्वको अहंकार वाको कुछ भोग करवा रह्यो हे. ऐसे आदमी कितने हो सकें हें? बहोत कम. भोगवेके लिये कर्ता बनवेवाले करीब करीब सभी मिलेंगे, भोगवेके लिये ज्ञाता बनवेवाले सभी मिलेंगे पर करवेके

लिये भोग करवेवाले, जानवेकेलिये भोग करवेवाले बहोत कम मिलेंगे. भगवानूने कह्यो हे **"मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद् यतति सिद्धये."** (भग.गीता.७।३). समझो के भोक्तृत्वको अहंकार बहोत स्ट्राँग् फोर्स् हे और वो कारण भी मैंने आपकु बतायो के वो स्ट्राँग् फोर्स् क्यों हे. क्योंके प्रकृतिसु नहीं आ रह्यो हे, ये पुरुषसु नहीं आ रह्यो हे, ये परब्रह्मकी आत्मरतिसु आतो भयो फोर्स् हे जो अपनेमें एग्जर्ट् हो रह्यो हे. ये वाकी ब्युटी देखो और करण अपनो हे करके कार्य अपन् पैदा कर रहे हें, कार्य ब्रह्म पैदा नहीं कर रह्यो हे, ये वाकी ब्युटी हे.

या अर्थमें चाहे कर्तृत्वको अहंकार होय, चाहे ज्ञातृत्वको अहंकार होय, चाहे भोक्तृत्वको अहंकार होय, अपन् एक बात समझ सकें हें के ये तीनों अहंकार अपने भीतर आर्टिफिशियल् हें. अपनी चेतनाको ये स्वरूप मूलमें नहीं हे. ऑरगेनाइज़ेशन्के कारण वा तरहसु चीजकु ऑरगेनाइज़् कियो गयो हे करके वो रूप प्रकट हो रह्यो हे या अर्थमें वो आर्टिफिशियल् हे. बुद्धधर्मके एक अश्वघोष भये हें. उनने बुद्धचरित्र सबसु पेहले लिख्यो. या संदर्भमें उनने एक बहोत अच्छी बात कही हे. कितनी रिमार्केबल् बात उनने कही हे. **"न प्राप्तानि पुरा न संप्रति नच प्राप्तौ दृढप्रत्ययः वांछामात्रपरिग्रहाण्यपि वयं त्यक्तुं न तानि क्षमा:"** (भर्तृ.वै.श.१०७). या तरीकेको कर्तृत्व, या तरीकेको ज्ञातृत्व, या तरीकेको भोक्तृत्व, अपनो हतो नहीं. न अभी हे. न भविष्यमें कभी हो सकेगो. पर एक इच्छा अपने भीतर हे के हमकु भोगनो हे वाके कारण ये सारे तामझाम अपन् कर रहे हें के मैं कर्ता हूं, मैं ज्ञाता हूं, मैं भोक्ता हूं. **"वांछामात्रपरिग्रहाणि"**, वस्तुपरिग्रहाणि नहीं, जैसे ये वस्तु मेरे हाथमें आ गई ये वस्तुपरिग्रह हो गयो. वस्तु मेरे हाथमें नहीं आई पर ये वस्तु मोकु मिलनी चहिये, ये वांछा मेरे हाथमें हे. वा वांछाके कारण अपनूने कर्तृत्व, ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व के अहंकारकु पकड़के रखे हें. **"वांछामात्रपरिग्रहाण्यपि**

वयं त्यक्तुं न तानि क्षमाः.'' इच्छाके कारण पकड़े भये हें पर इनकु छोड़नो बहोत मुश्किल हे. हाथमें हे नहीं, सिर्फ इच्छा हे के हमारे हाथमें आ जाय, हाथमें कुछ भी नहीं हे, मात्र इच्छा हे के हाथमें आवे. इच्छाके कारण अपनूने हाथमें पकड़ रखें हें और उनकु अपन् छोड़ नहीं पा रहे हें. हाथमें आयेगो तो जाने कौन क्या करेगो? यों वो कहे हे अश्वघोष. ''**वांछामात्रपरिग्रहाण्यपि वयं त्यक्तुं न तानि क्षमाः.**''

ये एक बड़ो गम्भीर रहस्य हे. क्यों? पूछ्यो गयो है के आर्टिफिशियल् हे के नेचुरल् हे के रियल् हे? संत कबीरने बड़ी मजेदार बात कही हे आपकु बताऊं. ''**दस द्वारेका पींजरा तामें पंछी पौन. अचरज यह तहां पुर गया, उड़े तो अचरज कौन?**'' दस दरवाजाको पींजरा, वा पींजरामें पक्षी कौन हे हवा. अब इन दस दरवाजानूमेंसु पक्षी उड़ जाय तो अचरज कौन बात को हे? पुर गयो ये अचरजकी बात हे. ये दस दरवाजाके पींजरामें पवन पुर्यो भयो हे. कितनी अचरजकी बात हे? एक छोटोसो सांधा होय ना, वो मैंने बात बताई हती ना के बाथरूमके दरवाजाके की होल्मेंसु हवा निकल जाय बाहर, तो यामें तो दस द्वार हें. यामें फंस्यो भयो हे ये अचरजकी बात हे. उड़ जावेमें अचरजकी क्या बात हे? पर ''**वांछामात्रपरिग्रहाण्यपि वयं त्यक्तुं न तानि क्षमाः.**'' अपनेकु एक इच्छा हे के भले पींजराके दसद्वार होंय पर हमारो प्राणपंखी यहीं फंस्यो रहनो चहिये. तो ये एक रहस्य हे. ये काहेको रहस्य हे? भोक्तृत्वके अहंकारकी सुपीरियारिटीको. भोक्तृत्वको अहंकार सबकु सुपरसीड करे हे. वाको ये रहस्य हे. क्योंके सृष्टिको मूल फोर्समेंसु आतो भयो ये अहंकार हे. दसद्वारेके पींजरामें पवन हे जो बंद हो गयो. पवन दसद्वारेके पींजरामें बन्द होवे कैसे? पवन तो बंद होवे ही नहीं, छोटोसो भी होल होवे तो निकल जाये. ये निकल नहीं पा रह्यो हे ''**अचरज यह ये तहां पुर गया, उड़े**

तो अचरज कौन?'' ये रहस्य हे वाको. पर ''**वांछामात्रपरिग्रहाण्यपि वयं त्यक्तुं न तानि क्षमाः**''.

एक बड़ी मजेदार बात आपकु बताऊं. कोईकु ज्योतिषीने भविष्यवाणी कर दी के तुम बहोत धन कमाओगे. वांछामात्रपरिग्रहकी बात बता रह्यो हूं हों. बहोत कमाओगे पर तुम्हारी आयुष्य बहोत कम हे. ज्योतिषी बड़े गिलिन्डर होवें. एक बाजुसु फंसावें और एक बाजुसु निकालें. तो दोनों बातें कर दी. आदमी तो नर्वस् हो गयो ना! ''बड़ो पकौड़ो बानियो तातो लीजे तोल.'' ठण्डो पड़े तो कुछ भी नहीं मिले ना! बड़ा पकौड़ा और बनिया गरम होय तब ले लेनो चहिये. जैसे ही ठण्डो पड़े तो वो भाग जायेगो, हाथमें नहीं आयेगो. इनकु ज्योतिषियें बराबर तोलनो जानें. उनकु पता होवे हे के लफड़ा कहां हे? तो वाने बता दियो के तुम्हारो धनको योग तो बहोत हे. आयुष्यको योग जरा क्षीण हे. अब एक्सीडेन्टली या सचमुचमें ऐसो हो गयो के वाने खूब पैसा कमायो. ज्योतिषपे वाकु अपार श्रद्धा हो गई के भविष्यवाणी तो सच्ची निकली. बस पचासको भयो तो वाकु डर लगनो शुरु भयो के आयुष्य कम हे तो मरें नहीं कहीं. सब लोगनकु, परिवारवालेनूकु कही के ''आयुष्य कम हे'', पैसा तो खूब आ गयो, परिवारवालेनूने कही के ''एक काम करो के आपकी गोल्डनजुबली सेलिब्रेट करें''. उनने कही के ''जरूर करनी चहिये''. गोल्डनूजुबली सेलिब्रेट करी. सब जातवालेनूकु बुलाये. सब लब्धप्रतिष्ठित लोगनूकु बुलाये. भारी फन्क्शन् भयो. गोल्डनूजुबली हो गई. पर मनमें वो तो हतो के ''**उड़े तो अचरज कौन? दस द्वारेका पींजरा, तामें पंछी पौन.**'' वो गोल्डनूजुबलीमें जो मजा आनो चहिये हतो, वो मजा नहीं आयो. गोल्डनूजुबली बीत गई. माने वो पचासके हो गये. पिचहत्तरके हो गये. मरे तो नहीं. बस पिचहत्तरके हो गये तो बोले के ये तो बड़ी चमत्कारकी बात हो गई. ज्योतिषीने कही हती के पैसा मिलेंगे, बात तो सच्ची कही हती तो पैसा

तो मिल गये. पर आयुष्यके लिये कम बताई हती तो अपन् पिचहत्तरके तो हो गये. अब वाने ज्योतिषीकु कही के "महाराज आप तो केह रहे हते के आयुष्य कम हे और पिचहत्तर तो हो गये". वाने कही के "भगवान्की कृपा हे तो शायद ज्योतिषकु कुछ पोस्टपोन्ड् कियो होयगो. अब वाकु भयो के ज्योतिषके बाद अब भगवान्कु पकड़नो चहिये. वाने हवेलीमें जाके छप्पनभोग करवा दिये. बड़ी कृपा करी, आयुष्य कम हती पर पिचहत्तरके हो गये. छप्पनभोग भी हो गयो, बड़ी वाह वाह हो गई. पर वाके बाद कभी हवेली आयो ही नहीं. समाधानीजीकु, मुखियाजीकु, महाराजकु बड़ी चिन्ता भई के छप्पनभोग करायो और वाके बाद कभी आयो ही नहीं. क्या बात हे, कितने उत्सव हो रहे हें, ये हो रह्यो हे, वो हो रह्यो पर वो आ नहीं रहे हें, तो चक्कर क्या हे? तो एक दिन कोईकु भेज्यो वाके यहां पूछवेकु के "क्यों नहीं आ रहें हें"? उनने कही के "देखो भई! बात ये हे के ज्योतिषीने यों कही हती के भगवान् भूल गयो दीखे हे के मेरी कम आयुष्य हती. अब घड़ी घड़ी भगवान्के पास जाऊं और याद आ जाय उनकु के आयुष्य कम हे तो काहेकु खोटी याद दिलानी". **"दस द्वारेका पींजरा तामें पंछी पौन."** या लिये अब नहीं आ रह्यो हूं के भूल गयो दीखे भगवान्. ज्योतिषीने तो कही हती के आयुष्य कम हे पर व्यर्थमें अब घड़ी घड़ी जाके डाचा दिखाके वाकु याद आ जाय के याकी आयुष्य कम हे तो ऐसो रिस्क् काहेकु लेनो? फिर दर्शन करवे गयो ही नहीं एक दिन भी छप्पनभोगके बाद. ये वाको बड़ो भारी रहस्य हे. **"दसद्वारेका पींजरा वामें पंछी पौन, अचरज यह तहां पुर गया, उड़े तो अचरज कौन!"** दर्शन करनेही बंद कर दिये के भगवान्कु कहीं याद आ जाय के याकी आयुष्य कम हे तो वाके बाद लेनेके देने पड़ जायें ना! एक बखत तो ठीक पर दूसरी बार रिस्क लेनेका नहीं. डोकरा दर्शन करवे ही नहीं गयो. ये जैसे भोक्तृत्वके अहंकारको, बड़ो गम्भीर माहात्म्य हे. ये

गम्भीरता या रहस्यकी समझो.

देखो एक और मजेदार बात आपकु बताऊं. मैं तो भोक्तृत्वके अहंकारके अलग अलग फेसेट्स् बता रह्यो हूं आप ये मत समझियो के खाली जोक् सुना रह्यो हूं. ये जोक् नहीं हे पर भोक्तृत्वके अहंकारके डिफरेन्ट् फेसेट्स् कैसे हें, वो मैं आपकु समझानो चाह रह्यो हूं. आजकल क्योंके मनुष्य इतनो बढ़ गयो हे, पॉप्युलेशन्, तो जो लोग बड़ी उम्रके हें वो सब जानते होंयगे के मॅनेज्मेन्ट्कोर्स् पेहले हतो नहीं. आजकल सब चीजन्के मॅनेज्मेन्ट् कोर्स् हें. बिजिनेसमॅनेज्मेन्ट्, ईवेन्टमॅनेज्मेन्ट्, मेरिज़में वरवधूकु नचावेकी मॅनेज्मेन्ट्, आजकल सब बातकी मॅनेज्मेन्ट् हे. केओस इतनो बढ़ गयो हे के कोईकु पता ही नहीं चले के क्या करनो और क्या नहीं करनो, तो हर चीजको मॅनेज्मेन्ट् करनो पड़े. या मॅनेज्मेन्ट्के चक्करमें कोईकु इच्छा भई के लवको मॅनेज्मेन्ट् भी होनो चहिये. अनमॅनेज्ड लव् क्या कामको! कोईने इन्स्टीट्युशन् खोल ली के लव्को मॅनेज्मेन्ट् कैसे करनो? जो डिस्टिंक्शन्सु पास भयो पेहलो केन्डिडेट् उनने कही के अब जाके तुम लव करो. मॅनेज्मेन्ट्वाले तो सब प्रेक्टिकल् बात सिखावें. हर चीजकु प्रेक्टिकली कैसे डील् करनो? लव्कु भी प्रेक्टिकली कैसे डील् करनो? वाकु वो सिखायो तो प्रेक्टिकल् डील करवेमें लवमें कोई ऐसी बात नहीं होनी चहिये के जामें इमप्रेक्टिकल् होय. प्रेक्टिकल् क्या करनो? तो जाके सामने लव्प्रपोजल् देनो हतो, वामें पता नहीं के एस.एम.एस. भेज्यो के लव्लेटर भेज्यो, पर एक ग़ज़ल लिखके भेजी. वो ग़ज़ल बड़ी मजेदार हे. " इतना ना मुझको चाहो के तुम्हें भूल ना पाऊं." प्रेक्टिकल् बातपे. "इतना ना सताओ के तुम्हें चाह न पाऊं." एकदम प्रेक्टिकल बात हे. "बांधो न इस तरह के छोड़ ना पाऊं." इतनो मत बांधो के यदि छटकनो हे, या तुम्हारे बजाय कोई औरकु पकड़नो हे, तो पकड़ नहीं सकूं. थोड़ो ढीलो बांधो. "रिश्ता यों न तोड़ो के तुम्हें मिल भी न पाऊं." अब वो लेटर या एस.एम.एस.

भिजवा तो दियो, पर जाकु भेज्यो ना, वो यासु ज्यादा खतरनाक हती. वाने भी वाकु एक शेर लिखवाके भिजवा दियो. वो शेर रिमार्केबल् हे. ये तो प्रेक्टिकल् गज़ल हे. "जज़्बात अपने दिलके दरबयाने मोहब्बत तुम गाके ना सुनाओ के पसन्द कर ही ना पाऊं." आई समझमें बात! जज़्बात अपने दिलके, अपने दिलकी तुम्हारी ख्वाहिश हे, वाकु मोहब्बतके बयान्में या तरहसु गाओ मत, के तुम मोकु पसन्द आने ही बन्द हो जाओ. तो जैसे एम.बी.ए. होवे, वैसे ही एम.एल.एम. मॅनेज्मेन्ट् ऑफ लव् होयगो. तो वाको ये रिजल्ट आ गयो भोक्तृत्वको. एक बात समझवेकी यामें ये हे के भोक्तृत्वके अहंकार अपने या तरीकेके होवें हें. बहोत प्रेक्टिकल् बात हे. यामें ज्ञातृत्वकी बात नहीं हे. यामें कर्तृत्वकी बात नहीं हे. ये अपने पचका समझो तो पचका समझो, क्वालिटी समझो तो क्वालिटी हे. आर्टिफिशियलिटी समझो तो आर्टिफिशियलिटी हे. ह्युमन् रियलिटी येही हे. दिस् इज् व्हाट वी आर. बात समझमें आई ना!

ये अपन्ने आज अहंकारको सारो स्वरूप देख्यो. इन सारी बातन्कु देखवेके बाद, अब जो सब्जॅक्ट् मैं आपकु समझानो चाह रह्यो हूं, ये महाप्रभुजीके एक ग्रंथन्मेंसु नहीं हे. वो ग्रंथबेस्ड् सिद्धान्त जो मैंने आपकु सुनाये और समझाये, उन सिद्धान्तन्कु आजके जो अपने ज्ञानके जैसे भी विधायें डेवलप् भई हें, उन विधान्में जो ब्रांचेस् ऑफ नॉलेज् हें, उन विधान्में याको इवेल्युएशन् कैसे करनो, वाकु देखके यदि आप ग्रंथसु पूछोगे तो मैं नहीं बता पाऊंगो. पर महाप्रभुजीके ग्रंथन्के आधारपे ईगोके बारेमें अपन् समझे हें, वा समझकु अपन् लेटेस्ट् अपनी नॉलेज्की जैसे डिफरेन्ट् ब्रांचेस् हें, वामें देखनो होय तो कैसे देखनो वो सिर्फ आपकु बतानो चाह रह्यो हूं. वाको क्या फायदा हे वो भी बताऊंगो. अभी तक अपन्ने महाप्रभुजीके और भागवतके वचनन्के आधारपे, अहंकारकी मीमांसा करी जैसे अक्षरमेंसु प्रकृति पुरुष भये, प्रकृति और पुरुष के क्रिसक्रोसिंगसु महत् पैदा

भयो, महत्मेंसु अहंकार पैदा भयो. अहंकारकी ये सब जो वेरायटी कार्य, क्रिया, करण, कर्ता, ज्ञप्ता, ज्ञप्ति, ज्ञान, करण, ज्ञेय, ज्ञाता और भोक्ता, भुक्ति, भोग, करण, भोग्य और भोक्ता; ये जैसे सारी एनालेसिस् हे, या तरीकेकी अहंकारकी एनालेसिस्कु अपन् मॅटाफिजिकल् एनालेसिस् कहें हें. ये अहंकारके सारे मॅटाफिजिकल् एस्पॅक्ट्स् हें. ये मॅटाफिजिकल् एस्पॅक्ट् अपन्ने अभी तक डील किये. अपने यहांकी भाषामें केहनो होय तो याकु अपन् तत्त्वशास्त्र केह सकें हें. मॅटाफिजिक्स् मतलब तत्त्वशास्त्र. अहंकारकी अभी तक अपन्ने तत्त्वशास्त्रिय विवेचना करी. पर अहंकारकी तत्त्वशास्त्रिय विवेचना अपन्ने देखी, थोड़ी थोड़ी मैं आपकु ये तत्त्वशास्त्रिय विवेचनाके साथ साथ पॅरेलल् समझाते समझाते अहंकारके बायोलॉजिकल् एस्पॅक्ट् भी आपकु समझातो रह्यो हूं.

(चार्ट.४)

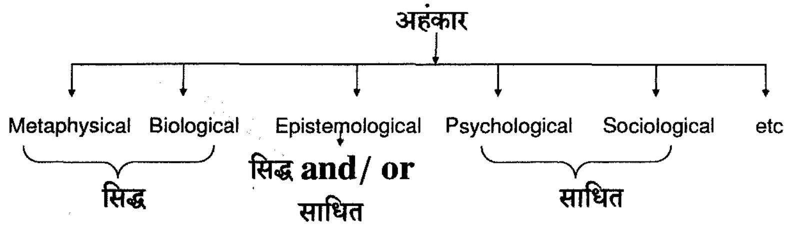

(बायोलॉजिकल् अहंकार)

मैंने हर बखत सेल्को और सारी बातन्को उदाहरण दियो. अपने यहां तो अंकिताने पेपर ही या बातको लिख्यो हे के सेल्में

अहंकार कैसे होवे हे. सेमिनारमें एक पेपर हतो रेकोर्डेड. वो जैसे आखी अहंकारकी एनालॅसिस् हे, अहंकारको वो एस्पॅक्ट बायोलॉजिकल् हें. अपन् चाहें तो उनकु माइक्रोबायोलॉजिकल् कहें चाहे बायोलॉजिकल् कहें. बायोलॉजिकल् अहंकार भी तो होवे ही हे. तो अहंकारके कई तरहके बायोलॉजिकल् एस्पॅक्ट हें. वामें सबसु इन्टरेस्टिंग् अहंकारको एस्पॅक्ट् अपनेकु समझनो हे प्रेजेन्ट कॉन्टेक्स्ट्में, वो ये हे के जैसे अंकिताने अपने पेपरमें ये बात बताई के हर सेल्में अहंकार होवे हे. वो अहंकार होवे हे तो अपने बॉडीके भीतर कितने सेल् होंयगे? अपन् अगणित केह सकें हें. उन हर सेल्में अपनो अहंकार होते भये भी वो अहंकार अपनेकु अनुभूत नहीं हो रह्यो हे ये ब्युटी देखो! अपने अहंकारकु वो सेलके अहंकार गवर्न् कर रहे हें पर वा सेलके अहंकारकु अपन् गवर्न् नहीं कर सके हें या तरीकेकी वनवेट्रॅफिक् हे. अपनो जो कुछ अहंकार हे, गये साल ही मैंने अपने धोनी जैसे बालन्की बात बताई हती, तो मेरो इतनो क्षुद्र अहंकार धोनी जैसे बालवालो, वो मेरे सेलसु ही तो गवर्न् हो रह्यो हे ना! समझो के मेरे सेल कोई ऐसे होते के जाके कारण मैं टकलो होतो तो धोनीके जैसे बाल कहांसु होते! धोनीके जैसे बाल हते वो अहंकार मेरे सेलके अहंकारसु गवर्न् हो रह्यो हे पर मेरे सेलके अहंकारकु मैं कुछ भी नहीं कर सकूं. ये जानके अपनेकु फायदा क्या? देखो ध्यानसु समझो ये रहस्य के आपके अहंकारके करणकु आप छू भी नहीं सको हो. आपके करणके अहंकारकु आप पैदा भी नहीं कर सको हो. वो तो आपकु प्रोवाईडेड् हे. जैसे सेलसु अपन् कॉन्स्टीट्युटेड् हें वा सेलकु अपन् छू नहीं सकें. वा अहंकारकु अपन् छू नहीं सकें हें, और अपन् इच्छासु इन्टरएक्ट् भी नहीं कर सकें हें. वा करणसु अपनो अहंकार डेवलप् भयो हे, वा अहंकारसु अपन् सारी दुनियासु इन्टरएक्ट् कर सकें हें, पर अपने अहंकारसु अपनेकु इन्टरएक्ट् करनो बहोत मुश्किल काम हे. मॉडल् क्या हे वाको? अपने भीतर मेरे आखे व्यक्तित्वकु घड़वेवाले

मेरे सेल्सके अहंकारके साथ मेरो कोई कम्युनिकेशन् नहीं हे. वो मेरे साथ कम्युनिकेट् कर रहे हें, वनवे ट्रेफिक्में, पर मैं उनके साथ कॉम्युनिकेट नहीं कर पा रह्यो हूं. वो मेरे अहंकारकु, द होल कॉम्प्लेक्सिटीके अहंकारकु गवर्न् कर रहे हें पर मेरी ये कॉम्प्लेक्सिटी वा पर्टिकुलर सेल्सु कम्युनिकेट् ही नहीं कर पा रही हे तो इन्टरऐक्ट् कैसे करेगी! कोई बोलचाल ही नहीं हे, कोई नम्बर ही नहीं हे के जासु डायल करके वा सेल्के अहंकारकु कुछ अपने दिलकी बात केह सकुं. कुछभी कम्युनिकेशन् नहीं हे, ऐसी भी बात नहीं हे; अंकिताको पेपर पढ़ोगे तो पता चलेगो. हे अहंकार! अपने हर सेलमें अहंकार हे. ये एक रहस्य हे. जैसे मॅटाफिजिकल् लेवलपे अहंकार लागू हो रह्यो हे, क्योंके बहोत सारे दर्शनन्ने; ये बात खास करके आपकु मैं क्यों बतानो चाह रह्यो हूं, क्योंके बहोत सारे दर्शन अहंकारकु ज्ञान मानें हें. आत्माको गुण मानें हें. ऑलमोस्ट् कैसे नेचरसु! जैसे फूलको गुण सुगन्ध हे. जलको गुण तरल होनो हे, लीक्वीड होनो हे, वा तरहसु आत्माको गुण अहंकार हे. यदि आत्माको गुण अहंकार हे, तो अहंकार कभी भी अपनो आत्माके रेहते सस्पेन्ड् या पोस्टपोन् होनो नहीं चहिये. आत्माको गुण हे तो नहीं होनो चहिये, यदि अपनो अहंकार कभी सस्पेन्ड् हो रह्यो हे, यदि कोई स्थितिमें अपनो अहंकार पोस्टपोन् हो रह्यो हे, तो वो गुण नहीं हे. अपन् जानें हें या हकीकतकु के रातकु सोवें तो अपनो अहंकार नहीं रेह जाय सोते बखत जरा भी नहीं रेह जाये. सुपना तक रहे अहंकार, अपन् जब सुपना देख रहे हें तब अपने भीतर अहंकार रहे हे. पर जब सो गये तो अपनो अहंकार भी सो जावे हे. सिस्टम् इतनी एलर्ट् हे के जैसे अपन् सोये भये होवें और कोई बुलावे अनिल! अनिल! तो अपन् कहेगें हां! फिर जग जाय. एसे जगे हे अहंकार, पर सोते बख्त जग्यो भयो नहीं हे. या खूबसूरतीकु समझो. अंशु! कहेके जगा सकूं हूं तेरे अहंकारकु, पर तेरो अहंकार सोते भये जाग्यो भयो नहीं हे. ये रहस्य समझे ना! अहंकार भी सो जाय. कोमामें

तो अपन् अच्छी तरहसु जानें हें, अहंकार बिल्कुल सो जाये. तो क्या सोते बखत अपनेमें आत्मा नहीं रेह जाय, रहे हे. यदि अहंकार आत्माको गुण होतो, जैसे नैयायिकनूने मान्यो, इन लोगनूने मान्यो तो आत्मा रहे हे वा बखत गुण तो बोलनो चहिये हतो, गुण तो बोल नहीं रह्यो हे मतलब अहंकार अपने भीतर या तरीकेकी सिस्टम् हे के जाको स्विच् ऑन ऑफ होवे हे. ऑन ऑफ होवे हे ये स्विच् हे, ये फॅसिलिटी अवेलेबल हे, देखो, बी केयरफुल. वाकु ऑन ऑफ करी भी जा सकेगी. जैसे अपन् सांस ले रहे हें, छोड़ रहे हें, वो अपनी इच्छासु गवर्न् होवे हे तो अपन् प्राणायाम कर सकें के नहीं रामदेवजीको! नॉरमल् कोर्समें सांस इच्छासु नहीं चल रही हे बिना इच्छाके चल रही हे, पर इच्छासु लेनो होय अपनेकु सांस तो प्राणायाम कर सकें के नहीं कर सकें ऐसे कुछ न कुछ इच्छाको रोल अहंकारपे हे, नहीं हे ऐसो तो नहीं केह सकें. **'वांछामात्रपरिग्रह'** हे. इच्छासु अपनूने अहंकार पकड़यो हे. अपनेकु ऐसो फील् हो रह्यो हे के अहंकारके कारण अपन् इच्छा कर रहे हें. उलटबांसी हो गई. इच्छा अपने भीतर एक ऐसो फिनोमिना हे जो अहंकारकु पकड़ रही हे. अहंकारसु इच्छा नहीं पकड़ी जाये पर समझ अपनेकु ऐसे आवे के "मैं हूं" और "मोकु ये इच्छा हो रही हे".

जैसे क्रियामें, ज्ञानमें, सबमें रिवर्स् इमेज़ हो जाये हे, ऐसे यामें रिवर्स् इमेज़ हो रही हे. अपनूकु ऐसो लग रह्यो हे के अपन् अहंकारसु इच्छाकु पकड़ रहे हें. दरअसल अहंकारसु इच्छाकु नहीं पकड़ रहे हें, इच्छासु अहंकार पकड़यो भयो हे. कोई न कोई वांछा-मात्र-परिग्रहता हे. वांछा-मात्र-परिग्रहताको मतलब क्या हे कोई भी अपनेसु कुछ पूछे के कपड़ा क्यों पेहर रहे हो तो अपन् कहेंगे के अच्छे लगें या लिये पेहर रहे हें. ठण्डी लगे हे या लिये पेहर रहे हें या गरमी लगे हे या लिये पेहर रहे हें. गरमी ठण्डी

क्यों लग रही हे? अच्छे क्यों लगनो चाह रहे हो? अपन् क्या कहेंगे के समाजमें अच्छो लगनो चहिये, शरीरकी सुरक्षाके लिये ठण्डी गरमीसु बचनो चहिये. अच्छा तो शरीरकी सुरक्षा क्यों लप्पू लगाओ, एकके बाद एक. अन्तमें एक स्टेज ऐसी आ जायेगी जा स्टेजपे अपनेकु पता चलेगो के अपने पास कोई आखिरी जवाब नहीं हे. प्रश्नकु अपन् खाली पोस्टपोन् करते चले जा रहे हें. खा क्यों रहे हो जीवेके लिये या ढोकलाके स्वादके लिये. जीनो क्यों हे अब क्या बतावें के क्यों जीनो हे अपनेकु समझमें ही नहीं आयेगो के क्या केहनो अरे भई जी रहे हें तो क्यों मरें! मरें क्यों! सीधीसी बात समझमें आई ना. ये वांछा हे. ये वांछा मात्र परिग्रहता हे या तरेहसु अपन् वो **"दस द्वारेका पींजरा तामें पंछी पौन."** ये वांछा-मात्र-परिग्रहता हे. या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझो. अपन् या तरहसु ही अपने अहंकारकु मॅनेज् कर रहे हें और वो फोर्स् बहोत पॉवरफुल् फोर्स् हे. अपनो बायोलॉजिकली भी चॅक् अप् कर सके हें. अभी तक ब्रेनमॅपिंग्में, मोकु शतप्रतिशत् नहीं ख्याल हे, पर अच्छोसो मोकु ऐसो ही ख्याल हे, कोई भी ब्रेनस्पेशलिस्ट्कु, न्युरोलॉजिस्ट्कु भी, विज़ुअलुल् सेन्टर कहां हे, ऑडियोटरी सेन्टर, मोटर सेन्टर सारे सेन्टर ब्रेनमें कहां हे पता चलें, पर ईगोको सेन्टर कहां हे कोई भी साईन्टस्ट्कु बराबर पता नहीं चल्यो हे. नई कोई रिसर्च भई होय वो तो मोकु पता नहीं, पर जहांतक मेरो ज्ञान हे अभीतक पता नहीं चल्यो हे के ईगोको सेन्टर कहां हे ये खूबसूरती हे वाकी. ब्रेनूकी मॅपिंग् करवे जायें तो ईगोको सेन्टर पता नहीं चल रह्यो हे. माथेसु लेके अंगूठाके नख तक ईगो बोल रह्यो हे. अंगूठाके नख तक ईगो बोले. मेरो अंगूठाको नख मेरो नख हे. कितनो अहंकार भर्यो भयो हे अपनेमें! समझमें आई ना! मेरो अंगूठाको नख मेरो नख हे वहां मेरो अहंकार बोले. कई लोगनूकु तो अपने पैर, खास जो अपने पैरनूकु खूबसूरत बनावें, उनकु अपने पैरनूके मेक्अप् करावेमें कितनो मजा आवे हे वो अपन् देख सकें

हें. कितनो अहंकार होवे हे पाछे बैठें यों जासु दीखे के कैसे पैरको मेक्अप् भयो वहां तक अपनो ईगो फॅल्यो भयो हे. फेस्को मेकअप तो समझमें आवे पर ब्युटीपार्लरमें पैरको भी मेक्अप् होवे. पैडीक्योर करवा रह्यो होय वो पैर ढकके नहीं बैठे, खोलके बैठे के पैरन्को कैसो मेक्अप् भयो हे. अहंकार वहांतक फेल्यो भयो हे. सेन्टर पता नहीं हे हों. ये खूबसूरती हे याकी के सेन्टर पता नहीं हे अहंकारको और अहंकार उभर उभरके आ रह्यो हे. ये वाकी खासियत हे. याके कारण अपनो बायोलॉजिकल् अहंकार, बायोलॉजिकल् ईगोकु अपन् समझ सकें हें के याको अपने भीतर रोल क्या हे? मे बी, कोई न कोई कहीं न कहीं सेन्टर होयगो, जैसो भी केस् होय, पर जो कॉन्स्टिट्युटिंग् वाके फॅक्टर हें, उन फॅक्टरन्सु अपन् इन्टरएक्ट् नहीं कर पा रहे हें. एग्जेक्ट् मॅटाफिजिकल् फॅक्टरके बारेमें जो बात बताई गई हती, के अपन् भगवान्को स्वरूप हें. अहंकार और वा अहंकारसु अपन् दर्शन नहीं कर सकें, पर अहंकारसु जन्य अपनो कर्तृत्व समझमें आवे के ये कर्तृत्व मेरो हे. जैसे आँखसु अपन् दुनियांकु देख सकें हें, पर आँखसु आँखकु नहीं देख सके हें. कांचमें देखें तो आँखके डोला दीखें हें पर आँख नहीं दीख रही हे. आँखसु आँखकु नहीं देख्यो जा सके हे; कानसु कानकु नहीं सुन्यो जा सके हे; चमड़ीसु चमड़ीको स्पर्श नहीं हो सके हे; वा तरीकेकी लाचारीके कारण ईगोसु ईगोकु पेहचान्यो नहीं जा सके हे. ईगोसु अपन् सारी दुनियांकु पेहचान रहे हें. ये ईगोको रोल हे चाहे वो कर्तृत्वको अहंकार होय, चाहे वो ज्ञातृत्वको अहंकार होय, चाहे वो भोक्तृत्वको अहंकार होय.

ये बायोलॉजिकल् ईगोकु अपन् चेक करें तो ये सारे फिनोमिना क्लीयर कट समझमें आवें के अपने शास्त्रन्ने ये खुलासा कितने पेहले कर रखें हें. आज तो अपनकु सारे रिसर्चके डेटा अवेलेबल् हें पर उनने वा बखत ये सारे खुलासा करके रखें हें.

(सिद्ध और साधित अहंकार)

अब जो भी कुछ मॅटाफिजिकल् अहंकार हे क्रियात्मक या करणात्मक या कार्यात्मक वो तीनों क्रियात्मक या करणात्मक अहंकार उन दोनों अहंकारकु चाहे मॅटाफिजिकल् होय चाहे बायोलॉजिकल होय वाकु अपने यहांकी परिभाषामें अपन् **'सिद्ध अहंकार'** केह सकें हे. वो आर्टिफिशियल् नहीं हे. देखो ध्यानसु समझो. कर्तृत्व आर्टिफिशियल् हे, क्रियात्मक अहंकार, करणात्मक अहंकार आर्टिफिशियल् नहीं हे, अपने रिलेशन्में. पेहले बता चुक्यो के पहाड़ अपने लिये आर्टिफिशियल् नहीं हे, पर अपन् पहाड़के पथ्थरसु मूर्ति बनायें तो आर्टिफिशियल् हे. पहाड़ नेचरके लिये आर्टिफिशियल् हो सके हे, क्योंके वाने पहाड़ बनायो हे पर अपने रिलेशन्में पहाड़ आर्टिफिशियल् नहीं होके नेचुरल् फिनोमिना हे. ऐसे अपने रिलेशन्में क्रियात्मक अहंकार और करणात्मक अहंकार आर्टिफिशियल् नहीं हे, नेचुरल् फिनोमिना हे क्योंके वासु तो अपन् खुद कॉन्स्टिट्युटेड हें. अपन्के रिलेशनमें वो आर्टिफिशियल् नहीं हे पर क्रियात्मक और करणात्मक अहंकारसु सिद्ध होतो कार्य पाछो आर्टिफिशियल् हे अपने रिलेशन्में और कर्तृत्व भी पाछो आर्टिफिशियल् हे अपनो, वो अपन्ने देख्यो.

(एपिस्टमोलोजिकल् अहंकार)

अपन्ने नॉलेजकी ये दो ब्रांच देखीं. अहंकारके संदर्भमें नॉलेजकी तीसरी ब्रांच् हे, एपिस्टिमोलॉजिकल् अहंकार. ये सब फिलोसोफरन्कु बहोत लोही पीये हे मच्छरन्की तरह. एपिस्टिमोलॉजिकल् अहंकारको मतलब क्या अपनेकु कोई भी ज्ञान पैदा होवे हे तो कैसे पैदा होवे हे वा बातको विचार जो शास्त्र करे, वाकु **'एपिस्टिमोलॉजिकल्'** कहें. अब यामें देखो कितने लफड़ा हें के ज्ञान पैदा होवेकेलिये अपनेकु ज्ञातृत्वको अहंकार होनो चहिये. ज्ञान पैदा करवेकेलिये जो भी कुछ क्रियायें पैदा करनी पड़ेंगी वाके लिये कर्तृत्वको अहंकार होनो चहिये. तो वो ज्ञातृत्व और कर्तृत्व अहंकार पेहले हे; ज्ञानके

लेवलपे अपनेकु ऐसे समझमें आ रह्यो हे. अपने ज्ञानकी सौगन्ध खायेंगे तो कर्तृत्व और ज्ञातृत्व तो सिद्ध लगेगो पर अपन्ने जा बखत वाकी ज्ञातृत्वके लेवल्पे मॅटाफिजिकल् या बायोलॉजिकल् एनालेसिस् करी, जैसे दिलपे हाथ रखके पूछो, शंकराचार्यजीने याकु बहोत अच्छे ढंगसु एक्सप्रेस कियो हे. **''सर्वो हि आत्मास्तित्वं प्रत्येति न 'नाहम् अस्मि' इति. यदि हि न आत्मास्तित्वप्रसिद्धिः स्यात् सर्वो लोको 'नाहम् अस्मि' इति प्रतीयात्.''** (ब्र.सू.शां.भा.१।१।१) जासु पूछोगे वो यों ही कहेगो के ''हां मैं हूं ना''. कोई यों कहेगो के ''मैं नहीं हूं'' तो पैदा होवेकी वामें अपने सारे ज्ञानकी प्रक्रिया हे 'अहं' अपनेकु पेहले दीखे हे, ज्ञान बादमें दीखे हे. देखो ''मैं जान रह्यो हूं.'' पेहले 'मैं' बोले ना आई नो. ''हूं जाणु छुं''. ऐसे अपन् बोलेंगे के ''जाणु छुं'' पीछेसु 'हूं' ऐसे नहीं बोलें. क्यों क्योंके 'हूं' को कोई इम्पोटेन्स् हे अपने अन्डरस्टेन्डिंग्की प्रोसेस्में. यदि 'हूं' कु अपन् गायब कर देंगे तो 'छु' भी नहीं केह सकेंगे. अपन्कु केहनो पड़ेगो ''जाणे छे'''. तो अपनो ईगो हर्ट हो जायेगो. 'हूं' नथी जाणतो तू जाणे छे हर्ट हो जायेगो तुरत ईगो.

मैं बनारसमें पढ़तो हतो तब एक टीचर हते. उनको एक बोलवेको ऐसो मुहावरा हो गयो के कुछ भी पढ़ाते, चार सेन्टेन्स् बोले और फिर पूछते ''नहीं समझे'' मेरो ईगो बड़ो हर्ट होतो. ऐसे कैसे पूछे हे पढ़ाते पढ़ाते एक दिन वो मेरेसु पूछ रहे हते. मैंने उनकु पूछ लियो ''नहीं समझे'' अब हर बखत चलते फिरते दो चार लाईन बोलें और फिर पूछें ''नहीं समझे''. अरे भई काहेकु नहीं समझे! हम कोई घास खा रहें हें के नहीं समझे. पर केहनो कैसे प्रोफेसरकु! मैंने कही के बदला तो लें कमसु कम. एक दिन वाने मेरेसु कोई सवाल कियो तो मैंने वाको जवाब बतायो और मैंने भी पूछ लियो ''नहीं समझे'' वाने तुरत मोसु कही ''नहीं नहीं हम बहोत समझदार हें.'' मैंने कही ''याने अपनो टीचरी हाथ

दिखा दियो पाछो.'' अब मैं यों तो केह नहीं सकुं ''नहीं नहीं तुम जैसे समझदार हो वैसे हम भी समझदार हें.'' ''नहीं तो पढ़वे क्यों आये'' पढ़वे आये तो वो मान के चल्यो ''तुम समझदार नहीं हो.'' वाने तुरत मोकु केह दी ''हम बहोत समझदार हें.'' देखो एपिस्टिमेलॉजिकल् ईगो कितनो प्रिडोमिनेन्ट् हे के हम बहोत समझदार हें. हर बखत ज्ञानमे अपनो ईगो पेहले बोले हे. मॅटाफिजिकली पेहले नहीं हे. **''भगवति जीवैः नमनेव कर्तव्यम्. ''** पर एक बात समझो के **''नमामि यमुनाम् अहम्''** को अन्वय करेंगे ना, तो **''अहम् यमुनां नमामि''** होयगो. अन्वय करेंगे तो वा बखत तो ऐसो ही होयगो ना के **अहम् यमुनां नमामि. ''नमामि यमुनाम् अहम्''**में **'अहम्'** पीछे आयो हे. पर अन्वय तो ऐसो ही करनो पड़ेगो क्योंके देयर इस् नो वे आउट. हम बहोत समझदार हें. तो ये एपिस्टिमेलॉजिकल् अहम् हे. हर ज्ञानको करण, हर ज्ञानकी क्रिया, हर ज्ञानको कार्य, हर क्रियाको कार्य, हर क्रियाको करण, हर भोगको करण, हर भोगकी क्रिया उन सबके पेहले एपिस्टिमेलॉजिकली अहम् चहिये बादमें कुछ आयेगो. एपिस्टिमेलॉजिकली बात ये सच्ची हे पर मॅटाफिजिकली और बायोलोजिकली सच्ची नहीं हे. बात समझमें आई ना!

एक सरल उदाहरणसु ये बात आपकु समझमें आयेगी. जो भी धुंआ पैदा होवे हे, वो आगसु पैदा होवे हे. पर आग दीख नहीं रही हे और वा बखत अपन् धुंआ देखें, तो धुंआ पेहले दीखे तो आग हे बादमें समझमें आवे **''यत्र धुमः तत्र वह्निः'';** परन्तु आग हे तो धुंआ देखवेमें आवे, ये जरूरी नहीं हे. ''यत्र वह्नि तत्र धूमः'' ऐसे नहीं होवे. आग बहोत ठिकाने होवे पर धुंआ नहीं छोड़ती होवे. पर धुंआ कहीं भी छूटतो होय तो अपनेकु तुरत लगे के आग होनी चहिये. तो फिजिकली आग पेहले हे और धुंआ बादमें हे. पर एपिस्टिमोलॉजिकली धुंआ पेहले हे और आग बादमें हे. एग्ज़ेक्ट्ली वाही तरह एपिस्टिमोलॉजिकली अहम् पेहले

हे और अहम्‌की जो क्रियायें हें, करण हें, कार्य हें वो बादमें आ रहे हें. मॅटाफिजिकली और बायोलोजिकली वो सब पेहले हें और अहम् बादमें आ रह्यो हे. एग्ज़ेक्ट्ली आग और धुंआके उदाहरणसु देखोगे तो ये सारो रिलेशन् समझमें आयेगो के ये रिवर्स् क्यों हो जाये हे. आगकु देखके धुंआको अनुमान नहीं हो सके हे. धुंआकु देखके आगको अनुमान हो सके हे. ऐसे अहंके कारण अपनेकु ज्ञान करण समझमें आयेगो, ज्ञान समझमें आयेगो, सब समझमें आयेगो पर ज्ञानके करणके कारण अहम् समझमें नहीं आ सके. वो एपिस्टिमोलॉजिकली अहम् बादशाह हे. याहीलिये यूरोपको जो बहोत बड़ो मॉडर्न फिलोसिफीको जो फादर कह्यो जाय, रेनेदेकार्ते. रेनेदेकार्तेने येही बात कही **''आई थिन्क् देयरफोर आई एग्जिस्ट''**. मैं क्यों हूं? क्योंके मैं सोच रह्यो हूं के ''मैं हूं'' यालिये मैं हूं. वाकी आर्ग्युमेन्ट् समझवे लायक हे. वो कहे के तुम मोकु दीख रहे हो. तुम मोकु दीख रहे हो यासु तुम हो कॉनक्लुसिवली प्रूव् नहीं होवे हे. क्यों? क्योंके तुम मोकु सुपनामें भी दीख सको हो. वहां तुम हो नहीं हो. तब क्या भरोसा के तुम दीख रहे हो ये सुपना हे के सच हे मेरे पास तो कोई क्राईटेरिया नहीं हे. तो रेनेदेकार्ते कहे हे के दीख रहे हो याके लिये तुम हो के नहीं, ये मैं निश्चय नहीं कर सकूं फिलोसोफिकली. पर ''हम बहोत समझदार हें.'' तुम हो के नहीं तो मैं डाउट कर रह्यो हूं तुम्हारे एग्जिस्टेन्सकु; वामें भी मैं तो बोल रह्यो हे ना! मैं बोल रह्यो हे या लिये मैं हूं. आई थिन्क् आई डाउट देयरफोर आई एग्जिस्ट्. आई डाउट ऐवरी थिन्ग्. वाने यहां तक कही **''आई डाउट द एग्जिस्टेन्स् ऑफ गॉड'' आई एम नॉट स्योर दॅट गॉड एग्जिस्ट ऑर नॉट. आई डाउट.** गॉड्‌को एग्जिस्टेन्स् डाउटफुल् हे. पर **''माई एग्जिस्टेन्स् कॅन नेवर बी डाउटफुल्. बिकॉस् ईवन् व्हेन् आई एम् डाउटिंग माई एग्जिस्टेन्स्, इन् ऐक्ट ऑफ माई डाउटिंग आई एग्जिस्ट. इफ् आई एम नॉट देयर देन हू इज् डाउटिंग?** मैं नहीं हूं तो डाउट कर कौन रह्यो हे. या लिये रेनेदेकार्ते कहे

हे के **''आई डाउट देयरफोर आई एग्जिस्ट्.''** ''हम बहोत समझदार हें.'' ये देखो ये सारो फिनोमिना रेनेदिकार्डने कह्यो वो एपिस्टिमेलॉजिकल् फिनोमिना हे. (अहंके बीना) बाकी हकीकत पत्ताके महलकी तरह खड़खड़ाके गिर जाये. यदि हम अनकॉन्शियस् कौमामें गये भये आदमीकी देखें, यदि हम सोये भये आदमीकी एनेलेसिस् करें, यदि हम सबकॉन्शियस् माईन्डकी एनेलेसिस् करें, यदि अपन् अनकॉन्शियस् माईन्ड्की ऐनेलेसिस् करें, यदि कोई टोटली कोई बातमें एनग्रोस्ड् हो गयो होय ऐसो व्यक्ति जो अपनो ईगोकु भूलके कोई चीजमें एनग्रोस्ड् हो गयो हे, तो वामें अपनुकु पता चल जाये के एपिस्टिमेलॉजिकली सत्य बात एक्च्युअली फिजीकली और बायोलॉजिकली हकीकत नहीं हे. रिवर्स् इज् द ट्रुथ्.

वाके बाद आवे हे ईगोको रोल, मॉडर्न जो सब्जॅक्ट हे वामें, साईक्लॉजिकल्. मैं समझूं के साईक्लॉजिकल् ईगोकी पूरी एनेलेसिस् मैंने आपकु गये बरस सुनाई हती. डिफेन्समॅकेनिज्म्की, स्प्लिट्-ईगोकी वगैरह वगैरह, तो अब मैं वा डीटेलमें नहीं जाऊंगो. पर ईगोको साइक्लॉजिकल् स्वरूप भी बहोत बड़ो हे. जानवे लायक, समझवे लायक हे. मोकु याद नहीं आ रह्यो के मैंने साईक्लॉजिकल ईगोको डेवलपमॅन्ट्की आखी प्रोसेस आपकु बताई हती के नहीं पर जो कुछ बतायो हतो गये साल, वामेंसु यामेंसु मॅटिरियल् आपकु मिलेगो पर अभी वा डीटेल्में नहीं जायेंगे. पर वाके बाद बहोत सारे मॉडर्न सब्जेक्ट् जो हें, उनके कॉरोस्पॉन्डिंग् अपन् ईगोके कई स्वरूप पेहचान सकें हें. ये सब बात मैं आपकु क्यों बता रह्यो हूं के **''अनन्तशिरसं देवं यम् अनन्तं प्रचक्षते.''** तो ईगोकु केवल मॅटाफिजिकल् फिनोमिना मत समझो, ईगोकु केवल बायोलॉजिकल् फिनोमिना मत समझो, ईगोकु केवल आप एपिस्टिमोलॉजिकल् फिनोमिना न समझ लो, ईगो कोई साइक्लोजिकल् फिनोमिना हे सिर्फ इतनी बात नहीं हे, जितने सब्जेक्ट् हें, अपने पास समय नहीं हे नहीं तो मैं आपकु हर सब्जेक्टसु

कोरिलेट् करके अहंकारके अलग अलग पेहलु क्या हें, अपन् देखें तो स्काई इज् द लिमिट, ऐसे हे.

(सोशियोलोजिकल् ईगो)

उदाहरणके तौरपे, जैसे अपनेमें सोशियोलोजिकल् ईगो होवे हे के नहीं होवे हे. जैसे मैं केह रह्यो हूं के "मैं गोस्वामी हूं", आप केह रहे हो के आप 'शाह' हो, कोई केह रह्यो हे के 'पारिख' हे, कोई केह रह्यो के "ये हे" "वो हे", ये सब क्या हें ये सब सोशियोलॉजिकल् ईगो हें अपने. अपन् वा सोसायटीमें हें करके वो ईगो हे. यदि वा सोसायटीमें अपन् नहीं होंय, तो ईगो नदारद हो जायेगो. अब वो जो सोसायटीके प्रेशर हें, सोसायटीके जो डू और डू नौट हें, सोसायटीकी जो डिमान्ड हें वो सब अपने ईगोमें पाछी आवें. जैसे अपन् कहें के 'कपोल' हें, 'लोहाणा' हें, तो भई जो कपोल होवेको जो एक सोशियोलॉजिकल् ईगो हे, लोहाणा होवेको जो एक सोशियोलॉजिकल् ईगो हे, वो ईगो हे के नहीं अपनेमें वा ईगोके अलग अलग फन्क्शन् हें के नहीं. कभी फुरसतसु ऐसे देखोगे ना, तो ईगोकी रेन्ज् समझमें आयेगी के ईगोकी रेन्ज् कितनी जबरदस्त हे, अनन्त हे "**सहस्रशिरसं देवं यम् अनन्तं प्रचक्षते.**" ये तो मैं सोशिलॉजीकी बात कर रह्यो हूं.

आप एक बात समझोके याकु अपन् पॉलिटिक्स्में समझ सकें हें. याकु अपन् इकोनोमिक्स्में समझ सकें हें. ऐसे कोई नॉलेजकी ब्रांच नहीं हे के जा ब्रांचके कॉरोस्पोन्डिंग भीतर कोई ईगो अपन् सिद्ध ना कर पाते होंय. हर ब्रांचसु रिलेटेड् कोई न कोई ईगो, एक बहोत क्षुद्र उदाहरण दऊंगो तो आपकु ख्यालमें आयेगो. कुछ कॉलेज ऐसे होवें हें जो डिस्टिन्क्शन्वालेकु ले हें, कुछ कॉलेज ऐसे होवें जो फर्स्टक्लासकु लेवें, कुछ कॉलेज ऐसे होवें हें जो ३५%कु भी एडमीशन् दे हें. अब वो सब जो डिस्टिकन्क्शन्वाले

होवें हें उनसु पूछो तो वो कहें हें के हम ज़ेवेरियन् हें. ज़ेवेरियन् क्या बला हे क्योंके सेन्ट ज़ेवियर डिस्टिन्क्शन्वालेकु एडमीशन् दे हे. वो मिलेंगे भी तो उनकी हाय हेलोमें वो बात चमकेगी के ज़ेवियरके हो. हां हम भी ज़ेवियरके हें. वो झवेरीकी बात नहीं कर रह्यो हूं. ज़ेवेरियन्की बात कर रह्यो हूं. ऐसे अपने कई तरहके होवें हें. कोई ऐसी नॉलेजकी ब्रांच नहीं हे जा ब्रांचकु कॉरोस्पोन्ड् करतो भयो अपनो भीतर कोई न कोई ईगो न होय.

थोड़े दिन अमेरीका रेहके आवें ना, तो अपने प्रोनन्सियेशन् वैसे हो जायें. अभी मैंने रीसेन्टली एक बड़ी मजेदार बात पढ़ी के कोई सरदारजी, सरदारजीके प्राय: करके सारे जोक खोटे ही होवें हें, ये जोक भी खोटो ही होयगो, जोक पढ़यो वा लिये आपकु बता रह्यो हूं. सरदारजी अमेरीका रेहके आये. वहां कुछ चल्यो नहीं तो उनने हिन्दुस्तान आके दिल्लीमें रेडीमेंड गार्मेन्ट्स्की दुकान खोली. कोईने आके कही "पापे क्या टाईम हुआ" पापेने कही "ब्रा पेन्टीज़." वाने कही 'रेडीमेडगार्मेन्ट नहीं चहिये, टाईम क्या हुआ वो बताओ'" "तो ओई तो त्वानु बता रिया सी 'ब्रा पेन्टीज़". बारह पैंतीस बजे हते. अमेरीकामें रेहके आये ना! ईगो डेवलप् हो गयो. अरे भाई सीधे सीधे बारह पेन्तीस् क्यों नहीं बोले. अब बारह पेन्तीस बोले तो पता कैसे चले के अमेरीका जाके आयो. वाके लिये वाने कही 'ब्रा पेन्टीज़.' ऐसे ऐसे छोटे ईगो अपने डेवलप् होवें. वाने कही "यार मैं रेडीमेड गार्मेन्ट्की नहीं पूछ रह्यो हूं." तो वाने कही "मैं तेनु टाईम ई तो बता रिया सी." अब कैसे याकु पहोंचनो टाईम बता रह्यो हे तो बारह पेन्तीस् क्यों नहीं बोले 'पेन्टीज़' क्यों बोल रह्यो हे. अब अमेरीका रेहके आये तो पता तो चलनी चहिये के अमेरीकासु आये हें. भले गार्मेन्ट्की दुकान दिल्लीके चांदनी चौकमें होय पर बोलेगो "ब्रा पेन्टीज़". तो या तरीकेके अपने ईगो डेवलप् हो जायें हें. कोई भी नॉलेजकी ऐसी ब्रांच नहीं हे के जा ब्रांचमें

अपन् अपने ईगोको कुछ न कुछ स्वरूप समझ नहीं सकते होंय. ये ईगोको ‘‘**सहस्रशिरसं देवं यम् अनन्तं प्रचक्षते**’’ को एक सिद्धान्त हे. ये जो सारे ईगो हें, और भी कोई ब्रांच लेनी होंय तो ये सब साधित ईगो हें, सिद्ध ईगो नहीं हें. या बातकु ध्यानसु समझो. ये मॅटाफिजिकल् और बायोलॉजिकल् ईगो सिद्ध हें. पर बाकी के ये एपिस्टिमेलॉजिकल् साईक्लॉजिकल् सोशियोलॉजिकल् और जितने भी नॉलेजकी ब्रांच अपन् यामें देखनो चाहें, उन सबके हिसाबसु ईगो होंयगे, वो सबके सब ईगो साधित होंयगे, सिद्ध नहीं होंयगे. वो कितनो साधित होयगो के थोड़ो कुछ लफड़ा होये ना तो अपन् वामेंसु तोड़के निकल जायेंगे जैसे मैने आपकु मेंढककु उदाहरण बतायो हतो.

मैने आपकु पेहले भी एक बड़ी मजेदार बात बतायी हती. शेरकु चिंता हो गई के मैं तो जंगलको राजा हूं पर गाम मानेके नहीं माने हर जंगलके जानवरकु पकड़्यो. अबे क्या समझता हे अरे आप तो जंगलके राजा हो. हाथीकु जाके पूछ्यो ‘‘क्या समझता हे!’’ हाथी भी गुस्सामें हतो वाने सूंडमें पकड़के शेरकु फँक दियो. शेरने कही ‘‘नहीं समझ रहे हो तो पूछो के ‘मैं कौन हूं?’ जंगलको राजा हूं’’. इसमें गुस्सा होवेकी क्या बात हे’’ वो ईगो काटके रख दियो. ख्यालमें आई ना बात! तुरत मेंढककी तरह काटके रख दियो. नहीं जानते हो तो पूछ लो यामें गुस्सा होवेकी क्या बात हे जंगलको राजा हूं. बस सीधीसी बात हे.’ ऐसे बहोत सारे अपने ईगो साधित ईगो हें वो एकाध कोई हाथी मिले उठाके फँकवेवालो तो तुरत अपन् उनकु बदलवेके लिये तैयार रहें हें. सिद्ध ईगोकु अपन् बदल नहीं सकेंगे. साधित ईगो हर बखत अन्डर प्रोसेस् ही हे. वो अगर चल रही हे तो अपन् भी वा ईगोकु चलाते रेहनो चाहें हें. पर जरा भी कोई स्पीड ब्रेकर आयो, तो खटसु अपन् वाकु छोड़के दूसरी ट्रॅक पकड़ लें हें. ट्रॅक माफिक नहीं आ रही

हे क्योंके यामें स्पीड ब्रेकर ज्यादा आ रहे हें. या तरीकेके साधित ईगो जितने भी हें, उन सबके साथ ये लफड़ा रह्यो भयो हे.

अच्छा चलो अब आपकी एक टॅस्ट लऊं. ‘‘मैं पुष्टिमार्गीय हूं’’ ये सिद्ध ईगो हे के साधित ईगो हे सोचो आनन्दसु. ‘‘**फुरसत किसे थी कोई मेरे हालात छता. हर शख्स् मेरे बारेमें कुछ सोचता मिला.**’’ जैसे मैं पुष्टिमार्गीय हूं, आई डाउट दॅट आई एम पुष्टिमार्गीय. याकी एक्सरसाईज् करियो ना, क्या उतावल हे अपने पास तीन दिन बाकी हें.

oooooooooo

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीन भावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

कल सिद्ध अहंकार और साधित अहंकारके प्रभेद समझाते बखत मैंने ये बात कही के अपने मॅटाफिजिकल् या बायोलॉजिकल् सब अहंकार सिद्ध अहंकार हें. एपिस्टिमोलॉजिकल् अहंकारके लिये वा बखत थोड़ी धांधलमें लिखा गयो पर एक बात समझो के एपिस्टिमोलॉजिकल् अहंकार पार्टली साधित भी हे और पार्टली सिद्ध भी हे. फिर वहांसु ''मॅन् इज़् सोशियल् एनीमल्'' वा तरहको परस्पॅक्टिव् आवे हे, वहांसु प्रायः वो अहंकार साधित अहंकार ही हें. उनमें सिद्ध मानवेको कोई कारण नहीं हे.

प्रश्न : साधित और साध्यमें क्या डिफरेन्स् हे?

उत्तर : एक ही चीज हे. अपनूने सिद्ध कर लियो होय तो 'साधित' केहवावे. सिद्ध करनो होय तो 'साध्य' केहवावे. क्योंके ये तो सब सिद्ध अहंकार हें. अपनेकु कुछ सिद्ध करनो होय तो 'साध्य' केहवावे. और सिद्ध कर लियो होय तो साधित केहवावे.

प्रश्न : जो सिद्ध हे माने प्रभुने जो अपनेकु दियो भयो हे वा रेफरेन्स्में वो 'सिद्ध' केह रहे हें और साधित जाकु अपनूने एक्वायर कर लियो?.

उत्तर : बात ऐसी हे के प्रभुने दियो वा अर्थमें भी सिद्ध हे, प्रभुने नहीं दियो होय और जो अपनी सृष्टिकी प्रक्रिया हे, वा सृष्टिकी प्रक्रियामें भी अपने भीतर कुछ अहंकार तो सिद्ध हो ही रहे हें ना! सिद्धतया अपनेकु मिल रहें हें ना! सिद्धको मतलब ऑलरेडी अवेलेबल्. साधित या साध्य को मतलब के अवेलेबल् नहीं हे पर जाकु अवेलेबल् बनानो हे. टु मेक् इट अवेलेबल्. सिद्धको मतलब क्या हे, विच् इज़् अवेलेबल्. अब वो आपकु

कौनने अवेलेबल् करवायो? बहोत सारी पॉसिबिलिटीज़् हो सकें हें. कुछ प्रभुने अवेलेबल् करवाये होंयगे, कुछ अपन् जा तरहसु प्रकटे हें, जन्में हें वा प्रक्रियामें प्रकट हो जाय अहंकार. वो प्रायः सिद्ध ही होवें हें जा प्रक्रियासु अपन् प्रकटे होंय. साध्य और साधित को मतलब अपने पास अवेलेबल् नहीं हे पर वाकु अवेलेबल् बनानो हे. बना लियो तो साधित केहवायगो; बनानो अभी बाकी हे तो वो साध्य केहवावे.

या अहंकारके प्रभेदकु समझाते भये मैंने एक फनी जोक् सुनायो हतो के वा व्यक्तिने गोल्डन् जुबली मनाई, डायमन्ड जुबली मनाई. शायद उपहासके रूपमें सुनायो हतो जो पॉइन्ट हतो वापे आपको ध्यान गयो होयगो के नहीं गयो होयगो; मैं जो बात वा उपहासमें केहनी चाह रह्यो हूं वो ये हे के ज्योतिषी जाने भविष्यवाणी कर दी के तुम बहोत धनवान होओगे; अब एक बात समझो के ज्योतिषी जो भी कुछ भविष्यवाणी करे, तो वो भविष्यवाणीसु पेहली शर्त क्या होनी चहिये? पेहली शर्त ये होनी चहिये, के अपने लाइफ़्को कोर्स् प्रिडिटरमाइन्ड् हे, प्रेडिक्टेबल् हे. अपन् वाकु केह सकें के याके बाद ये आयेगो, याके बाद ये आयेगो; एसे जो निश्चित होय लाइफको कोर्स्, और फिर वाकु जानवेको ज्योतिषीके पास कोई उपाय होय; वो चाहे हाथकी रेखायें होंय, चाहे माथेकी रेखायें होंय, चाहे पैरकी रेखायें होंय; चाहे ऊपर आकाशमें ऊपर तारायें होंय; जो भी होय, उपाय वाके पास हे. जो निश्चित हे वाकु जानवेको कुछ उपाय वाके पास होय तो वो ज्योतिषीकी बात सच्ची केहवावे. जैसे अपन् कोई स्टेजपे ड्रामा करवे जा रहे हें, तो सारी स्क्रिप्ट पेहलेसु लिखी भई हे. तो जो भी होवेवालो हे, बात ध्यानसु समझो, यदि एक्सीडेन्ट् भी होवेवालो हे तो स्क्रिप्ट्में पेहले लिख्यो भयो हे के ये एक्सीडेन्ट् होयगो तब तो वो 'पार्ट ऑफ़् ड्रामा' केहलायेगो. एक्सीडेन्टली कुछ हो जाय तो 'पार्ट ऑफ़् ड्रामा' नहीं केहवायेगो.

तो वाकी प्रेडिक्टेबिलिटी कैसे आ रही हे? समझो वाके पास निश्चित उपाय हे जानवेको कुछ, पर जानवेको निश्चित उपाय होते भये भी अपने लाइफ्को कोर्स् या तरहसु प्रिडिसाईडेड् न होय तब वाकी बाच सच्ची केसे होगी?. याके बाद ये होनो ही, वो कोर्स्को डिसाइडेड् होनो ऐसे पेहली शर्त ये हे.

अब जो डिसाइडेड् कोर्स् हे वाकु जानवेको ज्योतिषीके पास कोई उपाय होनो चहिये, के ये डिसाइडेड् कोर्स् हे, पर याकु जान्यो कैसे जा सके? जैसे डॉक्टरनूके पास उपाय हे, मरीजके कई तरहकी टॅस्ट् करवाके के कौनसो रोग वाके भीतर बढ़ रह्यो हे या कैसे वो स्वस्थ या अस्वस्थ हे. वाके कारण डॉक्टर अपनेकु कुछ भी प्रेडिक्शन् कर सके ना! अब उपाय नहीं होय तो अपने अन्दर क्या हो रह्यो हे डॉक्टरकु क्या पता चलेगो? याहीलिये साइन्स्के दो भेद माने जायें. एक **नॉरमेटिव् साइन्स्** मान्यो जाय; दूसरो **पॉजिटिव् साइन्स्** मान्यो जाय. 'नॉरमेटिव् साईन्स्'को मतलब जो तुमकु नॉर्म् बतावे. वो नॉर्म् बतावे पर सब वाके हिसाबसु होयगो ही ऐसी बात नहीं हे. पॉजिटिव् साईन्स्को मतलब क्या? वो नॉर्म नहीं बतावे पर जो हे सो बतावे. वामें प्रेडिक्शन् हो सके क्योंके वो वैसो ही हे वामें कोई दूसरो विकल्प होवे नहीं. तो ज्योतिषके पास कोई साइन्स् ऐसो होनो चहिये, के जा साइन्स्के आधारपे ज्योतिष जो होवेवालो हे निश्चिततया; फिफ्टी-फिफ्टी चान्स् तो मटका हो गयो, ज्योतिष कहां भयो! वो तो मैंने धीरुभाई धमपछाड़की बात बताई वामें भी प्रेडिक्टेबिलिटी आ जाय. फिर वो तो साईन्स् नहीं केहवावे ना!

आपकु याद हे धीरुभाई धमपछाड़की बात? धीरुभाई धमपछाड़ हमारे बड़े मन्दिरमें आतो हतो. हमारे कनीकाका हते उनको भक्त हतो. रोज सुबह आके उनके पैर दाबतो. पन्द्रह बीस मिनट पैर दाबवेके बाद फिर अचानक चीखतो, ''प्रभु!! कुछ आज्ञा हो जाय!''

उनकु गुस्सा आतो, दो चार गालियें देते. गालीके शब्द गिनतो और वा गिनतीके नम्बरकु मटकापे लगातो और नम्बर आ जातो. अब वो साईन्स् हे के वाको एक दिमागी फितूर हे? केहनो मुश्किल हे ना! क्योंके वो गालीको और मटकाके नम्बरको रिलेशन् क्या हे एक तो येही पता नहीं! अब वो गालीके शब्द गिननो, वाकु गिनवेके पॅरामीटर क्या, वाकी कोई डेफिनिट् रीत नहीं हे. कुछ भी गाली देते और गालीके शब्द गिनके धीरुभाई धमपछाड नम्बर लगा देतो और नम्बर आ जातो, तो ये साईन्स् नहीं केहवावे. ऐसे धीरुभाई धमपछाड़की तरह कोई ज्योतिषी प्रेडिक्शन् कर दे तो वो साईन्स् नहीं केहवावे. साईन्स् होवेको सीधोसो मतलब हे जो कुछ होवेवाली हे घटना वो होवेहीवाली हे, वाकी कोई दूसरी पॉसिबिलिटी नहीं हे. और वो जो होवेवाली घटना हे वाकु होवेसु पेहले अपन् साईन्स्के माध्यमसु जान सकते होंय तो वो ज्योतिष केहवावे.

एक इंगलिश्को बहोत बड़ो ऑथर् हे. या बारेमें वाने एक बहोत अच्छी रिमार्केबल् बात कही हे. वो कहे हे के जाकु अपन् चान्स् कहें हें, चान्स् मतलब जो प्रेडिक्टेबल् नहीं हे, अनप्रेडिक्टेबल् हे. चान्स् मतलब कुछ हो गयो तो हो गयो नहीं हो गयो तो नहीं हो गयो. तो वो कहे हे के चान्स् जो हे वो भगवान्को स्युडोनेम हे. **''चान्स् इस् स्युडो नेम् ऑफ गॉड व्हेयर गॉड डज् नॉट् वोन्ट टु पुट हिस् सिग्नेचर.''** बात ख्यालमें आई ना! स्युडोनेम हे. 'स्युडो' मने छद्म नाम. जैसे मैं वल्लभविज्ञानमें सम्पादक हतो. तो कोई लेख मिलते नहीं. सबकु आजीजी पत्र लिखें के भई कोई लेख लिखके भेजो पर कोई लेख लिखके भेजतो नहीं. क्या करूं? सम्पादक होके लेख लिखूं तो वल्लभविज्ञानकी फजीहत होवे के लेख मिलें नहीं हें. मैं सम्पादकीय लेख और लिखतो. भई जब सम्पादक हतो तो सम्पादकीय भी तो लिखनो पड़े ना! तो एक सम्पादकीय लेख लिखतो; और कई नाम मैंने बना रखे हते. ब्रजबल्लभदास

पुरोहित बना रख्यो हतो, ऐसे पांच दस नाम बना रखे हते, तो कोई या नामसु कोई वा नामसु लेख लिख देतो. अपने वल्लभविज्ञानमें सब लेख होने चहियें. ऐसो नहीं लगे के वन्मॅन् शो हे. ये 'स्युडोनेम' केहवावे. तो ये बात समझनी चहिये के ऐसे स्युडोनेम् भी ऑथरकु वापरने पड़ें हें. ऐसे वो ऑथर कहे हे के 'चान्स्' गॉड्को स्युडोनेम् हे. जाके लिये भगवान् सिग्नेचर नहीं करनो चाहतो होय वहां वो स्युडोनेम् अपनो वापर दे. तो ये 'चान्स्' भगवान्को एक स्युडोनेम हे. खासकरके वा सिच्युएशन्में जा सिच्युएशन्में भगवान् क्या करनो चाह रह्यो हे वाकु साईन्स्सु ऑथोराईज़् नहीं करनो चाहतो होय तो वाकु वो चान्स्के रूपमें प्रस्तुत कर दे. अब समझोके अपनो लाइफको कोर्स् चान्स् हे तो ज्योतिष तो सच्चो नहीं हो सके ना! अनप्रेडिक्टेबल कोई चीज नहीं होय. हर चीज डिसाईडेड् होय के एक के बाद दो, दो के बाद तीन, तीनके बाद चार, चार के बाद पांच और पांच के बाद छे और वाकु जानवेको उपाय होय तो ज्योतिष सच्चो होय. बात समझमें आई! जा ज्योतिषीने वा व्यक्तिकु ये भविष्यवाणी करी के ''तू बहोत बड़ो धनवान होयगो'', वो भविष्यवाणी चान्स् तो नहीं होयगी ना? एटलीस्ट् जा तरहसु वो समझ रह्यो हे. यदि चान्स् होतो तो भविष्यवाणीपे विश्वास करवेको कोई कारण नहीं होतो. धीरुभाई धमपछाड़ वाली बात हो गई. मटकाकी बात हो गई. वाने वा बातकु सच मानी, क्योंके ज्योतिषकु साईन्स् मान्यो. अब या रहस्यकी खूबसूरती देखो, जो नियत हे सो तो होवेवालो हे ही धन्धा नहीं करे तो भी आवेवालो ही हे. यदि नियत हे धनवान होवेवालो ही हे तो धन्धा करवेकी क्या जरूरत हती? जब भविष्यमें कुंडलीमें लिख्यो भयो हे के ये ग्रह, ये ग्रह, ये ग्रह = धनवान. वन् प्लस् वन = टू. धनस्थानमें ये राशि होय, या ग्रह फलानोमें होय, वा ग्रह फलानोमें होय तो धनवान होवेवालो हे. सीधीसी बात हे के अब वो चान्स्की बात नहीं हे ना! फिर तो एकदम शतप्रतिशत् डेफिनेट् कोर्स् हो गयो. फिर तो धन्धा करवेकी

भी जरूरत क्या हे? पर धन्धा कियो और अच्छो पैसा कमायो. जो बात मैं केहनो चाह रह्यो हूं के जो क्रिया होवेवाली हे, वाको करण वाने वापर्यो करके वाको कर्तृत्वको अभिमान आयो के धन्धा तो मैंने कियो, कमायो मैंने. जबकि मान रह्यो हे ज्योतिषकु और धन्धा खुदने कियो हे. जो होवेवाली क्रिया हे, जो मैं आपकु निरन्तर कल-परसोंके प्रवचनमें बतातो रह्यो हूं के जो क्रिया चारों ओर हे वा क्रियाको कोई करण आपकु अवेलेबल हो गयो, और वा करणसु आपने वो रिज़ल्ट् पैदा कर लियो तो तुरत आपकु कर्तृताको अभिमान जग जावे हे. ऐसे वो कर्तृताको अभिमान वाकु जग गयो. क्योंके धन्धा वाके पास कर्यो जा सकतो हतो.

पर जैसे धनवान होवेवालो हे वैसे आयुष्यवान होवेवालो हे वाको कोई करण वाके पास अवेलेबल् नहीं हतो करके हवेलीमें भगवान्को छप्पनभोग करवावे गयो. यदि कोई साधन अवेलेबल् होतो तो काहेकु हवेलीमें जाके छप्पनभोग करातो? तो वहां आदमी कमजोर पड़े. जब कमजोर पड़े तो वाने वो छप्पनभोग कराके अपने गोल्डनजुबलीके बजाय डायमन्डजुबली भी सेलीब्रेट् कर ली. क्योंके करण वाके पास अवेलेबल नहीं हे. आयुष्यकु बढ़ानी कैसे? ज्योतिषने जो केह रखी हे वो अनिश्चित हे जाकु करणसु जाके पैदा करी जा सके हे ये निश्चित हे. जाकु करणकी जरूरत नहीं हे तो भी कर्तृत्वको अभिमान हे वो अनिश्चित हे जामें सचमुचमें कर्तृत्वको अभिमान करो तो जस्टिफाईड् होयगो. क्योंके आयुष्य तो अनिश्चित हे, मैंने अपनी आयुष्य या तरहसु बढ़ाई. जैसे कई एकसो बरसके हो जायें. एकसोपांच बरसके हो जायें तो उनकु जाके प्रेसवाले पूछें के तुम्हारी आयुष्य इतनी कैसे भई? कोई कहे के मैंने सादो खुराक खायो, कोई कहे के मैंने परिश्रम कियो, कोई कहे के मैंने टॅन्शन् नहीं कियो वासु इतनी बड़ी आयुष्य हो गई. तो ये जो उपाय हते उनके आयुष्य बढ़वेके वाको कर्तृत्वको अभिमान उनके भीतर होवे

हे. या तरीकेको कोई आयुष्य बढ़ावेको करण वाकु अवेलेबल नहीं हतो करके वो भगवानूके पास गयो. जो अनिश्चित हे जहां वाको कर्तृत्व जस्टिफाइड् हो सके हे वहां वो अपनो कर्तृत्व डांवाडोल मान रह्यो हे. जहां कर्तृत्वकी जरूरत नहीं हे, सब कुछ निश्चित हे, वहां धन्धाको करण वाके पास अवेलेबल हे, याकेलिये वाकु कर्तृत्वको अभिमान हे. तो ये सारे उपहासमें जो खास समझवेकी बात हे के या तरहसु अपनो अहं काम करे हे. हंसवेकी बात तो हे ही पर यामें जो रहस्य हे वो ये रहस्य हे के आदमीको अहंकार या तरीकेसु काम करे हे. जहां कर्तृताकु अपन् जस्टिफाई कर सकें वहां अपनी बेंकिंग कर जाय और जहां कर्तृताकी जस्टिफिकेशनूकी जरूरत नहीं हे पर करण अवेलेबल हे तो आदमी तुरत कर्तृताको अभिमान पनपा ले अपनो.

(अहंको नेचर् एक्स्क्लुसिव है दूसरेके अहंको अनुमानमात्र अनुभव नहीं)

जा बखत अपन् अहंकारको ये कॅरेक्टर देखें हें वा बखत अपनेकु एक बहोत रिमार्केबल् फीचर अहंकारको ये भी समझमें आवे हे के अपनो अहंकार, मेरो अहंकार, वो मोकु ही साक्षात् अनुभव हो सके हे. आपकु मेरे अहंकारको साक्षात् अनुभव नहीं हो सके. धुआंसु आगको अनुमान होवे, ऐसे अनुमान कर सको के ये आदमी अहंकारी हे, ये व्यक्ति अहंकारी नहीं हे पर मेरो अहं एक्सक्ल्युसिवली मेरो ही हे. ये देखवेकी बात हे के मैं अपने अहंकु न जाने कितने जननूसु शेयर कर रह्यो हूं. पर शेयर करवेके बाबजूद भी मेरो अहं कितनो एक्सक्ल्युसिवली मेरो हे, वाको कल मैंने प्रमाण दियो के जो मेरे कॉन्स्टीट्युऐन्ट् बायोलॉजिकल् सेल हें, उनको अहं मैं शेयर नहीं करूं पर मेरे अहंको शेयर वो पता नहीं करें के नहीं करें!

अहंकारको नेचर कितनो एक्स्क्ल्युसिव् हे के अहं माने खतम.

याहीलिये व्याकरणमें अहंको बहुवचन नहीं होवे. 'तू' 'तू' 'तुम' होवे हे. 'वो' 'वो' 'वे' होवे. अहम् अहम् बहुवचन करनो होय तो सीधो सो एक काम करनो पड़े के 'मैं' और 'तू' 'हम'. 'मैं' और 'वो' 'हम'. 'मैं' और 'मैं'! ऐसो बहुवचन होवे ही नहीं. तो अहंकार एकदम एकवचन फिनोमिना हे. एब्सोल्युटली सिन्गुलर हे और एक्सक्ल्युसिव हे जाको कोई बातमें शेयर नहीं. कोई दूसरेकु पता चले हे तो वो अहंकार मेरो अनुभवमें नहीं आवे हे, जो कुछ पता चले हे वाकु वो इतनी पता चले के भई मेरे भीतर भी अहंकार हे और मैं अपने अहंकारके कारण या तरहसु व्यवहार करतो होऊं और जैसो व्यवहार ये कर रह्यो हे, तो ये भी अहंकारी होनो चहिये. पर अपन् कोई गेरन्टी दे सकें? के जैसे एकको व्यवहार हे, या जैसो मेरो व्यवहार हे, या व्यवहारमें जा बखत मोकु अपनो अहंकार लगतो होय वा बखत या तरीकेके व्यवहारमें दूसरेकु भी अहंकार प्रकट होतो होय.

जैसे एक सामान्य बात बताऊं. ये जैसे धीरुभाई धमपछाड़ हतो ऐसे एक हमारे यहां धीरुभाई दुर्वासा भी हतो. वो भी महामहिमाशाली पुरुष हतो. हमारे दादाजीकी मोबाईल डिस्पेन्सरी हती वो चलावेको काम ट्रस्टीनूने वाकु सौंप्यो हतो. वो काम बहोत अच्छे ढंगसु करतो. काममें कोई तकलीफ नहीं हती. पर सबसु बड़ी तकलीफ ये के जब भी बोले कड़कके बोले; एक फनी इन्सिडेन्ट् और आपकु सुना दऊं. मैं वाके साथ मोबाईल डिस्पेन्सरी वॅनमें जातो तो खुदको आइसबॉक्स् साथ ले जातो. हमलोग बीस तीस पचास साठ माईल् तक जाते, गरमीके दिननूमें दवाईयें बांटते. अब वो आइस् बॉक्स लावे और लन्चूको टाईम होवे और वामेंसु नाश्ता लेके खावे और खा पी के मस्त रहे और सो जाय. अब साथमें एक नर्स हती, एक डॉक्टर हतो, एक क्लीनर हतो, एक ड्राईवर हतो. उन लोगनूकु जल कहांसु पीनो? एक दिन क्या भयो के वो तोडीहाउस हे ना यहां

लालबागके आस-पास! वहां हमारी बस रेहती. वहांसु हम निकले तो कम्पाउन्डरने कही "सेठ, मटका फूटा हे." धीरूभाईने कही "मटका फूटा तो क्या! अब एलेवन्थ् ऑवरमें बोलता हे, फूटे मटकामें पानी ले चलो." जबतक थाणे तक पहोंचे तो फूटे मटकामेंसु पानी तो पूरो रिस गयो, पानी रिस गयो और जब लन्चूअॅवर आयो तो पानी नहीं, जेठ महीनाके दिन सब प्यासे मरें. धीरुभाई तो खा पी के मस्त हो गयो हतो. तो वो जब गाड़ीमेंसु लघी करवे उतर्‌यो तो मेरे पास थर्मोस् हतो, मैं तो खाना नहीं खातो, मैंने सब रोगी लोग कभी ऐसे देखे नहीं हते तो खानो बड़ो अनकम्फरटेबल् लगतो; तो मैं खाना खातो ही नहीं, नाश्ता भी नहीं करतो. मेरो थर्मस् भर्‌यो भयो हतो तो मैंने थोड़ो थोड़ो जल सबकु बांट दियो. सब लोगनूने पानी पी लियो पर वो सिस्टर बिचारी पी नहीं पाई क्योंके वो सबकु पिवा रही हती. वाको नम्बर छेल्लो आयो तबतक धीरुभाई लघी करके पाछो आ गयो. आते ही वाने सिस्टरकु फायरींग शुरु करी "क्या समझके महाराजकी थर्मस्‌मेंसे जल पियो!!" वाकु शान्त करवेके लिये मैंने कही "धीरूभाई एणे जल नथी पीधूं मैं आप्यु." तब बोल्यो "शूं समझीने तमे आप्यु!" मैंने कही "म्हारा बापनी गाड़ी, म्हारु जल, म्हारा कुआ माथी काढ़्यु, म्हारा थर्मस्‌मांथी पिवाड़्यु, आमां समझवानो प्रसंग क्यांथी आव्यो!!" मेरो ईगोहर्ट हो गयो. धीरुभाईको ईगो भी हर्ट हो गयो. मैंने भी बात केह ही दी "आमा शूं समझवानी जरूरत थई!" पीछे झगड़ा भयो, ट्रस्टीनूने मोकु समझायो "तमे समझदार छो, एक माणस काम करे छे, हवे काम कोण करशे! आम झगड़ा करो तो एनी इन्सल्ट् करो तो चाले केम!" मैंने कही "मैं इन्सल्टज् नथी करी. एणे म्हारी इन्सल्ट् करी." अब मैं छोटो हतो, मैं मान्यो नहीं और धीरुभाई मेच्योर हतो; ट्रस्टीयें वाकी सब बात मानें. खैर पतावट हो गई हमारेमें कोई तरहसुं. नॅट्रिज़ल्ट् वाको ये आयो के एक दिन मैं वाके यहां बैठ्यो भयो हतो. मैंने देख्यो अचानक जोरसु चिल्लायो 'अशोऽऽक!!". मैंने कही

"क्या लफड़ा भयो?" अशोक वाके बेटाको नाम. अशोकने आके कही "हां बापुजी." वो तो फिर लिखवेमें तल्लीन हो गयो. अशोकने फिर दूसरी बेर पूछी "शूं काम छे?" तो वो बोल्यो "शूं बापुजी बापुजी करे छे, पानीनो गिलास नथी लावतो." मैंने कही के बेटाके साथ भी जब ये ऐसे बोले तो..!! मैंने धीरुभाईसुं कही "तमने बहु टॅन्शन् लागे छे!' तो वाने कही "काम करवानी आज पद्धति छे." तब मोकु ब्रह्मज्ञान मिल्यो. अहंकार नहीं हतो वा गरीबको, फेस्‌वॅल्युपे अपनेकु लगे के वो अहंकारी हतो, वाके मनमें एक ऐसी भावना भर गई हती के काम करनो करवानो हे तो याही तरहसु बूमबराडा करके करनो चहिये. शान्तिसु काम करनो वो धीरुभाईको काम नहीं.

देखो! अपन् अपने पॅरामीटरनूसु कोईको अहंकार मापवे जायें, या तरीकेकी दमदांटी पाड़वेसु या ऐसी एडवर्स् रिमार्कसु के "शूं समझीने तमें पाणी आप्यु!!" पर वामें एक्च्युअली वाको अहंकार नहीं बोल रह्यो हतो पर वा गरीबकी काम करवेकी मॅथड ऐसी ही हती. अपनेकु लगे के अहंकार हे पर वो अहंकार नहीं वो तो अपने बेटासु भी वैसे ही बोले. फिर मैं समझ गयो और मैंने वाकी फाईलपे ही धीरुभाई दुर्वासा फाईल लिख दियो. यामें चिंताकी कोई बात नहीं हे. मेरी बात समझमें आई के अपने अहंकारके आधारपे माने जो अपन् अहंकारसु जा तरीकेको अपनो व्यवहार हे, वा तरीकेके व्यवहारसु अपन् दूसरेको अहंकार मापवे जायें तो वो सच्चो भी पड़ सके हे और खोटो भी पड़ सके हे. कईनूकी कल्चर ही ऐसी होवे ना, कोईकी वर्क्‌कल्चर ऐसी होवे, कोईकी वर्क्‌कल्चर ऐसी नहीं होवे. अब याकु अपन् अहंकार नहीं केह सकें मेरे केहवेको मतलब ये हे. बहोतनूकु बुरो लग जातो होय के सास घुड़कके बोले. अब सासकी घुड़कवेकी आदत ही होय तो वो अहंकारसु नहीं घुड़कती होवे, वाकी आदत ही होवे. वाकी सास वाकु घुड़की

होयगी, तो वो आदत सासकी वाकु पड़ जाय तो वो अपनी बहूकु घुड़के. घुड़कवेको ही एक सम्प्रदाय चलतो रहे. अब वामें वाको अहंकार होनो जरूरी नहीं होवे. घुड़कवेकी एक आखी कल्चर डेवलप् हो जाय.

अपन् अपने पॅरामीटरसु कोईको अहंकार मापवे जायें तो वो शतप्रतिशत एक्युरेट रीज़निंग् होय वाकी कोई गेरन्टी नहीं हे. सो या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझो के अपनो अहंकार एक्सक्लुसिवली सिंगुलरली अपनो अहंकार हे. अपने अनुभवको ही विषय हे. अपनो ही ज्ञेय हे. दूसरेको ज्ञेय नहीं होवे हे. दूसरेकुं जा बखत अपन् समझनो चाह रहे हें, वा बखत वाको अहंकारको तो अनुभव हो नहीं सके पर दूसरेको व्यक्तित्व या पर्सनालिटी अपन् देख सकें हें, समझ सकें हें, अनुभव कर सकें हें और ऑलमोस्ट वाही फॅशन्में जा फॅशन्में अपन् अपने अहंकारकु जज् कर सकें. अपन् अपने लिये अहं हें और अपने अलावा जितने भी लोग हें वो अपने लिये सिर्फ एक पर्सनालिटी हें. डिफरेन्ट् टाईप् ऑफ पर्सनालिटीस् हें. ये एक रहस्य समझनो चहिये. उनकी पर्सनालिटी क्या हे, वो अपन् अनुभव कर सकें एग्ज़ेक्ट वोही फॅशन्में जा फॅशन्में अपन् अपनो अहंकार अनुभव कर सकें के उनकी पर्सनालिटी क्या हे तो अपन्कु व्यक्तिको अनुभव हो सके हे, पर वा व्यक्तिके अहंकारको अनुभव नहीं हो सके. यदि अपन् अपनी फुटपट्टीसु वाकी पर्सनालिटीकु मापवे जायें, तो वाके चान्सेस् फिफ्टी फिफ्टी ही हें. सच्चो भी पड़े और वो अपनो अनुमान खोटो भी पड़ सके.

(पर्सनालिटी/व्यक्तित्व क्या हे ?)

थोड़ोसो आज मैं आपकु ये बतानो चाहूंगो के आगे आवेवाले बहोत सारे टॉपिकन्के साथ याको क्लोज् रिलेशन् हे. अपनेमें जैसे अपनो अहंकार होवे, ऐसे दूसरेके अहंकारको अनुभव अपनेकु नहीं होके पर्सनालिटीको होवे हे. नाउ व्हाट डु यू मीन् बाई पर्सनालिटी

वो देखलो थोड़ो! क्योंके आगे आवेवाली टॉपिकके साथ वाको बहोत क्लोज़रिलेशन् हे. याकु अपन् मॅथेमॅटिकल् इक्वेशन्के ढंगसु समझेंगे.

(चार्ट.५)

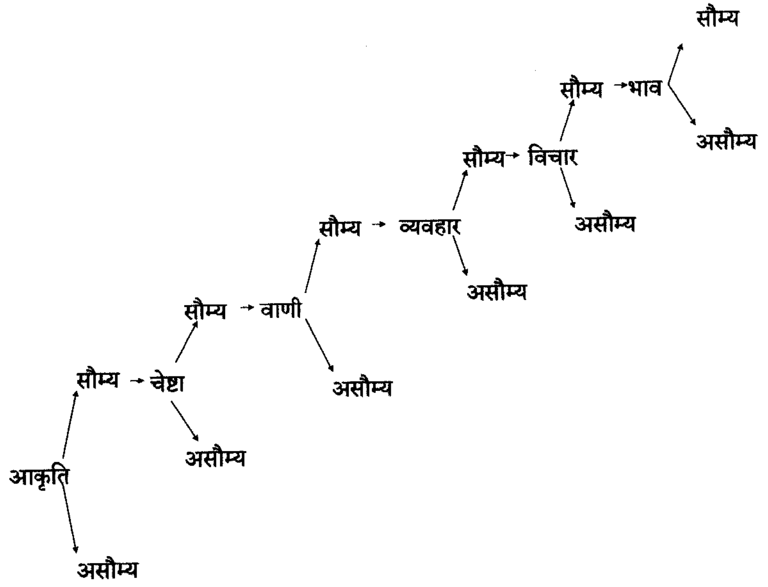

व्यक्तित्वकी पहेली शर्त : आकृति : व्यक्ति= सबसु पेहलो क्या? जाकु अपन् 'आकृति' कहें. हर व्यक्ति यदि निराकृति, निराकार हे तो अपन् वाकु व्यक्ति नहीं केह सकेंगे. व्यक्ति होवेकी पेहली शर्त हे कोई आकृति होनी चहिये. आकृति नहीं हे तो अपनेकु कोईके व्यक्ति होवेको बोध नहीं हो सके. आकृति सबसु पेहली शर्त हे व्यक्तिके होवेकी.

दूसरी शर्त : चेष्टा : दूसरी शर्त हे चेष्टा. जैसे आकृति हे मूर्तिकी, कोई भी एक मूर्ति हे, वाकी आकृति हे पर वामें चेष्टा तो कोई होवे नहीं. जैसे ही चेष्टा नहीं होवे वैसे ही वाके व्यक्ति होवेको बोध अपने भीतर खतम हो जाय. ये रोडपे खड़े कर दें ना! तिलकके पुतला, वल्लभभाई पटेलके पुतला, नेहरूजीके पुतला, आम्बेडकरके पुतला; अब वो आकृति तो हे पर उनमें चेष्टा नहीं होवे. चेष्टा नहीं होवे करके वापे कौआ बैठ जाय. समझो वो थोड़ी भी चेष्टा करे तो फिर कौआ बैठेगो? कभी कौआ नहीं बैठे. अपन् मूर्तियें खड़ी कर दें पर नेट रिज़ल्ट् जाके देखो तो कौआ बैठ्यो होय, कबूतर बैठ्यो होय, चिड़ियायें बैठी होंय. क्यों? पक्षी भी समझ जायें के व्यक्ति नहीं हे, खाली पुतला हे. चेष्टा करे, खेतमें जैसे चाड़िया लगावें ना, हवासु थोड़ो हिले तो पक्षी वासु दूर रहे. पता नहीं व्यक्ति हे के नहीं हे, डाउट हो जाय. तो वो चेष्टा खुद नहीं करे हे पर हवाके कारण करतो होवे हे. पर थोड़ीसी भी चेष्टा करे और आदमी रिस्क् लेनो नहीं चाहे क्योंके पता नहीं क्या हे व्यक्ति हे के नहीं हे? अपनेकु भी फिर डाउट् हो जाय. तो दूसरी शर्त हे आकृतिके बाद चेष्टा प्रकट होनो.

तीसरी शर्त : वाणी : अब चेष्टा करतो होय पर वाणी नहीं निकलती होय. जो चेष्टा कर रह्यो हे वाके हिसाबसु वाणी नहीं निकलती होय तो आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों पेहचान

जायगो के ये व्यक्ति नहीं हे. क्योंके जैसे अपन् मॅकेनिकल् चेष्टाकु बना दें, आपके यहां कांदीवलीमें वो गणपतिजी बने हते, तो जो उनके दर्शन करे वाकु वो सूंड हिलाके एक लड्डू दे देते भेंट धरवेपे. वो बोलते थोड़े ही हते. चेष्टा करते हते. एक रुपया डाल्यो नहीं और उनने सूंड हिलाई और एक लड्डू ले जाओ. पर वो गणपतिजी हते के गणपतिजीको मॅकेनिज़्म् हतो? क्यों? क्योंके चेष्टा हती पर वाणी तो नहीं हती ना! भूले चूके कोईकु गणपतिजीने केह दियो होतो "आओ धीरुभाई आओ!" तो सब मान लेते के ये तो साक्षात् गणपतिजी प्रकट हो गये. चेष्टाके बाद थर्ड फॅक्टर व्यक्तिकु व्यक्ति बनावेवालो वाकी वाणी हे.

चौथी शर्त : व्यवहार : अब वाणी तो रेडियोमें भी बजती रहे. कई कई ठिकानेसु स्टेशनूपे भी वाणी बजती रहे के ट्रेन लेट हो गई और ये ट्रेनके आवेकी संभावना हे; यात्रियोंसे निवेदन किया जाता हे वगैरह वगैरह वाणियें आती रहें. वाणीसु भी क्या होवे के आदमीकु शतप्रतिशत श्योरिटी नहीं आवे के व्यक्ति हे के कोई मशीन ही बोल रही हे. वाणीके ऊपर एक और फिनोमिना आवे हे वाकु व्यक्ति बनावेवालो और वो हे व्यवहार. व्यवहारको मतलब क्या? के जैसे आप केह रहे हो के पांच नम्बरकी ट्रेन दो नम्बरके प्लेटफॉर्मपे आवेवाली हे. यात्रियोंको जो पांच नम्बरकी ट्रेनसु जानो हो, वो दो नम्बरके प्लेटफॉर्मपे आ कर खड़े हो जायें. ऐसे एनाउन्स्मॅन्ट हो रह्यो हे. अब समझो के आप चार नम्बरके प्लेटफॉर्मपे खड़े हो तो खड़े हो! तो कोई आपकु थोड़ेही रोकेगो टोकेगो. अचानक एनाउन्स्मॅन्ट ऐसो भी आवे के तुम्हारे पास पांच नम्बरकी टिकट हे तो चार नम्बरपे क्यों खड़े हो, जाओ दो नम्बरपे. तो आपकु तुरत समझमें आ जायगो के ये खाली वाणी नहीं हे, मेरे साथ व्यवहार भी कर रह्यो हे. मेरे साथ व्यवहारमें ये वाणी इन्वॉल्व् हो रही हे. फिर आपकु तुरत यहां वहां देखवेकी इच्छा होयगी

के कौनने कही! जैसे टिकट निकालवेके लिये, वजन तोलवेकेलिये वो रुपया डालें वाके बजाय खोटो सिक्का डालके निकाल लें, कोई बोले नहीं, पर समझो के अचानक कोई बोले ''ये खोटो सिक्का क्यों डाल रहे हो?'' तो अपन् सोचें ''कौन बोल्यो?'' जैसे ही कौन बोल्यो तो अपनेकु तुरत हो जायगो के ये खाली जनरल् वाणी नहीं हे, व्यवहार भी प्रकट हो रह्यो हे यामें. खाली वाणीही नहीं हे कुछ व्यवहार भी कर रह्यो हे. व्यवहार बहोत बड़ो फॅक्टर हे व्यक्तिकु व्यक्ति बनावेमें. या रहस्यकु समझो.

पांचवी शर्त : विचार : आकृति, चेष्टा, वाणी, व्यवहार इन सबके बाद अपनेकु फिर एक ऐसी समझ आवे हे, सूझ आवे हे के ये जो कुछ भी काम हो रह्यो हे याके पीछे विचार काम कर रह्यो हे. तो वा व्यवहारके बाद व्यक्तिकु व्यक्ति बनावेवालो विचार नामको एक एलीमेन्ट् और हे. ऐसे ही वाणी या व्यवहार नहीं कर रह्यो हे, कुछ सोचके कर रह्यो हे. अब सोचके कर रह्यो हे पर तटस्थतासु कर रह्यो हे. थोड़े दिनन्में वो रहस्य पता चल गयो ना!

छट्ठी शरत : भाव : थोड़ी अनरिलेटेड् बात हे पर आपकु वासु बात समझमें आ जायगी. पच्चीस-तीस साल पेहले एक फिल्म आई हती, ''आषाढ़का एक दिन''. वाको जो डायरेक्टर हतो वो मेरो बड़ो अच्छो मित्र हे, वाकु एक वहम हो गयो के जबभी ड्रामामें या फिल्ममें कोई भी एक्टर कोई डॉयलॉग् बोले और वा डॉयलॉग् डिलीवरीमें हर आदमीकी एक स्टाईल् होवे हे, (वो शेखर सुमन सबकी नकल करतो रहे ना!) तो वो कैसे कर सके कॉपी? क्योंके हर एक्टरके डॉयलॉग् डिलीवरीकी एक स्टाईल होवे. चाहे कोई भी डॉयलॉग् होवे वो एक्टर बोलेगो तो वाही स्टाईल्में बोलेगो. जैसे वो अमरीशपुरी बोलतो हतो ''आऽऽऽआ. कौऽऽऽन होऽऽऽ तुमऽऽऽ

क्या हेऽऽऽ.'' वाकी स्टाईल हती ना! वाको ये सोचनो हतो के या तरहसु जो इनटोनेशन् आवे हे, वाके कारण जाने ड्रामा लिख्यो, वा ड्रामाके लेखकको भाव मर जाय. अब मर जाय तो मर जाय. फिल्म कैसी बनाई ''आषाढ़का एक दिन''? वामें हर एक्टर वाणीकु उंचे नीचे किये बीना ऐसे बोले ''मैं केहता हूं के तुम मुझको बहोत प्यारी लगती हो.'' वो हीरोइन बोले ''मैंने भी तो तुमसे कभी प्यार नहीं किया था.'' तीन घण्टामें सारो ऐसो. ''मैं तो पेहले ही जानता था के तुम किसी कामके नहीं हो. तुम्हारे जानेसे फर्क क्या पड़ता हे?'' ऐसे ऐसे डॉयलॉग्; कोई कुछ कॉन्ट्रीब्युशन् नहीं एक्टरको. वो जैसे पुस्तक पढ़ते होंय ना, त्राहि त्राहि हो गई के पिक्चर पूरी कब होवे? क्योंके वो जो शब्द हें; देखो जो बात मैं समझानो चाह रह्यो हूं वाकु ध्यानसु समझो. के वाणी हे, व्यवहार हे, उनमें कुछ विचार भी प्रकट हो रहे हते पर भाव नहीं हतो. करके पेहले दिन प्रीमियर शो हम देखवे गये दूसरे दिन फिर पिक्चर चली ही नहीं. दूसरे दिन वाकु कोई भी देखवे नहीं आयो. कौन रिस्क् ले तीन घण्टाको! पांच-दस मिनट होंय तो अपन् सहेन कर लें पर तीन घण्टा या त्रासकु कौन झेल सके? तौबा हो गई. चली नहीं वो पिक्चर क्योंके भाव नहीं हे. नहीं तो प्रकट हो जातो. तो जितने भी कॅरेक्टर हें वो कॅरेक्टर ही नहीं हें. पुतला हें खड़े भये. बोलते भये पुतला हें ऐसो लगतो हतो. जैसे कठपुतलीके पुतला होंवे ना, वा तरीकेको वो पूरो शो लगतो हतो. अब डायरेक्टरकु ऐसो लगतो हतो के प्लेराइटरके साथ न्याय होनो चहिये. एक्टरकी दादागिरी नहीं चलनी चहिये. वाने जो डॉयलॉग् लिख्यो वाकु बस डॉयलॉग्की तरह पढ़नो चहिये बस. कोई इन्टोनेशन् वामें नहीं आनी चहिये. बोलवेमें अपनो भाव व्यक्त करवेमें जो कुछ ऊंचो नीचो होनो चहिये, वा तरहसु कुछ भी ऊंचो नीचो नहीं होनो चहिये. यामें अपन् समझ सकें हें के व्यक्तिको बोध खतम हो जाय जब अपन् ऐसे बोलें तो. घरमें जाके कभी ऐसे बोलके देखियो. सब

लोग घबरा जायेंगे. उनकु नर्वस्नेस् आ जायगी के ये व्यक्ति रह्यो के नहीं रह्यो? क्योंके व्यक्ति जब अपन् कोईकु केह रहे हें तो अपनो ये एक्स्पॅक्टेशन् हे के व्यवहारमें वाको विचार भी प्रकट होवे और वाको भाव भी प्रकट होवे. चाहे क्रोधको होय, दोस्तीको होय, दु:खको होय, या सुखको होय पर जब भाव प्रकट होवे तब वो अपनेकु व्यक्ति लगे. भाव प्रकट नहीं होवे तो अपनेकु व्यक्ति नहीं लगे. अन्तमें व्यक्तिकु घड़वेवालो फॅक्टर वाको भाव हे.

ये सब मिलके व्यक्तित्व बने. बात समझमें आई! अपन् ये समझ सकें हें के दूसरे व्यक्तिकी आकृति क्या हे, चेष्टा क्या हे, वाणी क्या हे, व्यवहार क्या हे, विचार क्या हे, वो सब अपन् पता लगा सकें. वाको अनुभव अपन् कर सकें हें. पर दूसरे व्यक्तिके अहंको अनुभव नहीं कर सकें. अहं तो सिर्फ अपनेकु अपनो ही समझमें आयेगो. दूसरेकी ये सारी बातें अपनेकु समझमुें आवें. एक याको रहस्य समझो. ये बात मैं क्यों समझा रह्यो हूं? **''सहस्रशिरसं देवं यम् अनन्तं प्रचक्षते''** हजार माथा वाके कैसे होवें? क्योंके अपन् अपने अहंकी चिंता करें पर दूसरेको अहम् जा बखत अपन् सोच रहे हें, अभी तक अपन्ने जो सोच्यो इतने दिनन्में वो हर वक्त अपने अहंके बारेमें सारी बात सोची हे. पर अहंकी अपनी कोई मोनोपोली तो हे नहीं. यदि अपन् अहंकी मोनोपोली करें तो वो भी एक अहं हे पाछो. वो मोनोपोली तो अपन् कर नहीं सकेंगे. अहंकु अपन्कु सबको माननो पड़ेगो के जैसे मेरो अहं हे वैसे सबको अहं हे. मेरो अहं मेरे लिये अहं हे पर आपके लिये तो मेरी कुछ आकृति, मेरी कुछ चेष्टा, मेरी कुछ वाणी, मेरो कुछ व्यवहार और मेरो भाव ही आपके लिये मेरो अहं लगे हे. मेरो अहं आपके लिये नहीं हे. आपको अहं आपके लिये हे क्योंके अहं सिन्युलर ही होवे हे प्ल्युलर नहीं होवे हे. ये रहस्य अपन् अच्छी तरहसु जानें हें.

प्रश्न : ये भावमें थोड़ो बहोत अहं तो आवे ही हे? अगर आवे हे तो थोड़ो बहोत दूसरेको अहं समझ सकें हें के नहीं?

उत्तर : अहं अनुभवमें नहीं आयेगो, भाव ही समझमें आयेगो.

प्रश्न : अनुभव नहीं कर सकें पर समझ तो सकें?

उत्तर : वोही तो मैंने कल बतायो हतो. अपन् एपिस्टेमेलॉजिकली अपने अहंकु पेहले मानें; सारी बातें वाके बादमें आवें. पर दूसरेको अहं पेहले अपनकु समझमें आयेगो ही नहीं, एपिस्टेमेलॉजिकली. एवरी ईगो हेज़ ए पर्सनालिटी. मेरे केहवेको मतलब ये हे एवरी पर्सनालिटी इन्वॉल्व सम् ईगो. ये मैं केहनो चाह रह्यो हूं. अब वो पर्सनालिटीके कॉन्स्टिट्युएन्ट् फॅक्टर ईगो अपन् कहें ना! तो अपन् अपनो ईगो समझ सकें. पर दूसरेको ईगो कैसे समझमें आयेगो? मैं कोईकी पर्सनालिटी समझ सकूं, दूसरो अपनी पर्सनालिटी समझ सके पर ईगो तो मैं ही समझ सकूं हूं ना! ये पर्सनालिटीमें भाव ईगो प्रकट होतो होय तो होतो होय पर ईगो तो समझमें नहीं आयेगो, वो भाव समझमें आयेगो. मेरे केहवेको मतलब ये हे. बात स्फुट भई के नहीं के कन्फ्युजन् हे?

(ईगोकी कोमनालिटी और प्रेडिक्टेबिलिटी)

प्रश्न : अपन् ऐसे कहें कि अपनो जो व्यवहार हे वामेंसु जानके ये चीज मैंने करी हे तो अपन् सामनेवाले व्यक्तिकु व्यक्त करें के ये तो मैंने कियो हे तो सामनेवालेकु ऐसो लगे के याको अहंकार बोल रह्यो हे क्योंके 'मैं' बोल रह्यो हे. फिर ऐसो भी होवे के अपन् ऐसे सोचें के कोईको ईगो हर्ट हो गयो. तो बोलचालमें अपन् ईगोकु 'मैं' जो रेफरेन्स् देते होंय के अहंकारी व्यक्ति हे के नहीं हे. वो अहं और अपन् जाकु अहं नहीं समझ पा रहे हें, वो दोनों कैसे डिफरेन्ट् हें और जो अपन् बातमें बोले के अहंकारी हे या अभिमानी हे, जो भी हे, वो व्यक्तिमें इन छे सात फॅक्टरनूमें

कहांपे क्या झलके हे और कौनसो ईगो अपन् नहीं समझ सकें हें. वो थोड़ो कन्फ्युज़न हे के ये कैसे डिफरेन्ट् हें?

उत्तर : पेहले ये बात समझो के मैंने अपने पेहले दो तीन दिनके सारे विश्लेषणमें एक बात स्पष्ट करके बताई के ईगो क्रिया हे, ईगो करण हे, ईगो कार्य हे, ईगो कर्ता हे, ईगो ज्ञप्ति हे, ईगो ज्ञानको करण हे, और ज्ञेय बने हे और ज्ञाता भी बने हे. ईगो भुक्ति हे, भोगको करण बने हे, भोग्य बने हे और भोक्ता भी बने हे. तोकु तेरो कर्ता भोक्तावालो ईगो तो समझमें आयेगो. पर मैंने ये बात पेहले ही बता दी हती के ईगो सिर्फ इतनेमें ही कन्फाईन्ड् नहीं हे. ये तो एपिस्टेमेलॉजिकल हे. "मैं कर रह्यो हूं" "मैं जान रह्यो हूं" "मैं भोग रह्यो हूं" कर्ता, ज्ञाता, भोक्ता को ईगो तो तेरो एक्सक्ल्युसिवली पर्सनल् हे, पर क्रिया तेरी पर्सनल् नहीं हे. वो तो ऑलपरवेसिव् हे. जो ऑलपरवेसिव हे वाकु तो तू समझ ही सके ना! तू जो अनुमान करेगी के कोईको मेरे या तरीकेके व्यवहार करवेसु वाको ईगो हर्ट भयो, ये वो ऑलपरवेसिव् क्रियाके आधार पर कर पा रही हे. जैसे आजकल मोबाईल् आ गयो हे, सब लोग कर्णचंचु लगा लें. अब वो खीसामें मोबाईल होवे. अपनेकु कर्णचंचु दीखे हे तो ऐसे लगे के पागल हे के क्या बला हे! जिनकु पता हे के मोबाईल लगा रख्यो हे और कर्णचंचुमें वो मोबाईलमें बात करतो जा रह्यो हे तो अपनेकु आश्वस्तता होवे हे. नहीं तो बिना मोबाईलके कोई रस्तामें हंसतो भयो जातो होय तो तू क्या करेगी? वो जा फुटपाथपे चलतो होयगो वा फुटपाथपे सु बचके जायेगी के नहीं? क्यों बचके जायेगी? क्योंके वाको व्यक्ति अरेन्ज्ड् हे के डीरेन्ज्ड् हे वो प्रीडेक्टेबल् नहीं रेह जायेगो. अभी हंस रह्यो हे और कभी मारपीट करवे लग जाये तो! "क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः रुष्टः तुष्टः क्षणे क्षणे अव्यव्यस्थितचित्तानाम् प्रसादोपि भयंकरः." जाको दिमाग बराबर नहीं होय तो वाके खुश रेहवेपे भी वासु घबराते

रेहनो चहिये. तो अपन् वाकु क्यों प्रेडिक्टेबिलिटी मानें हें? क्योंके मोबाईल सबके पास हे तो अपनेकु आश्वस्तता हो जाये के हां भई मोबाईलमें बात करतो भयो जा रह्यो हे. नहीं तो रस्तामें अचानक जैसे बात करते जावें लोग आजकल, हाथ भी फ्री होये, खीसामें लटकतो भयो होय और हंसते भये, बात करते भये, चेहरापे खाली भाव दीखे तो अपनेकु आश्चर्य लगे के नहीं के हो क्या गयो याकु! अपन् ये बात क्यों समझ रहे हें क्योंके या तरीकेको व्यवहार अपन् भी करते होंयगे तो अपनेकु आश्वस्तता रहे के भई वो भी कोई मोबाईलपे बात करतो होयगो. पर अचानक जाकु पता नहीं होय और वो कोईकु ऐसे चलते भये रस्तामें देख ले तो? ईगोके साथ ये कनेक्शन् के ईगो जो प्रीवेलिंग हे ऑलपरवेसिव हे, वो परवेसिव ईगोके कारण तुमकु अपनेसु वाकी कॉमनेलेटी समझमें आयेगी. बाकी वाको ईगो समझमें नहीं आयेगो. अब तुम्हारो ईगो कैसे हर्ट हो रह्यो हे? वा तरहसु तुमकु दूसरेको ईगो हर्ट होतो लगेगो. बाकी संभव हे के वाको ईगो हर्ट होतो ही नहीं होयगो जैसे धीरुभाईको. धीरुभाई सबको ईगो हर्ट कर देतो. वाकु समझमें ही नहीं आती हती. क्यों समझमें नहीं आती हती? क्योंके वाके मनमें ये कन्सेप्ट् हतो के वर्ककल्चर ही ऐसो हे के काम करवानो हे तो फायरिंग करते रेहनो चहिये. अब तुम्हारो ईगो हर्ट हो रह्यो हे वाकु समझमें नहीं आ रह्यो हे, वो मनुष्य नहीं हतो ऐसी बात भी नहीं हे, वाको ईगो नहीं हे ये बात भी नहीं हे, पर मनमें वाके या प्रकारकी एक धारणा बन गई के काम फायरिंग करके ही करवानो. बस बात खतम हो गई! वामें ईगो हर्ट होवे ये तो समझमें आवे ही नहीं ना.

अक्सर हर माँबाप और बच्चान् में येही झगड़ा होवे. माँबाप प्रेमके कारण बच्चानुकु डांट लगाते होवे हें और बच्चा यों समझते होवें "अच्छा डांट लगा रहे हें, अच्छे नहीं हें." अब वो क्योंके कॉमन नहीं होवे उनकु. माँबापको प्रेम बच्चाकु फील नहीं होतो

होवे, डांट फील् होवे. जो इच्छा होवे और वो माँबाप देनो नहीं चाहते होवें हें, करके निरन्तर झगड़ा चलतो रहे ना! कॉमनवेवलेन्थ् नहीं भई ना! यदि बच्चा ये समझवे लग जाये के माँबाप क्यों डांट लगा रहे हें? जो कहीं न कहीं इनसीक्योर फील् करते होंयगे मेरे या व्यवहारके कारण, या लिये डांट लगा रहे हें, तो वाकु बुरो नहीं लगेगो. माँबाप यदि ये फील कर लें के बच्चा भी कोई कुत्ता तो नहीं हे, वोही बात वाकु प्यारसु केह दोगे तो समझमें आ सके हे. बच्चा भी समझ जायेगो और माँबाप भी समझ जायेंगे. पर हर वक्त क्या होवे के काम करते वक्त अपनेकु इतनो एक्साइटमेन्ट् होवे के उतनी फुरसत तो अपनेकु मिले नहीं ना, के बच्चा क्या सोच रह्यो हे और माँबाप क्या सोच रहे हें? अपन् क्या सुनें? डांट क्यों लगाई? मम्मी और पप्पा को नेचर खराब हे. माँबापसु पूछो तो क्या कहेंगे? बच्चायें आजकल सब बिगड़ गये हें. क्योंके एकदूसरेसु पूछके मातापिता और संतति होवेकी कोमन फीलिंग्सुकु डेवलॅप् करवेके लिये कोईके पास टाइम नहीं आज. प्रोब्लम ये हे. "**फुरसत किसे थी कोई मेरे हालात पूछता. हर शख्स् मेरे बारेमें सोचता मिला.**" प्रोब्लम वोही ना! हाल पूछवेकी कोईकु फुरसत तो हे नहीं. हरेककु अपनो अपनो व्यवहार फटाफट प्रकट करके कोई तरहसु ऑफिस जानो हे, कोई तरहसु स्कूल जानो हे, कॉलेज जानो हे. सबकु कुछ कुछ करनो हे, हर व्यक्ति व्यस्त हे. अब वामें अचानक कोईकु अपन् रोकें, कुछ भी डिस्टर्बेन्स् क्रियेट करें, कोई भी स्पीडब्रेकर् आवे तो हर आदमी उछल जातो होवे हे. बच्चानुको भी येही हाल हे और माँबापको भी येही हाल हे. वामें ईगो हर्ट होवेको ख्यालतो आवे ही नहीं ना!

मेरे एक दोस्तकी पत्नीने अपने दोनों बच्चानुकु जब स्कूलमें पढ़ते थे तब बस खाली इतनीसी बात कही के "देखो! बरसात पड़ रही हे. गटरके ढक्कन खुले होंयगे, सावधानीसु जाइयो." मैं

वहां बैठ्यो भयो हतो और बच्चानूने मेरे सामने वाकु ऐसी डांट लगाई "तू क्या हमकु मूरख समझे के हमकु इतनी भी अक्कल नहीं हे?" वाकी बिचारीकी आँखमें आंसू आ गये "माँ होके इतनो भी नहीं केह सकूं अपने बच्चाकु!" बच्चा वामें अपनो इन्सल्ट् मान रह्यो हे. ऐसी बात माँने क्यों कही! हमकु मूरख समझ रही हे! मूरख समझ रही हे मानके वाको ईगो हर्ट हो रह्यो हे. माँको ईगो हर्ट हो रह्यो हे काहेके लिये? वो केवल अपने मातृत्वके वात्सल्यसु केयर् लेनो चाह रही हे के बच्चा बरसातमें बाहर जा रह्यो हे, गटरको ढक्कन खुल्यो भयो होवे हे, वामें गिरवेके चान्सेस् हो सकें हें, क्योंके संस्कृतमें कह्यो जाय हे **"स्नेहः पापशंकी"** जाके प्रति अपनो स्नेह होंय वाको अनिष्ट होयगो ऐसी आशंका अपनेकु होती रहे. स्नेहके कई नेचरमें ये बहोत प्रोमिनेन्ट् नेचर हे के जाकु अपन् चाहते होंय वाको कुछ अनिष्ट न हो जाय, वो आशंका निरन्तर अपनेकु होती रहे. जाकु अपन् चाहें नहीं तो वाको अनिष्ट होये तो क्या और नहीं होय तो क्या? पर जाकु अपन् चाहते होवें वाको अनिष्ट होवेकी आशंका अपनेकु निरन्तर होती ही रहे हे. कुछ हो न जाय, कुछ हो न जाय. वो एक वेवलेन्थ् हे माँकी फीलिंगकी. वाकु बच्चा शेयर नहीं कर रह्यो हे. जबतक माँ नहीं बने तबतक. नन्दाकी (माँकी) फीलिंग तू बेटी (मैत्री) शेयर कर सकेगी? नहीं कर सकेगी. पर जब तू माँ बनेगी तो वा दिन दूसरो ही चक्कर शुरु हो जायगो. हर वखत या तरीकेको चक्कर होवे हे. वा समय अवेयरनेस् तो होवे हे पर वाको बटन ऑन नहीं होवे हे टाईमकी कमीके कारण. जबतक तुम कन्टीन्युअसली सेल्फ् सजेशन् सु वा फीलिंगकु डेवलप नहीं करो तबतक वाको जल्दीसु स्वीच ऑन नहीं होवे. बहोत सारी बातें अपन् जानते होवें हें पर टाईमपे याद नहीं आवे. बहोत सारी बातें अपन् समझते भी होवें पर टाईमपे याद नहीं आवें. टाईमपे भुला जाये. फिर फुरसतमें याद आवे के हां यों हतो, यों हतो. पर बेकार! क्योंके टाईम तो बीत गयो ना!

अब जो विषय मैं बतानो चाह रह्यो हूं वो ये हे ...बहोत छोटो विषय लग रह्यो हे. मॅथेमॅटिकली भी वर्क आउट करोगे तो छे छंग छत्तीस होयगो. पर थोड़े याके पॉसिबल् वेरियशन्स् क्या होवें, वाकु खाली जैसे चोखाको दानो देखें हें, वैसे आपकु बता रह्यो हूं के ईगोकी प्रोब्लमूमें ये सारे फॅसेट् कैसे काम आ रहे हें? जैसे आकृति; कोईकी सौम्य हो सके हे, कोईकी असौम्य हो सके. सौम्य आकृति माने जाको आकृति देखतेही लगे के ये व्यक्ति अहंकारी नहीं होयगो. कोईकी आकृतिही ऐसी होवे के देखतेही अपनेकु लगे के अहंकारी होयगो. अब देखतेही अहंकारी लगे पर भीतर अहंकारी हे ये गेरन्टी नहीं हे. जाकी आकृति सौम्य हे, वाकी चेष्टा पाछी सौम्य या असौम्य हो सके हे. देखो लफड़ा बढ़तो जा रह्यो हे. आकृति सौम्य हे, चेष्टा पाछी असौम्य चेष्टा हे. जैसे अपन् ट्रेन पकड़वे जाते होंय और कोई अपनेकु धक्का देतो होय तो अपनेकु लगे के ये क्या हो रह्यो हे? क्यों कर रह्यो हे ऐसो वाकु खुदकु ट्रेनपे चढ़नो हे खाली न कोईकु पीटनो हे न मारनो हे! चेष्टा असौम्य हो गई. अपन् घबरा जायेंगे. अब वासु पूछोगे तो धीरुभाईकी तरह कहेगो "ट्रेनमें घुसवेकी पद्धति ही ये हे." अब क्या करनो, कहां जानो! तकलीफ समझमें आई ना! चेष्टा असौम्य हे. आकृति सौम्य हो सके हे पर चेष्टा ऐसी असौम्य करतो होय. आकृति सौम्य भी हो सके हे, चेष्टा भी सौम्य हो सके. अब देखो यामें लफड़ा कितनो बढ़तो जायगो. चेष्टाके बाद वाणी. वोभी पाछी सौम्य या असौम्य हो सके हे. नहीं हो सके? अब अमरीषपुरी बिचारो जबभी बोलेगो तब अपनेकु लगेगो के बड़ो अहंकारी हे. पर जो लोग अमरीषपुरीकु जाने हें उनकु पता हे वाके जैसो सज्जन व्यक्ति मिलनो मुश्किल हे इतनो सोबर, इतनो अच्छो व्यक्ति हतो, इतनो आस्तिक व्यक्ति हतो, पर्सनली वो विलेन हतो ही नहीं. हीरोनूसु ज्यादा हीरो हतो. और आवाज़ सुनो तो कितने कड़ाकेकी आवाज! अपनेकु लगे के क्या लफड़ा हे? यहां लोखण्डवालामेंही रेहतो हतो.

ये बात ध्यानसु समझो के वाकी वाणी असौम्य हो सके हे, पर व्यक्ति सौम्य हतो. वाणीके बाद व्यवहार भी सौम्य या असौम्य हो सके हे.

मैंने बताई होगी ये बात के ९२-९३में केशोद गयो. वाके बाद राजकोटमें प्रवचन हतो. प्रवचन कर कराके थकके जाके छतपे सोयो. बाजूके गाँवके कोई एक कुम्हार आये. वाने आके कही "केम थाकी गया छो". मैंने कही "हां, थाकी गयो छू." वाने कही "बहु धगश वधी गई छे". मैंने कही "हां, बहोत धगश बधी गई छे." मैंने कही "पता नहीं क्या धगश केह रह्यो हे!" अब काठियावाड़ीमें धगश काहेकु कहें मैं समझ ही नहीं पायो. बातको अन्त लावेके लिये केह दी "हां वधी गई छे." वाने कही "मटाड़ी दऊं." मैंने कही "हां मटाड़ी दो." एक मुक्का ऐसो मार्‍यो तो मैंने कही "मटी गई धगश." मैंने कही बीजो मुक्का मारे तो धगश फील करवेवालो ही नहीं रेह जाये. गांमठी मुक्का पाछो, शहरको मुक्का होय तो आदमी सहन करे.

योगेशबावाके यहां जनेऊमें गोकुलमें गयो हतो, तो वहां मोकु एक बहेन मिले. वाने कही "एक्युप्रेशर करी दऊं. बधु ठीक थई जशे." मैंने कही 'करो.' अब वाने ऐसो दबायो के मेरे होश ही फाख्ता हो गये. मैंने कही "ठीक थई गयो. ज्यादा करवानी जरूरत नथी." त्राहि त्राहि हो गई. वो तो मोकु शरम इतनी आ गई ईगो मेरो हर्ट हो गयो के औरत इतनो दु:ख देवे मर्दकु तो याको मर्द न जाने कैसो होयगो? वाको हाथ इतनो कड़क, दबायो इतनो जोरसु प्रेशर के त्राहि त्राहि हो गई के मर गये आज तो अपन्. करके वाने कही "और बधारे करूं"? मैंने कही "ना ना ठीक थई गयो, रोगज् मिट गयो." कौन रिस्क ले वामें. अब देखो अपन् जाने हे के बिचारी सेवाभावसु कर रही हती पर भई वाको

जो हाथ हे वाही हाथसु तो करेगी ना! अब वामें अपनूकु ठीक नहीं लगे पर वाको तो सेवाभाव हतो. मेरी बात समझमें आ रही हे ना! तो व्यवहारमें भी या तरहसु हो सके हे. विचारमें भी पाछो कोईके विचार एकदम; अभी बम्बईमें आजकल तो उनके इतने ज्यादा कार्यक्रम नहीं हो रहे हें पर एकदम मेरी तरह कड़क जुबान बोलवेवाले वक्ताके साथ मेरो भी प्रवचन हतो. प्रवचनके पेहले पर्सनल् उनसु बात करी तो दोस्ताना ढंगसु बोले. तो मेरे मोंहसु निकल गयो "जेवा तमे लेक्चर आपो छो, अने जेमा आ रीते बोलो छो तेमा अलग लागो छो अने वातचीतमां जेम बोलो छो तो एमा तमे बहु हुंफाळ अने प्रेमाळ लागो छो!" तो बोल्यो " एम न बोले तो कोई समझेज नहीं." मैंने कही "हवे समझी गयो." वाने मोकु ये रहस्य बतायो. वासु मोकु अपनी बात भी समझमें आई.

मेरे यहां राजकोटके एक भाई आये. उनकु मैंने कही 'बैठो.' दो बखत कही 'बैठो.' तो उनने कही "नहीं, नहीं." मैंने कही 'बेसो, कई वांधो नथी.' तो दरवाजाके पास बैठ्यो. आधा पौना घण्टा बात करवेके बाद उनने मोसु कही "खतरा जेवु नथी लागतु." मैंने कही "कोनो खतरो लागे छे?" उनने कही "कोईने कही के श्याममनोहरजीके पासे जावामां बहुज सावधानी राखवी जोइये. गुस्से थई जाये तो लाफो मारी दे. हवे दरवाजा पासे बैठिये तो भागी तो शकिये ना!" बैठे ही नहीं सामने. मैं कहूं के "भई बैठो", तो कहे "ना ना बहु सारू छे." आधा पौना घण्टा बात करवेके बाद मोकु भयो के मेरी भी भाषाके कारण जितनो मैं असौम्य नहीं होऊं, पर इम्प्रेशन मेरी एसी हे. केम के भागवा माटे दरवाजो तो जोइये ना! बैठे ही नहीं सामने. ऐसो होवे हे के लोगनूकु हो जाय के ये बहोत अहंकारी हे. भाव भी अपन् समझ सकें हें के जैसे विचार सौम्य या असौम्य हो सके हे तो उन विचारनूके

रेहते भाव भी पाछो सौम्य या असौम्य हो सके हे. नहीं हो सके? अब अपन्ने कितने सारे ब्लेन्क् छोड़े हें. पॉसिबिलिटी देखो यहां. उन सारी पॉसिबिलिटीस्कु जा बखत अपन् यहां एन्युमरेट् करेंगे तो कितने प्रकार हो सकें हें, समझो के सौम्यताकु आप दीनतासु सब्स्टीट्युट् करो. असौम्यकु अहंकारसु सब्स्टीट्युट् करो. तो कितनी वॅरायटी दीनताकी और महाप्रभुजी जो केह रहे हें **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं, सर्वथा दीनभावना** वा दीनभावनाकी कितनी वॅरायटी हो सकें हें और अहंकारकी कितनी वॅरायटी हो सकें हें? जस्ट एक सिम्पल् एन्युमरेशन् आप करोगे तो कितनी पॉसिबिलिटी अपने सामने आ रही हें. ये तो खाली अपन्ने डायकोटोमीसु रिज़ल्ट् लायो हे सौम्य और असौम्य करके. दरअसल अपनी आकृति, अपनी चेष्टा, अपनी वाणी, अपनो विचार, अपनो व्यवहार, अपनो भाव कु अपन् सौम्य या असौम्य में ही बांट सकें, ये जरूरी नहीं हे. वामें बहोत कॉम्प्लीकेशन् रहे भये हें. इतने कॉम्प्लीकेशन् रहे भये हें, ये तो डायकोटोमी खाली आपकी वाकी पॉसिबिलिटीस् कितनी हें आलटर्नेटिवकी वो समझावेके लिये आपकु बताई. सचमुचमें यदि अपन् थोड़ेसे शान्तचित्तसु सोचें तो पता चले. ये तो पाछो वोही एक चोखाके दानाकी तरह थोड़ीसी वॅरायटी आपकु बता रह्यो हूं.

कोईकी चेष्टा अन्तराभिमुख होवे. कोईकी चेष्टा अन्तराभिमुख नहीं होके इतराभिमुख होवे. अन्तराभिमुख चेष्टा मतलब क्या? हर व्यक्तिके साथ ये प्रोब्लम होवे के व्यक्ति अपने ख्यालनूमें इतनो खोयो भयो होवे हे के वाके कारण कुछ चेष्टायें करतो रहे. कोई क्या करें, वापे कन्ट्रोल ला सकें, कोई लोग कन्ट्रोल नहीं ला सकें. कोई लोग चेष्टा तभी प्रकट करें के जब सामने कोई पात्र प्रकट भयो होय. कोई लोग पात्र प्रकट भयो होय के नहीं प्रकट भयो होय, उनके अन्तरमें जो कुछ चल रह्यो होय, वो चेष्टा उनकी प्रकट होती रहे. मेरे घरमें ही एक पढ़वे आये हते. वो दिन भर

पॉपम्युज़िक सुनते. ये मैंने प्रॅक्टिकली देख्यो के वा पॉपम्युज़िकको आवेश इतनो आतो के हिलवे डुलवे नाचवे लग जाते. अब मैं समझ नहीं पातो के भयो क्या लफड़ा? सीधे सादे हते अचानक क्या हो गयो. अचानक वो चलते चलते अन्तराभिमुख होवेके कारण उनकु पॉपम्युज़िक याद आ जातो. पॉपम्युज़िक याद आ जावेके कारण रिदम् याद आ जाती और फिर यों यों नाचनो हो जातो और फिर सीधे चलवे लग जाते. कोई तुक याद आ गई, कोई कड़ी याद आ गई, तो चेष्टा नॉट टु शो मी, पर वो अन्तराभिमुख इतनो होवे हे के वामें प्रकट हो जाय. अक्सर बाथरूममें काचके सामने सब लोग अन्तराभिमुख चेष्टायें प्रकट करें हें. भौंह तानके देखेंगे, दांत काढ़के देखेंगे, यों देखेंगे, सब तरहसु करके देखें अन्तराभिमुख होवेके कारण. तो चेष्टा कोईकी अन्तराभिमुख होवे कोईकी इतराभिमुख होवे. अब वाकु सौम्य या असौम्य में अपन् बांट नहीं सकें. कोईकी अन्तराभिमुख चेष्टा अपनेकु अहंकार लगेगी. कोईकी इतराभिमुख चेष्टा अपनेकु अहंकार लगेगी. डिसाईड् कैसे करनो के कौनसी चेष्टा सचमुचमें अहंकारीकी हे और कौनसी चेष्टा अहंकारीकी नहीं हे, दीनताकी हे?

एक सीधीसी बात समझो. अपन् कोईकु जानते होंय, मैं अपनी तकलीफ बताऊं, रेग्युलर मैं जाकु नहीं मिलुं, मोकु वाको नाम तो बिल्कुल ही भुला जाय. फिर चेहरा भी भुला जाय. अब कोई अचानक सामने आवे और मोकु स्माईल देते होय तो मोकु क्या होवे के नर्वसनेस् आवे. मैं याकु जानुं के नहीं जानुं सबसु पेहले ये प्रश्न मनमें उठे. अब स्माईल देनी के नहीं देनी पाछी एक वो पझल और हो जाय. अब वा गड़बड़में क्या होवे के मैं ऐसो गम्भीर चेहरा बनाके निकल जाऊं तो कई लोगनकु लगे के जान्यो नहीं, इनसल्टिंग् बिहेवियर हे. एक्च्युअली मैं इनसल्ट् करनो नहीं चाहूं पर भीतरसु नर्वस् हो रह्यो हूं के भई बात छेड़ेंगे और अचानक पूछ लियो तो क्या जवाब दऊंगो? मेरे ऐसे ही भयो. सगाई नहीं

भई हती, तबतक जिनके घर रुकतो हतो, हमारे होवेवाले साढूभाईके घरमें, उनके सब बच्चायें मेरेसुं बहोत खेलते. सगाई हो गई तो पता नहीं क्या हो भयो के मैंने वहां जानो बन्द कर दियो. एक दिन उनने मोकु बहोत सुनावा-सुनाई कर दी के "पेहले तो आप आते हते अब आते ही नहीं." तो मेरे मनमें बड़ो सदाशय जग्यो के आज खास मिलवे जानो हे. उन्हीकु मिलवे जा रह्यो हतो हों, अब उनके बच्चायें मिल गये रस्तामें, पीछे दौड़े "मौसाजी! मौसाजी! मौसाजी!" अब पता नहीं चले के कौन हें पर इतनो तो पता चले के 'मौसाजी' केह रहें हें तो मैंने कही "कैसे हो मजामें हो?" तो बोले "आपने पेहचान्यो नहीं मोकु?" तो मेरे मोंहसु ऐसे निकल गयो "तेरेकु नहीं पेहचानुंगो तो कौनकु पेहचानुंगो?" वाने कही "बताओ मैं कौन हूं?" मैंने कही "देख एक बात बताऊं के मैं तेरो मौसा हूं और तू मेरो भतीजा हे." अब यामें और ज्यादा पंचायत कैसे करनी? तो बोले "मैं समझ गयो के आप नहीं पेहचाने." सच्ची बात हे नहीं पेहचाने. लफड़ा हो जाये ऐसो नहीं के अहंकार हे, पर या तरीकेकी प्रॉब्लम होवे हे. या तरीके अपन् अपने अहंकारके मापदण्डसु दूसरेके अहंकारकु माप नहीं सकें. ये सब व्यवहार देखके अपन् कुछ रफप्रेडिक्शन् कर सकें वो ज्योतिषीवालो नहीं, पर थोड़ोसो अपन् सोच सकें के अहंकारी होनो चहिये पर क्या पता हे के भीतरसु नहीं हे, पता नहीं चले.

वाणी भी कोईकी ऐसी होवे के वो अपने भावकु आविष्कृत कर सके. कोईकी वाणी खुलासा नहीं कर पावे, वो बोल ही नहीं पावे. नहीं बोल पावे तो अपनेकु लगे के अहंकारी हे. दरअसल वो अहंकारी नहीं हे. वाकी वाणीमें भावाविष्करणको सामर्थ्य नहीं हे. जा वाणीको सामर्थ्य भावकु आविष्कृत करवेको हे के नहीं याकु सौम्य या असौम्य में कैसे बांटनो? भावकु प्रकट करनो.

मैं महालक्ष्मीमें पुस्तककी दुकानमें गयो. वहां माध्वविद्यापीठके

एक विद्यार्थी आये. उनके गुरुजीके गुरुजी मेरे दादाजीके सहपाठी. अचानक वहां हमकु मिल गये तो मोकु बड़ी खुशी भई. सब परिचय करके खुशी भई तो उनकु कोई पुस्तक चहिये हती. पुस्तककी दुकानवालो जो प्राईस् केह रह्यो हतो उतने पैसा उनके पास नहीं हते. उनने कही के "नहीं लेंगे." उन दोनोंनूमें रकझक चल रही हती तो मैंने जाके माथा मार्‍यो के क्या रगझग चल रही हे? उनने कही "इतने पैसा लाये नहीं और ये पुस्तक चहिये." अब उनके दादागुरु और मेरे दादाजी सहपाठी हते तो मोकु बड़ो भाव आयो के अपनेकु दिवानी चहिये. मेरे पास तो पैसा हते. मैंने कही के "एक काम करो के इनकु पुस्तक दे दो और पैसा तुम मोसु ले लो." मैंने उनसुं पूछी के "मैं दिवा दऊं पुस्तक?" (तो वाने दायें-बायें शिर हिला दियो) मैंने सोची के संकोच करतो होयगो. तो मैंने कही के "एक काम करो अलग क्यों मानों अपन् एक ही हें. दिवा दऊं मैं?" (फिरसु वेसे शिर हिलावे) तो मैंने कही "जाने दो!!". मैं अपनी पुस्तक लेवेके लिए ऊपरके फ्लोर्‌पे चल्यो गयो. फिर पाछो दुकानवालो मेरे पास आयो "आप दिवा रहे हो के नहीं दिवा रहे हो?" मैंने कही "वो ना पाड़ रहे हें दिवाऊं कैसे?" तो वो बोल्यो "वो ना नहीं पाड़ रहे हें हां पाड़ रहे हें." हां वो ऐसे सिर हिलाके पाड़ रहे हते. अपन् तो हां ऐसे पाड़ें ना! उनकी हां की चेष्टा अलग हती. मैंने कही "नहीं लेतो होयगो तो अपन् क्या कर सकें!" अब देखो जेन्युइन् डिफिकल्टी हे ना! सब जगहकी भावाविष्करणकी जेस्चर अलग अलग हे, चेष्टा अलग अलग हे . अब वो कन्नड़भाषी वाकु हिन्दी नहीं आवे, मोकु कन्नड़ नहीं आवे टूटी-फूटी भी, पर हमने इतनो कम्युनिकेट् कियो के पुस्तक मैं दिवावेकु तैयार हूं. तैयार हूं और वो अपने ना के जेस्चरमें गरदन यों हिलाये तो कैसे दिवानी! अब वो विचारो हां केह रह्यो हतो पर मोकु लग्यो पता नहीं वाके मनमें कोई ग्रंथि होयगी के इनसुं क्यों लेनी पुस्तक. जाने दो अपनो क्या जा

रह्यो हे! तो ये सारी प्रॉब्लम अपनेकु आवें के नहीं आवें? या तरीकेके इन्कार या स्वीकार कु सौम्य केहनो के असौम्य केहनो? न सौम्य हें और न असौम्य हें. अलग हे विविधता हे **सहस्रशिरसं** देवं हे ना! ऐसे तो न जाने कितने सारे फॅक्टरस् हर लेवलपे आयेंगे. फिर जैसे व्यवहारमें कोई बिचारो साहसी हे, कोईमें साहस नहीं होवे, डरपोक होवे. डरपोक होवे तो अपन् वह काम नहीं करे तो कई बखत अपन् ऐसे समझ जायें के अपने साथ नहीं आ रह्यो हे, अहंकारी हे. हम जा रहे हें और ये आ नहीं रह्यो हे. अरे भई! नहीं आ रह्यो हे वाको कारण वामें साहसको अभाव हे वा लिये नहीं आ रह्यो हे, वामें अहंकार हे या लिये नहीं आ रह्यो हे, ऐसी बात नहीं हे. ये भी संभावनायें हो सकें. उनकु सौम्य या असौम्य में कैसे बांटनो? जैसे व्यवहारमें ही कोई पेहले स्वयंको हित विचारे कोई दूसरेको हित पेहले विचारे. जब खुदको हित पेहले विचार रह्यो हे, वाकु क्या अपन् अहंकारी कहेंगे? भई! जबतक तुम्हारो अहित नहीं कर रह्यो हे, खुदको हित विचार रह्यो हे वामें अहंकार क्या भयो? पर जो खुदको ही हित विचारे दूसरेको हित नहीं विचारे, वामें अपनी इम्प्रेशन् तुरत ऐसी हो जाये के ये अहंकारी हे. जरूरी नहीं हे के वो अहंकारी होय.

आज ही मैंने बड़ी मजेदार बात देखी. गांवनूमें और पुराने बम्बईमें भी वो कल्चर हती के कबूतरके लिये वो मालिया टाईपको बनाते और वामें दाना और जल रखते. आजकी बम्बईकी सिटी लाईफमें बहोत सारे कबूतर रेह रहे हें, उनकु दाना और पानी की व्यवस्था नहीं हे. आज सुबहकी बात हे मैं अपने पेड़नूकु पानी पिवा रह्यो हतो तो वो पानीकी बौछारें जा रही हतीं, दो चार कबूतर गुटर गुं गुटरगुं करते भये पानी पीवे आये, पर जब वाने देख्यो के पानीकी बौछार मनुष्य छोड़ रह्यो हे तो उनने कही के याकी चेष्टासु पता नहीं चले के ये हितकारी हे के अहितकारी

हे? वो पाछे गुटरगुं गुटरगुं करते चले गये. आये हते वो पानी पीवे. क्योंके पानी बाहर जा रह्यो हतो स्प्रेयरसुं, फिर उनकी हिम्मत नहीं भई, साहस नहीं भयो. साहस नहीं हे करके वो मेरो इन्टरप्रेटेशन् ऐसो कर रहे होंयगे के मैं हिंसक पशु हूं, जबके मेरो इन्टेन्शन् ऐसो कोई हतो नहीं. अब यामें सचमुचमें सौम्य या असौम्य को प्रश्न यामें कहां आयो? मोकु सचमुचमें बड़ी दया आई उनपे पर करूं क्या? उनकु कैसे समझाऊं? देयर इज् नो वे ऑफ कम्युनिकेशन् के कबूतरकु मैं समझाऊं के तू चाहे तो मैं तोकु भी पानी पिवा सकूं हूं. पर पानी कैसे पियानो वो तो डरे अपनेसु. तो हरेकको हितको व्यवहारमें भी अपन् दैन्य या अहंकार सोचते होंय वो बात बेसिकली सच्ची नहीं हे.

कोई व्यक्ति अपने व्यवहारमें अधार्मिक हे. हर अधार्मिककु धार्मिक व्यक्ति अहंकारी लगतो होवे हे. हर धार्मिककु अधार्मिक अहंकारी लगतो होवे हे. पर हकीकतमें जब अपन् उनके साथ अच्छी तरहसु परिचय स्थापित करें तो पता चले के वो सिर्फ अधार्मिक हे, अहंकारी नहीं हे. ऐसे ही जो धार्मिक हे वो बिचारो धार्मिक हे अहंकारी नहीं हे. वो कुछ अपने धर्मको पालन कर रह्यो हे वाके लिये दूसरे सब लोग वाकु अहंकारी सोचते होंवे.

एक सामान्य उदाहरण दऊं. आज अपने यहांकी अपरस कॉमन् नहीं रेह गई. ऊंचेसु अपनेकु भोजन दे तो अपनेकु लगे बड़ो अहंकारी हे. अपन् क्या भेड़ हें! अरे भई! भेड़ नहीं पर अपरसकी बात हती. लोगनूकु बड़ो ऑफेन्डिंग लगे. क्यों लगे ऑफेन्डिंग? क्योंके वो बिचारो अपनो धर्म पाल रह्यो हे. अपनेकु तुरत अहंकारी लगे. तुम बड़े अहंकारी हो. भई! अहंकारी नहीं हें हम, पर सामनेवालेकु ऐसो ही लगेगो. दैन्य क्या हे और अहंकार क्या हे! ये इतनो सिम्पल प्रश्न नहीं हे के अपन् अपने अहंकारके आधारपे दूसरो

अहंकारी हे, ये झटसु डिसीजन् ले लें. पर वो डिसीजन् लियो भी होयगो तो वो वेलिड नहीं होयगो.

याही तरहसु कोई धीरजवालो होवे हे पुरुष. अब कई धीरजवाले पुरुष होवें हें स्त्री होवें हें, उनमें धैर्य इतनो होवे हे के उनको धैर्य दूसरेनूकु अहंकार लगतो होवे हे. दरअसल वो अहंकार नहीं होवे हे, धैर्य एक अलग गुण हे जो न सौम्य हे न असौम्य हे. जैसे सामान्य बात कहूं. कोईमें तकलीफ पावेकी धीरज हे. कोईकु मनमें ये फांका होय, के हमारे पास आनो चहिये हतो तो हमारे पास तकलीफमें क्यों नहीं आयो! अब वो नहीं जावे मददके लिये वाकु धीरज हे, दूसरे सब वाकु क्या समझेंगे? अहंकारी हे. हमारे पास क्यों नहीं आयो? अरे भई तुमकु अहंकार हे के तुम्हारे पास आनो चहिये. जरूरी हे के तुम्हारे पास आनो चहिये! कोइ नहीं आवे तुम्हारे पास. कोईकु धीरज हे या लिये कोईके पास नहीं जा रह्यो हे. मेरे बारेमें कई बालकें कहें हें के मैं अहंकारी हूं. क्यों? या लिये अहंकारी हूं बहोत मजेदार बात बतावें. ठाकुरजीकी भेंट लेके जो वैष्णव आवे, मैं वो ठाकुरजीकी भेंट नहीं लउ या लिये अहंकारी हूं! अब या अहंकारको कैसे सोल्युशन् लानो!! अब मैं कोईकु ऐसे तो नहीं कहूं के मैं क्या कहूं के **''ठाकुरजीकी भेंट न लेनी चहिये और न देनी चहिये.''** अब यामें अहंकार प्रकट भयो के धीरज प्रकट भई मेरी? पर जिन बालकनूकु ठाकुरजीकी भेंट लेनी हे, वाकी कैसेट हे मेरे पास, वामें स्पष्ट वो यों कहें के ''अहंकार हे.'' वामें एक मजेदार शगूफा और छोड़यो हे जो ''ये तो पता कब चले के श्यामुबावाको नौकर, वैष्णवकु जो श्यामुबावाकु भेंट धरनी होय, वो खुदके चरणपे धरा ले और श्यामुबावाकु नहीं दे तो तब श्यामुबावाकु पता चलेगी! ऐसे ठाकुरजी सोचते होंयगे के ठाकुरजीके लिये कितनो बिचारो भेंट लायो और श्यामुबावा ना पाड़ दें और खुदके चरणपे धरावें, कितनो अहंकार!!'' या अहंकार

मानवेको क्या सौल्युशन्? बहोत मुश्किल हे. सीधीसी बात यामें समझवेकी हे के ठाकुरजीकी भेंट मैं नहीं लऊं. समझो के मेरो नोकर ऐसो काम करे के मेरी भेंट लेतो नहीं होय और यों केहतो होय के श्यामुबावाकी भेंट श्यामुबावाको भेंट धरो, मोकु मत धरो. पर मोकु कोई दक्षिणा देनी होय तो दो. तो मोकु कभी गुस्सा नहीं आयेगो. मेरे ठाकुरजीकु भी गुस्सा काहेकु आयेगो! पर आदमीकु अहंकार लगे.

अभी मैने एक बड़ो मजेदार किस्सा पढ़यो. ऑफिसमें ये बड़े ऑफिसर होवें ना, उनकी कॉरस्पॉन्डेन्स् आवे तो वो खुद लिफाफा नहीं फाड़ें, उनके नीचेके सेक्रेटरी फाड़ें. और वो लेटर उन तक पहोंचानो होय तो फिर लिफाफा फाड़के लेटर संबधित् अधिकारीकु पहोंचायो जाय. ऐसे कह्यो जाय हे. कोई बड़े ऑफिसरको लेटर आयो, वाके नीचेके क्लर्कने फाड़के देख्यो और अपनी मार्किंग करी के ये लेटर फलाने ऑफिसरकु पहोंचानो हे. वा ऑफिसरने वो लेटर पाछे भेज्यो के या लेटरपे तुम्हारे इनिशियल्की जरूरत नहीं हती. वा इनिशियल्कु इरेज् करो और साईन् करो के तुमने इरेज् करी. अब कहां जानो बोलो!! वा इनिशियल्कु इरेज करो और साईन करो के तुमने इरेज करी. अरे भई साईन तो वोहीके वोही हें! तुमने साईन क्यों करी पेहले वाकु इरेज् करो, इरेज् करके साईन करो के तुमने इरेज् करी हे. वाके बाद लेटरकु भिजवाओ. क्योंके ये लेटर मेरो हतो तुमने फाड़यो क्यों? फाड़यो या नहीं फाड़यो पर दूसरी बार भी तो साईन ही हो रही हे ना! ऐसे अपने बहोत सारे पेहलेके इनिशियल् अहंकार वो स्वस्थ होवें पर दूसरो अपन् जब करवेकु कहें तो वो ज्यादा अस्वस्थ हो जातो होवे हे. वो अपनी कुछ न कुछ बीमारीको संकेत दे रह्यो हे. वा अहंकारकु इरेज् करो पेहले और फिरसु एक और अहंकार करो. भई जा अहंकारसु जा अहंकारकु इरेज् करनो हे वो अहंकार भी तो पाछो

आयेगो वा लेटरपे साईन् तरीके इरेज्के बाद भी. फायदा क्या भयो? पेहलो क्या खोटो हतो. प्रथम अहंकार क्या खोटो हतो के एक दूसरो अहंकार पैदा करवानो? च्युंकि ऑफिसरकु अहंकार हे करके वाकु क्लर्क अहंकारी लगेगो के वाने मेरो लेटर क्यों खोल लियो?

अब कोई नास्तिक हे, कोई आस्तिक हे. हर नास्तिककु हर आस्तिक अहंकारी लगे. हर आस्तिककु हर नास्तिक अहंकारी लगे. जरूरी नहीं हे के वाकु अहंकार होय. आस्तिक माने के तुम्हारी ऐसी बुद्धि हे के ये हे. ''अस्ति इति बुद्धिः यस्य स आस्तिक'', ''नास्ति इति बुद्धिः यस्य सः नास्तिक.'' वामें अहंकार अनहंकारको प्रश्न कहां आयो! यदि भगवान्कु बुरो लगतो होय ना, भगवान्के रिलेशन्में जो नास्तिक होय और भगवान्कु बुरो लगतो होय तो चलो अपन् माफ करेंगे याकु के चलो ये भगवान्कु नहीं मान रह्यो हे, या लिये भगवान्कु बुरो लग रह्यो हे. अब भगवान्कु कोई नहीं मान रह्यो हे तो यामें तुमकु क्यों बुरो लग रह्यो हे! अब समझो के तुमकु बुरो लगतो होय के तुम्हारे भगवान्कु कोई नहीं मानतो होय, तो तुम जाके गधाके साथ भी झगड़ो. गधाकु जाके पूछो के ''केम भाई! 'परं ब्रह्मतु कृष्णोहि' ये तू माने छे के नथी मानतो?'' वो ''होंची... होंची...'' करेगो तुम कहोगे के ''जा तू नास्तिक छे!''. गधा कोई नास्तिक होवे!! गधा न नास्तिक होवे और न आस्तिक होवे. घोड़ाकु जाके पूछो 'केम'? तो घोड़ा ''हिंहिंहिंहिं'' करेगो. अब वो नास्तिक हे के आस्तिक पता ही नहीं चलेगो. कितने सारे प्राणी हें, वो आस्तिक हें के नास्तिक हें वाकी चिंता नहीं कर रहे हें, पकड़ो जापे तुमकु गुस्सा आ रह्यो हे, जाके सामने तुमकु अपनो अहंकार प्रकट करनो हे, वाकु पकड़के तुम पूछ रहे हो के ''बोल तुम नास्तिक हो के आस्तिक''? नास्तिक हे तो अहंकारी हे. अरे क्या लफड़ा हे! शान्तिसु जीवो ना यार! मनुष्यकु शान्तिसु जीनो पसन्द नहीं आवे. ये सारो कौनसो

अहंकार हे, ध्यानसु समझो साधित अहंकार हे ये, सिद्ध अहंकार नहीं हे ये. ये सारी रामायण मैं यालिये बता रह्यो हूं के अपन् अहंकारकी साधनायें कैसी कैसी करें हें, सिद्ध अहंकार एक नहीं स्वीकारके, साधित अहंकार कितने तरीकेके अपन् फॅलावें हें दुनियांमें, वोही के साईन् इरेज् करो और फिरसु एक नई साईन लाओ के मैने ये इरेज कियो हतो. ये सारे साधित अहंकार हें. रहस्य आयो ना समझमें!

ऐसे ही एक और बात देखो. कई लोगन् कु निरन्तर ऐसी भावना बनी रहे के सब सुखी हैं मैं ही दुःखी हूं. जब उनसुं बात करो ना! तो कहें के सब सुखी हैं पर मैं ही क्यों दुःखी हूं? अरे! कोई दुनियांमें ऐसो है ही नहीं जाकु दुःख नहीं होय. व्यर्थमें तुमने एक अहंकार पनपा लियो है के तुम दुःखी नहीं होने चईये वाके लिये तुमकु दुःख होतो रहे. यदि स्वस्थतासु सोचो तो ऐसो कोई भी आदमी नहीं होयगो के जाको कोई दुःख न होय. पर कई केरेक्टरवाईस् ऐसे होंवे के उनकु बैठे बिठाये येही समस्या सताती रहे के सब लोग सुखी पर मेरे दुःखको अन्त क्यों नहीं आवे है? अरे भई! तेरे दुःखको भी अन्त आयेगो पर तू तो अहंकारसे अपने दुःखकु बढ़ा रह्यो है. सब सुखी पर मैं क्यों दुःखी? अरे भई! तू दुःखी है ये कौनने कह्यो? पर समझमें नहीं आवे. तो कोई लोग या तरहसु खुद दुःखके अभिमानी होवें हैं. कोई पाछे डोढ़ा ऐसे होवें हैं के आप दुःखी नहीं हों ना! तो भी बैठे बैठे ऐसे सोचें के इतनी भारी मरजाद पालनी, कितनी बार नहानो, सुबहसे उठके सेवा करनी, ठाकुरजीकु सखड़ी भोग धरनो, बहोत दुःख है हों! सेवा अपन करे और बड़ो दुःख हो जाये पाछे उनकु. उनकु कुछ लेनो देनो नहीं पर दुःखी होनो! तुम्हारेकु क्या पंचायत है या बातकी के कोई तीन बखत न्हावे है के चार बखत न्हावे है, के सुबहसु ही उठके सेवामें चल्यो जावे. कोइ

सेवामें सुबहसु चल्यो जाय तो वाको दुःख उनकु हो जाये के सुबहसु उठके सेवामें लग जावे है. वैसे कोई सुबह सुबह ही छापा पढ़वे लग जाये, हर पत्नीकु दुःख होवे. हर पत्नीकु दुःख होवे है के सुबह उठके मोसुं नहीं बोलें पर छापा पढ़वे बैठ जाये. गांवकी पंचायत बांचे हैं. याको मोकु महान् दुःख है. अब या दुःखको इलाज कहांसु करनो! या दुःखाभिमानको कोई इलाज ही नहीं है. अब वो छापा बांचतो होय और वामें कुछ और ध्यान नहीं देतो होय तो वो बड़ो मजेदार गीत आयो है ना **''पायल खनकेगी, चूड़ी खनकेगी तेरी नींद उड़े तो उड़ जाये.''** अब वो छापा नहीं छोड़तो होय तो पायल बजाओ, चूड़ी खनकाओ के भई ध्यान तो दे! पर छापामें ध्यान है और पत्नीपे ध्यान नहीं दे रह्यो है तो बड़ी दुःखी है. बहुत दुःख है, ध्यानही नहीं देवे है. या दुःखको इलाज कैसे हो सके है? देखो ये सब कैसो अहंकारको प्ले है के बैठे बिठाये अपने अहंकारके कारण कितनी वेरायटी अपन् पैदा करे हैं अपनी पर्सनालिटीमें. ये सारे वाके सिम्प्टम् हैं.

ऐसे बैठे बिठाये कोईकु खुदके लिये सुखाभिमान हो जाये. कोईकु दूसरेके लिये सुखाभिमान हो जाये. कोई अपनी कीर्ति बढ़ावेमें लग जाये. कोई दूसरेकी कीर्तिकी चापलूसी करनेमें लग जाये. या तरहसु अपनी जो पर्सनालिटी है, या पर्सनालिटीके जो सारे फेसेट्स् हैं, इन फेसेट्में अपन् सारी टोटल् चीज इक्ट्ठी होवे, जामें आकृति भी असौम्य है, चेष्टा भी असौम्य है, वाणी भी असौम्य है, व्यवहार भी असौम्य है, विचार भी असौम्य है, भाव भी असौम्य है, तो तो कुछ अपन् अहंकारको एप्रोक्सीमेटली प्रेडिक्शन् कर सकें, बाकी इतनी सब वेरायटी जहां होंय वामें अचानक आप अहंकारको आरोप लगा दो, या अचानक कोईकु दीनताको आरोप लगा दो, तो वो अपन् पर्सनालिटी ही समझ सकें कोईकी पर अहंकार नहीं समझ सकें. अपनो अहंकार इतनो सिन्ग्युलर एक्सक्ल्युसिव् फिनोमिना है.

एक भुवनशोम पिक्चर आई थी. उत्पल दत्त वामें भेंसको शिकार करवे जाये. अब वो शिकार करवे जाये और जैसेही भेंसके ऊपर बन्दूक ताने, तो भेंस तो बिचारी भेंस ही है ना! वाकु समझमें नहीं आवे तो वाहीकी तरफ दौड़े, तो वो बन्दूक फैंकके भागे. अब वो जंगलमें जितनो दौड़े, भैंस वाके पीछे दौड़े. अब वो थरथर कांपवे लग जाये. अन्तमें जा लड़कीकी भेंस हती वो भेंसकु बुलाके वाके ऊपर बैठके चली जाये. तो उत्पल दत्तने कही "अच्छा इस भेंसके ऊपर बैठा भी जा सकता है!" और वो बन्दूक लेके शिकार करवे गयो. यामें क्या है के भेंसके चेहराको भाव ऐसो के नथुना तनते हैं, भवें तनती हैं खंजर हाथमें है. तनके बैठे हैं तो बन्दूक हाथमें होते भये भी वो छूट जाये. भेंसकी आकृति असौम्य है. भेंस बिचारी असौम्य नहीं हती. या तरहसु बहोतन्की आकृति असौम्य होवे और अपन् बैठे बैठे प्रेडिक्शन् कर लें के बहोत अहंकारी है. भैंस गरीबकु अहंकार होवे ही नहीं. पर आकृति वाकी अपन्कु ऐसी दीखे के वो बहोत अहंकारी है. ये सारी जो वेरायटी हैं, अपने पर्सनालिटीकी कितनी ज्यादा पोसिबिलिटीस् हैं और उनमें कितनी ज्यादा दैन्य और अहंकार की वेरायटी पोसिबल हैं, उन सबकु देखें तो अपन्कु पता चले के "**सहस्रशिरसं देवम् यम् अनन्तम् प्रचक्षते.**" ये अहंकारको स्वरूप बराबर है के नहीं?

(अहंके क्रिया करण और कार्य सभीके सामने प्रकट हैं)

ये मैंने आपकु क्यों समझायो? वाको कारण अब मैं बता रह्यो हूं. क्योंके इतने सारे मल्टीपल् फेक्टर्स् जहां हैं, उतने मल्टीपल् फेक्टरमें सडनली आप कोई कन्क्ल्युजन्पे जम्प् मत करो के कोई अहंकारी है. अपने अहंकारकु गाँवके पर्सनालिटीकु मापवेको फुटपट्टी मत मानो. आपको अहंकार आपको एक्सक्ल्युसिवली आप ही फील कर सको हो. दूसरेकी पर्सनालिटी आप देख सको, जज् कर सको हो, वामें क्या सौम्य है, क्या असौम्य है, वोभी आप देख सको हो, अनुभव

कर सको हो.

अब मैं समझूं के तोकु ख्याल आनो चईये के, ये अपन् शतप्रतिशत केह नहीं सकें के अहंकार है के नहीं. इतनी कोम्प्लेक्सिटी है पर्सनालिटीकी सिच्युएशन्में. अपन् केह नहीं सकें के सचमुचमें अहंकार है के नहीं. क्योंके एक सिम्पल फोरमूला होतो ना पर्सनालिटीको तो तो अपन् खटसु केह देते के ये व्यक्ति अहंकारी है. पर इतने सारे पर्सनालिटीके कोम्प्लिकेशन् यामें हैं, वामेंसु अपन् कोई अहंकारी है के अहंकारी नहीं है, जा बखत अपन् व्यक्तिकु अहंकारी मान रहे हैं, मूलमें एक बात ध्यानसु समझो के अपन् खुद अहंकारी हैं. अपन् खुद अहंकारी हैं वो अहंकारी नहीं है. कोईकु जब अपन् अहंकारी मानवेकी धांधल कर रहे हैं, तो वामें अपनो खुदको अहंकार बोल रह्यो है. वापे अपनो जजमेन्ट शतप्रतिशत सच है, ये माननेको अपने पास कोई कारण नहीं है. या रहस्यकु अपनेकु अच्छी तरहसु समझनो चईये. कन्सिडरिंग द कोम्प्लेक्सिटी ऑफ द पर्सनालिटी. ये पर्सनालिटीके कोम्प्लेक्सिस् हैं. इन सारे कोम्प्लेक्सिस्कु जब अपन् समझें तो अपनेकु अपनो अहंकार भी थोड़ो शिथिल होतो दिखे. अपने भी या तरीकेके पर्सनालिटीके कोम्प्लेक्सिस्कु दूसरे लोग अहंकार तरीके डेफिनेटली इन्टरप्रेट कर सकते होंयगे. पर अपन् अहंकारी हैं के नहीं, वो दूसरेकु नहीं पता चलेगो. अपनो आत्माही अपनेकु बता सकेगो के अपन् अहंकारी हैं के नहीं? दूसरो आदमी कुछ एप्रोक्सिमेशन् कर सके, पर अहंकार एक्सक्ल्युसिवली इतनो सिन्युलर फिनोमिना है. या रहस्यकु समझो. और वो कौनसे अर्थमें एक्सक्ल्युसिवली सिन्युलर है? ये बात फिरसु मैं रिपीटेडली केहनो चाहूंगो के कर्ता, ज्ञाता और भोक्ता वालो अहंकार सिन्युलर है; क्रिया, करण और कार्य सिन्युलर नहीं हैं. क्रिया, करण और कार्य वो तो अपन् सबसु शेयर कर ही रहे हैं. वो शेयर कर रहे हैं करके अपन् वाको एप्रोक्सिमेशन् भी निकाल सकें हैं. शेयर नहीं करते होते तो

ऐप्रोक्सिमेशन् भी पोसिबल नहीं हतो.

जैसे एक बात बताऊं. जानवरनूके फोटो लेके आप देखो तो आपकु ये बात पता चलेगी के कई जानवरनूके चेहराके, आँखके, जबड़ाके भाव जो मनुष्यके साथ कोमन् हैं, तो उन भावनूकु देखके जानवरनूकु क्रोध आ रह्यो है के नहीं, डर लग रह्यो है के नहीं, वाको अंदाज अपन् थोडो कर सकें हैं. पर बहोत सारे जानवर ऐसे भी होवें के उनकु क्रोध आ रह्यो है के नहीं आ रह्यो है, उनके चेहराकु देखके, उनकी आकृतिकु देखके अपनेकु पता ही नहीं चल सके. सीधीसी एक बात बताऊं, एक मकोड़ा लो, एक चेंटी लो. वाके चेहरा देखो, वाकु तुम्हारेपे क्रोध आ रह्यो है के नहीं आ रह्यो है, मेग्नीफाईंग ग्लास् लेके देखो, पर पता नहीं चलेगो. क्योंके वाके चेहरामें वो फीचर वाके अपने कोमन् नहीं हैं, जो अपन् अपने फीचरसु कोईकु क्रोध आ रह्यो है ये समझ सकें. जैसे बन्दरकु क्रोध आतो होय ना तो वो किचकिचावे है. क्योंके अपन् बन्दरके साथ चेहराके फीचर शेयर करें हैं तो बन्दरकु गुस्सा आतो होय तो अपनेकु समझमें आवे के बन्दरकु गुस्सा आ रह्यो है. बन्दरकु डर लगतो होय तो अपन् समझ सकें हैं अपने पेरामीटरनूसु के बन्दर डर रह्यो है. कुत्तामें बहोत कुछ समझ सकें. बहोत सारे जानवर ऐसे हैं सूचीमुख के जिनके एक्स्प्रेशन् और अपने एक्स्प्रेशन् एक जैसे हैं ही नहीं. जैसे हिप्पोपोटेमस्कु गुस्सा आ रह्यो है के नहीं आ रह्यो है, वो ऐसो मुख बनावे के जामें पताही नहीं चले के गुस्सा है के क्या है? हिप्पोपोटेमस्को चेहरा देखो. चारों ओरसु थुलथुल चेहरा, अब वामें क्या गुस्सा और क्या प्रसन्नता. अपनेकु पताही नहीं चले के क्या हो रह्यो है वाकु. वाकु गुस्सा आतो होय तो गुस्सा जैसो नहीं लगे. प्रसन्न होतो होय तो प्रसन्न जैसो नहीं लगे. क्यों? क्योंके वाको चेहराको फीचर अपने फीचरके साथ कोई भी कोमनेलिटी नहीं धरावे. अब वामें अपन् व्यर्थ अहंकारकी

बात करें तो वो अपनो अहंकार है वाको नहीं.

बहोत सारे लोग सांपकु बड़ो गुस्सेल प्राणी समझें. पर वो तो बहोत डरपोक प्राणी है. वो तो बचवेके लिये आपकु काट खावे पर वाकु गुस्सा आतो ही नहीं होवे है. वाकु मनुष्यकु काटवेसु कुछ फायदा नहीं है. पर जब वाकी जानपे बीतती होय तो वाकु जो बचवेक लिये डिवाईस् मिली है वासुं काटो और बचो कोई तरहसु. अब अपनेकु काटे है सांप या लिये अपन् समझें के सांप बड़ो गुस्सेल प्राणी है. सांपकु गुस्सा नहीं आवे. वाके फीचरकु देखके पताभी नहीं चल सके के वामें गुस्सा है के नहीं है? जैसे वो सांपके बारेमें सच बात है, ऐसे ही मनुष्य समुदायमें कोई जंगली ट्राईब्को आदमी आ जाये, तो वाकु देखके अपनेकु बड़ो भय लगेगो के बड़ो भयावनो है, क्योंके अपनूने वाको चेहरा देख्यो नहीं है करके अपनूकु डर लगे. दरअसल वो जंगली चेहरा अपनूने देख्यो नहीं करके वामें अपनेकु भयावनो लगे पर जंगली आदमी अपनेसु ज्यादा सीधो हो सके है. अपन् ज्यादा कुटिल होंयगे, वो ज्यादा सिम्पल् होयगो, वो ज्यादा सीधो सादो भोलो होयगो. या तरीकेके अपने अहंकारनूकु अपन् आउटलेट् देते रहें हैं, पर वो अहंकार अपन् कोईसु शेयर नहीं करें हैं. या रहस्यकु अपनूकु समझनो चईये. अपन् जो शेयर कर रहें हैं वो अहंकी क्रिया, करण और कार्य हैं पर कर्ता, ज्ञाता और भोक्ता अपन् कोईसु शेयर नहीं करें हैं. या रहस्यकु यदि आप अच्छी तरहसु समझ गये हो तो अपन् आगे बढ़ें.

ये सारी प्रोब्लम सिद्ध अहंकारकी नहीं हैं. फिरसु मैं रिपीट कर रह्यो हूं. अपनूके साधित अहंकार या तरीकेके हैं, साधित अहंकारकु सिद्ध अहंकारसु अपनेकु डिस्टिंग्युश् करनो चईये. अब सिद्ध अहंकार क्या है वो अपन् महाप्रभुजीकी वाणीसुं देखेंगे तब पता चलेगो.

००००००

(नलकूबरमणिग्रीवस्तुति)

कृष्ण! कृष्ण! महायोगिन्! त्वम् आद्यः पुरुषः परः॥
व्यक्ताव्यक्तम् इदं विश्वं रूपं ते ब्रह्मणो विदुः॥१॥
त्वम् एकः सर्वभूतानां देहास्वात्मेन्द्रियेश्वरः॥
त्वमेव कालो भगवान् विष्णुर् अव्ययः ईश्वरः॥२॥
त्वं महान् प्रकृतिः सूक्ष्मा रजःसत्त्वतमोमयी॥
त्वमेव पुरुषो अध्यक्षः सर्वक्षेत्रविकारवित्॥३॥
गृह्यमाणैस् त्वम् अग्राह्यो विकारैः प्राकृतैर् गुणैः॥
कोनु इह अर्हति विज्ञातुं प्राक् सिद्धं गुणसंवृतः॥४॥
तस्मै तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे॥
आत्मद्योतैर् गुणैः छन्नमहिम्ने ब्रह्मणे नमः॥५॥
यस्य अवतारा ज्ञायन्ते शरीरेषु अशरीरिणः॥
तैस् तैर् अतुल्यातिशयैर् वीर्यैर् देहिषु असंगतैः॥६॥
स भवान् सर्वलोकस्य भवाय विभवाय च॥
अवतीर्णो अंशभागेन साम्प्रतं पतिर् आशिषाम्॥७॥
नमः परमकल्याण! नमस्ते विश्वमंगल!॥
वासुदेवाय शान्ताय यदूनां पतये नमः॥८॥
अनुजानीहि नौ भूमन् तव अनुचरकिंकरौ॥
दर्शनं नौ भगवत ऋषेर् आसीद् अनुग्रहात्॥९॥
वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां
हस्तौ च कर्मसु मनस् तव पादयोः नः॥
स्मृत्यां शिरः तव निवासजगत् प्रणामे
दृष्टिः सतां दर्शने अस्तु भवत्तनूनाम्॥१०॥
(भाग.पुरा.१०।१०।२९-३८)

(दशमसुबोधिनीसु सिद्ध अहंकारकी समझ)

दशमस्कंधमें महाप्रभुजीने जा बखत ठाकुरजीने उलूखलसु जाके नलकूबर वृक्षकु तोड़यो और वामेंसु श्रीमदान्ध अहंकारी जो नलकूबर हते, जिनकु नारदजी अहंकारी समझे थे और शाप दियो हतो के तुम वृक्ष हो जाओ, अहंकारी हो या लिये और उनको प्रभुने उद्धार कियो. वो भगवान्की स्तुति कैसी कर रहे हैं. बहोत मीठी स्तुति है. या स्तुतिकु सुबोधिनीके साथ याद कर लो ना! तो सारो सिद्धान्त आपकु नटशेलमें समझमें आ जायेगो. ऐसी फेन्टास्टिक् स्तुति है ये. नलकूबर प्रार्थना करते हुवे केह रहें हैं

कृष्ण! कृष्ण! महायोगिन्! त्वम् आद्यः पुरुषः परः॥
व्यक्ताव्यक्तम् इदं विश्वं रूपं ते ब्रह्मणो विदुः॥

नलकूबर केह रहे हैं "हे कृष्ण तू महायोगी है. तू आद्य पुरुष है. आद्य पुरुष मने प्रकृति पुरुष वालो पुरुष नहीं, अक्षरमें बिराज्यो भयो पुरुष तू पुरुषोत्तम है. और या जगत्में जो कुछ व्यक्त है और जो कुछ अव्यक्त है, वो सब तेरो रूप है." अब ध्यानसु देखो या रहस्यकु, मैं आपकु बता रह्यो हूं अपनो अहंकार अपने लिये व्यक्त है. दूसरेको अहंकार अव्यक्त है. नलकूबर क्या केह रह्यो है? जो कुछ व्यक्त होय या जो कुछ अव्यक्त होय, व्यक्त होय के अव्यक्त होय, जो कुछ यहां है वो तू है. ये अहंकारकी भाषा नहीं है हों. या भाषामें देखो अहंकार नहीं बोल रह्यो है, तत्त्वदर्शन बोल रह्यो है.

यामें महाप्रभुजी आज्ञा करें हैं के एक बखत सूत्रके रूपसुं **"एवं सर्वरूपत्वं भगवतो निरूप्य"**, (सुबो.१०।१०।३१). भगवान् सर्वरूप हैं ये बता दियो. व्यक्त होय के अव्यक्त होय डायकोटोमी कर दी. या तो कोई चीज व्यक्त है या अव्यक्त है. तीसरी चीज

तो कोई बचेगी नहीं ना! दुनियामें या तो कछु व्यक्त है या कछु अव्यक्त है. व्यक्त होय चाहे अव्यक्त होय जो होय सो सब भगवान् है. ये केहवेके बाद सर्वरूपता तो भगवान्की बताई. पर ये सर्वरूपताके बाद आधिदैविक प्रकारसुभी उनकी सर्वरूपता बता रहे हैं. आधिदैविक रूपसुं भगवान् कैसे सर्वरूप हैं? तो नलकूबर केह रहे हैं

त्वम् एकः सर्वभूतानां देहास्वात्मेन्द्रियेश्वरः॥
त्वमेव कालो भगवान् विष्णुर् अव्यय ईश्वरः॥

'त्वमेकः' तू एक है. **'सर्वभूतानां'** जितने भी भूत हैं, प्राणी हैं, उनको देह तू है, उनकी आत्मा तू है, उनकी इन्द्रिय तू है, उनको अन्तर्यामी तू है. क्रिया कैसे अवेलेबल् है? अहंकारकी क्रिया, करण कैसे अवेलेबल् है ऑलपरवेजिव् है, देखो बात यहांसु स्पष्ट हो रही है. जो भी प्राणी हैं, उनको देह तू है, उनकी आत्मा तू है, उनकी इन्द्रिय तू है, देह, इन्द्रिय और आत्मा को नियामक ईश्वर अन्तर्यामी भी तू है. **''त्वमेव कालो''** तू जो है, ये जो देह, आत्मा, इन्द्रिय और अन्तर्यामी जा कालके अन्दर फन्क्शन् कर रहे हैं वो काल भी तू है. ऑल परवेसिवनेस् देखो, के जो कुछ है अवेलेबल् है वाको अपन् एडवान्टेज् ले रहे हैं, वा रहस्यकु समझो सुबोधिनीसु. **''त्वमेव कालो भगवान् विष्णुः अव्यय ईश्वरः''**. काल है तो काल तो मोनोडायमेन्शनल् है. पास्ट सुं फ्युचर तक जा रह्यो है. मोनोडायमेन्शनल् होवेके कारण वो तो व्ययशील है. जो काल बीत गयो वो तो बीत गयो, वो तो आयगो नहीं मोनोडायमेन्शनल् होवेके कारण, तो केह रहे हैं के तू काल होनेके बाबजूद भी अव्यय और है. कालमें जो बीत रह्यो है वासुं तू बीत नहीं जावे है. कालमें कोई चीज खर्चा जाये, व्यय मतलब जाको खर्च हो गयो, तो तू काल है और वा कालमें तू अव्यय भी तू है. मने काल खर्चा जाये पर तू खर्चा जावे नहीं है. तू ऐसो अव्यय

है. ऐसो ईश्वर है तू कालको भी.

वाके बाद नलकूबर केह रहे हैं. बहोत सुन्दर सुबोधिनी है. वामें कहें हैं **''कालो यज्ञरूपो वा पालको वा सत्त्वात्मकः, तस्य भिन्नत्वे भगवतः तदधीनत्वं स्यात्, अव्ययो अक्षरमपि त्वमेव, अन्यथा भगवतः समवायित्वं न स्यात्''** यदि अव्यय नहीं मानेंगे तो भगवान् याको समवायि नहीं रेह जायेगो. समवायिको मतलब समझो. घड़ा टूटे है, पर घड़ाके टूटवेसु मट्टी टूटे? मट्टी नहीं टूटे है, तो मट्टी अव्यय है और घड़ा कालमें पैदा भयो और कालमें खर्चा जावे. सो कालके फिनोमिनामें अव्यय तू है. यहां कालमें जो कुछ भी खर्चा जा रह्यो है, कौनसी चीजें खर्चा जा रही हैं, तेंने सवाल कियो थो ना स्वाभाविकको, तो देख देह कालमें खर्चा जाये, इन्द्रिय कालमें खर्चा जाये, आत्मा शायद कालमें नहीं खर्चावे, पर इन् ए वे जो महाकाल है, वामें आत्मा और ईश्वर भी खर्चा जाये. क्योंके महाकालके बखत अन्तर्यामी ईश्वर और जीवात्मा दोनों प्रभुमें लीन हो जायें. लीनको मतलब येही है के वो खर्चा जायें, वो एक्टिव नहीं रहे. तो वोभी कालमें खर्चा जायें ऐसे हैं. वो भले कालमें तेरे रूप खर्चा जाते होंय पर तेरो तत्त्व कालमें खर्च्यो जा सके ऐसो नहीं है. कालमें तेंने जो रूप लिये हैं व्ययशील रूप, खर्चा जावेवाले रूप, उन रूपनूमें अव्यय भी तू हे. मने सिर्फ घड़ा तू है ऐसो नहीं, साथ साथ मट्टी भी तू है. महाप्रभुजीको सारो सिद्धान्त, ये रट लोगे ना, तो सारो सिद्धान्त हृदयस्थ हो जायेगो, ये नलकूबरको ऐसो सिद्धान्त है. याकी सुबोधिनी फेन्टास्टिक् सुबोधिनी है.

महाप्रभुजी कहें हैं के या तरहसुं भगवान्की ब्राह्मिकी सर्वरूपता दिखाई, वाके बाद आधिदैविक सर्वरूपता दिखाई, अब आगे नलकूबर केह रहें हैं के आध्यात्मिक रूपसु भी भगवान् सर्वरूप हैं. आध्यात्मिक

रूपसु भगवान् सर्वरूप हैं वामें क्या केह रहे हैं नलकूबर :

त्वं महान् प्रकृतिः सूक्ष्मा रजःसत्त्वतमोमयी॥
त्वमेव पुरुषो अध्यक्षः सर्वक्षेत्रविकारवित्॥३१॥

तू महत् है. वो महत् जा प्रकृतिमेंसु पैदा भयो, वो प्रकृति तू है. वो प्रकृतिकी सूक्ष्मावस्था सत्-तम-रजो मयी है वो सत्त्व-रज-तम भी तू है, वा प्रकृतिकु इन्स्टीगेट् करवेवालो पुरुष भी तू है. या प्रकृतिमें जो भी कुछ विकार पैदा हो रहे हैं, उन विकारनूकी विटनेस् तू है. विकार कौन है के तू है. मने चोर भी तू है और साक्षी भी तू है.

वाके बाद बहोत अच्छो केह रहे हैं. या तरीकेको यदि ब्रह्म है वो तू कृष्ण है **''तत् प्रमाणं श्रुतिरेव न तु प्रत्यक्षमिति अलौकिकत्व सम्पादनार्थं भगवतः प्रत्यक्षग्राह्यत्वं निराकरोति''** (सुबो.१०।१०।३२) ऐसो विचित्र फिनोमिना बताओ प्रत्यक्षमें कैसे हो सके है? तो नलकूबर केह रहे हैं के नहीं नहीं! प्रत्यक्षसु तो ग्राह्य ही नहीं हैं. प्रत्यक्षसु ग्रहीत् कैसे होयगो! तो अब सवाल ये भयो के यदि प्रत्यक्षसु ग्राह्य नहीं है तो ऐसे फिनोमिनाको माननो के नहीं माननो? दीखे तो माने, नहीं दीखे तो कैसे माने! तो नलकूबर केह रहे हैं के देखवेके तुम्हारे उपकरण, देखवेकी क्रिया, और देखवेको रिजल्ट भी वो है. तुम तुम्हारे देखवेके उपकरणकु इन्कार करोगे क्या? तुम तुम्हारी देखवेकी क्रियाको इन्कार करोगे क्या? तुम तुम्हारे देखवेके रिजल्ट्कु इन्कार करोगे क्या? मने सेन्सेशन्, परसेप्शन्, कन्सेप्शन्, रेशनलाईजेशन्, देखवेके जो स्टेप्स् हैं उनकु तुम यदि इन्कार करते हो तो तुम ब्रह्मकु इन्कार कर सको. क्योंके वो तो ब्रह्म है. अब ये यदि तुमकु नहीं दीखतो होय, तो वोभी नहीं दीखेगो. यदि ये दीख रह्यो है तो ब्रह्मही तो दीख रह्यो है. तुम पूछ रहे हो के ब्रह्म कहां है? अरे येही तो ब्रह्म है, दूसरो कहांसु ब्रह्म होयगो.

ये खुद ब्रह्मही तो है. जा प्रत्यक्षकी तुम सौगन्ध खाके केह रहे हो के प्रत्यक्षसु दिखाओ तो हम ब्रह्म माने तो प्रत्यक्षके सारे कोम्पोनेन्ट फेक्टर ब्रह्म हैं. जब सारे फेक्टर ब्रह्म हैं तो वामें दीखवे और नहीं दीखवेको प्रश्न कहांसु होयगो! पर वाकी खूबसूरती ये है के उन सारे फेक्टरस्में ही जो तुम्हारे प्रत्यक्षकु घड़ रहे हैं, उन घड़े भये फेक्टरस्में ही वो छुप्यो भयो है.

मैंने आपकु गुरुजीकी बात बताई थी ना! गोरखनाथजीकी. उनने हीरा लेके अपने शिष्यके झोलामें डाल दियो. गुरुजीकु हीरा भेंट आयो. एक आदमी वा हीराकु पचावेके लिये चेला बन गयो. गुरुजी समझ गये के याकी नियत बिगड़ी. वाने कही ''आपकी सेवा करवेके लिये आपके साथ चलूं?'' तो वाने कही 'चल'. अब वो दो, चार, छे, मुकाम तक चल्यो. गुरुजी नहाते भी जाते, छीवे भी जाते, पर हीरा पता नहीं चल्यो कहां है? अन्तमें वाने हिम्मत तोड़ दी और वाने गुरुजीके सामने शरणागति लेके कही ''अब मैं हार्‍यो. आप भले मोकु हीरा मत दो पर आपने हीरा छुपायो कहां है? जो मेरे सामने आपकु भेंट आयो.'' तो वाने कही ''तेरी झोलीमें छुपायो. क्योंके मोकु पता हतो के तेरी वृत्ति चोरकी है सो तू मेरी झोलीमें खोजेगो. तू अपनी झोलीमें खोजेगो नहीं, क्योंके दरिद्र है या लिये. तो मैंने तेरी झोलीमें छुपा रख्यो थो. अब तू हर बखत मेरी झोलीमें खोजतो थो तो हीरा मिलेगो कहांसु?'' तो वो हीरा तो अपनी झोलीमें छुप्यो भयो है. खोज रहे हैं अपन् दूसरेकी झोलीमें के कहां गयो हीरा, कहां गयो हीरा!! मिलेगो कहांसु! जो प्रत्यक्षकी अपनी झोली है, वामेंही तो वो हीरा छुप्यो भयो है. अब तुम ढूंढ रहे हो के कहां गयो ब्रह्म? प्रत्यक्षमें तो ब्रह्म दिखलाई नहीं दे रह्यो है ! ईश्वर कहां गयो? भगवान् कहां गयो? अरे तेरी झोलीमें ही तो छुपाके रख्यो थो, तो अलगमें कहांसु दिखाई देगो? दूसरेकी झोलीमें होय तो दीखे ना! मैंने तो तेरी झोलीमें

छुपायो है. ऐसे ब्रह्मने अपनी सारी ब्राह्मिकता अपने प्रत्यक्षकी झोलीमें छुपाके रखी है. अपन् अब केह रहे हैं के प्रत्यक्षमें तो कहीं ब्रह्म दिखलाई दे नहीं रह्यो है. नहीं दिखलाई देगो, स्वाभाविक बात है. तेरी झोलीमें छुप्यो है तो दिखलाई कहांसु देगो?

गृह्यमाणैः त्वम् अग्राह्यो विकारैः प्राकृतैर् गुणैः॥
कोनु इह अर्हति विज्ञातुं प्राक् सिद्धं गुणसंवृतः॥३२॥

जो भी कुछ प्रकृतिके गुण विकार रूप गृहीत हो रहे हैं, उनमें तू ग्रहीत हो नहीं रह्यो है. तो तेरेकु हम कैसे पेहचाने? तू गुणनूके पेहले प्रकट भयो थो, देखवेकी रेन्ज् तो गुणनूकी है. जो भी कुछ दीखेगो, पर दीखेगो कहांसु? आंखसु, कानसु, नाकसु, वो सब प्रकृतिसु पैदा भये हैं. उन प्रकृतिके पेहलेही तू छुप्यो भयो है. प्रकृतिको मुखौटा पेहरके तू बन्यो है तो वामें अब दीखेगो कहांसु? अपन् याकु कैसे समझ सकें हैं? सीधीसी बात समझो के 'घी'में आप दूध खोजवे जाओगे तो वो दीखेगो कहांसु! दूध जो खुद घी बन गयो, वा घीमें दूध दीखेगो कहांसु? वो तो घी ही दीखेगो ना! अपन् कहें के दूध दीख नहीं रह्यो है तो वाको कारण ये के दूध खुद घी बन्यो है. घी दीख रह्यो है के नहीं? घी दीखवेसु तुमकु विश्वास नहीं होतो होय, तो दूधभी दीख जायेगो तो तुमकु विश्वास नहीं होयगो के दूध और घी एक चीज है. क्योंके तुम्हारे दिमागमें दूध और घीको द्वैत भर गयो है. दूध एक अलग फिनोमिना है और घी एक अलग फिनोमिना है. जो या रहस्यकु समझ रह्यो है के दूध ही घी बन गयो है वाको तो दूधमें घी और घीमें दूध समझमें आयेगो बाकी तो समझमें नहीं आयेगो. जो गृहणीयमान् हैं वामें तू अग्राह्य है.

तस्मै तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे॥
आत्मद्यौतैर् गुणैश्छन्नमहिम्ने ब्रह्मणे नमः॥३३॥

ऐसे वासुदेव तोकु नमस्कार. तेरे कारण जो गुण प्रकट भये हैं, उन गुणनूमें तू छुप्यो भयो है. अब यामें महाप्रभुजी शंका कर रहे हैं **''तर्हि कथम् अवताराद् बहिः प्रकाशरूपो भगवान् भवतीति?''** तो अवतारमें क्यों दीखे है? अवतारमेंभी नहीं दीखनो चईये यदि ये नियम होय तो. तो वाके लिये कहें हैं के अवतारमें तो या लिये दीखे है के अपनी देखवेकी जो मेकेन्जिम् हैं, जो फेसेलिटी अपनेकु अवेलेबल है, वा फेसेलिटीमें वो खुद एन्टर होवे है. या लिये अवतारमें दीखे है. बाकी वो खुद एन्टर नहीं होवे, प्रकट नहीं होवे तो अवतारमें भी नहीं दीख सके. अवतारमें दीख रह्यो है तो अब भी दीखनो चईये ब्रह्म, ऐसी अपेक्षा तुम मत रखो. वा ब्रह्मके लिये वो कहें हैं के-

वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां
हस्तो च कर्मसु मनस्तव पादयोर् नर्नः॥
स्मृत्यां शिरस्तव निवासजगत्
प्रणामे दृष्टिः सतां दर्शने अस्तु भवत्तनूनाम्॥

हमारी वाणी या लिये तेरे गुण गावे, हमारे श्रवण वो तेरी कथा सुनें, मन तेरे चरणारविन्दोंमें लगे, हमारो माथा तेरे चरणारविन्दनूमें झुके, तेरे प्रणाममें हमारी दृष्टि जाये और जो जो रूप धारण करके तु प्रकट भयो है उनकु हम नमस्कार कर रहे हैं.

(कृष्णके सर्वात्मकताकी समझ, दीनताकी भावना, और स्वस्थभक्तिमय व्यवहार)

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना. अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्. सबसु बड़ो रहस्य यामें समझवेको ये है के सर्वात्मक कृष्णकी सर्वात्मकता ये है वाके सामने अपनेकु दीनभावना रखनी चईये. दीनभावनाको मतलब अपनेकु दा.दा. लिखनो, अपनेकु

प.भ. लिखनो, पू.पा. लिखनो नहीं है. दीनभावनाको सीधो सीधो मतलब समझो. संस्कृतमें 'दीन' शब्द बड़ो अच्छो शब्द है. सिक्काकी तरह अपन् वाकु वापरें हैं. ९९.९९% मैं प्रेडिक्शन् कर सकूं के मुश्किलसु कोईकु पता होयगी के दीनको मतलब क्या? अपन् यों समझें के झुकवेको मतलब जो दीन होय वो दरिद्र होय पर दरिद्र होय तो वाको दीन होनो जरूरी नहीं है. दीनको मतलब समझो. संस्कृतमें 'दीन' को मतलब क्या है? 'दीन' मने जाके पास ये मेरो है ऐसे केहवेकु कोई भी चीज नहीं है. 'निस्व:' कु दीन कह्यो जाय. 'स्व:' मने ये मेरो है. ऐसो केहनो जाके पास कुछ भी नहीं होय वाको नाम 'दीन' है. अब वो एक्च्युअली नहीं होय के टेम्परामेन्टली नहीं होय, केन् बी आईदर वे. एक्च्युअली नहीं होय वो भी निस्व: है, निस्व: होवेके कारण दीन है. एक्च्युअली होय पर टेम्परामेन्टली नहीं होय मने वाको टेम्परामेन्ट ही ऐसो होय के वाकु नहीं लग रह्यो है के ये मेरो है. जब वाकु ऐसो नहीं लग रह्यो है के मेरो है, तो वो निस्व: हो गयो. निस्व: होवेको मतलब दीन है. अब या जन्क्चरपे अपनूकु समझमें आयेगी के **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना.** कृष्ण सर्वात्मक है. सब कछु कृष्ण है तो तुम्हारे पास तुम्हारो केहवेकु क्या है यहां? कुछभी नहीं है. जब सब कछु कृष्ण है, तो तुम्हारो यहां क्या है? कुछभी नहीं है. या अर्थमें तुम दीनता प्रकट करो. मने वा फेक्टूकु स्वीकारो, वा रहस्यकु स्वीकारो, के तुम्हारो जो भी कुछ व्यक्तित्व है, वा व्यक्तित्वके जो भी कुछ कोम्पोनेन्ट फेक्टर होंय, अच्छे बुरे, आसुरी दैवी, पुष्टि या मर्यादा के, पशुके मनुष्यके, जीवके जड़के, कोई भी जो फेक्टर हैं वो तुम्हारे नहीं हैं, वा अर्थमें तुम दीन हो. दीन हो, हो ही दीन, निस्व: ही हो, वाकी भावना करो. अपनेकु या तरीकेको ऑटोसजेशन् दो के "सब कछु कृष्ण है. मैं खुद कृष्णको हूं." कृष्ण यदि सर्वात्मक है तो मेरो देहभी कृष्णात्मक है, मेरी इन्द्रियभी कृष्णात्मक है, मेरी आत्माभी कृष्णात्मक है, मैं कुछ काम

करूंगो वो क्रियाभी कृष्णात्मक है, वा कामकु करवेको करणभी कृष्णात्मक है. वा करणके कारण पैदा होतो कार्यभी कृष्णात्मक है. भले मैं कृष्णात्मक होऊंके नहीं होऊं पर मेरो ज्ञातृत्वभी तो अंतमें घड़यो तो कृष्णनेही है ना! या स्थितिमें मेरे पास मेरो स्व: क्या है? कुछ स्व: मेरो मेरे पास नहीं है. यदि तुमकु ये समझमें आती हो निस्व:ता तो तुमकु ज्ञान हे; समझमें नहीं आती हो ये निस्व:ता तो याकी भावना करो. ऐसे नहीं समझमें आती होय तो कमसु कम भावना तो करो. क्योंके अपन् जान लेंगे या रहस्यकु पर समझमें तो नहीं आयेगो ना! क्योंके वो पाछे अहंकार बोलेगो. वो अहंकार बोल्यो अपने भीतर "**गृहयमाणैः त्वम् अग्राह्यो**" वो अहंकार गृहीत नहीं हो रह्यो है, पर अहंकारही गृहीत हो रह्यो है. बात समझमें आई ना!

मोकु बहोत प्रिय एक शेर है सूफीनूको, वो है "**चश्मेजुज़ रंगेगुलो लालाओ बीनद वर्ना. आंचे दर परदये रंगस्त पदीदार तरस्त**". आँख फूलनूके रंग बिरंगे रंगनूकु देखवेके लिये आदी हो गई है करके फूलनूके रंग बिरंग रंगनूके अलावा अपन् और कुछ देख ही नहीं पा रहे हैं. इन रंग बिरंगे रंगनूमें जाको रंग प्रकट हो रह्यो है, वो कितनो प्रकट हो रह्यो है वो तो अपन् सोच ही नहीं पा रहें हैं ना! करके फूलनूके रंग देखवेमें अपनी आँख वामें उलझ जाये है, पर इन रंगनूमें जाको रंग प्रकट हो रह्यो है, वो रंग अपन् जानें, तो अपनेकु ये रंग सच्चे समझमें आयेंगे. या लिये गालिबने भी या बारेमें बहोत अच्छो एक शेर कह्यो है जो मोकु बहोत पसन्द है. वो कहे है "**सब कहां कुछ लालाओ गुलमें नुमाया हो गई. खाकमें क्या सूरतें होंगी जो पिन्हा हो गईं.**" ये फूलनूमें जो थोड़े रंग प्रकट भये हैं, वो तो बहोत थोड़े रंग प्रकट भये हैं. पर मट्टीके भीतर न जाने कितने रंग भरे होंयगे के जो फूलनूके भीतर प्रकट भये. अब अपनूकु क्या पता चले के मट्टीमें

कौन कौनसे रंग नहीं हैं? खाकमें पिन्हा हैं वो सब, छुपे भये हैं मट्टीमें सब कहां कुछ रंग मट्टीके फूलनमें प्रकट भये हैं. तो अपनेकु ये सारी बात समझमें आयेगी के **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना.** कृष्ण सर्वात्मक है वाके कारण वहां सबसु पेहले तो दीनता होनी ही चईये. समझ जाओ तो दीनता होनी ही चईये. पर नहीं होती होय कोई कारणसु, क्योंके वो अहंकार भी पाछो वाने पैदा कियो है, तो ठीक है पर वा अहंकारमें तुमकु ये फेसिलिटी तो प्रोवाईडेड है के तुम चाहो तो तुम दीनभावना तो कर सको, भले दीन ना होव तो भी. जब दीनभावना करोगे तो तुमकु ये जस्टिफिकेशन् समझमें आयेगो के **अहंकारं न कुर्वीत.** अब देखो अपन् या जन्क्चरपे आके समझें के कौनसे अहंकारकी मनाही है. सिद्ध अहंकारकी मनाही नहीं है क्योंके सिद्ध अहंकार तो कृष्णात्मक है. पर अपन्ने जो अपने साधित अहंकार ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता (होनेके स्वतन्त्र अहंकारकी मनाही हे) पुछनो है कछु?

प्रश्न : ये दीनभावना निस्व: दीनभावना जाकु सिद्ध हो गई मानो तो वो नोरमल् नहीं जी पायेगो? आम आदमीकी तरह?

उत्तर : एक बात बताऊं के तोकु ये बात पता चल गई के फूलन्के सारे रंग मट्टीमेंसु निकले भये हैं. तो फूलन्के साथ तू नोरमल व्यवहार कर पायेगो के नहीं कर पायेगो? जब तू फूलन्के साथ नोरमल् व्यवहार कर सके तो ब्रह्मके साथ क्या प्रोब्लम है? ये रहस्य जैसे तोकु पता चल्यो के ये फूलन्के जितनेभी रंग हैं अन्तमें तो पृथ्वीके भीतर छुपे भये रंग हैं जो फूलन्में प्रकट हो रहे हैं. ये रहस्य पता चलवेके बाद तू फूलन्के साथ नोरमल व्यवहार नहीं कर सकेगो क्या? महाप्रभुजी रिवर्समें सोचें हैं. बल्कि फूलन्के साथ तेरो व्यवहार एकदम अच्छो हो जायेगो. कौनसे अर्थमें अच्छो हो जायगो? जो फूल तोकु पसन्द आ रह्यो है, वा फूलकी मजा तू पृथ्वीकी तरेह ले सकेगो. जो फूल तोकु पसन्द नहीं आ रह्यो

है वाकु भी तू पृथ्वीकी तरेह मान्य तो कर ही सकेगो के ये भी वही फूल है जो मोकु पसन्द आने वाले फूलकी पृथ्वीको फूल ये भी है. तो वाके साथ तेरो व्यवहार कितनो स्वस्थ हो जायेगो. आज जो मैने व्यवहार सब याही लिये गिनाये. अपन् जो इतने सारे अहंकार पैदा कर दे हैं वासुं अपन् नोरमल् व्यवहार नहीं कर पा रहे हैं. कोईकु अपन् नास्तिक देखें तो तुरत अपनेकु तैश आ जाये. कोईकु आस्तिक देखें तो तुरत अपनेकु तैश आ जाये. धार्मिक देखें तो तैश आ जाये. कोईकु मूरख देखें तो तैश आ जाये. कोईकु विद्वान देखें तो तैश आ जाये.

एक बालकने मोसुं कही के ''तुमकु विद्वताको घमण्ड है. हर बखत तुमकु विद्वताकी डकारें आती रहें''. मैने कही ''डकार आवे तो अच्छो, पाद तो नहीं आवे. तुमकु मूरखताकी पाद आ रही है. डकार और पादमें कौनसी चीज अच्छी? यामें बुरी लगवेकी क्या बात है! समझो के तुमकु विद्वताकी डकार आ रही है तो आ रही है. कुछ पेट अपसेट होयगो मेरो तो डकार आ रही है. पर तुमकु मूरखताकी पाद तो नहीं आनी चईये ना! वो तो ज्यादा खराब चीज है ना! तुम मूरखता पादो मत और मैं डकारूं नहीं, बस बात पत गई''. वामें गुस्सा होवेकी या प्रसन्न होवेकी कोई बात ही नहीं है. फेक्टकु मान लो बस खतम. तो ज्यादा संतुलित व्यवहार हो सकेगो ना!

प्रश्न : इसमें जो दो बात आपने बताई या तो एक्च्युअली नहीं है या फिर टेम्परामेन्टली नहीं है. टेम्परामेन्टली तो समझ सकें के भई ठीक है पर एक्च्युअली नहीं है तो फिर कैसे समझनो. जैसे अतिमानिता नहीं होनी चईये पर मानिता तो होनी चईये जीवेके लिये.

उत्तर : एक बात बताऊं के जीवेके लिये जो तू मानिता लायेगो वो मानिता कृष्ण है के नहीं? कृष्णकी सर्वात्मकता तोकु मान्य

है के नहीं? कृष्णकी सर्वात्मकता मान्य होय तो बात खतम हो गई ना! वामें जीवेमें तकलीफ कहां आ रही है? अपन् पृथ्वीकु माँ मानें. माँ मानें तो क्या अपन् पृथ्वी पर पैर नहीं धरें? पैर भी धरें. पैर धरें करके क्या पृथ्वीपे माथा नहीं टेकें? माथा भी टेकें.

सीमान्त गांधी अब्दुल गफार खां हते ना, तो वो गुस्सा होके चले गये थे. उनको ये गुस्सा हतो के कांग्रेसने भारतस्वतन्त्रतासंग्राममें उनकु साथ लियो थो. स्वतंत्रताके लिये पठाननूने टफ फाईट दी थी. पर जा बखत कांग्रेसकु लीडरशिपको हबकड़ा लग्यो वा बखत उन पठान बिचारेन्को क्या भविष्य होयगो ये सोचे बिना पार्टीशन कर दियो. सीमान्त गांधी यों केहते थे के "मैं पाकिस्तानमें नहीं मरूं". क्योंके उनने कभी पाकिस्तान एक्सेप्ट नहीं कियो थो. उन्होंने हिन्दुस्तानकी स्वतन्त्रताके लिये फाईट करी थी. उनकु पाकिस्तान सरकारने बरसन जेलमें रख्यो. जिन्दे हते तब यहां आये. यहां आवेके बाद मुसलमान होवेके बाबजूद एअरपोर्टपे उतरके सबसे पेहले उनने भारतकी जमीनकु चूम्यो और माथा टेक्यो हतो. अब एक बात ध्यानसु समझो. क्या पाकिस्तानकी भूमि भारत भूमि नहीं थी? जा भारतकी स्वतन्त्रताके लिये लड़े थे, वाके बाहर सीमान्त गांधी बलूचिस्तानके हते. पर वो यों मानते थे के बलूचिस्तानसु लेके बंगाल तक भारत एक है कांग्रेसीनूने लीडरशिपके मोहमें वाके टुकड़ा किये. हमसुं पूछयो भी नहीं और हमकु पाकिस्तानमें धकेल दियो. गरीबकी कितनी भूख होयगी. जब पेहली बार भारतमें उतर्‌यो, तो वाने, दिल्हीअरपोर्टकी बात है, तो वाने जमीनकु चूम्यो और माथा टेक्यो. वाने सरे आम सब जरनलस्टिनूकु कही के "तुम लोगनूने हमकु दगा दियो. हमने तुमकु कभी दगा नहीं दियो. हम तो भारतकी फ्रीडमूके लिये लड़े थे". सब भूमि तो गोपालकी हती ना. पर व्यवहार तो कर सके के नहीं कर सके वो. मरते बखत भी वो यहां नहीं मर्‌यो अफगानिस्तानमें वाने अपनी कब्र बनवाई. क्योंके भारत सरकार बनवे ही नहीं देती,

पाकिस्तानमें वो ऐसो गद्दार हतो. अभीभी पाकिस्तानमें वाके सब चेलायें फाईट कर रहे हैं. आदमीकु समझवेमें क्या तकलीफ है. सारे भारतकु एक मानवेमें तकलीफ क्या है. कौनकु तकलीफ है. तुमकु लीडरशिपकी तकलीफ है तो अब्दुलगफ्फारखांकु तकलीफ नहीं हती मुसलमान होवेके बाबजूद. हिन्दु नहीं हतो हों! मुसलमान शतप्रतिशत मुसलमान, अल्लाहको भगत, कुरानको भगत मुसलमान हतो. वाकी दिलकी भावना हती के हिन्दुस्तानकी जमीन मेरी मादरे वतन है. वाके टुकड़ा इन कांग्रेसीनूने लीडरशिपके लिये किये हते और हमकु दगा देके किये हते. सरे आम सबकु यहां झाड्यो. "तुम मोकु रेस्पेक्ट क्या दे रहे हो! तुमने तो हमकु कुचलके रख दियो". ये और कही वाने. "एक बाजू हमकु कुचल दियो और दूसरे बाजू हमकु रेस्पेक्ट दे रहे हो के 'सीमाके हम गांधी हैं.' कौनकु बेवकूफ बना रहे हो?" क्यों नहीं कर सकें! भूमिकु मां मान सके के नहीं मान सके? मान सके. अपनकु सारी भूमिकु कृष्ण मानवेमें तकलीफ क्या है, जैसे वाने मादरे वतन् मान्यो? भूमि तो एक उदाहरणकी बात कर रह्यो हूं. जोभी कुछ भूमि है, ज्ञानकी भूमि, विचारकी भूमि, व्यवहारकी भूमि, सब भूमिमेंसु कृष्णमेंसु पनप्यो भयो व्यवहार, विचार है. तकलीफ क्या होयगी वामें कोई तकलीफ नहीं होयगी. अहंकारके कारण कोई अपनेकु निकाल दे, अपनेकु दगा दे दे, तो अपनेकु दु:ख होयगो स्वाभाविक बात है.

(दुनियाके सारे व्यवहारको आधार भावना ही)

सो या रहस्यकु समझो अच्छी तरेहसुं के **कृष्णे सर्वात्मके** कृष्ण सर्वात्मक है, वाके स्वरूपकु अपनूने समझ्यो तो अपन् दीन ही हैं. यदि वा स्वरूपकु समझवेमें कोई तकलीफ है, समझनो यानि अनुभवमें लावेमें, तो कोई चिन्ताकी बात नहीं है. अपनेकु भगवान्‌ने वो फेसिलिटी प्रोवाईड करी है के जा चीजकु तुम अनुभव नहीं कर सको, वाकी तुम भावना तो करही सको हो. एक बात समझो

बिना समझे भाव-भावनाको एक बड़ो तामझाम अपन्ने बना दियो है, भाव-भावना! भाव-भावना! पर भावना कहां नहीं है? अपन् तिरंगी झण्डाकु जो सलाम कर रहे हैं, वो देशकी भावनासु कर रहें हैं के नहीं कर रहे हैं? भावना है के नहीं? अब जब वधु वरसु हस्तमिलाप कर रही है तो वरकी भावनासु ही तो कर रही है, सारे वरकी भावनासु तो नहीं कर रही है ना! कौनसो जन्क्चर है जामें भावना अपन् नहीं वापर रहे हैं? यहां वहां सब जगह जब-तब अपन् भावना ही कर रहे हैं. यदि तुम भावना नहीं करो तो तुम सीधीसी बात समझो के तुम कीबोर्डपे अंगुली भी नहीं चला सकोगे. क्योंके कीबोर्डपे जा बखत तुम कीबोर्डपे अंगुली चला रहे हो कम्प्युटरपे फीड करवेके लिये, वा बखत तुमकु कुछ पता नहीं है के कम्प्युटरके अन्दर कीबोर्ड क्या करवेवालो है, भावनाही तो कर रहे हैं के यहां भावना करेंगे तो वहां आयेगो.

डॉक्टरके पास जब तुम हार्टको ओपरेशन् करवावे जा रहे हो तो तुमकु पता है के डॉक्टर मारेगो के जिवावेगो? भावनाही तो कर रहे हो ना! डॉक्टर डॉक्टर है हार्टस्पेशलिस्ट है, सर्जन है हमकु ठीक करेगो. भावनाही तो कर रहे हो और नहीं तो क्या कर रहे हो! अपन् भावना धर्ममें करें तो लोग अपनेकु 'भावला' कहें. पर दुनियांमें मोकु एक व्यवहार ऐसो बताओ के जो बिना भावनाके चलतो होय! हजार रूपयाकी नोटकी वेल्यु कितनी सचमुचमें? वासु बड़ो तो फुलस्केप है. हजार रूपयाकी नोटसु बड़ो फुलस्केप है के नहीं? वाको वो चौथाई भी नहीं है वाकी अपन् हजारकी भावना कर रहे हैं. भावनाही तो कर रहे हो नहीं तो कर क्या रहे हो? वेल्यु वाईज् कागज कौनसो बड़ो? फुलस्केपमें तुम फूलस्केपकी भावना कर रहे हो. हजारमें तुम हजारकी भावना कर रहे हो. कहां भावना नहीं है? ऐसी कोई भी स्थिति नहीं है के जामें तुम भावना नहीं वापरते हो. बैठे बिठाये अपनेमें कहीं न कहीं अधार्मिकताको अहंकार,

अपनेकु भावनाकु गाली देवेके लिये प्रेरित करे है. भावना ऐसो फिनोमिना नहीं है के जाकु अपन् करे बिना जी सकते होंय. ऐसो फिनोमिना नहीं है के भावना करे बिना मनुष्य एक भी कदम आगे बढ़ सके. रोडके जो सिग्नल हैं, क्या हैं? भावना हैं के नहीं? कौनने कही के लाल लाईट होय तो क्रोस नहीं करनो चईये? अब जहां भी लाल लाईट होये तो वहां अटक जाओ. अब जहां लाल लाईट आ रही है वहां रुकवेकी भावना कर रहे हो, जहां हरी लाईट आ रही है वहां जावेकी भावना कर रहे हो. ये सब भावनाही तो है. कहां भावना नहीं है? थोड़ी देर शान्त चित्तसु सोचो. सब जगह निरन्तर अपन् भावना कर रहे हैं. पर क्या है अपने भीतर अधार्मिकताको एक अहंकारको भाव जग गयो करके धार्मिक भावनाकु अपनेकु कुछ निम्न स्तरकी बात लगे. ऐसी कोई बात नहीं है. दुनियाको कोई काम बिना भावनाके चल ही नहीं सके है. या तो अपने भावसु चल रह्यो है या अपनी भावनासु चल रह्यो है. एक बात समझो के जितनोभी व्यापार चल रह्यो है ना! जब तुम केश-पेमेन्ट नहीं ले रहे हो, तो भावनाही तो कर रहें हैं के हम माल दे रहें हैं और वो पैसा देगो. भावना नहीं कर रहे हो तो क्या कर रहे हो? कितनो व्यापार मालके साथ पैसा लेके चले? कितनो व्यापार भावनासु चल रह्यो है? हिसाब लगाके देख लो. यदि तुम ऐसे नक्की कर लो के हम भावना नहीं करेंगे के केशसुही सारो सौदा करेंगे तो तुम्हारी दुकान चलनी ही बन्द हो जायेगी. भावना करनी पड़ेगी के हम तुमकु माल दे रहे हैं और तुम हमकु रुपया दोगे. आज नहीं दोगे कल दोगे. कल नहीं परसों दोगे. भावनाके बारेमें अपन्ने या तरीकेकी गलत ख्याली डेवलप् कर ली है, वासु ये प्रोब्लब खड़ी होवे है, बाकी तो दुनियांमें कोई व्यवहार बगेर भावनाके चल नहीं रह्यो है. बाकी एक बात ध्यानसु समझो के अपन् मोबाईलसु बात कर रहे हैं, और जासु बात कर रहे हैं, वो सुन रह्यो है के नहीं सुन रह्यो है वाकी

तुमकु क्या पता के वो सुन रह्यो है के नहीं सुन रह्यो है? मोबाईलके या छोरपे तुम भावनाही तो कर रहे हो के आवाज आ रही है तो सुनही रह्यो होयगो. सब जगह भावना है कहां भावना नहीं है? भावना बिना कोई चीज पोसिबल है ही नहीं. ''**भवितुः भवनानुकूलो भावकस्य व्यापारविशेषो भावना**''. जो बात सिस्टमके तहत होवेवाली है, वाकु होने देनो वाको नाम भावना. जो बात होवेवाली है वामें जो कुछभी अपनो कन्ट्रीब्युशन करनो होय वो कर देनो. मोबाईलको स्वीच ओन् कर देनो मोबाईलको, नम्बर क्लिक् कर देनो बस. ''**भवितुः भवनानुकूलो भावकस्य व्यापार विशेषः**'' वाको नाम भावना. वोई पाछो प्रक्रिया के जो अवेलेबल् है, वाकु तुम कोई इन्स्ट्रुमेन्ट्सु यूज् कर रहे हो. ''**भवितुः भवनानुकूलो भावकस्य...**''

कृष्ण जो सर्वात्मक है, वाकी सर्वात्मकता वाकु होवे देनी, वामें अपनो अहंकार बीचमें नहीं लानो, वाको नाम भावना. **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना**'' ये बात जब तुम समझोगे तब तुमकु ये बात समझमें आयेगी के **अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्.** अहंकार नहीं करनो चईये ये कोई बहोत बड़ो एवरेस्ट चढ़वेको उपदेश नहीं दियो है, वाकी कोरोलरीमें आतो उपदेश है के भई दीनभावना तुमकु होयगी तो तुमकु अहंकारको प्रसंग कहांसु आयो? और कौनसु अहंकार नहीं करनो वाकी तो अपन्ने सारी रामायण देखी विविधतान्सु के कौनसु अपन् नहीं कर सकें या कर सकें वामें अपनो बसही नहीं है. जो अपने साधित अहंकार हैं, वैसे अहंकार जो कृष्णकी सर्वात्मकतामें आड़े आते होंय वो अहंकारें अपनेकु नहीं करनो चईये. अपनो विचार, अपनो व्यवहार खंडित नहीं होतो होय, ऐसो अहंकार करो तो वामें कौनको नुकसान है और कौनको फायदा है? पर कृष्णकी सर्वात्मकतामें आड़े आते भये अहंकारनूकु मत करो. **अहंकारं न कुर्वीत** और याके बाद **मानापेक्षां विवर्जयेत्** ये बताऊंगो कल और परसोंके प्रसंगनूमें.

oooooooooo

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीन भावना॥
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

प्रश्न : यदि व्यक्तित्वके आकृति वगेरेह छहों पासानूकु जाने तो क्या वाके ईगोकु जान सकें? जैसे अपने पुत्र या पुत्रीको जन्मसु (अपनू) जाने और वाकी पर्सनालिटीके हर फॅसेट्कु जाने तो क्या वाके ईगोको अनुभव कर सकें?

उत्तर : यामें देखो बात ऐसी हे के ईगोको अनुभव तो नहीं कर सकोगे; पर ईगोके बारेमें अपनी राय कायम कर सकें हें. अनुभव तो अपनकु अपने ईगोको ही होवे. दूसरेके ईगोको अनुभव हो नहीं सके. अब वाको ईगो कैसो होनो चहिये वाको थोड़ो निष्कर्ष निकाल सको.

प्रश्न : एपिस्टेमोलॉजिकल् अहंकार पार्टली सिद्ध हे और पार्टली साधित हे, ये समझ नहीं आयो.

उत्तर : मूल बात यामें ये हे के एपिस्टेमोलॉजिकल् अहंकार अपन् कोई भी कोई चीजकु जानवेको फन्क्शन् माने ज्ञाताको फन्क्शन् कर रहे हें या कोई काम कर रहे हें, तो वाके पेहले अपनेकु अपनो अहंकार, जैसे वा दिन मैंने बतायो हतो के "मैं जानू हूं". "मैं करूं हूं". फीलिंग अपनी ये नहीं हे के "करूं हूं मैं" या "जानू हूं मैं". जैसे डेकार्टने ये बात कही हती के "मैं डाउट करूं हूं यासुं मैं हूं". अब वो तो फिलोसोफरकु जो कोमनसेन्स् नहीं वापरें वाकु लगे के डाउट करूं हूं यासुं "मैं हूं". अपनुकु अपनो अहं, ऐसे लॉजिकली नहीं समझमें आवे के "मोकु डाउट हो रह्यो हे याके कारण मैं हूं", पर अपनुकु पहेले यों समझमें आयेगो के "मैं हूं" और फिर ध्यान आयेगो "मैं डाउट कर रह्यो हूं." ये मूलमें एपिस्टेमोलॉजिकल ईगोको अन्तर हे; एक्च्युअली वो पीछेसु आ रह्यो हे. क्रिया करण कार्य के कारण वो कर्ता ज्ञाता

या भोक्ता को अहंकार अपने भीतर पनपे हे पर जब अपने एनालुसु सोचे हें, तो ईगो सबसु पेहले अपनेकु ध्यानमें आवें, वाको उदाहरण देके भी समझायो हतो के जैसे आग अपनेकु समझमें नहीं आवे. धुआं आगसु पैदा होवे हे, पर जब आग नहीं दीख रही होय तो धुआंसु ही आग समझमें आवे. धुआंको ज्ञान पेहले होवे और आगको ज्ञान बादमें होवे. पर आग पेहले पैदा होवे और धुआं बादमें पैदा होवे. वा तरीकेको वो ज्ञापक हेतु और कारक हेतु को जो प्रभेद हे. अहं अपनो सारे क्रियाको, करणको, कार्यको ज्ञापक हेतु बने हे. क्योंके अपने पास वो ज्ञाता, हकीकतमें ज्ञाता अपन् बादमें बन रहे हें ये हे.

प्रश्न : अहंकारं न कुर्वीत जो साधितके लिये उपदेश होय तो वा संदर्भमें वाको विचार आगे करेंगे या कैसे?

उत्तर : मैं येही बतानो चाह रह्यो हतो के अहंकार, एपिस्टेमोलॉजिकल अहंकार पार्टली सिद्ध हे और पार्टली साधित हे. पार्टली सिद्ध मैने क्यों कह्यो? क्योंके बहोत सारो अपनो ये भाव हे, के मैं जान रह्यो हूं, मैं कर रह्यो हूं, मैं भोग रह्यो हूं. एक तो वाकु बनायो ही ऐसो गयो हे के वो पेहले चमके. वा अर्थमें वो सिद्ध हे. पर बनायो गयो ऐसो हे के वाके कारण अपन् वाकु यों मानें के वो सचमुचमें पेहलो हे, वो भाव साधित हे. जैसे खिचड़ी बनाई ही ऐसे गई हे के दाल और चोखा कु मिलायो गयो हे. तो दाल और चोखा पेहले हें और खिचड़ी बादमें हे. पर जो खिचड़ी खा रह्यो हे वाकु खिचड़ी खावेके बाद दाल और चोखा को बोध होयगो. खिचड़ी खा रहे हें वासु वामें दाल और चोखा समझमें आयेंगे. और बनी ऐसी नहीं हे के खिचड़ी बनी हे और वामें दालचोखा डाले हें. बनी कैसे हे के दालचोखाकु पेहले मिलायो हे वाके बाद खिचड़ी बनी हे. ऐसे अपनो साधित अहं भी पार्टली सिद्ध हे. क्योंके अपनेकु खिचड़ी खावेके कारण दालचोखा समझमें

आ रहे हें या लिये अपन् यों मानेके खिचड़ी मूल तत्त्व हे और दालचोखा वाके पार्ट हें, ऐसे जो अपनो साधित अहंकार हे वाकु अपन् मूलतत्त्व समझ लें तो फिर ना पाड़नी पड़ेगी के **अहंकारं न कुर्वीत.**

(कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ)

देखो एक बात बताऊं, हम जितने भी गुसांईं हें उन सबकी दुगर्ति क्या हे? दो चार वैष्णव आके हमकु केह दें के आप सर्वसमर्थ हो, कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् सर्वसमर्थ हो. अब वो एक साधित ईगो हमारे भीतर घर कर जाये के हम कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् सर्वसमर्थ हें. अभी एक भाई आये वो मोकु बता रहे हते. वो अपनी कोई सी.डी. सुनते हते. वहां उनके गुरुजीने पूछ लियो के ''क्या सुन रहे हो?'' उनने कही के ''श्याममनोहरजीकी सी.डी. सुन रहे हें.'' उन्होंने कही के ''कौनने कही तुमकु सुनवेकी?'' वाने कही के ''यामें सिद्धान्त बता रहे हें यालिये सुन रहे हें. आप सिद्धान्त बताओ तो आपकु भी सुनें.'' तो ''बोले सुननी ही नहीं चहिये.'' उनने कही के ''आप बताओ सिद्धान्त तो उनकुं नहीं सुनेंगे. यामें हमकु सिद्धान्त सुननो मिल रह्यो हे.'' उनने कही के ''तुम्हारे बेटा कितने''? वाने कही के ''दो बेटा.'' तो हाथमें पानी लेके संकल्प लियो के दोनों बेटा तुम्हारे मर जायें. वो बिचारो नर्वस् हो गयो के गुरुदेवने पानी छोड़ दियो के ''दोनों बेटा मर जायें.'' मेरे पास आयो के उनने ऐसे ऐसे कही के ''तुम्हारे दोनों बेटा मर जायें.'' मैंने वासु कही ''इतने समर्थ होते तो उनकी फेमिलीमें भी कई लोचा हें. इतने सर्वसमर्थ होते तो फेमिलीमें डिस्प्युट्र क्यों रहेती! मतलब बात तो साफ हे ना! कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् सर्वसमर्थ नहीं हें. तुम हमकु यों समझा दो के आप पुरुषोत्तम हो माने कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् सर्वसमर्थ हो तो हम हाथमें पानी लेके छोड़ दें के आपके दोनों बेटा मर जायेंगे. अब वामें भूले

चूके कोई एक बेटा भी मर गयो तो लगे के गुरुदेवके वाक्य प्रमाण हो गये. ऐसे ही होवे ना! वो सब साधित अहंकार ऐसे ही होवें. जिनकी मैं बात कर रह्यो हूं वो बेवकूफ व्यक्ति नहीं हें, बुद्धिमान व्यक्ति हें. बुद्धिमान हें पर जब सब लोग आके कहें ''आप जो सोचो तो कर सको हो, आप तो सर्वसमर्थ हो, कर्तुम् अकतुर्म् सर्वसमर्थ हो.'' उनने कही लो आज एक ट्रायल तो करो. इच्छा तो हो ही जाये ना! वो अभी बता रह्यो हतो के उनने हाथमें पानी लेके छोड़ दियो के तुम्हारे दोनों बेटा मर जायें. कोई मरें नहीं! ऐसे पानी छोड़वेसु कोई मरे!! इतने समर्थ हते तो फेमिलीमें डिस्प्युट्र काहेकु होती. मतलब समर्थ तो नहीं हें ना! ऐसे तुम केह दो के आप कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् सर्वसमर्थ तो हमारे भीतर भी एक साधित अहंकार हो जाये. साधित अहंकार तुम हमकु वा तरीकेकी प्रायोरिटी दे रहे हो, वा प्रायोरिटीको दुरुपयोग भी हो सके हे और सदुपयोग भी हो सके हे. ऐसे अपनेकु नेचरने अपनो एपिस्टेमेलॉजिकल् अहंकार या तरीकेको बनायो हे के प्रायोरिटी वाकी लगे. वा प्रायोरिटीको सदुपयोग करके कोई चीजकु जान लेनो बुरी बात नहीं हे. पर वा प्रायोरिटीको दुरुपयोग करके अपन् समझें के यासु ज्ञाता पेहले, फिर ज्ञान हे और फिर ज्ञानके करण हें, फिर तो हाथमें पानी लेके छोड़ रह्यो हे, और सामर्थ्यतो कुछभी नहीं हे. ये रहस्य हे वाको.

ऐसे अकेले गुसांईनूकी ही कथा नहीं हे. एक बात समझो कोचिंगक्लास जितनी चलें ना! पांचसौ छेसो विद्यार्थी पढ़ते होवें, पांच दस वामें कोई डिस्टिंक्शनूसु पास होवें, वो छापामें आ जाये के डिस्टिंक्शनूसु पास होवेवाले हमारे कोचिंगक्लासके विद्यार्थी. वो पांच दस पास भये, वाके लिये वो पांचसो बटोरके ले जायें. वो साधित अहंकार हे ना? भई पांचसो विद्यार्थीनूकु पढ़ाते भये पांच दसकी डिस्टिंक्शन् आ गई तो वो पढ़ावेके कारण आई या वो

बुद्धिमान हते या लिये आई, ये पता कैसे चले अपनेकु? भटका गये होंगे तुम्हारे एडवर्टाइज़मेन्ट्के कारण वा लिये पास हो गये. तुरत फोटो सहित छापामें आ जाये ये विद्यार्थी डिस्टिंक्शन् लावेवाले हमारे कोचिंग क्लासमें पढ़वेवाले हें. ये सब साधित अहंकार हें ना. वो कोई सिद्ध अहंकार थोड़े ही हे. लोग तो केह दें के हां कोचिंगक्लाससु भयो. डॉक्टरनूको और वकीलनूको भी ऐसो ही होवे हे. डॉक्टरने कोई इलाज कर दियो तुम्हारो और तुम ठीक हो गये तो तुम दस जनेनूकु कहोगे के ये रोग तो हमारो वा डॉक्टरने ठीक कियो, तुम भी वाके पास जाओ. अब तुमने वाकु प्रायोरिटी दे दी और समझो के दो जने ठीक हो गये तो भीड़की भीड़ पड़ेगी वहां. यदि एकाध मर गयो तो सब जने क्या कहेंगे के नहीं नहीं, वाके पास इलाज करावे नहीं जानो, वासु इलाज कराके फलानो आदमी मर गयो. तो वहां प्रायोरिटी खतम हो गई. कौनकी प्रायोरिटी हे और कौनकी प्रायोरिटी कॅन्सल् हो जाये पता नहीं चले. लोग क्या हे के हवा बांधके वा तरहसु अपने अहंकारकु वा तरीकेकी प्रायोरिटी प्रोवाईड् कर दें. अब प्रोवाईड् कर दें तो कर दें, वामें कोई बुरी बात नहीं हे पर वो प्रोवाईड् करी भई जो प्रायोरिटी हे वाकु अपन् भी पाछे मान लें. दो चार जनें आके केह देंगे के आप तो परम भगवदीय हो क्यों अपनो सत्संग हमकु नहीं कराओ हो! तो बस प्रायोरिटी हो गई. तो बस प.भ.बन गये फिर लगे कोईकु भी सत्संग करनो होय तो हमारे पास आवो. फिर लगे हमारो सत्संग ही सत्संग हे! तो बस हो गई बात. वो साधित अहंकार हे. सिद्ध अहंकार नहीं हे. क्योंके तुमकु दो चार जनेनूने प्रायोरिटी दे दी. सत्संग समझनो होय तो फलानेको सत्संग करो. तो बस वो साधित अहंकार आ जावे के सत्संग तो हम ही करावें तो होय नहीं तो नहीं होय. एपिस्टेमेलॉजिकल् अहंकारके साथ हर बखत तकलीफ ये हे के कुछ वाकी प्रायोरिटी हे डेफिनेटली, पर वो प्रायोरिटी भी अपनूने सिद्ध नहीं करी हे.

वो बाई डिफॉल्ट् अपनेमें वाको कॉन्स्टीट्युशन् ही ऐसो बनायो हे के वो प्रायर लगे.

कोई भी ऑफिसमें अपनेकु जानो होय तो वॉचमॅन् हे, वासु अपन् वॉचमॅनूकु ही बॉस् समझ लें. अब वो अपनेकु ऑफिसमें घुसवे ही नहीं दे तो वॉचमॅनूकु भी बॉस् केहनो पड़े. कैसे हो बॉस् क्या हे! "क्या काम हे?" "फलानेसु मिलनो हे." तो जाओ अन्दर. बॉस् केह दियो तो अंदर जाने देगो, नहीं तो पेहले ही रोक लेगो. अब वाकु अपन् बॉस् केह रहे हें, वाकु थोड़ीसी प्रायोरिटी दे रहे हें, तो वा वॉचमॅनूकु भी भ्रान्ति हो जाये के या ऑफिस्को सर्वेसर्वा मैं ही हूं. अब वो बाहर बैठ्यो भयो हे वाके लिये वाकी प्रायोरिटी हे, भीतर बैठ्यो होतो कौन पूछतो वाकु? धड़ल्लेसु जाते. ऐसे बहोत सारे डे टु डे के बिहेवियर हें वामें कुछ लोग अपनेकु प्रायोरिटी देते होवें. वो दी भई प्रायोरिटीकु कट टु इटस् ओन साईज् रखनी चहिये. वाकु अननेसेसरी बहोत एन्लार्ज करके समझें के कोई ने केह दियो तो मैं वोही हुं समजे वाकु कभी न कभी लफड़ा होनो ही हे ना. वा अर्थमें एपिस्टेमेलॉजिकल् अहंकार पार्टली सिद्ध हे पार्टली साधित हे. क्योंके दो चार बार अपन् एक्सपेरीमेन्ट करें. डेकार्टकु साधित अहंकार होवेके कारण ही तो ये आर्ग्युमेन्ट सूझ रही हे के "आई थिन्क् देयरफोर आई एम्. आई डाउट देयरफोर आई एम्." भगवानूको एग्ज़िस्टेन्स् डाउटफुल् लगे डेकार्टकु पर अपनो एग्ज़िस्टेन्स् अनडिबेटेबल् लगे. वाने खास फ्रेज् धरी हे **"दि ऑम्निबस् दच्युबितान्दम्"** याको मतलब के "एवरी थिन्ग् इज् डाउटफुल्". **ओम्नि** = व्यापक. **"ऑम्निबस् दच्युबितान्दम्"** मने सब कछु डाउटफुल हे. मने इन्क्ल्युडिन्ग् गॉडको एग्ज़िस्टेन्स् डाउटफुल् हे. व्हाट इज् नॉट डाउटफुल्? "गाममें कोई जाणे नहीं ने हुं वरनी फोई." अपनो स्वयंको एग्ज़िस्टेन्स् डाउटफुल् नहीं हे. क्योंके मैं मेरो एग्ज़िस्टेन्स् डाउटफुल मानूं तो डाउट करवेकी प्रोसेस्में मेरो डाउट बोल रह्यो हे. हू इज्

डाउटिन्ग्? तो गॉड्को एग्ज़िस्टेन्स् इज़् डाउटफुल्. माई एग्ज़िस्टेन्स् इज़् नॉट डाउटफुल् बिकॉज़् इफ् आई डु नॉट एग्ज़िस्ट् दैन हू इज़् डाउटिन्ग् द एग्ज़िस्टेन्स् ऑफ् गॉड? यों डेकार्ट कहे हे. तो ऐसो हो जाये. वो प्रायोरिटी हे. वा भावकु अपनी साईजूमें समझो जितनी सिद्ध हे उतनी तो ठीक हे. पर वा भावकु साधित करके बढ़ाते रहें तो फिर लफड़ा होवे ही हे.

प्रश्न : ट्रॅफिक सिग्नलमां लाल लाईट जोता गाड़ी ऊभी राखवी ए कायदानु ज्ञान न केहवाय? आमा भाव केवी रीते प्रकट थयो?

उत्तर : देखो बात ध्यानसु समझो. मैंने पेहले भी तुमकु एक बखत बताई. जैसे अपने यहां ट्रॅफिक्के रूल् मानवेके लिये अपन् बहोत पाबन्द नहीं हें, वैसो ही हाल इटलीमें भी हे. एक अमेरिकन् टूरिस्ट इटली गयो. वहां रॅड सिग्नल् हतो तो भी टॅक्सीवालो सामने जा रह्यो हतो. वाने कही के "तुम क्या कर रहे हो?" रॅड सिग्नल् हे. वाने पूछी "आप कहांसु आये हो?" वाने कही 'अमेरिकासु.' वाने कही "अमेरिकाका रूल इटलीमें लागू नहीं होता हे." टूरिस्टने पूछी "यहां रॅड सिग्नल्को मतलब क्या?" टॅक्सीवालेने कही "रॅड सिग्नल्को मतलब इटलीमें ये हे के जानो होय तो तुम जा सको हो पर थोड़ो रिस्की हे. यहां रॅड सिग्नलको मतलब इतनो ही हे." टूरिस्टने पूछी "तो ग्रीन सिग्नलको मतलब क्या?" टेक्सीवालेने कही "याको मतलब ये के आनन्दसु जाओ पर एक्सीडेन्ट्के पूरे चान्सिस् हें." वाने फिर पूछी "तो येलोको मतलब क्या?" वाने कही "तुम सोच लो के क्या मतलब!" अब देखो वो सिग्नलके इन्स्ट्रक्शन्के प्रति दीनभावना नहीं हे ना! मात्र अपने हिन्दुस्तानीनुकु नहीं हे ऐसो नहीं हे. इटलीवालेनुकु भी नहीं हे. सिग्नलुकु फॉलो नहीं करनो. दीनभावना हे तो अपन् सिग्नलकु फॉलो करेंगे, नहीं तो अपन् समझें के सिग्नलकु क्या पता चलेगो? अक्सर सिग्नलको नियम तोड़वेवाले

चकर-बकर आँखसु देखते रहें के पुलिस कॉन्स्टेबल् खड़ो हे के नहीं? हे तो नहीं जायेगो और नहीं दीख्यो तो नियमकु जावा दो नी. अपनेकु पुलिस कॉन्स्टेबलके सामने दीनभावना हे पर रॅड सिग्नलके सामने जो नियम अपनी ही सुव्यवस्थाके लिये है वामें दीनभावना नहीं हे. तो ये इश्यु खाली ज्ञानको नहीं हे, यामें भावनाको एलीमेन्ट भी हे के नहीं हे? वो देख लो.

प्रश्न : श्रीमहाप्रभुजीए "**श्रीकृष्णः शरणं मम**" ये महामंत्र हमेशा बोलता रेहवुं एम नवरत्नग्रन्थमां आज्ञा करी छे. अने ते मंत्र दरेक व्यक्ति सेहलाईथी बोली शके तेवो पण छे. तेनी साथे आपे जे बात अहंकार माटे कही ते अने **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना** आ श्लोक वगेरह तेमा कई बाबत केवी रीते आ मंत्रनी साथे जोड़ी शकाय?

उत्तर : ऐसो हे ना के "**श्रीकृष्णः शरणं मम**" को बोलवेको महाप्रभुजीने कह्यो हे वो एग्ज़ेक्टली या लिये ही कह्यो हे के अपन् अपने अहंकारकु बढ़ावा नहीं दें. "**श्रीकृष्णः शरणं मम**" बोलते रहेंगे तो अपनो अहंकार थोड़ो डायल्युट् होतो रहेगो. अन्डरस्टेन्डिंगमें डायल्युट् नहीं होयगो, सॅन्टिमेन्ट्में नहीं डायल्युट् होयगो, पर वाणीमें तो होयगो. वाणीसु फिर धीरे धीरे अन्डरस्टेन्डिंगमें जायेगो और अन्डरस्टेन्डिंगमेंसु धीरे धीरे फिर सॅन्टीमेन्टमें जायेगो. वा लिये महाप्रभुजीने कही हे. वो बात वहां आज्ञाके रूपमें केह रहे हें और यहां "**कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना अहंकारं न कुर्वीत**" यामें एक विचारके रूपमें केह रहे हें. वहां नवरत्नमें अहंकार नहीं करवेकी कोई एक प्रोसीजर ही आज्ञा दे दे रहे हें के "**तस्मात् सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम वदद्भिरेव सततं स्थेयम् इत्येव मे मतिः**" वहां आज्ञाके रूपमें कह्यो और यहां साधनप्रकरणमें वर्णनके रूपमें कह्यो, बात दोनोंमें एक ही कही जा रही हे, कोई दो बात कही जा रहीं होंय ऐसी

बात लग नहीं रही हें. बाकी और आपको आशय क्या हे वो स्फुट होय तो मैं कुछ केह सकुं.

आज अपनेकु जो विषय देखनो हे वो ये हे; अभीतक अपनूने अहंकार प्रकटे कैसे हे, फन्क्शन् कैसे करे हे, वगेरह वगेरह जो लाईन् ऑफ् क्रियेशन् या जो वाको कोर्स् ऑफ् फन्क्शन् हे वो सब देख्यो. अपन् ये बातकु जाने हें के पेहले जो अपनूने चार्ट बनायो वो चार्टमें ये बात देखी के सारी चीज अक्षरब्रह्मसु या पुरुषोत्तमसु डिराइव् भई हे. अहंकार भी वाको अपवाद नहीं हे. डायरेक्टली नहीं तो इनडारेक्टली तो आखिर ब्रह्ममेंसु ही निकल्यो भयो हे. अपनूने ये देख्यो के अहंकारके मूलमें भी ब्रह्म हे और ब्रह्ममेंसु सृष्टिको प्राकट्य यूनिडायरेक्शनल् नहीं होयके, साईक्लिकल् हे. क्योंके ब्रह्मकी परिभाषामें ये बात समझाई गई के **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्ति अभिसंविशंति तद् विजिज्ञास्व तद् ब्रह्म इति.''** (तैत्ति.उप.३।१) जासु जगत् उत्पन्न होवे हे, जामें जगत् स्थित हे, जामें जगत् लीन होवेवालो हे, जामें जगत् मुक्त होवेवालो हे, वो ब्रह्म हे. ब्रह्मकी परिभाषामें वो साईक्लिकल् कॅरेक्टर अपनेकु दिखलाई दे रह्यो हे के उत्पत्ति भी होवे हे, स्थिति भी होवे हे, लीन भी होवे हे, मुक्त भी होवे हे और फिर उत्पन्न होवे हे, स्थित होवे हे वगेरह वगेरह. वा कॅरेक्टरके साथ ब्रह्मके अहंकारको कैसो रॅपोर्ट हे, ये अपनेकु देखनो पड़ेगो. सबसु बड़ी आवश्यकता ये हे के ये **''सहस्रशिरसं देवं साक्षात् यम् अनन्तम् प्रचक्षते''** जो कह्यो वामें मॅटाफिजिकल्, बायोलॉजिकल्, एपिस्टेमेलॉजिकल्, साइक्लॉजिकल्, सोशियोलॉजिकल, वगेरह वगेरह कई तरहके अहंकारके शिर माने अहंकारके पहेलु अपनूने देखे. कल मैंने जो पर्सनालिटीकु बतायो के जो दूसरेके अहंकारको अनुभव कैसे होवे हे. कोई दूसरेकु अहंकारको साक्षात् अनुभव नहीं होते भये भी, वा अहंकारके डिफरेन्ट्

कॉम्बिनेशन् बने हें और वासु पैदा होती भई पर्सनालिटीकी जो इतनी सारी विविधतायें हें वो तो अपनेकु अनुभव होवें हें.

(ब्रह्म सहस्रशीर्षा पुरुष के साथ अहंकार कैसे इन्टरेक्ट्)

अब हजार माथा अहंकारके कैसे हो सकें हें वो तो अपन् काउन्ट् नहीं कर सकें हें और न ही आवश्यकता हे मगर वाकी अपन् झलक पा सकें हें के इन सारे पेहलुनूमें अहंकारके हजार माथा हो सकें हें. इन सब हजारन् माथानूकु देखके अपनूने अहंकारकु पेहचानवेकी खूब कोशिश करी. साथ साथमें अपन् वा अहंकारसु ब्रह्मके साथ कैसे इन्टरऐक्ट् कर रहे हें, वो भी अपनेकु देखनो पड़ेगो. क्योंके ये सारी बात अपनी काहेके संदर्भमें चल रही हे? हजार माथाकी अपने आपमें कोई अपने लिये जानवेकी वॅल्यु नहीं हे. अपने हजार माथावालो अहंकार पाछो **''सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्''** (पू.सू.१) ब्रह्मसु कैसे इन्टरएक्ट् कर पा रह्यो हे, वो अपनी खास आवश्यकता हे और वाके लिये आज अपनेकु खास ध्यान देनो हे के जासुं अपन् **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना.** तो **'सर्वात्मके'**में ये जो सप्तमी आयी हे, वो वैषयिकी सप्तमी हे. सप्तमी मतलब कृष्णके विषयमें. सप्तमीके कई स्वरूप होवें हें. जाकु गुजरातीमें अपन् 'मां' कहें हें 'तेमां'; तो जैसे सप्तमीको तेमां एक अर्थ होवे हे, तेना ऊपर होवे हे, तेना भीतर; ऐसे अर्थ होवें हें. ऐसे संस्कृतमें सप्तमीको एक अर्थ ते बाबतमां (के बारेमें) भी होवे हे. वाकु वैषयिकी सप्तमी कहें हें. जैसे ''मोक्षे इच्छा अस्ति''. अहीं मोक्षमां इच्छा छे. मोक्षमां इच्छा एटले मोक्षनी बाबतमा इच्छा. अधिकरणसप्तमी नहीं हें. तो **कृष्णे सर्वात्मके सर्वथा दीनभावना.** कृष्णके विषयमें दीनभावना. ये बात वहां आ रही हे के कृष्णके बारेमें दीनभावना होनी चहिये. वहां कृष्णके साथ अपने अहंकारकु कैसे इन्टरएक्ट करनो हे? वो चॅप्टर आज अपन् डिस्कस् करनो चाहेंगे.

(चार्ट.६)

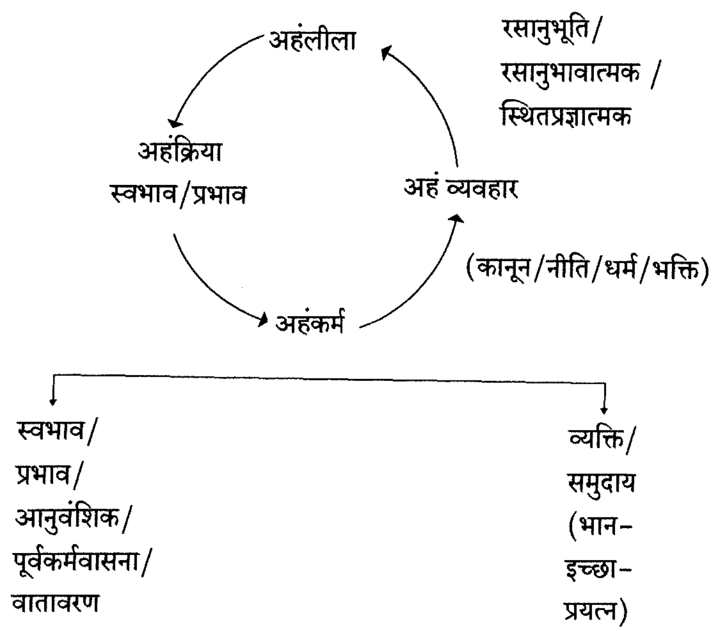

(कृष्णके साथ (अपने) अहंकारको इन्टरएक्शन्)

प्रेक्टिकली आप देखोगे तो अहंकारके बारेमें रोज अपन्ने एक चॅप्टर डील कियो हे. आज अपनो चॅप्टर या विषयपे हे के कृष्णमेंसु प्रकट भयो वो सब बात ठीक हे पर कैसे करनो हे? वाके क्या फन्क्शन् हें? याको महत्त्व दो तरहसु हे. एक तो ये साधनाप्रणालीके तहत आती भई बात हे. मूलमें मॅटाफिजिक्स्में आती भई बात नहीं हे. जो मॅटाफिजिक्स्के तहत आती भई अहंकारकी बातें हें वाको सार तृतीयस्कंधके अनुसार मैंने आपकु बतायो. वो सारे पेजेस् पढ़के नहीं सुनाये क्योंके टाईमकॉन्स्ट्रेन्ट् हतो पर सार मैंने सब आपकु बतायो. मॅटाफिजिकल् और बायोलॉजिकल् अहंकारन् को तो मैंने आपकु केवल

सार ही बतायो, टॅक्स्ट् नहीं बतायो.

अपन् यहां जो मूल टॅक्स्ट् डील कर रहें हें **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना,** वो मॅटाफिजिकल् आस्पॅटकु डील् करवेवालो नहीं होके साधनाप्रणालीके अहंकारकु डील् करवेवालो टॅक्स्ट हे. वा एन्गल्सु साधनाप्रणालीमें याको रोल क्या हे वाकु अपनेकु समझनो पड़ेगो. साधनाप्रणालीके रोल् अपन् समझनो चाहें तो सबसु अच्छी बात मोकु जो लग रही हे, वो ये लग रही हे के पेहलेभी मैंने एक गज़ल सुनाई हे पर वो दूसरे संदर्भमें सुनाई हती. पर या संदर्भमें सुनोगे तो सारी बात आपकु समझमें आयेगी. वा गज़लमें वो यों कहे हे - **''महेकामिलसे मिलो, मोज़ोसाहिलसे मिलो, गुलो गुलशनसे मिलो, नौबहारोंसे मिलो, तुम हजारोंसे मिलो, सबसे मिल आओ तो एकबार मेरे दिलसे मिलो.''** जिनसु मिलनो होय उनसु मिलके आओ, ऐसे अपन् अहंकारकु भी केह सकें के भई सबके साथ इन्टरऐक्ट कर रह्यो हे, हजार माथायें हें, तू उन सबसु इन्टरऐक्ट् कर रह्यो हे. तुम सबसु मिल आओ फिर एक बार मेरे दिलसु मिलो. वो **''नमामी हृदये शेषे''** कृष्णके साथ तो थोड़ो इन्टरऐक्ट कर!! **महेकामिलसे मिलो** = चांदसु मिलो, **मोज़ोसाहिलसे मिलो** चांदके कारण जो समुद्रमें उफनती लेहरें हें उनसु मिलो, **गुलो गुलशनसु मिलो** फूल और बागीचान्सु मिलो, **नौबहारोंसे मिलो** वसन्त ऋतुसों मिलो **तुम हजारोंसे मिलो.** मिलो वामें कोई आपत्ति नहीं हे पर **सबसे मिल आओ तो एकबार मेरे दिलसे मिलो.** ऐसे सबसे मिल आओ तो एक बार **''नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि शायिनम् लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्''**(सुबो.कारि.१०।१।१)सु तो एक बार मिल! वो जो अपनो अहंकार मिले, तो वाके इन्टरऐक्शन्को स्वरूप क्या हे, वो चॅप्टर आज मैं आपके सामने स्पेसिफिकली डील् करनो चाह रह्यो हूं. यामें देखो सबसु महत्त्व पूर्ण बात ये हे.

(ब्रह्मकी अहंलीला)

अपन् ब्रह्मकी स्थिति जो माने हें, वो लगभग कल जैसे मैंने आपकु बताई, के **''सब कुछ कहां लालाओ गुलमें नुमाया हो गई. खाकमें क्या सूरतें होंगी जो पिन्हा हो गईं.''** तो ये जितनो नाम रूप कर्म को आखो विस्तार हे, ये सारे विस्तारमें भी ब्रह्ममें रहे भये सभी नाम रूप कर्म सब प्रकट हो पाये हें? नहीं. **सब कहां!** सिर्फ कुछ प्रकट हो पावे हे. **''कुछ लालो गुलमें नुमाया हो गई''** कुछ प्रकट भये हें, सारे प्रकट नहीं भये हें. क्योंके अपन् कॉमनूसेन्स्सु ये बात समझ सकें के बहोत सारे नाम, बहोत सारे रूप, बहोत सारे कर्म अपने बचपनमें नहीं हते, अब प्रकट भये हें. और अपन् नहीं होंयगे तो नये नये नाम, नये नये रूप, नये नये कर्म क्या प्रकट होने बन्द हो जायेंगे? प्रकट तो होते ही रहेंगे. सारे नाम, सारे रूप, सारे कर्म तो प्रकट कभी होवें ही नहीं हें. प्रकट होते रहें, ये तो एक प्रोसेस् हे.

जब ये नाम रूप कर्म के प्राकट्यकी प्रोसेस हे तब वामें एक बड़ो भारी मुद्दा आवे हे, के ब्रह्ममें अहं बाई डिफॉल्ट् हे के प्रकट भयो हे? क्योंके अभी तक अपन् ये देखते आये हें के ब्रह्मकी हर चीजकु अपन् प्राय: स्वाभाविक केह रहे हें. अपनी हर चीजकु अपन् आर्टिफिशियल् केह रहे हें. अब एक सवाल ये भी तो पैदा हो रह्यो हे के ब्रह्मको अहं आर्टिफिशियल् हे? क्योंके ब्रह्म जा बखत ये सोचे के **''एको अहं बहुस्याम्''** मैं एक हूं अनेक हो जाऊं. वो ब्रह्मको अहं जो बोल रह्यो हे वो आर्टिफिशियल् हे या स्वाभाविक हे? ये प्रश्न तो अपने सामने पैदा होयगो ना! क्योंके ब्रह्म भी तो **'अहं'** केह रह्यो हे जो **'एको अहं'** एक मैं अनेक हो जाऊं. जा बखत वो ऐसो केह रह्यो हे वा बखत खुदके अहंके क्या माजना हे, स्टेटस् क्या हे? अब एक एप्रोच् यामें ये हे, वाकी फिलोसिफिकल् डीटेल्में मैं नहीं जाऊंगो अभी, पर

सार वाको आपकु समझा दे रह्यो हूं. एक एप्रोच् वामें ये हे के सृष्टिके एन्गल्सु देखें तो ब्रह्ममें भी जो या तरीकेको अहं पैदा भयो हे वो आर्टिफिशियल हे पर (प्रोसेसके तहत आतो ब्राह्मिक आर्टिफिशिल हे मनुष्यनिर्मित आर्टिफिसियल नहीं.) उपनिषद् वाकी साक्षी दे हे. सबसु पेहले ब्रह्ममें अहं पैदा भयो. **''सोऽनुवीक्ष्य नान्यद् आत्मनो अपश्यत् सो 'अहम् अस्मि' इति अग्रे व्याहरत् ततो 'अहं' नामा अभवत्''** (बृह.उप.१।४।१). ब्रह्मने सृष्टिकी रचनामें सबसु पेहले प्रायोरिटी अहंकु दी वाके लिये हर आदमीमें भी अहंकी प्रायोरिटी हे. **''तस्मादपि एतर्हि आमन्त्रितो ''अहम् अयम्'' इत्येव अग्रे उक्त्वा अथ अन्यत् नाम प्रब्रूते यद् अस्य भवति''** या लिये अपने ज्ञान, क्रिया और भोग में प्रायोरिटी अपन् अहंकु दे रहे हें. उपनिषद्की ये एक स्टाईल हे के ब्रह्ममें ऐसो हतो के ब्रह्म सच्चिदानंद हे. तो अपनो भी देह हे वो सत् हे, आत्मा चिद् हे और अन्तर्यामी आनन्द हे. या तरहसु हर बखत उपनिषद् ब्रह्मकु और अपनेकु कोरिलेट् करतो रहे हे. कोई बखत ब्रह्मसु अपनेकु कोरिलेट् करे हे और कोई बखत अपनेसु ब्रह्मकु कोरिलेट् करे हे. जैसे सृष्टिके प्रकरणको ये वाक्य हे **''स वै नैव रेमे तस्मात् एकाकी न रमते.''** (बृह.उप.१।४।३) अकेले वाकु मन नहीं लग्यो या लिये दुनियांमें भी अकेले आदमीको मन नहीं लगे. **''सो अबिभेद् तस्माद् एकाकी बिभेति...द्वितीयाद् वै भयं भवति...''** (बृह.उप.१।४।२) कस्माद् बिभेति द्वितीयाद् विभेति. ब्रह्म भी दूसरेसु डर गयो यासू हरेककु दूसरेसु भय लगे हे. ऐसे एक सच्ची बात यामें समझवेकी हे और हर बखत ये वचन मैं आपके सामने, जैसे अपन् 'दीन' शब्द वापरते रहें और अपनेकु दीनकी अवेयरनेस् नहीं हे, ऐसे ही अपन् ये वचन कॉइन्की तरह वापरें हें. अपन् या वचनकु करेन्सी नोट्की तरह निरन्तर वापरें और शुद्धाद्वैतमें ये वचन तो प्राण जैसो वचन हे, पर याकी थ्रस्ट् समझो के कितनी मजेदार हे. या वचनकी जो थ्रस्ट् हे वाकु समझवेको प्रयास करो. या तरीकेको ब्रह्मकु उपनिषद् क्यों डिस्क्राईब् करे हे?

या तरीकेकी भाषाकी स्टाईलमें के कोई बात ब्रह्ममें बतावे तो वाको पॅरेलल् अपनेमें बता दे. अपनी कोई बात बतावे तो वाको पॅरेलल् ब्रह्ममें बता दे. जैसे ग्रीक फिलोसिफीमें कह्यो जातो हतो के **मेन इज् द मेज़र ऑफ ऑल थिन्ग्.** ऐसे ही उपनिषद् कहीं न कहीं या बातकु मानके चल रह्यो हे के "योर अहं इज् मेज़र ऑफ एवरी थिन्ग्." एक्च्युअली नहीं पर जा तरहसु अपन् वाकु वापर रहें हें वा तरहसुं. तो पेहले तुम अपने अहंकु पकड़ लो ना! तुम अपने अहंकु पकड़ लो, वाकु पकड़के समझ लो कोई बात, वा एन्गलसु ब्रह्ममें भी बात समझमें आ जायेगी. याहीलिये उपनिषद् ऐसे समझावे हे के जैसे अपन् जाग रहे हें, सपना देख रहे हें, सो रहे हें, ऐसे सृष्टिकी उत्पत्ति, सृष्टिकी स्थिति और सृष्टिको लय ब्रह्ममें एक तरहसु जागवेकी सपना देखवेकी और सोवेकी प्रक्रिया हे. ऐसे भी उपनिषद् बतावे हे के ब्रह्म जागे तो सृष्टि पैदा हो जाये; जागवेके बाद सृष्टि जा तरहसु चल रही हे वो ब्रह्मको एक स्वप्न हे, जासु इन अद्वैतीन् लोगनूकु ऐसी भ्रमणा होवे के या लिये मिथ्या हे स्वप्नवत्. वो स्वप्न अपनो स्वप्न नहीं हे. वो कौनसे अर्थमें स्वप्न हे वो भी उपनिषद्ने और भागवतने बहोत खुलासा करके समझायो हे. स्वप्नमें जैसे ज्ञाता और ज्ञेय, दो नहीं होवें हें. ज्ञाता ही खुद ज्ञेय बनके अपने आपकु देख रह्यो होवे हे, ऐसे ब्रह्म खुद अपने आपकु देख रह्यो हे. "**स आत्मानम् द्वेधा पातयत्**" (बृह.उप.१।४।३) माने ज्ञातृ-ज्ञेयभावेन् द्वेधा पातयत्, भोक्तृ-भोग्यभावेन् द्वेधापातयत्, कर्तृ-कार्यभावेन् द्वेधापातयत्, वाने अपने आपकु कर्ता और कार्य के रूपमें, ज्ञाता और ज्ञेय के रूपमें, भोक्ता और भोग्य के रूपमें द्वेधा बनायो हे. अब वो अपन् या बातकु स्वप्नमें समझ सकें के जब अपन् स्वप्न देख रहे हें हाथीको, तो हाथी कौन हे? अपनो अहं. हाथीकु देख कौन रह्यो हे? अपनो अहं. सारी सृष्टिकी प्रक्रियाकु उपनिषद् या टर्मिनोलोजीमें समझानो चाहे हे के ब्रह्म सारो जगत् बन्यो हे, खुद अपने आपसु अनेक रूप

बन्यो हे वा अर्थमें वो सपना केह रह्यो हे, मिथ्याके अर्थमें नहीं. लोगनूकु ऐसो भी इन्टरप्रेटेशन् सूझे हे के याके कारण जगत् मिथ्या हे. जैसे अपनो स्वप्न मिथ्या हे. वो तो ऐसे भी अपन् केह सकें हें जैसे अपनो अहं देश काल में परिच्छिन्न हे तो यासू ब्रह्मको अहं भी देश कालमें परिच्छिन्न हे. यदि ब्रह्मको अहं देश काल में परिच्छिन्न होय तो देश काल तो ब्रह्मके अहंमें प्रकट भये हें. जो देश काल ब्रह्मके अहंमें प्रकट भये, वो देश काल ब्रह्मको परिच्छेद कैसे करेंगे? परिच्छेद माने कम्पाउन्डवॉल्. अपनो अहं देश काल के कम्पाउन्डवॉलमें हे. यदि ब्रह्मको अहं भी देश काल के कम्पाउन्ड् वॉलमें हे, माने कोई एक पर्टिकुलर टाईमूमें माने कोई एक पर्टिकुलर पीरियडमें और पर्टिकुलर स्थलमें ही ब्रह्मको अहं होतो होय तब एसो हो सके. पर यहां तो देश काल खुद ब्रह्मके अहंमें प्रकट भये हें. जो ब्रह्मके अहंमें प्रकट भये वो ब्रह्मको कम्पाउन्डवॉल कैसे बनेंगे? उलटो ब्रह्मको अहं देशकालको कम्पाउन्डवॉल हे. ब्रह्मके अहंमेंसु सारी प्रकट सृष्टि प्रकट भई हें. बात समझमें आई ना!

(ब्राह्मिक अहं स्वाभाविक या आर्टिफिशियल्?)

अब ये प्रश्न विचारणीय हो जाये के ब्रह्मके अहंकु स्वाभाविक माननो या आर्टिफिशियल् माननो? वामें ये बतायो के यदि सृष्टिके एन्गलसु अपन् देखें तो अपनेकु लगे के ब्रह्मको अहं भी आर्टिफिशियल हे और ब्रह्मके एन्गलसु ब्रह्मकु यदि देखे तो वामें कुछ भी आर्टिफिशियल् नहीं हे क्योंके जो भी आर्ट पैदा भयो हे वो ब्रह्मके भीतर हे. वो बाहर प्रकट हो गयो हे. जैसे समुद्रके किनारापे बह बह के कई सीप आवें, कई घोंघायें आवें, शंख आवें. किनारापे आवें तो अपनेकु लगे के (किनारापे अभी) पैदा भये हें पर सोचो, किनारापे आये कहांसु? समुद्रमें हते तब तो किनारापे आये ना! ऐसे सृष्टिके किनारापे वो नाम, रूप, कर्म ब्रह्ममेंसु आ रहे हें, वासु अपनेकु लगे के ये पैदा हो रहे हें. बाकी समुद्रमें हें तभी तो आ रहे

हें. मैंने आपकु एक बखत बताई हती के अचानक कोई दूसरे ग्रहको आदमी चर्चगेटके सामने खड़ो हो जाये तो वो ऐसे समझेगो के हर पांच मिनटमें इतने इतने मनुष्यनूकु पैदा करवेवाली कोई फॅक्टरी हे. जैसे दूध फिलिंग प्लान्टमेंसु दूधकी बॉटल निकले, मिलमेंसु कपड़ा निकले, ऐसे थोड़ी थोड़ी देरमें आदमी निकल रह्यो हे. अब या एन्डसु देखोगे तो सीन तो याही तरहसु नजर आयेगो ना! हर पांच मिनटमें प्रोडक्शन् एक लॉटको आ जाये. पर वो लॉट जो ट्रेनमेंसु आ रह्यो हे, चर्चगेटमेंसु बाहर निकल रह्यो हे, वो चर्चगेट पैदा नहीं कर रह्यो हे, सिर्फ बाहर निकाल रह्यो हे जो वाके भीतर ट्रेनमेंसु आये हें. ऐसे ब्रह्ममें जो भी नाम, रूप, कर्म हें वो बाहर निकल रहे हें, पैदा ब्रह्ममें नहीं हो रहे हें. अपने यहां पैदा हो रहे होयगें. एक इन्टरप्रेटेशन् वा तरीकेको भी हो सके हे.

('अहं' और 'त्वम्')

समझवेकी बात यामें ये हे जो कन्सॅप्ट्की डायलेमा हे. क्योंके जबतक अपनेकु 'अहं'को बोध नहीं होवे तबतक 'तुम'को बोध नहीं होवे. अब अहंकी प्रायोरिटी अपनूने मान रखी हे या लिये अपन् सोचें हें के अहंके कारण 'तुम'को बोध होवे हे. यदि नवजात बच्चाकी सायक्लॉजीमें जाओगे, तो 'तुम'के कारण वाकु अहंको बोध होतो होवे हे. सारे तुमनूकु देखतो रहे वो के तुम मम्मी, तुम पप्पा, तुम ये, तुम वो, तुम खिलोना, तुम पलना, तुम लाइट, तुम पंखा, तब अचानक वाकु होवे के ये सब दीख कौनकु रह्यो हे? मोकु. वाकु 'तुम'के कारण अहंको बोध होतो होवे. 'अहं' कहो के 'तुम' कहो, बस ये रिलेटिव् टर्म हे काका-भतीजा टाईपकी. काका होय तो भतीजा होय और भतीजा होय तो काका होय. 'तुम' होय तो 'अहं' होवे और 'अहं' होय तो 'तुम' होवे. वा स्थितिमें यदि ब्रह्म एकाकी हे, तो वाको अहं स्वाभाविक नहीं हो सके. याहीलिये महाप्रभुजीने आज्ञा करी के **''ईश्वरस्यापि ईशितव्यापेक्षणात् सृष्टिः''** ईश्वर ईश्वर हे. अब ईश्वर होनो रिलेटिव टर्म् हे. जैसे पिता हे, पत्नी हे, बेटा हे तो ये रिलेटिव् टर्मस् हें. कौनको पिता, कौनकी पत्नी, कौनको बेटा, कौनको भाई? जब अपनूकु कौनको पता होय तब पता चल सके, नहीं तो कैसे पता चले के कौन पिता हे, कौन बेटा हे, कौन पत्नी हे, कौन भाई हे? ये रिलेटिव् टर्म् हे. ऐसे 'अहं' रिलेटिव टर्म हे के नहीं? 'तुम'के रिलेशनूमें यदि अहं पैदा होतो होय, तो हर अहंको एक तुम चहिये हे और हर तुमको एक अहं चहिये. जैसे हर काकाको एक भतीजा चहिये, हर भतीजाको एक काका चहिये, हर बापकु समझ आवेके लिये एक बेटा चहिये. और बेटाकु समझवेके लिये वाके संदर्भमें एक बाप होनो चहिये ना! तभी तो बेटा समझमें आयेगो! ऐसे यदि 'हम' 'तुम' भी और 'मैं' 'तुम' भी यदि रिलेटिव् टर्म् होंय तो सवाल ब्रह्मकी एकाकीतामें बड़ो भारी बिफरके सामने आवे के भई कौनके रिलेशनूमें ब्रह्म अहं हे? आखिर बतानो तो पड़ेगो ना के ब्रह्मको यदि अहं हो रह्यो हे तो कौनके रिलेशनूमें? तो महाप्रभुजीने वहां एक न्याय बतायो के वामें क्योंके ब्रह्ममें ऐश्वर्य गुण रह्यो भयो हे पोटेन्शियली, वो ऐश्वर्य गुण वाकु प्रेशराईज़ करे हे के मैं ईश्वर हूं तो ईशीतव्यकु प्रकट करूं. ऐसे वामें अहं रह्यो भयो हे, वो वाकु प्रेशराईज करे के तुम प्रकट करूं. **''स एकाकी न रमते स द्वितीयम् ऐच्छत्''** (बृह.उप.१।४।३). कं द्वितीयम् ऐच्छत्? त्वम्. वाके अहंके प्रेशरके तहत त्वम् पैदा भयो हे. अब वाके अहंके प्रेशरके तहत त्वम् जो पैदा भयो हे, वो त्वम् बाहरसु कोई इम्पोर्टेड् आइटम् तो हे नहीं, अपने आपमेंसु वाने त्वम् पैदा कियो हे. माने अपने अहंमेंसु वाने एक त्वम् पैदा कियो हे. या कन्सॅप्ट्की ब्युटीकु देखो के ब्रह्मको जो ब्राह्मिक अहम् हे वो ब्राह्मिक अहम्मेंसु एक त्वम् पैदा भयो हे. अपन् सब ब्रह्म. ब्रह्म अपनेकु तुम केह सके, अपने अहंके संदर्भमें तुम सब जीव, ऐसे ब्रह्म केह सके. पर अपनूकु ब्रह्म तुम कैसे केह सके? खुदके अहंके संदर्भमें. अपन् अपनेकु

अहं कैसे केह सकें, ब्रह्मके संदर्भमें. वा अर्थमें रिलेटिव् हे. रिलेटिव् होवेके कारण आर्टिफिशियल् हे के स्वभाविक हे? यामें सृष्टिके एन्गल्सु वाकु आर्टिफिशियल् मान्यो गयो हे और स्वरूपके एन्गल्सु वाकु स्वाभाविक मान्यो गयो हे.

या पॉइन्ट्कु आप सरलतासु समझ सकोगे. जैसे बुद्धिमान विद्यार्थी होय और वाकु अपन् अच्छे स्कूल या कॉलेज में पढ़वे भेजें. अच्छे स्कूल, अच्छे कॉलेजमें पढ़वे भेज्यो तो वाकी बुद्धि बराबर खिल जाये. अच्छी स्कूल या अच्छी कॉलेजमें बुद्धि खिलेगी कब? जब बेसिकली बुद्धिमान होय तो. खुद डोबा होय तो, अच्छी स्कूलमें भी मुन्नाभाईकी तरह मोबाईल्सु परीक्षा पास करेगो ना! अक्कलसु पास नहीं करेगो. ये हर बखत चक्कर रेहवे ही हे. ऐसे ब्रह्मने जो तुम पैदा कियो हे, तो वाके अहंमें इतनी पोटेन्शियलिटी हे के वो तुम पैदा कर सके.

अब ये ब्रह्मकी कोई असाधारण बात या अलौकिक बात हे ऐसी बात नहीं हे. सारे बच्चा जो मातापितासु पैदा होवे हे, वो मातापिताके अंशसु ही तो पैदा हो रहे हें. बायोलॉजिकली या बातकु समझवेकी कोशिश करो, के अपने सेलमें अहंको पार्ट पैदा होवेके बाद 'तुम' हो रह्यो हे. जबतक बॉडीमें हतो तबतक वो 'अहं' हतो, जब पैदा हो गयो तो वाके बाद "तू बेटा", "तू बेटी", ये हो जाये. ये कोई इतनी बड़ी चमत्कारकी बात नहीं हे. डे टु डे लाइफ्में भी अपन् याको अनुभव कर सकें ऐसी बात हे के अपने अहंमेंसु अपन् भी 'तुम' पैदा कर रहे हें. जो अहंको पार्ट हतो वो अब 'तुम' बन गयो अपने आप अहंमेंसु.

अपने अहंमें भी वो पोटेन्शियलिटी हे के 'तुम'कु पैदा कर सके. तो ब्रह्मके अहंमें वो पोटेन्शियलिटी क्यों नहीं होयगी? ब्रह्मने अपने अहंमेंसु जो 'तुम' पैदा कियो, वो 'तुम' जो पैदा भयो वह

सारी सृष्टि हे. वो 'तुम' पैदा याकी सृष्टि हे तो ये 'अहं' माने ब्राह्मिक अहं विसाविस् अब्राह्मिक माने जगत्को 'त्वम्' कैसो हे? वाकु अपन् यों समझ सकें के वो व्यवहार नहीं होके लीला हे. क्योंके व्यवहार जबभी अपन् करें हें, तो कोईके साथ व्यवहार करें हें. खुदके साथ अपन् व्यवहार नहीं करें हें. खुदके साथ जो कुछ अपन् कर रहे हें वो अपन् लीला ही कर रहे हें. ब्रह्मके लिये अहं एक लीला हें. अहंके या पेहलुकु समझवेकी कोशिश करो के ब्रह्मको अहम् एक लीलात्मक अहम् हे. अपनो अहं लीलात्मक हे के नहीं वा पॉइन्ट्पे आयेंगे पीछे; पर पेहले या बातकु समझके चलो के ब्रह्मको अहं लीलात्मक अहं हे. लीला क्यों हे? क्योंके ब्रह्मने अपने आपकु 'तुम'में प्रकट कियो हे. खुदने तुम प्रकट कियो हे वा 'तुम'के रिलेशन्में खेलमें वो अहं बन गयो हे. एग्ज़ेक्टली वाको फॉर्म कैसो हे? बैठे बिठाये कोई आदमी, कोई बच्चा खेलते खेलते राजा बन जाये. बैठे बिठाये कोई बच्चा चोर बन जाये. अब वो राजा बन्यो के चोर बन्यो, खेलमें, वो तो लीला ही हे ना! सचमुचमें न वो राजा हे और न वो चोर हे. खेल हे वो. ऐसे न अहं हे और न त्वम् हे. ब्रह्मकी अखंडता हे वामें **"अखण्डम् कृष्णवत् सर्वम्"** (त.दी.नि.२।१८२) महाप्रभुजी कहें हें. कृष्णकी अखण्डतामें अहं त्वम्के खण्ड नहीं हे. लीलार्थ वामें वो खण्डित प्रकट भये हें.

अपन् याकु यों भी समझ सकें हें, के जैसे अपने शरीरमें माथाकु उत्तम मानें हें. पैरकु अधम् मानें हें. सचमुचमें पैर अधम हे क्या? सचमुचमें माथा उत्तम हे? अब कहें के वर्टिकल् एन्गल्सु सोचो, तो माथा ऊपर हे और पैर नीचे हे, या अर्थमें. तो क्या अपन् जब सो जा रहे हें, तब अधम और उत्तम एक लेवलपे आ गये. समझो रामदेवजीके कहेने पर तुमने शीर्षासन कर्‍यो तो लफड़ा हो गयो न पाछो! जाकु तुम उत्तमांग समझ रहे हो, वो अधमांग हो गयो. जाकु तुम अधमांग समझ रहे हो वो उत्तमांग

हो गयो. दोनों पैर ऊपर हो गये. अपने पैरकु और अपने माथाकु अधम उत्तम होनो अपनूने लीलार्थ मान लियो हे. कोई बखत शीर्षासन करनो हे तो माथा अधमांग हे और पैर उत्तमांग हें. कोई बखत सोनो हे तो दोनों एक हें. खड़े होनो हे तो पैर अधमांग हें और माथा उत्तमांग हे. ऐसे ब्रह्मको जो अहं हे, वो अहं एक लीला हे, वो इतनी सीरियस् बात नहीं हे. जैसे एक्टर कोई भी एक कॅरेक्टरको रोल् एक्सेप्ट् करे के भई मैं ये रोल एक्सेप्ट् कर रह्यो हूं. वो जो कॅरेक्टरको रोल एक्सेप्ट् कर रह्यो हे, वाको एक्टरमें अहं पैदा होवे के नहीं? अब वो अहं कितनी देर होयगो? जितनी देर स्टेज्पे एक्टर रहेगो उतनी देर कॅरेक्टरको अहं वामें रहेगो. ऐसे जितनी देर ब्रह्म 'तुम' प्रकट करके रखे हे, उतनी देर ही ब्रह्म 'अहं' सोचे हे. बाकी जा बखत तुम प्रकट नहीं करे, वा बखत ब्रह्मकु न तुम सोचवेकी जरूरत हे और न अहं सोचवेकी जरूरत हे क्योंके सब कुछ ही तो ब्रह्म हे. **कृष्णे सर्वात्मके** जो तुम हे वो कृष्ण नहीं हे क्या? तुम भी कृष्ण हे पर ब्रह्मने अपनेमेंसु तुम एक सेपरेट प्रकट कियो तो वाने एक लीला प्रकट करी. तुम्हारे तुमके संदर्भमें अब "मैं अहं हूं." अब अपन् दोनों खेल खेलेंगे. तुम तुम होवेको खेल खेलो और मैं अहं होवेको खेल खेलूं. वा अर्थमें या रहस्यकु समझो के ब्रह्मकी अहंलीला हे. अपने अहंमें सोचे के ये अहं सिद्ध हे के साध्य हे, करण हे के क्रिया हे, के कार्य हे के कर्ताको कॅलिस्डोपिक् पिक्चर हे, भई जो कछु हे सो सब वामें हे. करके ब्रह्मकी अहंलीला हे. वा लीलामेंसु अहंक्रिया उत्पन्न होवे पर अहंक्रियासु अहंलीला नहीं हो रही हे. जैसे स्टेज्में एक्टरने जो रोल एक्सॅप्ट् कियो वो रोल एक्सॅप्ट् करवेके बाद वो क्रिया वहां प्रकट होयगी.

(अहंक्रिया)

मैं कल आपकु बता रह्यो हतो ना अमरीशपुरीकी बात, वो

अमरीशपुरीको ऑडिटोरियम्में ड्रामा हतो. वो ड्रामा हतो "मैं सुअर". वा ड्रामामें अमरीश पुरी खड़ो होके नहीं चलतो हतो, दोनों हाथ पैरसु सुअरकी तरेह चलतो हतो. अब ध्यानसु देखो के वह अमरीशपुरी जाकी आवाजमें सुअरपनो नहीं हे शेरपनो हे, जाकी पर्सोनालिटीमें शेरपनो हे, सुअरपनो नहीं दीखेगो, पर वो जा बखत एक्टिंग् सुअरकी करतो हतो के "मैं सुअर हूं", अपने रोंगटे खड़े हो जायें. मैंने दो तीन बखत वो ड्रामा देख्यो. सचमुचमें रोंगटे खड़े हो जाते जा बखत वो सुअरकी एक्टिंग् करतो. तो वो जो रोल हे सुअरको के "मैं सुअर हूं", सुअरको मेकअप नहीं कियो, माइन्ड इट, पर सुअरकी तरह स्टेजपे मूवमेन्ट् करे, सुअरकी तरह फिरे, वा तरहसु अपने आपकु वो सुअरकी तरह प्रोजेक्ट् करे. अमरीश पुरी जैसो एक्टर अपने आपकु सुअरकी तरह दिखावे, तो वो सुअरकी क्रिया वाकी लीलासु प्रकट हो रही हे के क्रियाके कारण वो लीला कर रह्यो हे? लीलासु क्रिया प्रकट हो रही हे ना सुअरकी? सुअरकी सब क्रियायें कर रह्यो हतो वो स्टेजपे, आदमीकी तरह नहीं चलतो हतो. वा ड्रामामें स्टोरी या तरहसु हती के आदमीकु सब लोग मिलके हिप्नोटाईज़ कर दें के तुम पापी हो, तुम ये ढीकड़े हो, तुम पूछड़े हो, तो ऐसे ही दो चार जने मिलके वाकु समझा दें के तुम सुअर हो और वो कन्विन्सड् हो जाये. जैसे गुसाईंयनूकु तुम समझा दो के तुम सर्वसमर्थ हो तो साधित अहंकारकी ही ये स्टोरी हती. ये आखी साधित अहंकारकी स्टोरी हती के वाको अहंकार सब लोगनूने मिलके ऐसो साध दियो के वो कन्विन्सड् हो जाये के "मैं सुअर हूं." जब वो कन्विन्सड् हो जाये के मैं सुअर हूं तब आखे स्टेजपे वो सुअरकी तरह फिरतो रहे. वाके भीतर सुअरकी क्रिया प्रकट हो रही हें, वो लीलाके कारण प्रकट हो रही हें, क्रियाके कारण वो लीला नहीं कर रह्यो हे. सुअर जो सुअरकी क्रिया करेगो ना, वो लीलार्थ नहीं कर रह्यो हे, माइन्ड इट, वो तो क्रियाके कारण सुअरकी क्रिया कर रह्यो हे. पर अमरीशपुरीमें

जो सुअरकी क्रिया प्रकट भई वो लीलाके कारण प्रकट भई. ऐसे सारे जगतमें ब्रह्मकी अहंलीलासु अहंक्रिया प्रकट होवे याको विस्तार मैं आपकु अच्छी तरहसुं समझा चुक्यो हूं.

(अहंलीला अहंक्रिया और अहंकर्म)

या अहंक्रियामेंसु अहंकर्म पैदा होवे. अहंक्रिया और अहंकर्म को डिफरेन्स् क्या? जहां ज्ञान इच्छा और प्रयत्न के साथ अहंक्रिया चलती होय, वहां अहंक्रिया क्रिया नहीं रेहके अहंकर्म बन जायेगो. याहीलिये मैं इतने दिन विस्तारसु ये बात आपकु समझा चुक्यो. पंखा चल रह्यो हे वो क्रिया हे, कर्म नहीं हे. अपन् चल रहे हें वो क्रिया नहीं हे कर्म हे. क्यों? क्योंके ज्ञान इच्छा और प्रयत्न के इन्स्ट्रुमेन्ट्कु यूज़ करके अपन् क्रिया कर रहे हें. अहंक्रियासु अहंकर्म पैदा होवे. जब अहंकर्म पैदा होवे, तब अपन् सारो अहंको व्यवहार कर सकें हें. एक स्टेज वामेंसु फिर ये निकले हे - अहंलीला, अहंक्रिया, अहंकर्म. बात समझमें आई?

अपने यहांकी परिभाषामें जैसे महाप्रभुजी समझावें हें वा तरहसु देखनो होय तो **''अनायासेन हर्षात् क्रियामाणा चेष्टा लीला''** (सुबो.१।१।१७) आनन्दके उच्छलनके कारण, कोई उद्‌देश्यसु नहीं, मोकु ये काम करके ये बात हासिल करनी हे वा हासिल करवेकेलिये भी नहीं, अपने आनन्दकु आउटलेट् देनो हे. जैसे अपनेकु जो आनन्द आ रह्यो हे वाकु आउटलेट् देवेकेलिये अपन् गाना गावें. अपनेकु जो प्रसन्नता हो रही हे वाकु आउटलेट् देवेकेलिये अपन् हंसे. अपनेकु जो दु:ख हो रह्यो हे वाकु आउटलेट् देवेके लिये अपन् रोवें. अपने भीतर जो हो रह्यो हे वाकु अपन् आउटलेट् देनो चाहें. अब वो आउटलेट् देवेकी प्रक्रियामें वो आनन्दके उच्छलनके कारण जो आउटलेट् आतो होय, वा आउटलेट्कु महाप्रभुजी कहें हें लीला हे. कामके उच्छलनसु आतो होय, बहोत सारे आउटलेट् अपने कामके कारण आयेंगे. माने

अपनेकु ये इच्छा हे के ये हो जाये, वाके कारण कुछ कर्मको उच्छलन होयगो. कामके वश जो कर्मकु उच्छलन हो रह्यो हे, वो कर्मको उच्छलन, उच्छलन माने बाहर आनो, जैसे समुद्रमेंसु सीप और शंख बाहर आवें, ऐसे मूलमें आपकु पता होयके नहीं, पर जस्ट फॉर योर इन्फॉरमेशन् के जो भी, पॅरेलॅलिज़म् खाली आपकु बता रह्यो हूं, के जो भी सीप या जो भी घोंघा जीवित होय ना, वो तो समुद्रमें नीचे ही रहे. समुद्रके नीचे क्या होवे हे के मच्छी उनकु खा जाती होवें हें. मच्छीनूकी खुराक वो सीप और घोंघा होवें हें. वैसे तो नेचरने उनकु बहोत कठोर आवरण पैदा किया हे, पर कोई बखत वो गफलतमें फंस जायें. खुले भये होंय और मच्छी आके उनकु खा जाये. अब खावेके बाद उनकी खाली शैल शैल रेह जाये. अन्दरको जीव मच्छी खा जाये. वाके बाद शैलमें ये सामर्थ्य नहीं रेह जाये के वो समुद्रके पैंदामें रेह सके. वाके बाद समुद्रकी लेहरमें उछलके वो बाहर आवे. वामेंसु चित् तिरोहित हो जाये. सत् बाहर प्रकट हो रह्यो हे. ये वाको पॅरेलॅलिज़म् समझो के मच्छी खा गई वाके कारण. ये इन्टरेस्टिंग् पॅरेलॅलिज़म् हे. वो नाम, रूप, कर्म वामेंसु चित् तिरोहित भयो करके किनारेपे आ जाये सब घोंघाकी तरह. क्योंके वामेंसु जो जीव हतो चित्, वो तिरोहित हो गयो. जितने सीप और घोंघा किनारापे आवें वाको मूल रहस्य बड़ो मजेदार हे ये. अपन् समुद्रके किनारापे जाके अच्छी तरहसु देखें तो या बातको रहस्य आपकु दिखलाई देगो बिखर्‍यो भयो. जबतक वामें जीवित होय, पर जब खाली शैल बच जाये तो वामें चिपकवेकी ताकत कमजोर हो जाये और पानी वाकु अपने नेचुरल फोर्समें जो सरफेसटेन्शन्‌को सिद्धान्त हे वाके कारण वो हर चीजकु सरफेसपे ले आवे. ऐसे ही समुद्रमें जो उच्छलनको सिद्धान्त हे वैसेही ब्रह्ममें आनन्दके उच्छलनको जो सिद्धान्त हे, वासु नाम रूप और कर्म चित् और आनन्द के तिरोधानसु सृष्टिके किनारापे प्रकट हो जायें हें. एक स्ट्राइकिन्ग् पॅरेलॅलिज़म अपन् यामें देख सकें

हें. वा कारणसु वो अहंलीला, अहंक्रियाके रूपमें उच्छलित होवे हे. उच्छलित माने उफननो. जैसे कढ़ी उफने, तपेलाके बाहर आवे. दूध उफने और तपेलाके बाहर आवे. ऐसे आनन्द उफने और बाहर आवे वाको नाम उच्छलन.

(स्वभाव और प्रभाव की अहंपे असर)

जब ये बाहर प्रकट भई अहंक्रिया तो वाको स्कोप समझो. वाको स्कोप या तरीकेको हे के अपनेमें जो भी अहंक्रिया प्रकट हो रही हें, या तो स्वभावसु प्रकट हो रही हें या प्रभावसु. जितनो भी साधित अहं हे वो प्रभावसु हे. जितनो भी सिद्ध अहं हे वो स्वभावसु हे. मैंने गोस्वामीनूको उदाहरण दियो. डॉक्टरको उदाहरण दियो, वकीलको उदाहरण दियो. वकीलके क्लाईन्ट जाके कहें के आपकी प्रशंसा क्या की जाये, जितनी की जाये उतनी कम हे. वामें तुरत एक साधित अहं हो जाये. वो प्रभावसु पैदा भयो अहं हे. वो स्वतः सिद्ध अहं नहीं हे. उनकी वाणी इतनी प्रभाविक हे क्योंके दस जनें मिलके अपनेकु कहें के तुम गधा हो तो हमकु लगे के सब जनें केह रहें हें तो होंगे शायद गधा. दस जनें मिलके केह दें के तुम पूर्णपुरुषोत्तम हो तो हमकु लगे के अपनेकु नहीं लग रह्यो हे पर दूसरेनूकु लग रह्यो हे तो कुछ तो होयगो पूर्ण पुरुषोत्तमपनो. लो संकल्प हाथमें पानी लेके छोड़ दो और केह दो के तेरे दो बेटा मरें. अब मरें के नहीं मरें वामें भी फिफ्टी फिफ्टी चान्सेस् हें ना! मरें तो मान लेगो और नहीं मरें तो जावा दो नी! या तरीकेको सट्टाको वामें स्वरूप हे. वो प्रभावसु अपनेमें अहंक्रिया पैदा हो जाये. माने सब लोग आके अपनेकु तुम तुम करते होंय तो अपनेकु लगे के सब लोग तुम तुम केह रहे हें तो हूं ना 'मैं'. ''मैं हूं ना!'' तुरत हो जाये. जब सब केह रहे हें तो अपनेकु लगे के ''मैं हूं ना!'' वो प्रभावसु पैदा भयो अहं हे. एक स्वभावसु अहं होवे हे. बहोत सोबर होवे हे. बहोत

माईल्ड् होवे हे. बहोत स्वस्थ होवे हे. बच्चाके जैसो भोलो होवे हे. वामें या तरीकेकी कॉम्प्लेक्सिटी नहीं होवे. बहोत शुद्ध होवे जो स्वभावसु अहं होतो होवे हे. प्रभावसु अहं होवे हे वामें जिन लोगनूको प्रभाव हे वो अपनेमें बोलवे लग जाये. माने प्रभावके अहंकी खासियत ये हे के षडयन्त्र आपको और प्रकट मेरेमें होवे. मैं जिम्मेदार जरा भी नहीं. आपने षडयन्त्र कियो के आप तो सर्वसमर्थ हो. आपके क्या केहने! थोड़ी देर बाद वो साधित अहं हो जाये. अब सर्वसमर्थ नहीं केहके 'गधा' कहो तो गधाको अहं हो जाये. आदमीकु सचमुचमें कांचमें चेहरा देखवेकी इच्छा हो जायेगी के हें के नहीं देख तो लें एक बखत. सब जनें केह रहें हें तो चक्कर क्या हे! ये स्वभाव और प्रभाव को निरन्तर अपने साथ इन्टरएक्शन् चलतो रहे. पर स्वभावकी बात बड़ी इनोसेन्ट् होवे हे और प्रभाववाली बड़ी कॉम्प्लीकेटेड् होवे हे के कौनको प्रभाव अपनेपे पड़यो वापे सारी स्टोरी आगे चले हे. आपसु अहंक्रियाकी बात कर रह्यो हूं.

अब ये अहंकर्म भी स्वभावसु प्रकट हो सके, प्रभावसु प्रकट हो सके, हेरिडिटीसु प्रकट हो सके, पूर्वकर्मनूकी वासनासु प्रकट हो सके हे, मतलब वातावरणसु भी प्रकट हो सके हे. कैसे? जैसे अपनो एक अहं हे. के अपन् एशियन् हें. अपन् एशियन् हें ये अपनो आनुवंशिक अहं हे. क्योंके अपन् देखें हें के ह्युमनूएन्थ्रोपोलॉजिकली नीग्रो कुछ अलग स्टॉक् हे, युरोपियनूको व्हाइटस् अलग स्टॉक हे, रेडइंडियनूको स्टॉक अलग हे, ऑस्ट्रेलियामें ब्राउन स्टॉक हे. उनसु अपनेकु अलग देख पा रहें हें एशियन गेहुंआ कलरके. वो अपनेमें जो अहं आवे हे के ''मैं एशियन् हूं'', वो अपनो आनुवंशिक अहं हे. देखें तो अपनेकु तुरत वैसो अहं पैदा हो जाये. कोईकु बतावेकी भी जरूरत नहीं हे. बच्चा मूव करेगो और तुरत वाकु रियलाईज़ हो जायेगो के मैं यासु या अर्थमें अलग हूं. नीग्रोकु तुरत समझमें आ जायेगो के मैं अलग हूं. क्योंके आनुवंशिकतया

वो अहं अपने भीतर पैदा हो रह्यो हे. शुद्ध अहं हे. वो इनोसेन्ट् अहं हे.

(पूर्वकर्मवासनासू अहम्)

पूर्वकर्मवासना - या जन्मको पूर्वकर्म अथवा गये जन्मको पूर्वकर्म जो भी कुछ अपन् कर्म कर चुके हें वाकी कुछ न कुछ वासना अपने भीतर होवे ही हे. हिन्दीमें एक कहावत हे ''चतुर चुप कैसे रहे!'' चतुर हे कुछ पूर्वकर्म किये हें, चतुराई हासिल करी हे, वाकु बोले बिना चलेगो नहीं. ये पूर्वकर्मकी वासनाके कारण अपनेकु ''चतुर चुप कैसे रहे!'' तुरत वाकु बोलवेकी इच्छा हो ही जाये के ये ऐसे नहीं ऐसे हे. सेवामें अपन् देखें हें ना ''झारी ऐसे नहीं ऐसे पधराओ!'' क्योंके चतुर हे. अभी मैंने एक आर्टिकल् पढ़यो ''लोको झारी भरे छे. नेवरा बांधता तो आवड़तु ज नथी, शुं झारी भरशो! एटले हवेलीमा दर्शन करवा आवो.'' चतुर हे ना! वो कहे ''एम ज लपेटी दे नेवरा ने जोताज आपणने न गमे तो बधीज उत्तम वस्तुना भोक्ता साक्षात् प्रभुने आवा जेम-तेम लपेटेला नेवरा केवी रीते गमे झारी आरोगवामा! एटले हवेलीमा आओ. केमके तमने झारी भरवानुं फावतुं नथी.'' बता दियो ना तुमकु गधा! हर नये सेवा करवेवालेकु गधा सिद्ध कर दियो. जब गधा सिद्ध हो जायेगो तो सोचेगो के झारी भरवेके बाद नेवरा बांधनो नहीं आतो होय तो काहेकु व्यर्थमें रिस्क् लेनी! चलो हवेलीमें भरी भई झारीके दर्शन करवे. ये निरन्तर ''चतुर चुप नहीं रेहवेके'' अहं हे. बाकी ये प्रोब्लम तो होवे ही हे. वो सेवामें उनकु ठाकुरजीके बादमें दर्शन होवें पर गल्तीके दर्शन पेहले होवें हें. वाको मूलकारण क्या के खुद चतुर हें. ठाकुरजीपे तो उनकी दृष्टि पोंहचे ही नहीं. जाते ही उनकु गल्ती पेहले दिखाई दे जाये. जैसे टिकटचेकरकु विधाउटटिकटवाले पेहले दिखाई दे, ये सब एक्सपर्ट चतुर लोग ऐसे ही होंवे. उनकु ठाकुरजीके दर्शन होवें ही नहीं. ये कलगी यों नहीं यों धरानी चहिये

हती. ये बागा यों नहीं यों घुसनो चहिये हतो. अरे भई क्या लफड़ा हे? ठाकुरजीके दर्शन क्यों नहीं हो रहें हें? नहीं हो सकें. चतुर हे ना! रीति पढ़ ली तो वाके बाद चुप कैसे रहेगो वो! बोले बिना तो मानेगो नहीं! ये जो पूर्वकर्मनूकी वासनायें, उनसु ड्योढ़ो चतुर कोई मिल जाये तो पाछे ठप हो जाये. फिर बोलनो बंद कर दें. इन चतुरनूकी येही सब तकलीफ होवे हे. उनसु ड्योढ़ो कोई मिल जाये तो बोलती बंद हो जाये. जरा कोई कमजोर मिल्यो नहीं तो तुरत हावी हो जायें वापे. चतुरनूकी ये समस्या होवे ही हे. कहीं भी अपन् सेवा करें ना! बिन मांगी सलाह देवे आ जायें ''आम थाये ने आम न थाये.'' मूलमें चतुर हें वो. उनकी प्रॉब्लम हे के वो चतुर हें. तो चतुर चुप कैसे रहे? ये जो पूर्व कर्म वासना हे वो आदमीकु मुखरित करती रहे हे.

(व्यक्तिगत और सामुहिक अहम्)

वातावरणके कारण भी अपने अहंको कर्म पैदा होवे हे. भई जा तरेहके वातावरणमें अपन् पल रहे हें, वा वातावरणकी डिमान्ड् ऐसी होवे के वो कर्म अपनेकु करनो ही पड़े. वो वातावरणके प्रेशरके तहत ही अपने वा तरीकेके अहंकर्म पैदा होते होवें हें. ये अहंकर्म व्यक्तिमें भी पैदा होवें हें और समुदायमें भी पैदा होवें हें. अब चाहे व्यक्तिमें पैदा होते होंय या समुदायमें पैदा होते होंय, शर्त वाकी ये कायम रहेगी. व्यक्तिमें पैदा होंय तो भी ज्ञान इच्छा प्रयत्न, भान, इच्छा, प्रयत्न और समुदाय में भी पैदा होते होंय तो समुदायको भी कुछ भान होतो होवे हे. जा भी वातावरणमें अपन् जीते होंय, वा वातावरणको अपने ऊपर बहोत प्रेशर आतो होवे हे. जैसे गाममें अपन् कितनो टाईम सेवामें खर्च सकें? उतनो टाईम अपन् बम्बईमें खर्च सकें? नहीं खर्च सकें ना? सेवा करवेको भाव नहीं हे, ऐसी बात नहीं हे. पर बम्बईको वातावरण ऐसो हे, के बहोत फास्ट् और टाईम् कन्ज्युमिंग् हे ट्रांस्पोर्टेशनूमें. प्रेशर हरेक व्यक्तिपे होवे ही

हे के नहीं? अपने यहां वार्तामें आवे के नन्ददासजीके साथ जो चल्यो हतो... दो तीन दिन तक भीख मांगवे बैठ्यो रह्यो. अपने यहां सिगनलपे भीख मांगे भिखारी तो आधी मिनटसु ज्यादा भीख नहीं मांगे. वाको प्रेशर वापे भी हे के एक कारसु भीख नहीं मिली तो तुरत दूसरी कारपे जावे. दूसरी कारसु नहीं मिली तो तीसरी कारपे जाओ. व्यर्थमें इतनी धीरज कौन रखेगो वहां के आस लगाये बैठे भये हें. हम आस लगाके बैठ रहे और तुम वादा करके भूल गये. ऐसे कोई आस नहीं लगावे कोई भिखारी. वाकु भी फुरसत नहीं हे. क्योंके सिटी लाईफको अपने आपमें टेन्शन् इतनो हे के वाको अहंकार भी वा तरहसु फॉर्म्युलेट हो जाये ना! रिक्शामें जाओ तो कहेगो''ए बाई दे!'' और लेवेके लिये खड़े नहीं रहें. मैंने कई बखत देख्यो हे के मांग रह्यो हे तो मांगवेके लिये हाथ तो फॅला पर वोभी नहीं फॅले और दूसरी तरफ निकल जाये. ये क्या हे? उनपे भी टॅन्शन् हे वातावरणकी जिनकु कुछ लेना देना नहीं हे. सिटी लार्फफको ये रहस्य हे. कभी भी रिक्शामें बैठके देखियो, हर बखत ये मुकाबला करनो ही पड़े. हरेक आदमीपे वातावरणके कारण वो अहं निरन्तर प्रोसेस ही रहे. अपनेकु वातावरणके अनुरूप ढालवेकेलिये वा तरहसु एलर्ट रेहनो पड़े. जो नहीं ढाल पावे वो या तो टूट जाये हे या फिर वातावरणके अगेन्स्ट् रिवोल्ट् करे हे. सारे वातावरणके बीचमें अपने अहंकी इन्टीग्रिटी निभानी बहोत मुश्किल हे.

पुराने जमानेमें कोई मर जातो तो आखो गाम दुःखी होतो. कोई लेना देना होतो के नही, अपने सगे संबन्धी नहीं, पर गामको आदमी मर गयो तो सबकु दुःख होतो. मैंने बात बताई हती आपकु के उनकी पत्नी चली गई और मैंने और गिरिधरबाबा कामवनवालेन् ने सोच्यो के खरखरा करवे जायें. वा दिन शुक्रवार हतो और कोई पिक्चर जा रही हती. हमने कही के ''चलो आज पिक्चर देख

लें कल खरखरा करेंगे. हम जाके बैठ गये वहां, तो इन्टरवलमें जब बत्ती जुड़ी तो बाजूमें ही बैठ्यो भयो हतो. मोकु तो आंख मिलावेमें शर्म आ रही हती के खरखरा करवे गये नहीं और पिक्चर देखवे आ गये. अब मैं माथा छिपाऊं तब तो वाने ही कही "केम छो श्यामुबाबा?" मैंने कही "बस मजामा." पत्नी चली गई हों! कल पत्नी गई और आज वो थियेटरमें बैठ्यो भयो हे!! मैं उनके घरमें रेग्युलर जातो हतो. सच्ची बात बताऊं. पत्नीसु झगड़ा भयो होय ऐसो मोकु लग्यो नहीं. पत्नी कर्कशा होय तो वेसो भी नहीं, दोनों मिलजुलके रेहते हते. बम्बईको वातावरण ऐसो हे के जो कोईकु ज्यादा दुःखी होनो एलाउ नहीं करे. या लिये अपने सारे लीडर कहें हें के "बम फोड़ो, के हत्या करो पर बम्बई काम करनो बन्द नहीं करेगो; काम तो चालू रहेगो". संगीतवाले संगीत गाते रहेंगे, क्लबवाले नाचते रहेंगे, सट्टावाले सट्टा खेलते रहेंगे, सबको काम चालू हे वाको नाम 'बम्बई.' तुम बम फोड़ जाओ, तुम मर्डर कर जाओ, कुछ भी कर जाओ पर यहां हम रुकेंगे नहीं. अब वो रिवोल्ट्की बात नहीं कहें, अपने मूंछपे ताव दें अपने लीडरें. तुमने हमकु मार दियो पर हम डरे नहीं. हम काम कर रहे हें, नाच रहे हें. जल्सायें कर रहें हें, कॉन्फरेन्स् कर रहे हें. अपनूकु इन्सेन्सिटिव होकेभी काममें लगे रहेनेकी स्पिरिट् हे. ये अहं कहांसु आयो? वातावरणके कारण. इजराईलमें हम्मास मारके जा रह्यो हे वहां, रोज मारे, पर वो ऐसो नहीं दिखा रह्यो के हमकु कुछ प्रभाव नहीं पड़ रह्यो हे मारवेको. वो दिखा रह्यो है भले मार जाओ हमकु पर हम तुमकु सहेन नहीं करेंगें हमभी मारेंगें. अपनो वातावरण ऐसो हे के कोईकु फुरसत नहीं हे. प्रथमेशकाकाजीने अपने मन्दिरपे लिखवायो के "ये मन्दिरकी दीवार हे, यापे थूकनो मना हे." अब वाकु पढ़वेकी कोईकु फुरसत नहीं. वापे ही इतनो थूक्यो के वो पाटिया ही दीखनो बन्द हो गयो! सब आदमी व्यस्त हें. टॅन्शन् हे बहोत ज्यादा टॅन्शन् हे. सबके अहं वा तरीकेके हें.

हमारे एक परिचित हते, पेडररोडपे रेहते हते. उनके मियांबीबीके बहोत झगड़ा होतो. बारीमेंसु चायकी रकाबी फ्लाइंगसॉसरकी तरह फट उड़-उड़के आती हती. कोई सोचे के क्या भयो!! एक रकाबी चायकी पूरी उड़के आ रही हे. तो अपन् जावें भी तो सिरपे हाथ रखके जावें के ना जाने क्या लफड़ा हो रह्यो हे! दोनोंनूको झगड़ा होतो तो वो आपसमें तो कुछ करते नहीं, वो चायके प्यालानूकी रकाबी वो वाकु मारे वो वाकु मारे. बारीमेंसु बाकायदा रकाबी निकलके आती हती. कोईकु इतनी फुरसत नहीं के एकाधकु लप्पड़ मार दें. वो सब गुस्सा चायकी प्याली रकाबीपे उतरतो. या लिये उनके घरके पास पड़ोसी भी सहमके चलते हते. वाको मूलकारणके झगड़ा इतनो हे बम्बईमें. बारीमें नीचेसु गुजरें तो पूरो रिस्क हे न जाने क्या माथापे पड़ेगो! क्योंके टॅन्शनूके कारण कोईकु इतनी फुरसत नहीं हे के देखके फैंके. खुली बारी हे तो फैंको माल. वा तरहके वातावरणके कारण सबको वा तरहको ईगो हे. या रहस्यकु समझो के ईगो समुदायकोभी हो सके हे, व्यक्तिकोभी हो सके हे. पर जबभी अहंकर्मको अहंकार होयगो वाकी प्राइमरी शर्त ये हे के वामें ज्ञान इच्छा और प्रयत्न बोलते होंयगे. क्रियाकु मैं काफी दिनसु समझा चुक्यो. बम्बईको उदाहरण समुदायके रूपमें ही तो दियो हे. कॅरेक्टर कोई बम्बईको बम्बईमें एकको नहीं हे, बम्बईके समुदायको कॅरेक्टर हे. बम्बईको जो नागरिक हे, वामें ये कॅरेक्टर आ ही जायगो. वाकु गामवालो जैसो वातावरण कभी नहीं मिलेगो यहां के कोईके मरेको इतनो दुःख माने. बम्बईवालेनूको सामुदायिक कॅरेक्टर हे. अपनेकु भान हे के दुःख करेंगे तो ट्रेन कैसे पकड़ेंगे. दुःख करेंगे तो ऑफिसमें कैसे जायेंगे. तुरत एडजस्टमेन्ट् वा हिसाबसु हो ही जाय. नहीं हो जाय ऐसी बात नहीं हे.

(अहंकर्म और अहंव्यवहार)

या रहस्यकु समझो के व्यक्ति होय के समुदाय होय, ज्ञान

इच्छा और प्रयत्न को वाको अहंको कर्म पैदा होवे हे. जब वो अहंको कर्म पैदा होवे हे, तब अपन् अहंको व्यवहार शुरु करें हें. वो चाहे कानूनी व्यवहार होय, चाहे नीतिको व्यवहार होय, चाहे भक्तिको व्यवहार होय. भक्तिको भी व्यवहार अपन् करेंगे, अहंको कर्म करते होंयगे तो भक्तिको व्यवहार हो सकेगो. भक्तिको विषय कोई भी होय, इर्रिस्पेक्टिव् भक्तिको विषय क्या हे? पर भक्तिको जो अपन् व्यवहार कर रहे हें, के भई याकी हम भक्ति कर रहे हें, भक्ति अपनो व्यवहार हे. व्यवहारकी कोई एक मोडसओपरेन्डी हे, कोई एक मोड हे. वो मोड अपनो चाहे कानूनको व्यवहार हे, वामें अपनो अहं बोलतो होय ना! जैसे टीचर और स्टुडेन्ट हे, तो उन दोनोंनूके बीचमें कोई कानून हे ना! के टीचर तुमकु कौनसे हद तक, जैसे गामको टीचर घरमें बुलाके पढ़ा सके, ऐसे यहां बम्बईमें टीचर नहीं पढ़ा सके. वो तो स्कूलमें ही जाके पढ़ायेगो. क्योंके सब स्कूलके नौकर हे. घरमें भी पढ़ातो होय तो स्कूलकु पाछी इन्क्वायरी करनी पड़े के ट्युशनके पैसा लेके तो पास नहीं कर रह्यो हे? ये सारे लफड़ा होवें ना! ऐसे हर बातमें व्यवहार चाहे टीचर-स्टुडेन्ट्को होय, कुछ भी व्यवहार होय, वा हर व्यवहारमें, अहंके व्यवहारमें ये सारी बातें इन्टरऐक्ट् होती होवें के कौनसे अहंकु लेके व्यवहार कर रहें हें. जैसे के ''मैं डॉक्टर हूं''. बहोत सारे डॉक्टरनूकु अपन् जानें, गाममें डॉक्टर होय तो शायद वो फीस भी इतनी नहीं लेवे, मुफ्तमें भी इलाज कर दे, शहरमें ये बात पॉसिबल् नहीं हे क्योंके अपनी दुकानको टॅक्स् भरनो होय, भाड़ा भरनो होय, दुकानको सारो खर्चा निभानो होय तो वो फीस् नहीं ले तो जाय कहां? वाके कारण अहंको व्यवहार जानते भये भी; डा. मानकेकु अपन् जाने ना के पेहले फीस् धरवा लेतो और वाके बाद हार्ट चीरतो. क्यों? वाको सिटीके लाईफ्के प्रेशरमें अपनो हार्टस्पेशलिस्टपनो निभानो हतो. वो डॉक्टरमें होय, के धर्मगुरु होय, चाहे कुछ भी होय सबके तहेत सबके साथ या तरीकेकी प्रॉब्लम् होवे ही हे.

वो अहंको व्यवहार जा तरेहसु पैदा भयो हे कर्म आपकु, वा कर्मके एकोर्डिन्गली वो अहंकु लेके दूसरेसु व्यवहार करे हे.

(कृष्णके साथ अहंको व्यवहार = सर्वथा दीनभावना)

अब देखो अपनो विषय आयो, **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना. अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्.** कृष्णके साथ तुम व्यवहार कैसे करोगे? तुम दुनियांमें व्यवहार कर रहे हो अपने अहंको, जा तरीकेको तुम्हारो अहंकारिक कर्म हे वा ढंगसु, पर जा तरीकेको तुम्हारो अहंकार प्रयुक्त कर्म हे वा तरीकेके अहंकारवाले कर्मको व्यवहार तुम कृष्णके साथ करोगे? यदि करोगे तो कृष्णके सामने वो जस्टिफाईड् नहीं हो पा सकेगो. वाको कारण क्या? क्योंके व्यवहारकी हर वक्त मर्यादा ये हे के जाके साथ तुम व्यवहार कर रहे हो वो तुमसु अलग हे. जासु तुम व्यवहार कर रहे हो वाकु तुमसु अलग होनो लाजमी हे. चाहे वो डॉक्टर होय, चाहे मरीज होय, चाहे बापबेटा होय, चाहे पतिपत्नी होय, चाहे कोई सरकारी ऑफीसर और प्रार्थनापत्र डालवेवालो होय, जहांभी अपन् व्यवहार कर रहे हें, वहां या तरीकेको व्यवहार होवे हे.

आपकु बड़ी मजेदार बात बताऊं अभी रीसेन्टली यहां पोयसरमें हमारे परिवारकी बड़ी जमीन हे. हमारे परिवारने वो बेच दी. मैंने वापे रॅलिन्क्वीश् डीड सन् ७४ में लिख रखी हती के मोकु नहीं चहिये. अब सरकारी खातामेंसु मेरो नाम नहीं निकल्यो. अब जाने खरीदी वाने मेरेकु घबरानो शुरु कियो के तुमने रॅलिन्क्वीश् नहीं कियो, नहीं तो वाकी डीड् दिखाओ. मैंने वाकी कॉपी तो रखी नहीं के डीड् लिखके छुट्टे पड़ गये. ''दाईने घोड़ो रमतो जमतो छुट्टो.'' पता नहीं कहां चली गई वो. अब वाने कही के ''या तो डीड् दिखाओ नहीं तो फिरसु रॅलिन्क्वीश् डीड् लिखो.'' मैंने कही के ''नहीं मिल रही हे तो फिरसु लिख देवें हें.'' मैंने तो पेहलेसु

ही रॅलिन्क्वीश् कियो भयो हतो तो दूसरी बार लिखवेमें क्या तकलीफ हे? हम उनकी ऑफिसमें कांदीवली गये. वाने आके कही के "या रॅलिन्क्वीश् डीड्पे इनके अकेलेके सिग्नेचर नहीं चलेंगे. क्योंके ये परचेसमें रॅलिन्क्वीश् हे और वो फॅमिलीमें रॅलिन्क्वीश् हती. अब बायरकी और इनकी रॅलिन्क्वीश् सिग्नेचर चहिये". मैंने कही "यहां चार घण्टा बेकार चले गये और वाके बाद ये बोल्यो." तो मैंने, जाने खरीदी वासुं पूछी "भई कितने बखत चक्कर काटने पड़ेंगे?" वाने कही "अभी ठहरो, जरा बात करता हूं." वाने जाके क्लर्कसु पूछी "क्यों, कसा आहे? कसा नाय चालणार?' क्लर्कने कही 'चालणार.' मैंने वासु पूछी "भई क्या हुआ?" वाने कही "आपने देखा नहीं महाराज! के यों कर रहा था (मांग रहा था)'. मैंने कही "अच्छा ये व्यवहार हे!" मेरेकु मना कर दी के नहीं चलेगो, काउन्टर सिग्नेचर चहिये. मैंने कही "अब मैं कहांसु लाऊंगो बायरकी काउन्टर सिग्नेचर?" मैंने कही बायरसु "तुम घड़ी घड़ी बुलाओ और लहु पीयो या ढंगसु?" वाने कही अभी जाता हूं और तब तो सब चल गयो. अंगूठा, सिग्नेचर सब चल गये. ये व्यवहार!

कृष्ण तो सर्वात्मक हे. जो घूस देगो, जाकी घूस खायगो, जो घूस लेगो, जहांसु घूस देगो वो सब कृष्ण ही तो हे. वो अहंव्यवहार कृष्णके साथ कैसे चलेगो? **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना.** जब आप निस्वः को अर्थ सोचोगे ना! तो सर्वात्मक कृष्णके सामने अपनो कौनसो अहं चलेगो व्यवहारमें? अपन कहें के ये अपनो बायर होनेको स्व हे, मेरो स्व रॅलिन्क्वीश् करवेको हे, मेरो स्व क्या हतो? भई मैंने तो सन् ७४में ही रॅलिन्क्वीश् कर दियो हतो, अब वाके पाछे क्या लफड़ा आ गयो! मेरो अहं वहां हर्ट हो रह्यो हतो. बायरको अहं वहां हर्ट हो रह्यो हतो के वो बहोत बड़ी पार्टी हे. वो ऐसे छोटे छोटे काममें आवे नहीं, अपने नौकरनूकु भिजवा दे. वो नौकरकु भी पता हे के काम कैसे

करवानो. वाने हाथ हिला दियो तो हो गयो काम. सबके स्व अलग अलग ढंगके हें. पर कृष्णमें ये क्यों नहीं चल सके? क्योंके हम सब अलग हें. कोई घूस खावेवालो अलग हे; घूस खिलावेवालो अलग हे; सब अलग अलग हें करके ये व्यवहार चले हे. कृष्णके साथ ये अहंको व्यवहार चल नहीं सके क्योंके जो भी तुम घूस खवाओगे, कृष्णकु पटानो घूससु मुश्किल हे. ये तो अपन् पुष्टिमार्गीय ही इतने मूरख हें के छप्पन भोग धराके ठाकुरजीकु घूस खवाके काम पटवा लेंगें, जा बखत अपन् कर रहें हें ठाकुरजीके छप्पन भोग, अन्नकूट और मनोरथ वा बखत वो जो क्लर्क हे कांदीवलीके ऑफिसूको, वासु ज्यादा अपन्ने कृष्णकी हेसियत रेहवे नहीं दी. वाकु भी सिटी लाईफ्को शिकार बना दियो के चल घूस खा. छप्पनभोग आरोगतो कायरे! मठड़ी आरोगतो कायरे! तो ठाकुरजी भी कहें "ला आरोग लूं क्या करूं! अब बम्बईके पुष्टिमार्गीयन्को व्यवहार ही ऐसो हे के क्यों प्रभु? छप्पनभोग चलेगा, के कुनवाड़ाके मठड़ी क्या चलेगा?" भगवान् कहे के जो देगा सो चलेगा, बैठे भये हें". सिटी लाईफ्को प्रेशर ऐसो हे.

अक्षरकी बात तो जावे दो वो बात समझो के वो अपने ठाकुरजीकु पुरुषोत्तमकु कहे डेमो हे रीयल पुरुषोत्तम नहीं हे. मेरेकु मेरे भतीजाने कही "आप कहो वो सब बात सच्ची हे. पर तकलीफ ये हे के पेहले हम आये तो कोई हमकु जानतो नहीं हतो. अब हमने हवेली चलाई तो सब लोग जानवे लग गये." मैंने कही "जानवे लग गये ये तो ठीक हे पर जैसे बड़ेमन्दिरसु निकाले गये पाछे यहांसु निकाले जाओगे." तो बोल्यो "अब नहीं निकाले जा सकेंगे." मैंने कही "क्यों नहीं निकाले जा सकोगे?" तो बोले "वकीलने अच्छी सलाह दे दी हे के ठाकुजीकु कभी घरमें रखनो नहीं, अलग रखो. भेंट जितनी आवे ठाकुरजीकी वो घरमें रखो यदि जाय तो ठाकुरजी जाय, रुपया तो घरमें रेह जाये ना!" मेरेकु

नॉशियेटिक् फीलिंग् आवे लग गई "कैसी बात कर रह्यो हे!" मैंने कही "देख! तेरी बात सच्ची हे पर तेरे वकीलकु जूनागढ़ केसको नम्बर दीजियो. वाके जजमेन्ट्में सुप्रीम कोर्टने स्पष्ट लिख्यो हे के ठाकुरजीके नामपे तुमने भेंट ली तो तुम्हारो घर भी पब्लिक हे." तो वो बोल्यो "क्या केह रहे हो?" मैंने कही "वकीलकु पूछियो, मैं तोकु रेफरेन्स् दऊं." वाने कही के "तो तो मर गये". येही तो मैं केह रह्यो हूं के "तू मोसुं काहेकु डरे. अपने कर्मसु डर." बिचारो दुःखी हो गयो. थोड़ी देर बाद बोल्यो "श्यामुकाका एक काम करें?" मैंने कही 'बता.' तो बोल्यो "ठाकुरजी नहीं केहके डेमो केह दें तो?" मैंने कही "जब डेमो केह रहे हो तो डेमोकी रसीद दो. अब रसीद काहेकी दे रहे हो? सामग्रीकी दे रहे हो, के सेवाकी दे रहे हो के डेमोकी दे रहे हो?" बोल्यो "डेमोकी रसीद देंगे तो वैष्णव भेंट धरेगो नहीं." मैंने कही "ये तो तेरी तकलीफ हे. जो तू डेमोकी रसीद नहीं दे रह्यो हे और कोईकी दे रह्यो हे तो इन्कम-टॅक्स् वालो पकड़ेगो आके तोकु." वाने फिर बहोत गम्भीर ब्रह्मवाक्य मोकु कह्यो "ये दुनियां शान्तिसु आसानीसु अपन् गुसांईयनूकु जीने नहीं देगी." शान्ति अपन् चाह कहां रहे हें ये बता ना! शान्ति अपन् चाहते होंय तो शान्तिसु जीवे दें ना. येही धन्धा करने हें! ठाकुरजीकु खुद डेमो केह रह्यो हे. रसीद देवेकी हिम्मत नहीं हे डेमोकी. फिर केहनो के ठाकुरजी हे ही नहीं डेमो हे. घरमें ठाकुरजी क्यों नहीं रखने के मन्दिर चलानो हे. ठाकुरजी मन्दिरमें रखें तो मन्दिर पब्लिक हो जायेगो. ये सब सिटीलाईफके प्रेशर अपने डेमो पुरुषोत्तमके साथ चल सकें पर साक्षात् पुरुषोत्तमके साथ या तरेहको व्यवहार नहीं चल सके. ये डेमो पुरुषोत्तमनूके साथ चल सके पर साक्षात् पुरुषोत्तमके साथ ये व्यवहार चल नहीं सकेगो. या रहस्यकु समझके रखो. क्योंके वाको अहं लीलात्मक अहं हे, और तुम्हारे भक्तिके माध्यमसु जबतक तुम अपने अहंकु वाके लीलाके अहंसु रेसीप्रोकेट् करवेवालो नहीं

बनाओगे; वो रेसीप्रोकेट् कैसे करेगो? भक्ति क्या है? "**माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु सुदृढो सर्वतोधिक स्नेहः**". माहात्म्यज्ञानमें कृष्णकी सर्वात्मकता तुमकु जाननी पड़ेगी. सर्वात्मक वा तत्त्वकी, सुदृढ सर्वतोधिक स्नेहकी, कृष्णरूपता जाननी पड़ेगी. ऐसे **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना** वा तरीकेको जा बखत तुम व्यवहार करोगे वा साक्षात् कृष्णके साथ तो तुम वाकी लीलात्मक अहंकु रेसीप्रोकेट् कर सकोगे, रॅपो दे सकोगे, नहीं तो क्या होयगो के वाको तो लीलात्मक अहं हे और तुम्हारो ये व्यवहारात्मक अहं रह्यो तो सुर ही नहीं मिलेगो ना! वाको सुर कुछ और हे और तुम्हारो सुर कुछ और हे. कदम कदमपे अपनेकु तकलीफ आ रही हे, ये अपन् देख सकें हें, ये सुर नहीं मिलवेके कारण.

आपकु आश्चर्य होयगो जा बखत सुप्रीमकोर्टने डिसीज़न् दियो के ठाकुरजीके मन्दिर, मन्दिरमें बिराजते ठाकुरजी गुसांईके नहीं होवें पर वैष्णवके होवें, तो मैंने सब गुसांईयनूकु एक प्रोपोज़ल दियो "एक काम करो. आप क्या मान रहे हो? ठाकुरजी आपके हें के पब्लिकके?" तो बोले "ठाकुरजी तो अपने ही हें." तो कमसु कम एक काम करो के या प्रश्नकु लेके अपन् हड़ताल करें. ट्रकवालेनूने हड़ताल कर दी. तब सब बालकनूने कही "नहीं नहीं, हड़तालकी बात मत करो. एक दिन मन्दिर बन्द रहेगो तो भेंट जायेगी." कितनी लाचारी, कितनी लाचारी के हड़तालकी ना पाड़ दी. हड़ताल नहीं कर सकें तो अपन् एक काम करें के वैष्णवनूकु कहें "यहां आनो बन्द करो." तो बोले "ना ना ऐसो नहीं करें. वैष्णव तो सब अपने ही हें ना! उनकु पराये क्यों माननो!" तो फिर उनके सामने डेमो काहेकु रखनो, सच्चो साक्षात् कृष्ण उनके घरमें पधरादो ना? रखनो पाछो डेमो ही हे उनके सामने. तो आज जो तनुवित्तजा हे और महाप्रभुजीने कृष्णकी तनुवित्तजा करवेकी जो बात कही वो काहेके लिये कही हती, ये एक रहस्यकी बात आपकु बता रह्यो हूं, के

अपन् दीन हें या दीन नहीं हें? पॉसिबिलिटी तो दो ही हें ना! 'दीन' माने निस्व:. दीन हें या दीन नहीं हें, पर यदि तुमकु कृष्णकी सर्वात्मकताको ख्याल आये वा सर्वात्मक तत्त्वके कृष्ण जैसे सुन्दर होवेको ख्याल होये तो तुम्हारो तन, तुम्हारो धन, तुम्हारो मन वापे न्यौछावर करनो तुमकु आनो चहिये. दूसरेको पैसा लेवेकी जरूरत क्या हे? जब तुम्हारो तन, धन, मन वापे न्यौछावर नहीं कर सको हो, गामसु पैसा ले रहे हो, तो तनुवित्तजा तो तुमसु नहीं निभेगी ना! तो तुम्हारो वो चक्कर शुरु हो गयो. तनुवित्तजाको मूल रहस्य यहां हतो के तुम अपनो तन, मन, धन श्रीकृष्णपे, जैसे हरिरायजी कहें हें **''मेरी पलकनसों मग झारों. या मगमें मेरो पिय आवत हे, तन मन प्राणन् वारों. मेरी पलकन्सों मग झारों.''** अपनेमें वा तरीकेकी एक प्रेमात्मिका अर्ज आनी चहिये के मैं मेरो तन, मन, धन वापे न्यौछावर कर रह्यो हूं. यामें सवाल ही नहीं उठे तनुवित्तजाके ब्रेकअप करवेको, के तनुजा कौनकी और वित्तजा कौनकी. तुमकु तुम्हारो तन, मन, धन वापे न्यौछावर करनो हे. तुम्हारो समर्पण न्यौछावर ही तो हे. वो अपनेकु पोसावे नहीं हे. आज पुष्टिमार्गीय वैष्णवनूकु नहीं पोसावे, महाराजनूकु नहीं पोसावे, तकलीफ ये हे के हम कृष्णके साथ जो व्यवहार कर रहे हें, वो पुरुषोत्तम कृष्णके साथ, या सर्वात्मक कृष्णके साथ नहीं कर रहे हें कोई न कोई डेमोके साथ डील कर रहे हें. जाको डिमोन्स्ट्रेशन् हमकु तुम्हारे सामने करनो हे और कोई न कोई तरहसु तुम्हारो पैसा हमकु लेनो हे. ''वर मरो के कन्या मरो. गौरनु तरभाणु भरो''. मूलसिद्धान्त आधुनिक पुष्टिमार्गमें वो काम आ रह्यो हे, वो काम आ रह्यो हे करके ये सारी तकलीफ हें. पुरुषोत्तमके साथ पुरुषोत्तमोचित व्यवहार यदि हमकु करनो होतो तो तो अहं वापे न्यौछावर हे. अपनो क्रियात्मक अहं, कर्मात्मक अहं, व्यवहारात्मक अहं सब, जैसे के जैसे ये तीनो अहं तुमने वापे न्यौछावर किये वैसे ही तुम्हारो अहं एक लीला बन जायेगो. तुम्हारो अहं एक लीलात्मक अहं हो जायेगो. क्रियात्मक नहीं रेह

जायेगो क्योंके तुमने तुम्हारे पास होते भये भी वापे न्यौछावर कर दिये. न्यौछावर करते ही वो एक लीला हो गई ना पाछे! यदि तुम न्यौछावर नहीं कर पा रहे हो क्रियात्मक अहंकु, अपने कर्मात्मक अहंकु, अपने व्यवहारात्मक अहंकु, जब इनकु न्यौछावर नहीं कर रहे हो तो तुम तनकु भी न्यौछावर नहीं करोगे, धनकु भी न्यौछावर नहीं करोगे और फिर मनकी बात तो कहां रही न्यौछावर करवेकी! जब ये तीनोंको न्यौछावर नहीं करोगे तो तुम फिर डेमो खड़े करोगे कृष्णके, साक्षात् कृष्ण तुम्हारे यहां सेवामें नहीं बिराजेगो.

मेजोरिटी ऑफ बालक आज ये बात केह रहे हें के ''आज हमारे बिराजते ठाकुरजीके दर्शन नहीं खोलें तो वैष्णव सेवा कैसे सीखेगो''? यदि सचमुचमें सेवा सिखानी हे वैष्णवनूकु तो अन्दर घुसाओ ना! जब सिखा रहे हो तो कोई भी ऐसी कोचिंगक्लास् हो सके हे के जामें स्टुडेन्ट्सूकु भीतर घुसावेपे अपरस छु जाती होय? अब खासाकी, सेवकीकी, मर्यादकी सब अपरसें पाल रखी हें तो स्टुडेन्ट् तो अन्दर घुस ही नहीं सके. खाली बाहरसु दर्शन करके चले जाओ. ऐसी कोचिंग्क्लास्में क्या कोचिंग् होयगी! बेबकूफ बनावेको धन्धा हे. यदि सचमुचमें तुम सिखा रहे हो तो घुसाओ वाकु अन्दर. जैसे ही अन्दर घुसे तो कानूनके हिसाबसु ठाकुरजी तुम्हारो नहीं रेह जायेगो. अब दोनों जगेह फंस गये हें ना! ''दुविधामें दोनों गये, माया मिली न राम.'' नहीं घुसावें तो सेवाके डेमोन्स्ट्रेशन्के बिना हमारी रोजी रोटीको इन्तजाम नहीं होवे. जब डेमोन्स्ट्रेशन् करवे जायें तो वाको जस्टिफिकेशन् नहीं मिल रह्यो हे के कैसे याको डेमोन्स्ट्रेशन् करनो? महाप्रभुजी तो केह रहे हें के ''सेवा तो लीलात्मक होनी चहिये.'' अपन् केह रहे हें के ''नहीं डेमोन्स्ट्रेशनात्मक सेवा होनी चहिये.'' ये तो अपनेकु ऐसी बहूजी नहीं मिली के वो अपने साथ शादी या लिये करे के दाम्पत्यको डेमोन्स्ट्रेशन् देवेके लिये महाराजश्री, पू.पा. १०८ महाराजश्रीसु ब्याह कर रही हूं के दाम्पत्यको

डेमोन्स्ट्रेशन् दे रही हूं. सबकु बुलाती होय, पेहली रातके दिन के सबकु डेमोन्स्ट्रेशन् हम देंगे तो पता चले के कितनी चीपनेस् भई. शर्म नहीं आवे अपनेकु, ऐसी बेबकूफीकी बात करते भये.

(कृष्णके रसलीलात्मक अहंको रिस्पोन्स अपने भक्तिलीलात्मक अहंसु)

मूल चक्कर ये हे यामें. क्योंके अपनो भाव, अपनो अहं, कृष्णके साथ रेसीप्रोकेट्र करवेको लीलात्मक अहं नहीं रेह गयो हे, डेमोन्स्ट्रेशनात्मक अहं हो गयो हे. वा व्यवहारके अहंसु अपन् कृष्णको जो लीलात्मक अहं हे वा लीलात्मक अहंकु अपन् रॅपो दे ही नहीं सकें. या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझो के अहंलीला तीन तरहसु हो सके. यदि भक्तिमार्गमें कृष्ण कर रह्यो हे तो रसानुभावात्मक अहंकी लीला कर रह्यो हे. रसको अनुभव तुमकु करानो चाह रह्यो हे, वाके अन्दर एककु अनेक होवेको जो रस प्रकट भयो हे, जो आनन्द उच्छलित भयो हे, वा उच्छलनको तुमकु भी अनुभव करानो चाह रह्यो हे करके वाको अहं रसानुभावात्मक अहं हे. अब अपन्को अहं जो होयगो वो कैसो होयगो? रसानुभूतिरूप. ब्रह्म जा तरहकी लीला कर रह्यो हे, सर्वात्मक होते भये भी वो अहं बन्यो हे, यह पॅराडोक्स् हे अपने आपमें. जो सर्वात्मक होय वो अहं नहीं हो सके क्योंके जो सर्वात्मक हे वाकु अहम्, त्वम्, एतद् सब कछु होनो पड़ेगो. ब्रह्म तुम्हारे रॅफरेन्स्में तुमकु लीलाकी रसानुभूति करावेके लिये, वो केह रह्यो हे के ऑल् राईट मैं तुम्हारे रॅफरेन्स्में 'तत्' नहीं हूं, तुम्हारे रॅफरेन्स्में मैं 'त्वम्' नहीं हूं, तुम्हारे रॅफरेन्स्में 'अहं' हूं. **''तस्मात् मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम्.''** (भाग.पुरा.१०।२२।१८) ये व्रज तो मेरो हे, मैं या व्रजको हूं. यहीं हमारो राज हे ब्रजमंडल सब ठौर. ये वो ब्रह्मको अहं बोल रह्यो हे हों. सो ब्रह्म? ये जो ब्रह्म कृष्णको अहं बोल रह्यो हे **''तस्मात् मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम्''** ; मैंने याकी रिस्पॉन्सिबिलिटी ली हे. वो रिस्पॉन्सिबिलिटी कौनसी हे? लीलात्मिका रिस्पॉन्सिबिलिटी हे.

वा लीलात्मिका रिस्पॉन्सिबिलिटीको रिस्पॉन्स् कैसो होनो चहि? वो रसानुभावात्मिका लीलाको अहं हे तो अपन् वाकी रसानुभूति कर सकें वा तरीकेको अपनो अहं होनो चहिये. डेमोन्स्ट्रेशनात्मक् अहं नहीं होनो चहिये. अथवा अपनेकु माहात्म्य ज्ञानपे झोंक ज्यादा हे तो अपनो अहं स्थितप्रज्ञात्मक भी हो सकें जाकु भगवान्ने द्वितीय अध्यायमें **''स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव! स्थितधीः किं प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम्... प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान् आत्मन्येव आत्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञः तदा उच्यते''** (भग.गीता.२।५४-५५). वो ब्रह्मको मिनीमॉडल बन जाये. तो तुम ब्रह्मको मिनीमॉडल बन रहे हो तो वो स्थितप्रज्ञ होनेके बाद तुम्हारो अहं व्यवहारात्मक नहीं रेह जायेगो पर लीलात्मक हो जायेगो. वो फेसेलिटी शास्त्रने अपने यहां अपनेकु बताई हे पर वो फेसिलिटी ज्ञानमार्गीय फेसेलिटी हे. भक्तिमार्गीय फेसेलिटी तो कृष्णके भक्तिरसात्मिका लीलाके रसात्मक भावानुभूतिको अपनेकु रेसिप्रोकेट करवेके लिये अपनी रसात्मिका भावानुभूतिको अहं अपनेकु होनो चहिये. ये आखो वाको साईकल् हे. माने **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते;''** (तैत्ति.उप.३।१) **'भूतानि'** के बजाय ''अहंकाराणि जायन्ते'' कर लो ''यतो वा अहंकाराणि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यम् प्रयन्ति अभिशंविशन्ति इति'', अपनो अहंकार, अपने कर्तृत्वको अहंकार, अपनो भोक्तृत्वको अहंकार, एक्च्युअली जा ब्रह्मकी रसात्मिका अहंतामें जाके लीलात्मक ढंगसु मर्ज् होवे हे, जा ब्रह्मकी रसात्मिकतामें लीन हो जाये हे, वा लीलात्मकताको अनुभव करेंगे तो ब्राह्मिक अहम्के साथ परफॅक्ट्ली अपन् ट्युनअप् हो सकेंगे, नहीं तो अपन ये क्षुद्र डेमोन्स्ट्रेशन्की क्रिया कर रहे हें. अपनो अहं ब्राह्मिकअहंके साथ ट्युनअप् नहीं भयो हे. या रहस्यकु अच्छी तरेहसु समझ जाओ.

oooooooooo

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीन भावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्।।

कल अपन्ने ये देख्यो के अहंकार क्रियात्मक, कर्मात्मक, व्यवहारात्मक और लीलात्मक भी है. दरअसल लीला, क्रिया, कर्म, व्यवहार ब्रह्मको साईकल् है, स्वरूपके विचारसु अपन् देखें तो **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्ति अभिशंविशन्ति तद विजिज्ञास्व तद ब्रह्म.''** (तैत्ति.उप.३।१) वा श्रुतिके आधारपे तो यामें समझवेकी बात ये थी के ब्रह्मको अहं लीलात्मक है, ये बात मैंने कल आपकु बताई. क्यों लीलात्मक अहं है? वाको कारण बतायो के एक तरीकेसे 'अहं' और 'त्वम्' भी रिलेटिव् टर्म् है. त्वम्के रिलेशनमें कोई अहं होवे और अहंके रिलेशनमें कोई त्वम् होवे है. जहां अहंको एक पोइन्ट नहीं मिलेगो, वहां त्वम् भी नहीं मिलेगो. जहां त्वम् नहीं मिलेगो वहां अहंको पोइन्ट भी मिलनो मुश्किल है. वा एन्गल्सु जा बखत अपन् देखें तो ब्रह्ममें जब ये बात केह रहे हैं के वो सर्वात्मक है, मने ब्रह्म अहं रूपभी है, त्वम् रूपभी है, तद् रूपभी है, एतद् रूपभी है, जो कुछभी है व्यक्ताव्यक्त सब कछु वो है. नलकूबरकी स्तुतिमें अपन्ने ये बात अच्छी तरहसु देखी थी के व्यक्ताव्यक्त सब कछु भगवान् है. थोड़ोसो वा एन्गल्सु या बातकु जब आप देखोगे के अपनो अहं अपने लिये व्यक्त है पर दूसरेके लिये अव्यक्त है. दूसरेको व्यवहार अपने लिये व्यक्त है. व्यक्ति पर्सनालिटी, वाके छे फेक्टर मैंने बताये वो सारे व्यक्त हैं. पर उन पर्सनालिटीमें छुप्यो भयो अहं पाछो अपने लिये भी अव्यक्त है. तो जहां मैं और तू की बात है वहां ये स्थिति है. जहां वो आ गयो जो अपने सामने प्रकट नहीं है, या वो के बजाय ये समझ लो, त्वम् अपन् कौनकु कहें? जाके साथ अपन् इन्टरएक्ट् करते होंय. जाके साथ अपन् इन्टरएक्ट् नहीं करते होय वाकु अपन् 'ये' कहेंगे यदि सामने होयगो तो, यदि

सामने नहीं होयगो तो 'वो' कहेंगे. तो 'ये' या 'वो' जाके साथ अपन् इन्टरएक्ट् नहीं कर रहें हैं, वाके अहंकारके क्रिया या अहंकार को कर्म या अहंकारको व्यवहार है, वो अपनेकु कैसे व्यक्त हो सकेगो? व्यक्त नहीं हो सकेगो. इन्टरएक्ट् करेंगे तो फिर वो कोई न कोई 'तुम'की सिच्युएशन्में आ रह्यो है. यदि व्यक्ताव्यक्त दोनों ब्रह्म है, तो अहं या अहंमूलक व्यवहार दोनोंकी ब्रह्मात्मकता अपनेकु माननी पड़ेगी. वा स्थितिमें ब्रह्मको केवल अहं रूपसों होनो, वाकी एक लीला है. अपनो अहं क्यों लीला नहीं है? क्योंके अपनो अहंकी सबसों भीतरी गवर्निंग् फेक्टर क्रिया है. वा क्रियाकु जा बखत अपन् अपने ज्ञान इच्छा प्रयत्न सु करणसु एग्जीक्यूट करें तो वो अहं अपनो कर्म बन जाये. वा कर्मकु करते भये जा बखत अपन् दूसरेसु इन्टरएक्ट करें, तो वो अपने अहंको व्यवहार बन जाये. वो व्यवहारके बहोत सारे भेद, जैसे कानूनी व्यवहार होय, नीतिको व्यवहार होय, धर्मको व्यवहार होय, दोस्तीको व्यवहार होय, झगड़ाको व्यवहार होय, जोभी व्यवहार होय वो सारे व्यवहार जो अपने अहंके चल रहे हैं, उन अहंके चलते व्यवहारन् में अपन्के भीतर सबसु पेहले अहंको कर्म चलतो होय तो वो व्यवहार अपनेसु निभ सके. अहंकर्म नहीं चलतो होय तो अहं व्यवहार निभ नहीं सके. अहंकर्म कब चले है वो बात मैंने आपकु इतने दिनके प्रवचनमें विस्तारसु समझाई. भीतर क्रिया चलती होय, तो वो अहंकर्म चल सके है. ये तो अपनी सृष्टिकी बात भई. जहां तक ब्रह्मको सवाल है वामें तो अपन्ने देख्यो के वामेंसु प्रकट भयो अहं तो लीलात्मक अहं है. क्योंके वाके त्वम्के संदर्भमें कोई अहं प्रकट नहीं भयो है. कल मैंने वो सीप और घोंघा को उदाहरण देके समझायो के जो कुछभी प्रकट भयो है वो या समुद्रमेंसु प्रकट भयो है. जब समुद्रमेंसु प्रकट भयो है, तो वा तरहसु अहंकी क्रिया चाहे त्वम्की क्रिया, चाहे ये की क्रिया, चाहे वो की क्रिया, जो भी प्रकट भई व्यक्ताव्यक्त सब ब्रह्मकी अहंकी लीलामेंसु प्रकट भई है.

(काश्मीरशैवीज़ममें शिवको अहं)

यद्यपि अपने यहां या बातकु नहीं कह्यो गयो है ऐसी बात तो नहीं है, काफी अच्छे ढंगसु कह्यो गयो है मगर बड़ी खूबसूरतीसु याकु काश्मीरशैवीज़म वाले कहें हैं. वो कहें हैं के शिवके अहंके तीन स्तर हैं. एक परमशिव, एक सदाशिव और एक शिव. ऐसे तीन शिवके अहं हैं. चोथो स्तर और मानें हैं जामें वो जीव मानें हैं. ऐसे चार स्तरमें वो शिवके अहंको देखें हैं. वामें उनने एक बड़ी खूबसूरत बात बताई है. जैसे कोई पेन्टिंग करनी होय तो वाके पेहले केनवास चईये. केनवासपे या भीतपे या कागजपे अपन् पेन्टिंग करें; ऐसे ये सारो सृष्टिको चित्र परमशिवके केनवासपे, परमशिवने अपने अहंके ब्रशसों बनायो है. यों कहे हैं वो लोग. परमशिवने अपने खुदके केनवासपे अपने अहंके ब्रशसों बनायो है. बड़ी मीठी बात है ये. थोड़ोभी यामें रह्यो भयो जो काव्यात्मक सौन्दर्य है, क्योंके काश्मीर शैवीज़मकी ज्योग्राफिकल् पोजीशन ऐसी है के वो मूलमें वो काश्मीरको हतो. काश्मीरमें जो प्रकृतिको निखार है, जो प्रकृतिको सौन्दर्य है वाको सौन्दर्य उनके विचारोंमे झलकतो होवे है. एकदम शुद्धाद्वैती हैं वो लोग अपने जैसे. शुद्धाद्वैती होवेके कारण जबभी वो बात करें हैं तो वो बात शुद्धाद्वैती काश्मीरी सौन्दर्य लिये भई बात करें हैं. जैसे अपन् यों कहें हैं के काल प्रभुकी चेष्टा है, तो वो यों कहें हैं के काल या शिवकी सृष्टिमें फूलको खिलनो और फूलको बन्द होनो काल है. उनके यहांके वो ज्योग्राफी ऐसी है के उनकु कालभी फूल जैसो समझमें आवे है. फूल खिल रह्यो है और फूल बन्द हो रह्यो है. बस येही तो काल है और कौनसो काल है! याही तरहसु शिवको अहंको समझाते बखत काश्मीरी शैवीज़म यों कहे हैं के परमशिवके केनवासपे परमशिव अपनी अहंताके ब्रशसु सारी सृष्टिको ये चित्र लिखे है. अब याकु ध्यानसु समझो के वाकी अहंताको ब्रश क्यों वापरे? दरअसल अहंताको ब्रशको उनको शब्द 'तूलिका' है, तूलिकाके भी बजाय आज सबसु अच्छो

सोचें तो आज कई सारी पेन ऐसी आवें ना के थ्री इन वन्, वामें एक बटन दबाओ तो कालो निकले, एक बटन दबाओ तो लाल निकले, एक बटन दबाओ तो हरो निकले. ऐसी रंगबिरंगी स्याही वाले पोइन्ट बाहर आ जायें. तो वा शिवके अहंमें वा तरीकेको त्रैविध्य है के वो एक ही अपने अहंके त्रैविध्यमें, सृष्टिको वैविध्य, सारी सृष्टिकी विविधता शिवके अहंमें समाई भई है. वो पेनमें जैसे विविध तरेहकी निब होवें और जो चाहें वा रंगकी निब बाहर आ जाये और वासु अपन् कालो, पीलो, नीलो जो रंग करनो होय सो कर सकें. वासु सृष्टिको ये स्केच् बन्यो है, थोड़ो सो वाको अपने मोडर्नकोन्टेक्स्ट्में समझनो होय तो या तरहसु समझ सकें. उनके समयमें ऐसी पेन नहीं हती नहीं तो अभिनव गुप्तने भी येही उदाहरण दियो होतो. वा बखत वो तूलिका अवेलेबल हती करके अहंकी तूलिकासु परमेश्वरने आत्मभीतिपे सृष्टिको ये सारो चित्र बनायो है.

फिर सदाशिवको एक अहं है. परमशिवके बाद वाके नीचे एक केटेगिरी सदाशिवकी आवे. सदाशिवकी केटेगिरीमें वो लोग यों कहें के सदाशिव वो है जाकु अपने यहां परमपुरुषोत्तमके बाद जो अन्तर्यामीकी स्टेटस् है; वा तरीकेके अन्तर्यामीके बराबर स्टेटस्वालो उनके यहां एक सदाशिव है. अपन् योंभी समझ सकें के परमशिव तो केन्वास् है. पर सदाशिव केन्वास् नहीं है, पर केन्वासपे परमशिवने अपनी तूलिकासु सृष्टिको चित्र कियो तो सेल्फपोर्ट्रेट भी बनायो. तो जो सेल्फपोर्ट्रेट बनायो वो सदाशिव है, उनके हिसाबसु. आर्टिस्ट अपनो सेल्फपोर्ट्रेट भी बनावे ना! या तरीकेको सेल्फपोट्रेट् बनायो, जगतकोही चित्र नहीं बनायो पर खुदकोभी चित्र बनायो.

एक एल्फ्रेड हिचकोक् हतो जो सस्पेन्सको पिक्चर बनातो हतो. वाकी हमेशाकी ये आदत हती के कोईभी पिक्चर बनातो तो वामें

कहीं न कहीं खुदकु दिखातो, एज़ ए सिग्नेचर. वो कहीं न कहीं खुद वामें खड़ो रेहतो. तो पिक्चरकी स्टोरी होती वाकी थीम होती वा थीममें कहीं न कहीं अपनो एक केरेक्टर प्रोड्युस् करके एज़ ए सिग्नेचर लिख्यो ही नहीं जातो टाईटलपे, पर अपनो पोर्ट्रेटभी वो पिक्चरमें देतो. ऐसो सदाशिव है समझ लो. बनायो जो है परमशिवने अपनी भित्तिपे, अपनी केन्वास्पे क्योंके वाको अहं सर्वात्मक है, "**कृष्णे सर्वात्मके**" की तरह, पर "कृष्णे सर्वात्मके"के होवेमें वाने अपनोभी तो एक पोर्ट्रेट बनावे ना, तो अपनो पोर्ट्रेट वाने सदाशिव तरीके या सृष्टिके चित्रमें बनायो है. वाके नीचे जैसे अपने यहां ब्रह्मा विष्णु और शिव तीन हैं, जैसे "**जगत् तु त्रिविधं प्रोक्तं ब्रह्म-विष्णु-शिवाः ततः देवतारूपवत् प्रोक्ता ब्रह्मणि इत्थं हरिर् मतः.**" (सि.मु.१०) वैसे उनके यहां त्रिगुणात्मक ब्रह्मा विष्णु और शिव के तेहत जो शिव है, वो जैसे अपने यहां त्रिगुणात्मक शिव है वैसे उनके यहां ये शिवभी हे पाछो. सृष्टिको सहांरकर्ता, सहांरको अधिदेव, सृष्टिको उत्पादक उनके यहांभी ब्रह्मा है, सृष्टिको स्थापकभी उनके यहां विष्णु है, सृष्टिको सहांरक उनके यहां शिव एक और है. शिवके उनके यहां तीन स्वरूप माने गये हैं.

(कृष्णकी सर्वात्मकता और अपनी दीनभावना)

जा बातपे आपको ध्यान मैं दिवानो चाह रह्यो हूं वो ये है कृष्णे सर्वात्मके; कृष्ण सर्वात्मक है. सर्वात्मक होवेके कारण वाके सामने तुम्हारी दीनभावना है, के होनी चईये, के करनी चईये. अपन् क्या स्टेन्ड लेंगे? यदि वो सर्वात्मक है तो हैं ही अपन् दीन. पर वो दैन्य अपनो, वाके लिये मैं बता चुक्यो हूं के दैन्यके चालू खाताके जो अर्थ हैं वा अर्थमें ये 'दीन' शब्द नहीं हें; ये 'सर्वात्मके' के विसाविस् आयो शब्द हे **कृष्णे सर्वात्मके सर्वथा दीनभावना.** कृष्णके सर्वात्मकताके विसाविस् जो दीनभावना बताई जा रही है वो कृष्ण अपने दीन होवेके कारण कृष्ण सर्वात्मक होतो तो वो कथा दूसरी

होती. अपन् कोईके सामने दीन हो जायें और वाके कारण कोई सर्वात्मक बन जाये. वो कथा एक दूसरी है. अपन् दीन हैं या लिये कृष्ण सर्वात्मक नहीं है. ये बात मैं क्यों केह रह्यो हूं? दीनता यदि अपने करवेकी होती तो तो अपने दीनता प्रकट करवेसु कृष्णमें सर्वात्मकता आती, तो अपनी दीनताभी आर्टिफिशियल् होती और कृष्णकी सर्वात्मकता भी आर्टिफिशियल् होती.

एग्ज़ेक्टली वोही ढंगकी दीनता मैंने अपने पेहलेके प्रवचनन्में बतायो थो के रोडपे एक्सीडेन्ट हो गयो हतो और बहोत भीड़ जुटी भई थी. भीड़ जर्नलिस्टकु घुसवे नहीं दे रहे थे. जर्नलिस्टने सोची के या भीड़में घुसनो कैसे, क्योंके वाको काम ही भीड़में घुसके रिपोर्ट बनानी. घुसवेके लिये वाने कही के "क्या हे क्या है?" कोईने कही के "खड़े रहो ना!" तो वाने कही "कैसे खड़ो रहूं, मेरो बाप एक्सीडेन्ट्में घायल है." सब भीड़ छट गई. जब जर्नलिस्ट अन्दर गयो तो वहां एक गधाको एक्सीडेन्ट भयो थो. तो ये दीनताके कारण जर्नलिस्ट्में गधाके भीतर जर्नलिस्टके बाप होवेको केरेक्टर आ रह्यो है, वो आर्टिफिशियल् है, साधित अहंता है यदि गधाकु भी हो जाये तो और जर्नलिस्टको तो हो ही गयो के मैं गधाको बेटा हूं. वो भी साधित अहंता है. साधित अहंता या तरीकेकी कोई एक अलग कथा है. यहां प्रश्न साधित-अहंताको नहीं है. सिद्ध-अहंताको है. सिद्ध-अहंताको मतलब सीधे सीधे ये है के अपने दीनता प्रकट करवेके कारण कृष्ण सर्वात्मक नहीं है; अपनी या प्रकारकी दीनता के अपनेकु भीड़में घुसनो है या लिये अपन् केह रहे हैं "मेरे बापको एक्सीडेन्ट हो गयो है." वो अपनो एक तरहको दैन्य प्रकट कर रह्यो है क्योंके भीड़में घुसवे नहीं दे रह्यो है. अब घुसवे नहीं दे रह्यो है करके अपन् केह रहें हैं के मेरे बापको एक्सीडेन्ट हो गयो है. वो एक बात दूसरी है, वो आर्टिफिशियल् दीनता है. मतलब साफ सुथरे तौरपे अपनेकु समझनो

पड़ेगो के कृष्ण यदि सर्वात्मक है, तो अपनूके पास जो कुछ सिद्ध है और जो कुछ साधित है और जो कुछ अपनो साध्य है वो सब कृष्णही है. जब सब कृष्णही है तो अपनो क्या है अपने पास? कुछभी नहीं है. जैसे वो गालिब कहे है **"जान भी दे दूं जो उसने बख्शी थी. हक तो ये है के हक अदा न हुआ."** वापे मैं अपनी जान न्यौछावर कर दऊं पर जान तोकु दी कौन ने? जो उसने बख्शी थी. हक तो ये है हक अदा न हुआ. मने दऊं क्या वाकु? कुछभी तो नहीं है मेरे पास. ये हकीकत है. वा कृष्णके सामने अपन् क्या चीज ऐसी कर सकें के जाके कारण अपन् अदीन हो सकें. कुछभी नहीं कर सकें. तो अपनेमें दीनता सिद्ध है. अपने रियलाईज़ करवेकी जरासी आवश्यकता है. या वाकु रेलिश् करें इतनीसी आवश्यकता है. आईदर यु रियलाईज़ इट ऑर रेलिश् इट ऑर यु केन् डू बोथ्. बट नथिंग एल्स् वी केन डू. याकु रियलाईज़ करो. रियलाईज़ नहीं कर पाते हो तो रेलिश् करो. रेलिश् कर रहे हो तो कल रियलाईज़ हो जायेगो. आज रियलाईज़ कर रहे हो तो कल रेलिश् करते हो जाओगे. दोनों हो गई बात के अपनूने रियलाईज़भी करी और रेलिश् भी कर रहे हैं तो भक्तिकी बात बन गई. वो जो बात बन रही है, वो बातकु कल मैने आपकु बताई थी.

अपन् अपने अहंक्रियामेंसु जो अहंकर्मको व्यवहार कर रहें हैं वो अहंकर्ममेंसु जो अपन् कृष्णके साथ भक्तिको व्यवहार करेंगे धन्धाको नहीं, वो बात भी मैंने कल मैने आपकु बताई. बिजिनेस्को नहीं, डेमोको नहीं, ज्यादातर आज पुष्टिमार्गमें भक्तिके नामपे डेमोन्स्ट्रेशन् चल रह्यो है या धंधा चल रह्यो हे . वो भक्तिको डेमोन्स्ट्रेशन् भक्ति नहीं है. भक्तिको धंधा भक्ति नहीं हे. डेमोन्स्ट्रेशन् ऑफ लव इज़ नोट लव. वो तो कोई भी फिल्ममें हर हीरो हीरोइन कर रहे हैं. वो लव कोई सच्चो लव नहीं केहवावे. वो तो डेमोन्स्ट्रेशन्

केहवावे. डेमोको ठाकुर, डेमोकी सेवा, डेमोको अपनो दैन्य वो सब तो डेमोनिक् है. वो अपने भीतर रह्यो भयो आसुरीभाव है जाको अपन् डेमोन्स्ट्रेट कर रहे हैं. दरअसल भावकु नहीं प्रकट कर रहे हैं. पर यदि कृष्णके प्रति अपन् अपनो भक्तिभाव प्रकट कर रहे हैं, तो भक्तिभावके दो अंग हैं माहात्म्यज्ञान और सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेह. कृष्णकी सर्वात्मकता कृष्णके माहात्म्य तरीके जाननी पड़ेगी और वा सर्वात्मक वस्तुको श्रीकृष्ण होनो के पेहलुमें अपनेकु सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेहशाली होनो पड़ेगो. वा लिये कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना. वो अपनी नित्य दीनभावना, नहीं भी होती होय अपनेकु दीनता, रियलाईजेशन् नहीं होतो होय, मे भी अपन् कोई अपने अहंकारकी क्रिया, अपने अहंकारके कर्म या अपने अहंकारके व्यवहारके कारण अपन् कृष्णके सामने नहीं प्रकट कर पाते होंय, नहीं कर पाते होंय तो महाप्रभुजी केह रहे हैं के भावना करो. भावनाभी करवेसुं कल या परसों (भाव सिद्ध होयगो).

मैने आपकु बतायो के भावना अपन् कहां कहां नहीं करें! जब हर पेहलुमें, हर व्यवहारमें अपन् भावना कर रहे हैं, हर कर्ममें अपन् भावना कर रहे हैं, कोई कर्म ऐसो हो नहीं सके, क्रिया तो अपन् करें नहीं के जामें अपन् भावनाको प्रसंग होय, पर इन् ए वे आप सोचो तो क्रियामें भी अपन् भावना कर ही रहे हैं के मैं कर रह्यो हूं. जो क्रिया अपने आप हो रही है वामें अपन् भावना क्या कर रहे हैं के "मैं कर रह्यो हूं". मैने आपकु कई उदाहरणनूसु समझायो के पेशाब अपने आप लग रही है क्रियाके तौरपे पर अपनेकु लगे के मैं कर रह्यो हूं. भई तुम नहीं करते होते तो भी ये शारीरिकक्रियायें चलति. एक पिक्चर आई थी 'पार्टी' वामें ये ही सारी थीम हती के वाको हीरो पार्टीमें चल्यो जाय और वाकु फिर पेशाब लगे और यहां वहां खोजतो ही फिरे के कहां जानो? अब पेशाब लगी है तो लगी है ना! क्या करेगो

वाको? कोई करनेसु थोड़े ही होयगी? तो जो क्रिया है वो तो होयगी ही, अपन् कर्ताके तरहसु करें के नहीं करें पर वो तो होयगी ही क्रिया. पर या रहस्यकु समझो के वामें जो भावना क्रियाके तौरपे हो रही है के मैं कर रह्यो हूं ऐसे कर रहे हैं. तो जैसे ये भावना कर रहे हो. ओल राईट महाप्रभुजी कितने कन्सीडरेट हैं के तो ऐसी भावना कर लो श्रीकृष्णमें दीन होवेकी. येभी वर्स्ट कम् वर्स्ट तुम्हारी दीनभावना तुम्हारे पर्सनल सायकोलोजी या एपिस्टमोलोजी के हिसाबसु मिथ्या भ्रान्ति होयगी. भई मिथ्या भ्रान्ति है तो यदि अहं कर्ताकी मिथ्या भ्रान्ति यदि तुम कर रहे हो तो दीनभावनाकी करवेमें तुमकु हरकत क्या आ रह्यो है? वा पोइन्टकु समझो. जैसे तुम अपने आपकु कर्ता माननेकी मिथ्या भ्रान्तिको तुम इतनो रेलिश् कर रहे हो, तो वो एक भावना और रेलिश् कर लो. थोड़ो सो रेलिश् करोगे तो सारी बात अपने आप ठिकानेपे पड़ेगी. तुम्हारे सारे कर्मके अहंके व्यवहार, तुम्हारे सारे कर्म अहंके व्यवहार तुम्हारी या भावनाके कारण ही तो चल रहे हैं. जो हो रही क्रिया है वामें तुम मैं कर रह्यो हूं, ऐसी भावना कर रहे हो, तो अब जो क्रिया हो रही है वामें कृष्ण कर रह्यो है ऐसी भावना कर लो. अपने आप दीनभावना हो जायेगी. जो हो रह्यो कर्म है वो कृष्ण कर रह्यो है ऐसी भावना कर लो तो अपने आप दीनभावना हो जायेगी. जो चल रह्यो व्यवहार है वो कृष्ण कर रह्यो है, ऐसी भावना कर लो तो बस अपने आप तुम्हारी दीनता धीरे धीरे खुलने लगेगी, खिलने लगेगी और या भावनाके कारण निखरवे लगेगी. ये याको आखो रहस्य है. याके कारण जब वो अपनेकु रियलाईज़ भी हो जायेगो, अपन् रेलिश्भी करते होंयगे दीनभावनाकु. जब अपन् रियलाईज़भी कर लेंगे और रेलिश् भी करते हो जायेंगे दीनभावनाकु तब नेट रिजल्ट वाको क्या आयेगो? तुम्हारो अहंकारभी कृष्णके लीलात्मक अहंकारकी तरह, एक लीलात्मक अहंकार हो जायेगो. वाके पेहले व्यवहारके लेवलपे अपनो अहंकार लीलात्मक नहीं हो सके.

जा बखत अपन् अहंको व्यवहार कर रहे हैं, वा बखत तो अपनेकु हर बखत ये चक्कर रहेगो ही के सेवा कौन कर रह्यो है? मैं! मैं हूं ना! ठाकुरजीको ध्यान कौन कर रह्यो है? बोले, मैं हूं ना! हर जगेह मैं हूं! मैं हूं! हो जायेगो. पर जा बखत तुम दीनभावनासु करोगे माहात्म्यज्ञानपूर्वक करोगे और अपनी दीनभावनाकु जा बखत तुम रियलाईज़ और रेलिश् करोगे, वा बखत तुमको लगेगो के कृष्ण है ना! सेवा क्यों कर रहे हैं? क्योंके कृष्ण है. ध्यान क्यों करवा रहे हैं कृष्णको? क्योंके कृष्ण है. हमसु क्यों तनुवित्तजा निभ रही है? क्योंके कृष्ण है. तो तुमकु अहंकार नहीं होयगो.

अब देखो ये ऐसी बात है हों शैतानके हाथमें बाईबल है! के तनुवित्तजाको भाग पाड़ रहे हैं वो भी केह सकें हैं के कृष्ण है. पर एक बात ध्यानसु समझो. शैतानको और बाईबलकी तरेह जो शैतान बाईबल कोट करनो चाहते होंय महाप्रभुजीकी के कृष्ण है ना! या लिये हम हवेलीमें दर्शन करवे जा रहे हैं. कृष्ण है ना! या लिये हम ठाकुरजीके नामकु पैसा भेंट ले रहे हैं. कृष्ण है ना! या लिये हम मुखिया भीतरीयान्की बटालियन्सु सेवा करवा रहे है. हम तो खाली आरती कर रहे हैं. हम तो ब्रह्मसंबंध दे रहे हैं. हम तो ठाकुरजीकु पुष्ट कर रहे हैं. ठाकुरजीकु पुष्ट करनो हमारो काम है. तो ये जो "मैं हूं ना!, मैं हूं ना!" को सारो नाटक है, अपने सम्प्रदायमें पर वाकु भी कोई कृष्ण है, केह सके है. अब सवाल यामें सचाईसु समझवेको ये है के कृष्ण है ये फीलिंग उनकी सच्ची है तो उनकु सुधरनो पड़ेगो, आज नहीं तो कल. यदि ये उनको सिर्फ लफ्फाजी है, क्योंके लोग ऐसी लफ्फाजी करें. एक बखत क्या है के कुछ लब्ज हाथमें आ जाये तो लफ्फाजी शुरु हो जाये. लफ्फाजी शुरु हो जाये और या तरीकेकी लफ्फाजी करते होंय तो अपनेकु समझनो के कृष्ण है ना! कृष्णने आसुरीजीव तो बनाये ही हैं ना! अपनेकु समझ लेनो चईये के अन्तमें आसुरीजीव

बनाये कौनने? कृष्णने बनाये हैं, कृष्णने ये प्रवाह मार्ग प्रकट कियो है, कृष्णनेही अज्ञ और दुर्ज्ञ बनाये हैं तो अपनेकुभी समझ लेनो चईये बहोत चिन्ता नहीं करनी चईये. ठीक है, कोई करतो होय तो करवे दो. मूल अपने भीतर अपने अहंकु अपने कृष्णके लीलात्मक अहंके साथ ट्युन् करते भये आनो चईये. यदि अपन् ट्युनअप् कर रहे हैं तो संगति बराबर हो सकेगी. नहीं तो वा कृष्णके लीलात्मक अहंमें अपन् अपनी अहंक्रियाको, या अहंकर्मको, या अहंव्यवहारकी बेसुराहटी छेड़ेंगे और ये संगीतके बजाय दुर्गीत हो जाये. ये रहस्य कल मैंने आपकु वो साइक्लीकल् बतायो और वामें येभी बतायो के रसानुभूति या रसानुभाव या स्थितप्रज्ञता; ये तीनों प्रकारसु अपन् अपने अहंकु कृष्णके अहंके साथ ट्युनअप् कर सकें हैं. वो आखी एक मेथड हती.

ये जो चार्ट.(पृ.३१८) हतो वो गये बरसभी मैंने बतायो थो. गये बरस दूसरे संदर्भमें बतायो थो. वाको एप्लीकेशन् दूसरो हतो. आप ऐसे मत समझियो के जो गये बरस हतो वोही एप्लीकेशन यहां है. वोही चार्टको एप्लीकेशन् यहां दूसरे ढंगको है. ये आखो एप्लीकेशन कौनसे ढंगको है और संदर्भ क्या है याकु ध्यानसु फिरसु रिमाइन्ड करवा दऊं के जो अहंलीलासु, अहंक्रियासु, कर्म और कर्म व्यवहारसु पाछो लीलापे जानेको डायरेक्शन् क्या है? वा डायरेक्शन्में एप्लीकेशन है. यहां वा रेफरेन्स्में वो बात बताई गई थी. गये बरस कौनसे संदर्भमें बताई थी एग्जेक्टली मोकु याद नहीं है, शायद साइक्लोजिकल एस्पेक्टसु बताई होगी. पर जोभी बतायो होय, वा संदर्भमें नहीं है. ये संदर्भ और याको एप्लीकेशन् दूसरो है. वहां जो ड्रो कियो थो, वो वहांके संदर्भ और एप्लीकेशन् के हिसाबसु कियो थो. यहां याको फिरसु ड्रो करके रिकॉल् कर रहे हैं.

(ब्रह्मकी आनन्दरूपता और रसरूपता)

ये जो अपनूने देख्यो के कृष्णकी अहंलीला रसानुभावात्मिका

है. क्यों रसानुभाव है? देखो रसके साथभी एक फन्डामेन्टल् प्रोब्लम रही भई है, के आनन्द स्वतः सिद्ध है. पर रस स्वतः सिद्ध नहीं है, आर्टिफिशियल् है. रस हर वक्त आर्टिफिशियल् होवे है. रस कभी स्वतः सिद्ध नहीं होवे. रसकी प्रक्रियासु आनन्द जो स्वतःसिद्ध आनन्द हे वो प्रकट होवे है. याई लिये उपनिषद्मेंभी ब्रह्मकु जा बखत रसरूप बतायो है, वाके पेहले ब्रह्म सृष्टि कैसे बन्यो, ये बतायो है. **''ब्रह्मविद् आप्नोति परं तदेषाभ्युक्ताः सत्यं ज्ञानम् अनन्तं ब्रह्म. यो वेद निहितं गुहायाम् परमे व्योमन् सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता इति''** (तैत्ति.उप.२।१) ऐसे करके वो ब्रह्मविद् परम तत्त्वकु प्राप्त करे है और वा ब्रह्मकु जो अपने हृदयमें रियलाईज करे है, वो वाकु रेलिश् कर सके है. **''यो वेद निहितं गुहायाम् परमे व्योमन् सोऽश्नुते सर्वान् कामान्''** तो वहांभी ब्रह्मकु सबसु पेहले हृदयमें रियलाईज करनो, वो ब्रह्म बाहर है, ऐसो नहीं, सारी सृष्टिकु बनाके वा सृष्टिमें जो मोकु प्रकट कियो है, वो मोकु प्रकट करके और मेरे हृदयमेंभी वो ब्रह्म है. मेरे हृदयमें वो ब्रह्म नहीं है ऐसी बात नहीं है, बाहरभी है तो भीतरभी है. जो सारो ब्रह्म बाहर प्रकट भयो है वो ब्रह्म मेरे भीतरभी है. भीतर जब मैं वाकु रियलाईज करूं, तब वाके बाद उपनिषद् क्या कहे **''सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता इति''** तो वो ब्रह्मके साथ ब्रह्मकु रेलिश् कर पावे है. जो ब्रह्मकु सिर्फ बाहर देख रह्यो है और भीतर नहीं देख पा रह्यो है; या जो सिर्फ भीतर देख रह्यो है और बाहर नहीं देख पा रह्यो है, तो वो ब्रह्मकी सर्वात्मकताकु समझ नहीं पा रह्यो है. ब्रह्मकी सर्वात्मकताकु समझ नहीं पा रह्यो है करके न तो वाको ब्रह्मको पूरो रियलाईजेशन ही हो रह्यो है और न रेलिशमेन्टही पूरो मिल रह्यो है ब्रह्मको. ब्रह्मको रियलाईज करनो और रेलिश् करवेकी पूरी पूरी शर्त ये है के **''यच्च किञ्चिद् जगत् सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा अन्तर्बहिश्च तत्सर्वम् व्याप्य नारायणः स्थितः''**. (महा.नारा.उप.१३।१-२) भीतर बाहर दोनों जगेह वो है. भीतर बाहर

दोनों जगेह वो है, तब वाके कारण वो आनन्द रसरूप हो जाये.

एग्जेक्ट याको मोडल् अपन् कैसे समझेंगे? थोड़ी सावधानीसु देखोगे तो आपको ख्याल आयेगो के अपन् जैसे कोई नाटक देखवे गये या कोई म्युजिकको कोन्सर्ट देखवे गये या कोई आर्टको एग्जीबीशन् देखवे गये, या कोई फिल्म देखवे गये, तो जोभी अपन् ये आर्टिस्टिक् क्रियेशन् देख रहे हैं, वो आर्टिस्टिक् क्रियेशन् अपने बाहर है. पर जो आर्टिस्टिक् क्रियेशन जा बखत तुम देख रहे हो वो तुम्हारे भीतर यदि तुमकु फील नहीं हो रह्यो है तो तुमकु एक चीतरामण दीखेगो पर आर्ट नहीं दीखेगो. एक पत्थरकी मूर्ति दीखेगी पर आर्ट नहीं दीखेगो. कोई समझेगो के डान्स कर रह्यो है तो हाथ पैर हिलते दीखेंगे पर वो नृत्यको तत्त्व तुमकु अनुभूत नहीं होयगो. जैसे सारो नाटक तुम देख रहे हो, सारी फिल्म तुम देख रहे हो पर वो जो नाटकके और फिल्म के जो स्टोरी है, वाके जो डायलॉग हैं, और वाके जो स्क्रीन प्ले है और वाके जो म्युजिकल या फोटोग्राफिकल् इफेक्ट है, वो जो डायरेक्टॉरियल् न्युएन्स् है वामें, वाकु तुम यदि भीतर अनुभूत नहीं करते होओ, तो तुमकु पिक्चर या नाटक खाली दीखेगो, पर तुमकु पिक्चरको मज़ा नहीं आ सकेगो. कहीं न कहीं तुम्हारेकु वो छू जाये, तुम्हारे दिलकु छुये, तो वो नाटक या पिक्चर तुमकु रसानुभूति पैदा करे है. नहीं तो देखके तुम आ जाओ, बस इतनो ही.

तो हरेक वस्तुमें, कुछ कुछ अनुभावकतायें रही भई हैं पर वो अनुभावकता वाकी कब कारगर होवे? जब अनुभव करवेवालेकी संवेदना वा ढंगकी होवे तो. जैसे क्रौंचवध भयो तो बाल्मीकीके हृदयमें वो संवेदना जागी. **''मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम् अगम शास्वती समा यत् क्रौंचमिथुनाद् एकम् अवधित काममोहित:.'' (वा.रामा.बाल.२।१५)** वा शिकारीने क्रौंचकु मार्‍यो वासु वाल्मीकीकु सीता-रामकी ट्रेजेडी

याद आ गई. तो बाहर क्रौंचवधकी घटनाने भीतर एक आर्टिस्टिक् अनुभवको स्वरूप लियो के ये तो एग्जेक्ट वाके पेरेलल् घटना हो गई. जैसे रावण सीताकु हर गयो. ऐसे या बहेलियाने क्रौंचके मादाकु मार दी. तब पूरी रामायण बाल्मीकीके भीतर समाधिभाषाके रूपमें स्फुरित हो गई. ये पेरेललिज्म् अपनेकु जब नहीं आवे, तबतक अपनेकु रसानुभूति नहीं हो सके. ये तो अपने भीतर वाकु नेगेटिवली या पोजिटिवली रेलिश् करते होंय तो रसानुभूति होवे. ये जो आखो प्रश्न है ये केवल रियलाईजेशन्कोही नहीं है, या सिर्फ रेलिशमेंट्को नहीं है क्योंके बहोत सारी चीजें अपन् रेलिश् करते होवें विदाउट रियलाईजिंग्; अपन् बहोत सारे रियलाईजेशन् विदाउट् रेलीशमेन्ट् करते होवें. जब अपन् रियलाईज करते होवें पर रेलिश् नहीं करें या जब रेलिश् करें और रियलाईज नहीं करें तो वो भक्ति तो नहीं हो सके है. क्योंके माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ़ स्नेहकु भक्तिको दरज्जा दिया गयो है. वामें माहात्म्यज्ञान रियलाईजेशन्के केरेक्टरको है और सुदृढ़ सर्वतोधिक स्नेह वाके रेलिशमेन्ट्के केरेक्टरको है. तो रसकी अनुभूतिके लिये ये दोनोंही फेक्टरस् रियलाईजेशनके और रेलिशमेन्ट्के काफी सिग्नीफिकेन्ट फेक्टर हैं. वो अपने भीतर प्रकट होते ही **''सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा''** की तरह अपनेकु वा ब्रह्मके लीलात्मक अहंके साथ अपनो भी अहं कुछ ड्युऐट गाने लग जाये है. वोही गा रह्यो है ऐसे नहीं, अपन् भी वा ड्युऐटकु, वा लीलात्मक अहंके गीतकु अपन् भी गुनगुना सकें. ये बात जोभी आर्टमें थोड़ीभी रुचि ले वाकु अच्छी तरेहसु फील हो सके है.

(अहंकारकी स्वरूपानुगुणता और लीलानुगुणता)

देखो एक एक्सपेरिमेन्ट करके बताऊं. एक समझो गत् है. मेरो गला अच्छो नहीं है तो वो अच्छो लगेगो पर द्रुत वाको समझ सकोगे आप. **''दिर दिर तना तना तना...''** ये गत है. याकी संगति तबलासु करनी है. कितने ढंगसु हो सके? खाली एक

उदाहरण देके बता रह्यो हूं के ट्यूनअप होवेकु **''धिर धिर किरतक धिर धिर किटतक''** येभी संगत हो सके है. अब पेहलेमें ऐसे लग रह्यो है के झगड़ा हो रह्यो है. दूसरेमें ऐसे लग रह्यो है के बड़े प्रेमसु संगत कर रह्यो है. तो पेहलेमें अहंकार बोल रह्यो है और दूसरेमें स्नेह बोल रह्यो है. भाव बदल गयो ना!

(चार्ट.७)

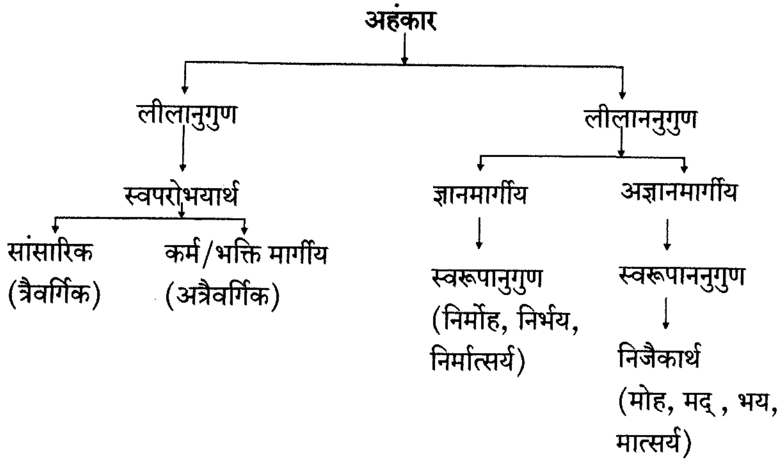

अब यामें फील करोगे तो अहंकारकोभी रस है और संवादकोभी रस है. तो वो रस कुछ केह नहीं रह्यो है. ''धिनक धिनक धिन धा'' करो के ''धिरकट धिरकट धा'' करो वामें दोनों बोलमें कुछ केह रह्यो है के ''मैं अहंकार हूं या स्नेह हूं?'' पर बोल अपने आपमें वा तरीकेको केरेक्टर वा तरीकेको रस प्रकट करे है. या रहस्यकु अपन् समझ सकें के नहीं सकें? एकमें अहंकार प्रकट होवे और दूसरेमें वा तबलावालेकी संगतको स्नेह प्रकट होवे के तुमने ऐसी धुन बजाई तो वाके साथ हम ऐसी संगत करेंगे के जामें

बड़ी लोच है, बड़ी मिठास है. यामें कोई मारामारीको भाव नहीं है. संगत तो हो ही रही है ना! मेरी बात समझमें आई ना!

या तरीकेको हर वक्त ब्रह्मकी एक अहंलीला है वा अहंलीलाके साथ अपनेकु संगति कैसी करनी है? झगड़ाकी या स्नेहकी? जब स्नेहकी करें तो वामें एक लोच आ गई, स्नेहकी मिठास आ गई के जैसे तोकु अनुकूल होवे वा तरेहसु वा मिठाससु हम तेरे साथ चलें. यामें तेरे साथ मारामारी करवेको भाव नहीं है. तो अपने अहंकारको अपन् ''धिनक धिन धा'' भी कर सकें और ''धिरकट धिरकट धा'' भी कर सकें.

ये एक उदाहरणकी बात बता रह्यो हूं. यदि फील् करोगे तो ख्यालमें आयेगो के हर जगेह, हर आर्टमें या तरीकेको फिनोमिना काम करतो होवे है. अपनी भक्ति एक आर्ट है. जा आर्टसु अपन् कृष्णके अहंलीलाकी संगति करें जैसे सितार बजावेवालेकी संगति तबला बजावेवालो करे, ऐसे भगवान्के अहंकी लीलाकी संगति अपन् भक्तिसु कर रहे हैं तब वो अपनीभी एक लीला प्रकट हो गई. क्योंके भक्ति करवेसु पेहलेही अपन्ने केह दियो है के अपन् दीन हैं. क्या कर सकें? है क्या जो तुम दे सको? ''**जां भी दे दूं जो उसीने दी थी. हक तो ये है के हक अदा ना हुआ.**'' और क्या कर सकेंगे अपन्, कुछ कर तो नहीं सकेंगे. कर नहीं सकें पर जैसो वाको अहं है वाकी संगति तो कर सकें के नहीं? यदि संगति कर सकें तो अपनेमेंभी लीलाभाव प्रकट हो जायेगो. वरना अपने अहंमें व्यवहार प्रकट होयगो. ''धिरकट धिरकट धा, धिरकट धिरकट धा.'' बस अन्तर इतनोसो है. मैं समझूंके बड़ो ऑड उदाहरण है. पर थोड़ोभी मेरे साथ समझवेको प्रयास करोगे तो आपकु फील होयगो के संगतिको कैसो स्वरूप होवे है? संगति कैसे होवे है और संगतिके साथ मारा-मारी कैसे होवे है. ब्रह्मके अहंके साथ

अपनेकु ''धरमना छेतरमा, कुरुना छेतरमा घड़ीकमा बाझी मरे''. ऐसे ब्रह्मके अहंके साथ अपने अहंकु टकरानो है के ब्रह्मके अहंके साथ अपनेकु अपने अहंकी संगति करनी है, ये बस आखो प्रश्न है. ये मैंने कल आपकु बतायो. आज मैंने याको विस्तार या लिये कियो के ये जो साइक्लीकल् चक्कर है वाको महत्त्व क्या है अपने या प्रेजेन्ट टोपिकमें, वाको समझनो अपनेकु बहोत जरूरी है.

प्रश्न : ये अहंलीलामें स्थित प्रज्ञात्मकको थोड़ोसो विचार अपेक्षित है.

उत्तर : अहंलीलामें सबसु बड़ी बात ये है के ब्रह्म जब अहंकी लीला कर रह्यो है, तो वा अहंकी लीलासु, जैसे आजके हीरो हीरोइन एक्टिंग करवेकु तीस करोड़ बीस करोड़ रुपया ले हैं, तो क्या कोई ब्रह्मके साथ अहंकी लीला करवेको बीस या तीस करोड़को कोन्ट्रेक्ट साईन कर सके है? तो जैसे ए.आर. रेहमानकु कल वो गोल्डन ग्लोबल एवार्ड मिल गयो, तो ऐसे ब्रह्मको कोई दे सकेगो? बहोत अच्छी अहंकी लीला करी, लो एवार्ड लो. ओस्कार एवार्ड ले जाओ. कोई दे सके? आखिर क्यों करे, कोई काम तो है नहीं. भीतर भर्‍यो भयो आनन्द उच्छलित हो रह्यो है, बस इतनीसी बात है. अपने भीतर बहोत सारे भाव होवें हैं. जब वो स्वाभाविकतया उच्छलित होनो चाहें हैं तब इन्टेन्सिफाई होवें. अब चाहे काम होय, लोभ होय, मोह होय, क्रोध होय, मद होय, मात्सर्य होय, त्वम् होय, मम होय जोभी भीतर है, वो बाहर उच्छलित होनो चाहे है. जोभी बाहर है वो कहीं न कहीं अपने भीतर पेनिट्रेट होनो चाहे है. वो चाहे फिर ऑक्सिजन् होय, चाहे हवा होय, चाहे दुर्गन्ध होय, चाहे सुगन्ध होय, चाहे साउन्ड होय, चाहे कुछभी होय, एक बेन्डवाला जायगो तो अपनेकु बेन्डबाजावालेसु क्या मतलब? बेन्डवालो जब गलीमेंसु जायगो तो साउन्ड अपने कानमें पेनिट्रेट होनो चाहे के नहीं होनो चाहे? तो जो कुछभी बाहर है वो भीतर

जानो चाहे है. बिल्कुल जो मैंने हवाको उदाहरण दियो थो के बाथरूममें कीहोल्मेंसु भी निरन्तर भीतर घुसवेको प्रयास करती रहे है. ऐसे जो कुछभी बाहर है वो निरन्तर अपने भीतर जावेको प्रयास करे है और जोभी भीतर है वो बाहर आवेको प्रयास करे है. सारो सृष्टिको स्ट्रक्चर याही तरेहको तो होवे है जाकु अपन् 'आप-ले' अथवा 'लेन-देन' केह रहे हैं के जो भीतर है वो बाहर जानो चाह रह्यो है और जो बाहर है वो भीतर जानो चाह रह्यो है. बाहर स्टेजपे रहे भये केरेक्टर अपने भीतर संवेदना बननो चाह रहे हैं. अपने भीतर भरी भई संवेदना कोई न कोई प्लेराईटके द्वारा या कोई न कोई आर्टिस्टके द्वारा बाहर प्रकट होनो चाहे है. सारो आर्टस्को क्रक्स् याहीमें तो है के अपने भीतर जो संवेदना है, जैसे वाल्मीकी संवेदना हती, वाल्मीकीकु रामसीताकी ट्रेजेडीको बरसनूसु दु:ख हतो, पर वो कोई न कोई इन्स्टिगेटिंग् पोइन्ट मांग रही थी. जा दिन वाकु छेड़यो और वो इन्स्टिगेट हो गई, वा दिन वो बाहर फूट पड़ी. उफनके उच्छलित हो गई. जैसे कहें हैं **''कभी खुदपे कभी हालात् पे रोना आया. बात निकली तो हरेक बातपे रोना आया.''** जब दिल पिघल जाये तो छोटी मोटी हर बातपे रोनो आ सके है. अदरवाईज़् अपन सोच सकें के वा बातपे कोई रोयगो नहीं पर यदि रोनो आ रह्यो होय तो कोईभी बातपे रोनो आ सके. गुस्सा आ रह्यो है तो कोईभी बातपे गुस्सा आयेगो. नोरमली जा बातपे गुस्सा नहीं आतो होय तो वा बातपेभी गुस्सा आयेगो.

मैंने हमारे खवासकी कथा कोईकु सुनाई. हमारो खवास छत्रपाल व्रजसु नौकरी करवे आयो. पेहली बार वाने हेलीकोप्टर देख्यो तो वाकी अकल हैरान हो गई. ''अरे! बम्बईकी बड़ी माया है. यहां धनकूटाहू उड़त है!'' हेलीकोप्टर खंडनी जैसे लगे ना! सब खवासनूने कही ''अरे! कहीं धनकूटा हू उड़त होंयगे!'' ''अरे नाय भई मैंने खुद उड़त देखे धनकूटा.'' मैंने कही ''कहां उड़तो?'' वाने कही

''अरे पंखा और लगे वा धनकूटामें.'' मैंने कही ''पंखा क्यों लग्यो?'' तो बोल्यो ''गरमी लगत होयगी.'' धनकूटा एक तो आकाशमें उड़े और वाकु गरमी और लगती होय. पंखा और लग्यो भयो हतो. ये बात मैंने एक व्यक्तिकु सुना दी. वो मोसु सुन-सुनाके गयो तो पार्ला स्टेशन बेंचपे बैठ्यो भयो हतो; ट्रेन आवेमें देर हती अचानक वाकु हंसी आई तो वाके बाजुवाले सब खिसकके दूर बैठ गये. तो ''कभी खुदपे कभी हालात पे रोना आया''. तो ऐसेही कभी खुदपे कभी हालातपे हंसना आया, ऐसेभी हो जाये अचानक कोई बातपे हंसी आ जाये. मनमें जो आनन्द आयो है वो उच्छलित हो जाये, क्या करे! उच्छलनको या प्रकारको सिद्धान्त है के जोभी दिलमें भाव होय वो कोई न कोई तरेहसु उच्छलित होनो चाहे है. बाहर जोभी कुछ उच्छलित हो रह्यो है वो कोई न कोई तरेहसु अपने भीतर पेनिट्रेट करनो चाहे है.

ब्रह्मको अहंकार या अर्थमें लीलात्मक है और वा ब्रह्मकु जब अपने आत्मतया अनुभव करें. स्थितप्रज्ञको मतलब क्या? के वा ब्रह्मकु अपने आप ''अहं ब्रह्मास्मि'' तरीके समझो के ''मैं ब्रह्म हूं.'' जब मैं अपने आपकु ब्रह्म तरीके अनुभव कर रह्यो हूं, तो जा तरीकेको ब्रह्मको अहं है वा तरीकेको मेरोभी अहं हो जायेगो. या लिये भगवान् गीतामें कहें हैं के

नैव किञ्चित करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।।
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन्।।८।।
प्रलपन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन्नपि।।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्।।
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति य:।।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिव अम्भसा।।१०।।

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।।

स्थितधी: किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।।५४।।
प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।।
आत्मन्येव आत्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञः तदा उच्यते ।।५५।।
(भग.गीता.५।८-१०, २।५४-५५)

ब्रह्मको केरेक्टर वामें आ जाये है. **आत्मन्येव आत्मना तुष्टः** वाकु हंसीभी कोईपे नहीं आ रही है, अपने भीतर हंसी आ रही है तो वो हंस रह्यो है. कोईपे हंसी नहीं आ रही है, दुःखभी आ रह्यो है तो कोईको दुःख नहीं आ रह्यो है. दुःखको भाव आ रह्यो है तो दुःख आ रह्यो है, सुखको भाव आ रह्यो है तो सुखको आ रह्यो है. ये "**आत्मन्येव आत्मना तुष्टः**"को जो भाव है. मने सोसाइटीमें कोई एसो करे तो मेडनेस लग सके के वाके बाजुमें बैठे भये लोग बेन्च छोड़के भग जायेंगे. पर ब्रह्मके अर्थमें तो वाके पास सोसाइटी है ही नहीं ना! ब्रह्म या अर्थमें अनसोशियल फिनोमिना है ना! क्योंके ब्रह्मकी कोई सोसाइटी तो है ही नहीं. वो जो कुछ कर रह्यो है तो वो वा बेन्चपे बैठे भये जैसोही तो कर रह्यो है. हंस रह्यो है तो अपने आप, रो रह्यो है तो अपने आप. अहं प्रकट हो रह्यो है तो वामें प्रकट हो रह्यो है. त्वम् प्रकट हो रह्यो है तो वामें खुदमें प्रकट हो रह्यो है.

मैंने एक बखत बात बताई थी के सुरेशबावाके यहां एक भीतरिया तपेलीनूसु बात करतो थो के "यहीं बैठी रहेगी के जेजे बावाके पास चलेगी भोग मन्दिरमें!" वाके बाद तपेलीकु उठाके ले जातो. अब ये क्या है? वा तपेलीके साथ या तरहसु जो बोल पा रह्यो है, वो तो लीलाही है ना! अच्छा अपन् कहें के "पागल हो गयो होयगो." पागल हो गयो होय तो और सबके बारेनूमें वो कहां पागल हतो? सामग्री सिद्ध करतो और तपेलीसु खुदही

बातें करतो, "कितनी देर बैठी रहेगी, चलेगी नाय भोग मन्दिरमें ठाकुरजीके पास" और उठाके ले जातो. या रहस्यकु समझो के ये लीलाभाव है. ये लीलाभाव अपनेकु नहीं होय. बच्चा अपने खिलोनानूसु हर वक्त बोलतो होवे. कभी मार्क करके देखियो. डायलॉग घड़े, बच्चा ऑल इन वन् होवे. ये फिल्मवालेनूकु तो कोई दूसरेसु डायलॉग लिखवाने पड़ें, स्टोरी लिखवानी पड़े, बोलवेवालो केरेक्टर एक्टर कोई अलग होवे. बच्चा सब काम खुद करे. स्टोरीभी खुद करे खिलोनाके साथ, डायलॉगभी खुद लिखे और बोलेभी खुद. कब खेल चालू हो जाये और कब खेल खत्म हो जाये पता ही नहीं चले. वो अपन् छुपके बच्चानूकु देखें तो मजा आवे लीलाको भाव क्या है! बच्चामें लीलाभावको बहोतही स्वस्थ रूप होवे है जो अपनूमें व्यवहारके कारण थोड़ो छुट्टो हो जाये. निरन्तर व्यवहारको प्रेशर धनकूटाको ऐसो आवे अपनेपे के वो लीलाभाव अपन् मेन्टेन् नहीं कर पावें. बच्चापे वा तरीकेको व्यवहारको कोई धनकूटा चलतो नहीं होवे, तो वो निश्छल होके अपनी सारी लीला प्रकट करे है. स्टोरी घड़तो रहे, डायलॉग घड़तो रहे, झगड़ा करतो रहे, सब काम करे.

(ज्ञानी और भक्तको रियलाइज़ेशन् और रेलिशमेन्ट)

ये लीलाभाव स्थितप्रज्ञमेंभी प्रकट हो जाये क्योंके ब्रह्मके साथ वो अपनो तादात्म्य अनुभव करे. अन्तर सिर्फ इतनोही है के ब्रह्मके स्वरूपके अनुरूप वो स्थितप्रज्ञ हो जाये है. भक्तके साथ हर वक्त ये खासियत रहे है, के वो ब्रह्मके स्वरूपकु नहीं पर ब्रह्मकी लीलाकु रेलीश् करे हे. जो स्वरूपकु रियलाईज़ करे है और लीलाकु रेलीश् भी करे है, वाको नाम भक्त. ब्रह्मके स्वरूपकु रियलाईज़ करे और ब्रह्मकी लीलाकु रेलिश् करे तो भक्त है. ज्ञानीके साथ क्या होवे है? ओपोज़िट होवे है. ज्ञानी स्वरूपकु ही रेलिश् करतो होवे है, लीलाकु सिर्फ साक्षीभावसु रियलाईज़ करतो होवे है के हां ऐसी

लीला है. जो जडभरतके चरित्रमें अपनेकु दिखाई दे है ना के साक्षीभावसु वो **''सर्वं खलु इदम् ब्रह्म''**को रियलाईज़ेशन करे पर रेलिश् नहीं कर पावे. रेलिश वो ब्रह्मको स्वरूप करे है. या अर्थमें ज्ञान और भक्तिके केरेक्टरमें कोई न कोई पेरोडोक्सिकल् कोन्ट्राडिक्शन् रह्यो भयो है. वो आज मैं आपके साथ शेयर करनो चाह रह्यो हूं. ज्ञानी ब्रह्मके स्वरूपकु रेलिश् करे है और लीलाकु रियलाईज़ करे है. भक्त ब्रह्मके स्वरूपकु रियलाईज़ करे है और लीलाकु रेलिश् करे है. ये बेसिक डिफरेन्स् है.

प्रश्न : ज्ञानी तो स्वरूपकु जाने है तो फिर वोही स्वरूपमें एकात्मतासु वामें मिल जाये. वामें रेलिशमेन्ट्की बात कहां आई? पेहले आपने बतायो के भक्तकी सोफ्टलेन्डिंग् होवे है और ज्ञानीकी क्रेशलेन्डिंग् होवे है.

उत्तर : ये ही तो क्रेशलेन्डिंग् है के वो ब्रह्मके स्वरूपकु रेलिश् कर रह्यो है पर, लीलाकु नहीं कर पा रह्यो है. येही तो क्रेश् है अपने यहां. स्वरूपकु रेलिश् कर रह्यो है लीलाकु रेलिश् नहीं कर रह्यो है. लीलाकु रियलाईज़ कर ले के सब कछु ब्रह्म है. जैसे भगवानने कह्यो हे **''भूमिर् आपो अनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिर् अष्टधा.''** (भग.गीता.७।४). माने सब कुछ ब्रह्म है. अब रेलिश् क्या करेगो? या लिये वो लीलाकु रेलिश् नहीं करके मात्र स्वरुपकु रेलिश करे हे. जो चोर है और जो लोभी है वो सोना रेलिश् करे गहेना नहीं, पर घरकी औरतें वो तो गेहना ही रेलिश् करती होवें ना! क्योंके उनको लीलाभाव होवे. एक नेकलेस चईये, एक ईयररिंग चईये, चूड़ी चईये. उनकु अगर एक सोनाकी लगड़ी देवें तो उनको इतनी प्रसन्नता नहीं होयगी पर वाके आधे सोनेकोभी एक गेहना बनाके देदो ना, तो बड़ो धन्य मानेगी के ''म्हारो वर ऐटले!! है के नहीं! एक लगड़ी देवे और एक ईयररिंग दे तो वामें कौनकु ज्यादा रेलिश् करेगी? वो

प्रेमको इजहार मान ले बिचारी. मेरे लिये रिंग बनवाके लाये. वो लगड़ी दे दी तो वाकु ऐसो नहीं लगेगो के प्रेमको इजहार है. वोभी समझ जायेगी के सोनाकु संभालके रखनो चाह रह्यो है. अपन् गेहनाकु रेलिश् करें और सोनाकु रियलाईज़ करें. जब गेहनाकु तुम रेलिश् नहीं कर पा रहे हो. ब्रह्म सोना है सृष्टि आखी ब्रह्मको गेहना है. तुम क्या रेलिश् कर रहे हो ये तुमकु नक्की करनो पड़ेगो ना के तुम क्या चाह रहे हो. यदि सोना चाह रहे हो तो जमाखोर हो. जब तुम गेहना रेलिश् कर रहे हो तो जमाखोर नहीं हो. ये तो गेहनाकी तो अपनी एक आर्टिस्टिक् ब्युटी है वाकी तुम संगत कर रहे हो नहींके सिर्फ सोनाकी, के यदि तू सोना है तो चल हम तोकु गेहना बना रहे हैं. आखो एप्रोच् बदल गयो ना! **''घाट घड़िया पछी नाम रूप झूझवा, अन्ते तो हेमनु हेम होये.''** (नरसिंह महेता) ज्ञानीकु लगेगो यामें क्या है? अन्ते तो हेमनु हेम होये. तुम हेमकु रेलिश् कर रहे हो, मतलब तुम संग्रहखोर हो. जब तुम गेहनाकु रेलिश् कर रहे हो, वो तो हर औरतकी वीकनेस् है. वाकु साड़ी दो, वाकु खाना दो, वाकु फिल्म दिखावे ले जाओ पर एक गेहना दे दो तो फिर डिफरेन्स् देखो. तुरत मान लेगी के वर अच्छो है, सुवर नहीं है. जो तुमने सोना दियो तो वर नहीं मानके सुवर मान ले. सोनो संग्रह करे है, मेरे लिये कुछ नहीं!

आज जो विषय अपन् देखवे जा रहे हैं, मोकु पता नहीं के गये साल मैंने ये बात कही थी के नहीं! अहंकार अपने दोनों तरीकेके हो सकें हैं. ब्रह्मकी अहंलीलाके अनुगुण अपनो अहंकार हो सके है. जा तरीकेको गीत हो रह्यो है वा तरीकेको ठेका देनो और गीत एक तरीकेको बज रह्यो है और ठेका अपन् दूसरे तरीकेको दे रहे हैं तो वो अननुगुण हो गयो. अनुगुण वाके गुण जैसे गुणवालो और अननुगुण मने जैसो वाको गुण है वैसो गुण

नहीं पर कोई दूसरोही गुण प्रकट करे तो वो अननुगुण केहवावे. दो तरीकेके अहंकार हो सकें हैं. ब्रह्मकी लीलाके अनुगुण अपनो अहंकार है के अननुगुण अहंकार है?

ये अनुगुणताको पेरामीटर क्या? जैसे कई बखत मैं बता चुक्यो हूं आपकु के जितने द्वैतवादी धर्म हैं, जो अपनेकु और भगवान्कु अलग मान रहे हैं, उनकु हर वक्त ये भय लगतो रहे है, के कोई भगवान्के बराबर होवेको क्लेम न करे. क्लेम करे तो वो ब्लेसफेमी है, कुफ्र है. अपने यहांके द्वैतवादी कहें हैं **"घातयन्तिहि राजानो राजा अहम् इतिवादिनम्."** कोई राजाके रेहते तुम कहो "मैं राजा हूं" तो वो तुमकु सूलीपे चढ़ायगो. ब्रह्मके अहंकु तुम क्लेम् मत करो. तुम अपने अहंकु वा लेवलपे लावेको प्रयासही मत करो. वा तरेहसु वो लोग वार्निंग देते रहें.

(ईसाको सन्देश प्रेम और इस्लाम माने शान्ति फिर झगड़ा क्युं?)

जितनेभी द्वैतवादी अब्राह्मिक धर्म हैं उन सबकी ये मुख्य क्वालिटी है. यहूदीन्के और मुसलमानन्के झगड़ाको तो कुछ जस्टिफिकेशन् है. वो जस्टिफिकेशन्की बात छोड़ दो. ईसाइयन्के और मुसलमानन्के झगड़ाको तो कोई कारण ही नहीं होनो चईतो थो. वाको कारण क्या? क्योंके इस्लाम मतलब शान्ति. ईसाको सन्देश प्रेमको. भई शान्ति है तो प्रेम होयगो और प्रेम है तो शान्ति होयगी. अप्रेममें शान्ति कैसे होयगी और अशान्तिमें प्रेम कैसे होयगो? जब तुम प्रेम नहीं करते होओगे तो? ये जो मेइन थर्स्ट है दोनों धर्मन्की उनमें झगड़ा होवेको कोई कारण होनो नहीं चईये. पर कितनो बड़ो झगड़ा है? सिर्फ एक कारणसु. जीसस् यों केहतो थो **"आई एण्ड माई फादर आर वन्."** **"आइ एम सन् ओफ् गोड्"** अरे ये बात कैसे तुमने केह दी! या लिये मौहम्मद साहब कुरानमें कहें हैं **"लम यलिद व लमयूलद वद यकुल्लह कुफुवन अहद."** अल्लाह न तो

कोईको बाप है और न कोई वाको बेटा है. वो अकेलो है. कोई वाके बराबर हो नहीं सके. कैसे क्राईस्टने केह दी! बस इतनेपे झगड़ा है. जबकि खुद क्राईस्टभी यों तो मानेंही है के मैं बेटा हूं. वो ऐसो नहीं केह रह्यो है के मैं फादर हूं. भई फादर और सन् एक नहीं होयगें तो होयगें क्या? वो सिर्फ इतनी बात कहे है "आई एण्ड माई फादर आर वन्." याके लिये दोनोंमें झगड़ा है. शान्ति और प्रेम होते भये भी अशान्ति अप्रेम हो जाये. अप्रेम और अशान्ति हो जाये. बस इतनेसे पोइन्ट्पे.

(ज्ञान और भक्तिकी साधनामें अहंको रोल्)

अपने यहांभी याही तरहको है. जा बखत अपन् यो केह रहे हैं के ब्राह्मिक अहंको, ब्रह्मको जा तरीकेको अहं है वा तरीकेको अपनो अहंभी होनो चईये. अपन् ये बात केहनो चाह रहे हैं के ब्रह्मको नेचर कुछ तरेहसु अपन् अभी शेयर नहीं करते होंय पर शेयर कर सकें हैं कुछ रियलाईजेशन्के बाद, कुछ रेलिशमेन्टके बाद. अपने क्रियाकी अवस्थामें, अपने अहंकी क्रियाकी अवस्थामें, अहंकर्मकी अवस्थामें, अहंके व्यवहारकी अवस्थामें अपन् ब्राह्मिक अहंकु रियलाईज् या रेलिश् नहीं कर पाते होंय, तो वो अपनी लिमिटेशन् है; पर यदि अपन् अपने अहंकी याही क्रिया, कर्म और व्यवहार कु भक्ति तक सब्लिमेट करें, तो अपन् भक्तिसु ब्रह्मके अहंकु रेलिश् कर सकेंगे. इतनी ही बात नहीं ब्रह्मके स्वरूपात्मक अहंकु भी रेलिश् कर सकेंगे और ब्रह्मके लीलात्मक अहंकु भी रेलिश् कर सकेंगे. अपन् या सिफ्तसु आगे बढ़ें. भक्ति या ज्ञान सु अपन् वाके अहंकारके साथ अपने आपकु ट्यून् करें तो अपनेमें वो गुण आ सकें. तब अपन् वाके अनुगुण हो सकें हैं. अपन् ये केह रहे हैं. ब्रह्मकी लीलाके अनुगुण अपनो अहंकार होनो और ब्रह्मकी लीलाके अनुगुण नहीं ऐसो अहंकार होनो. ऐसो मूलमें अपन्ने जो साईकल् देख्यो वाके कारण ये दो पोसिबिलिटीस् अपने सामने उभरके एकदम आईं

ना! मने भक्तिमय व्यवहारकी पेहली जो अवस्था है मानें वा सर्कलमें नीचेको जो सेमीसर्कल् है, हाफसर्कल जो है, वामें क्रिया, कर्म और व्यवहार की जो अहंकी रेन्ज है, वा रेन्जमें अपनो अहं ब्रह्मकी लीलाके अनुगुण है के नहीं है, वो अपनेकु देखनो चईये. ऊपर जावेके बाद तो वो रसानुभूति और रसानुभावात्मक और स्थितप्रज्ञात्मक होके वाके अहंके साथ अपनी ट्यूनिंग् अच्छी हो गई. पर वाके पेहले तो वाके अहंके साथ अपने अहंकी ट्यूनिंग् हो नहीं रही है, तो वा लिये अहंकारके ये दोनों गुण हो सकें हैं.

(स्वरूपात्मक एकतामें लीलाकी अनेकताको बिगबेन्ग्)

याकी एक खूबसूरती देखो. लीलानुगुण अहंकारकी सबसु बड़ी खासियत क्या है? जैसे मैं अपने शुरुआतके प्रवचनसु कल तक या बातकु हेमरिंग् करके बतातो रह्यो के अपन् अहं कोईके साथ शेयर नहीं कर रहे हैं. अहं एक्स्क्लुसिव् अपनी साइक्लोजिकल् मोनोपोली है जाकु अपन् कोईके साथ शेयर नहीं करें हैं. पर यामें देखवेकी एक बात ये है, के ब्रह्म शेयर नहीं करे, वो ब्रह्मकी लाचारी है. क्योंके ब्रह्मके अलावा कुछ है ही नहीं के जासुं ब्रह्म अपनो अहं शेयर कर सके. पर वो लीलाको पोइन्ट जैसे बिगबेन्ग्को पोईन्ट क्या हतो कोस्मिक सायन्समें जैसे वो खोज रहे हैं, ऐसे वो बिगबेन्ग् क्या है? बिगबेन्ग् आप लोगनूकु लगेगी के क्या बला आ गई? वैज्ञानिकलोग यों मानें के सारो जगत् पैदा होवेके पेहले एक अण्डाकी तरह हतो, फटाकड़ाके जैसो, और अचानक जैसे कोठी फूटे और वामेंसु किरणें निकलें ऐसे सारे जगतको कोई एक मूल जो हतो वामें एक धूम धड़ाका भयो और वामेंसु ये सृष्टि पैदा भई. तो वो बिगबेन्ग् भयो. वा बिगबेन्ग्को नेचर क्या हतो? वाको आर्टिफिशियली बनाके वैज्ञानिक लोग देख रहे हैं. अपने ब्रह्ममेंभी ये जो लीलाको बिगबेन्ग भयो, फोर द टाईम् बीन्ग् वा एन्नाल्सु सोचो, के वो जो बिगबेन्ग् भयो अपने ब्रह्ममें लीलाको, अपन् केह रहे हैं के

वाके भीतर आनन्दको स्वरूप उच्छलित होके बिगबेन्ग भयो है. भई वो बातभी ठीक है. पर वाको प्रेशर क्या हतो, जाके कारण, जैसे अपन् फटाकड़ामें दियासलाई लगावें और वाके कारण वामें प्रेशर आके वो फूटे, ऐसे कौनसी दियासलाई हती जाने ब्रह्ममें लीलाको ये बिगबेन्ग् कियो? स्पष्टतया अपन् उपनिषद्में क्या पावें **''स एकाकी न रमते स द्वितीयं ऐच्छत्.''** वाकु अपने अहंमें मजा नहीं आई, वाने 'तू' चाह्यो. जब वाने तू चाह्यो तो वा तू कु पैदा कायमेंसु कियो? अपने अहंमेंसु. या रिस्पेक्ट्में ब्रह्म अपने अहंकु शेयर कर रह्यो है ना अपनेसु! अपनेमेंसु, चाहे वो पापी होय, चाहे पुण्यात्मा होय, चाहे सुअर होय चाहे ब्राह्मण होय, **''शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः''** (भग.गीता.५।१८) चाहे जड़ होये के चाहे चेतन होय, जाके भीतर जो भी अहं है, वाके अहंको ब्रह्म शेयर कर रह्यो है के मैं हूं ये. **''मयि सर्वम् इदं प्रोतं सूत्रे मणिगणाइव रसो अहम् अप्सु कौन्तेय! प्रभास्मि शशिसूर्ययोः''** (भग.गीता.७।७-८) ये देखो भगवान् शेयर कर रहे हैं अपने अहंको. दुनियाकी हर वस्तुके साथ अपने अहंकु भगवान् शेयर करनो चाह रहे हैं. भगवान् जब अपने अहंकु शेयर कर रहे हैं तो क्या अपन् इतने विरागी हैं के अपन् अपने अहंकु भगवान्के साथ शेयर नहीं करनो चाहें? जैसे आजकी टर्मिनोलोजीमें वो शेयर फ्लोट कर रहे हैं, के ये लो शेयर मैं मार्किटमें फ्लोट कर रह्यो हूं, लो तुम उठाओ. अपन् कहेंगे के अपन् नहीं खरीदेंगे. केमके ''म्हारो पानपट्टीनो धंधो छे. शेयर्नो अमने न पोसाय!'' तो लगाओ चूना पानमें, बीजुं शुं करशो! भई जब वो शेयर फ्लोट कर रह्यो है, तो तुमकु शेयरपरचेस् करके होल्ड करनो आनो चईये ना! वो शेयर फ्लोट कर रह्यो है, तुमकु एक्सेप्टेबलप्राईस्में तुमकु दे रह्यो है, अपन् कहेंगे के नहीं नहीं आपणो तो पानपट्टीनो धंधो सारो चाली रह्यो छे वली क्रिया, कर्म, व्यवहार बहु सारो चाली रह्यो छे. जब भगवान् शेयर् फ्लोट कर रह्यो है तो अपनूकु माद्दा होनो चईये के अपन् वो शेयर खरीदें. बहोत

छोटेसेमें अपनेकु वो शेयर मिल रह्यो है. अब वो शेयर अपन् खरीद कैसे सकें हैं? जब हम अपने अहंकु अपने तक सीमित नहीं रखें तब. अपने अहंमें वो ब्रह्मके अहंकी फ्लेक्सिबिलीटी लावें के ब्रह्मको अहं खुदके लिये और परायेके लिये दोनोंके लिये है. साइक्लोजिकली आज जो अपनो कोन्स्टिट्युशन् है, एपेस्टेमिलोजिकली जो अपनो कोन्स्टिट्युशन् है, वामें अपन् ये नहीं समझ पावें हैं, के कैसे अपन् अपने अहंको दूसरेको कर सके हैं?.

(हर धर्मको मूल)

कोईभी धर्मको मूल संदेश येही है **''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः.''** तुम अपने आपकु दूसरेके साथ उतनो अलग मत मानो, ये तो ब्राह्मिकधर्म होंय या अब्राह्मिकधर्म होंय, सारे धर्मनूने ये उपदेश तो युनिवर्सल मेसेज़के तहत दियो है **''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः''** तुम अपने आपकु पेरामीटर मानो; जैन बौद्धभी येही कहें हैं, दूसरेकु हिंसाको दुःख हो रह्यो के नहीं ? वाको तुमकु कैसे पता चलेगो? हर बखत या बातकु सोचो के या तरीकेको हिंसाको व्यवहार तुम्हारे साथ करे तो तुमकु कितनो दुःख होवे, उतनोही दुःख वाकुभी होयगो. **''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः''** सर्वत्र येही बात कही गयी है. सब धर्मनमें चाहे वो इस्लाम होय, चाहे वो यहूदी होय, चाहे वो जैन होय, चाहे वो बौद्ध होय, चाहे वो आस्तिक होय, चाहे वो नास्तिक होय, सब धर्मनूमें ये एक कॉमन् फिनोमिना है **'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः'** क्योंके ये बात मनुष्यके नेचरकी नहीं पर प्राणीके नेचरकी बात है. प्राणी भी **''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः''** को मेन्टेन् करे. मैं कई बार बता चुक्यो हूं आपको के चेंटीकु एक शक्करको डला मिले तो सब चेंटीनकु इक्ट्ठी करे. खुद अकेली नहीं खा जाये. हर जानवरमें या बातको एक दूसरेके साथ, **''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः'** को पाण्डित्य सब लेवलपे अवेलेबल

है. वो अवेलेबलको अपन् या तरहसु ब्रह्मके अहंके केरेक्टरको एक्वायर करवेमें पेहलो आल्फाबेट या तरेहसु स्टार्ट कर सकें हैं, के मेरो अहं मैं कभीभी वा तरहकु नहीं रखने दउंगो के जाके कारण मैं दूसरेके अहंकी परवाह नहीं करूं. जब तुम दूसरेके अहंकी परवाह कर रहे हो, जा बखत तुम दूसरेके अहंकु अपने अहंकी तरह ट्रीट कर रहे हो, तो वाके अहंकु भले साइक्लोजोकिली शेयर नहीं कर सको पर सोशियलोजिकली तुम शेयर कर रहे हो. सोशियलोजिकली तुम सोसाइटीमें वाकु शेयर कर रहे हो. ब्रह्मको अहं केवल खुदके लिये नहीं है सबके लिये है. जैसे धन्धा दो तरेहके होते थे एक प्राईवेटसेक्टर और दूसरो पब्लिकसेक्टर. ब्रह्मको अहं पब्लिकसेक्टरको अहं है. ऐसे तुम अपने अहंकु पब्लिकसेक्टरको अहं बनाओगे ना! तो तुम वाको दूसरेके साथ शेयर कर सकोगे. तुम अहंको प्राईवेटसेक्टरकोही रखोगे तो तुमकु वो कभी समझमें आयेगी नहीं के ब्राह्मिक अहं कैसो होवे है? अपने अहंको वा पब्लिकसेक्टरके अहंके नेचरकी तरह बनानो के सब यामें शेयर होल्डर हो सके हैं. **''देहः किम् अन्नदातुः वा भोक्तुर्वा निषेक्तुर्वा...''** (भाग.पुरा.१०।१०।११) विवेकधैर्याश्रयमें बतायो है के ये पब्लिकसेक्टर् है.

लीलानुगुण अहंको सबसु पेहलो गुण ये है के स्व-पर-उभयार्थ होवे है. अहं खुदके लियेभी होवे है और दूसरेके लियेभी होवे है. नहीं होवे है ऐसो नहीं. अब अपनूकु अहं मेरो है. मेरो अहं है याकु कौन इन्कार कर सके है के तेरो अहं नहीं है. पर तेरो अहं दूसरेके लियेभी है के नहीं के तेरे लियेही है? जा बखत अपन् यों मानें के मेरो अहं सिर्फ मेरेही लिये है, वा बखत अपन् वाकु शेयर करवेके लिये तैयार नहीं हो रहे हैं. वहांसु सारी तकलीफें शुरु हो रही हैं. जा बखत अपन् कहें के मेरो अहं है पर जैसे मेरे लिये है, ऐसे दूसरेके लियेभी है. जो भी चीज मेरे पास है और वो जैसे मेरे लिये है, वैसे वो दूसरेके लियेभी हो सके है.

या बातकु जा क्षण अपन् कबूल करें वा बखत अपन् शेयरकु इन्वाइट कर रहे हैं दूसरेके लिये तब अपन् अपने अहंकु वा तरहसुं टेन्टेटिवली प्रिपेयर करें. क्यों ब्रह्मको अहं स्व-परोभयार्थ है? ब्रह्मको अहं ऐसो नहीं है के मैं ब्रह्म हूं. अब कोई ब्रह्म हो ही नहीं सके है. ऐसे नहीं है. ब्रह्मको अहं कैसो है? के हां मैं ब्रह्म हूं. तुम मोकु रियलाईज करो. तुमभी ब्रह्म हो. मैं ब्रह्म हूं, तुम मोकु रेलिश् करो. मैं तुम्हारो हूं. मैं तुमकु रेलिश् कर रह्यो हूं. तुम मेरे हो. ब्रह्मको अहं या नेचरको है. या ब्युटीकु समझो. या केरेक्टरके कारण ब्रह्मको अहं स्व-परोभयार्थ है, केवल स्वार्थके लिये नहीं है. आदमीकी सारी तकलीफ अब्राह्मिक अहंकी कहांसु डेवलप् होवे है? जा बखत अपन् अपने अहंकु केवल स्वार्थ ही मानके चलें हैं, परार्थ नहीं मान पावें तब. कौन तुम्हारो अहं तुम्हारेसु छीन सके? कोईके बापकी ताकत नहीं है. जा तरहसु ये सिस्टम् घड़ी गई है, कोईको अहं कोई छीन नहीं सके है. अहं छीन नहीं सके पर तुम्हारो अहं दूसरेके लिये है के नहीं? यदि दूसरेके लिये तुम्हारो अहं है, तो तुम्हारे अहंमेंभी स्वपरोभयार्थ ब्राह्मिक केरेक्टर आयो, या रहस्यकु समझो. जब स्वपरोभयार्थ अहं है तब वाके दो भेद हो जायेंगे.

जोभी स्वस्थ संसारी है, अस्वस्थ संसारीकी बात नहीं कर रह्यो हूं मैं, प्रत्येक स्वस्थ संसारीको अहं स्व-पर-उभयार्थ होयगो. केवल स्वार्थ नहीं होयगो. कोई जानवरको अहं केवल स्वार्थ नहीं होवे है. मनुष्यमें कुछ अहंकारके कर्मकी, व्यवहारकी कृतिके कारण या तरेहसु प्रोब्लम क्रियेट हो जाये के वाको अहं वो केवल स्वार्थ बना ले है. बाकी कोई जानवरको भी अहं ऐसो नहीं होवे है जो स्व-पर-उभयार्थ नहीं होवे. हर जानवरको अहं स्वपरोभयार्थ होवे है. मनुष्यकोभी अहं स्व-पर-उभयार्थ करनेके लिये भावना करवेकी जरूरत नहीं है. थोड़ोसो वा बारेमें तुम रियलाईज़ करोगे, तो वो

अपने आप स्वपरोभयार्थ होवे लग जाये. एक बखत याकु स्वीकारवेकी जरूरत है के मेरो अहं ऐसो है ही नहीं के केवल स्वार्थके लिये वो हो सके है. कोईको अहं ऐसो नहीं है.

(अहंकु लीलानुगुण बनानेको पहेलो कदम)

ब्रह्मको अहं ऐसो नहीं है के जो केवल ब्रह्मके लिये रेह गयो. वो मेरे लियेभी हो गयो. ब्रह्मको अहं जब मेरे लिये हो गयो तब ब्रह्मके अहंसु ज्यादा तो मेरो अहं नहीं होयगो ना! तो ब्रह्मको अहं मेरे लिये हो गयो. मोकु अपने अहंकु दूसरेके लिये बनानेमें हरकत क्या है? उतनो रियलाईजेशन् अपने अहंको ब्रह्मके लीलाके अनुगुण बनावेको पेहलो कदम कमलको क, ख खड़ियाका ख, गणपतिको ग है. नहीं बने तो ग गधेड़ाको ग हो जाये. ये पेहलो स्टेप है. स्व-पर-उभयार्थ अपनो अहं होनो चईये.

(भक्तको अहं)

अब ये अहं सांसारिको भी हो सके है अथवा अपने अहंकु अपन् ब्रह्मके लिये जो कर्म कर रहे हैं वाके लियेभी वापरें. ''**ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हवि ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना**'' (भग.गीता.४।२४) ब्रह्मकी भक्तिके लियेभी अपने अहंको वापरें हें. वो स्व-पर-उभयार्थ अपनो अहं भक्तिमार्गमेंभी अपनो अहं हो सके है (दासोऽहं...). ये ब्रह्मके साथ नहीं पर ब्रह्मके नाम रूप कर्मके साथ स्वपरोभयार्थ सांसारिक है. ब्रह्मके साथ स्वपरोभयार्थ ब्रह्मको असांसारिक है, याकु अपन् त्रैवर्गिक केह सकें परन्तु भागवत्की भाषामें, और महाप्रभुजीकी भाषामें कहेनो होय तो ये अत्रैवर्गिक हे. अपवर्ग मने त्रिवर्गसु छुटकारा पाके मोक्ष पानो वासु सम्बन्धित आपवर्गिक. मैं याकु आपवर्गिक नहीं केह रह्यो हूं अत्रैवर्गिक कहे रह्यो हूं, माइन्ड इट्, वामें मेरो कुछ खास अभिप्राय हे. पर नित्यकर्म करते रेहनो, या ब्रह्मकी भक्ति करते रेहनो, वो मुक्तिसु ज्यादा अच्छी बात मानी

गई हे अपने यहां. ‘‘**स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिन:**’’ (भाग.पुरा.६।१७।-२८) सच्चो भक्त स्वर्ग, अपवर्ग और नर्क सबमें तुल्यार्थदर्शी = एक समान माननेवालो होवे हे. क्यों तुल्यार्थदर्शी होवे हे? त्रैवर्गिकायासनूसु वो छूटनो ही नहीं चाहे हे ‘‘**कर्मभिः भ्राम्यमाणानां यत्र क्वापि ईश्वरेच्छया मंगलाचरितैः दानैः रतिः नः कृष्ण ईश्वरे**’’(भाग.पुरा.१०।४४।७), वो अपने कर्मकी मेथड्सुं या भक्तिकी मेथड्सु अपने अहंकु ब्रह्मके अहंसु शेयर करनो चाहे हे. मैने अपनो अहं संसारमें बहोतनूके साथ शेयर कियो, अब एक चान्स् ऐसो भी लऊं के चल मेरे अहंकु तेरे साथ शेयर करूं. तू तेरे अहंकु मेरे साथ शेयर कर. तो जा बखत अपन् अपने अहंकु ब्रह्मके साथ शेयर करनो चाह रहे हें, वा बखत अपनो अहं आपवर्गिक नहीं होके, वाकु त्रैवर्गिक भी नहीं कहेंगे क्योंके धर्मार्थकामार्थ नहीं हे, न कोई ड्युटी करवेके लिये हे, न पैसा कमावेके लिये हे, न कोई कामनाकी परिपूर्णताके लिये हे. वो कर्म सिर्फ कर्मके लिये हे. ‘‘**कर्मण्येव अधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन मा कर्मफलहेतुर् भू मा ते संगो अस्तु अकर्मणि**’’ (भग.गीता.२।४७) ये अपवर्गसु भी ऊंची एक अवस्था हे अपने अहंकु कर्मकी प्रणालीसु ब्रह्मसु शेयर करवेकी, या अपने अहंकु भक्तिकी प्रणालीसु ब्रह्मके साथ शेयर करवेकी एक अपवर्गसु भी ऊंची एक अवस्था हे, वा अवस्थाके लिये ‘अत्रैवर्गिक’ केह रह्यो हूं, आपवर्गिक नहीं केह रह्यो हूं. अपवर्ग माने मोक्ष.

(न भुक्ति न मुक्ति पर भक्ति)

अपवर्ग नहीं हे याके लिये बन्धन हे, ऐसी नेरो मेन्टालिटी महाप्रभुजीकी नहीं हे. बहोतनूके मतमें ऐसो हे जो मुक्ति नहीं हे वो बन्धन ही हे. अरे भाई मुक्ति नहीं हे, वो बन्धन नहीं होके कर्म भी हो सके हे ना! मुक्ति नहीं हे, वो बन्धन नहीं होके भक्ति हो सके के नहीं? अपन् न तो मुक्ति मांग रहे हें और न ही भुक्ति मांग रहे हें. भुक्ति माने संसार. अपनो कर्म और भक्ति, न तो मुक्ति हे और न भुक्ति हे. अपने कर्म और भक्ति

कु अपन् यों मान रहे हें के अपने अहंकु अपन् प्रभुके साथ शेयर कर रहे हें. अपने अहंकु स्वपरोभयार्थ रखवेकी ये एक प्रोसेस हे. अभीतक अपने त्रैवर्गिक रिलेशनमें अपने अहंकु शेयर कियो पर अब अपन् कर्मकी प्रणालीसु और भक्तिकी प्रणालीसु ब्रह्मके साथ शेयर कर रहे हें. यासुं इनकुं ‘आपवर्गिक’ नहीं केहके ‘अत्रैवर्गिक’ केहनो उचित हे. वो मोक्ष नहीं हे, मोक्षसु बहोत ज्यादा बेटर हे जहांतक महाप्रभुजीको दृष्टिकोण हे. दूसरेनूकी बात नहीं कर रह्यो हूं.

मैं समझूं के ये बात आपकु स्पष्ट भई होनी चईये. लीला अननुगुण अहंकार ज्ञानमार्गीयभी हो सके हे, अज्ञानमार्गीयभी हो सके हे. लीलाके अननुगुण माने ब्रह्मकी लीला कौनसे मोड्में चल रही हे? खुदके अहंकु दूसरेके साथ शेयर करनेके लिये. वा तरीकेकी लीला हे. अपन वा डायमेन्शनूमें वा लीलाकु देख रहे हें. नाम, रूप, कर्म की विविधताके डायमेन्शनूके रूपमें नहीं, अपन् या लीलाकु या बखत या डायमेन्शनूमें देख रहे हें. लीला क्या हे? बेसिकली ब्रह्म अपने अहंकु सबके साथ शेयर करनो चाह रह्यो हे. यदि पार्टनर नहीं हे तो पार्टनर खुद खड़ो कर रह्यो हे के चल तू पार्टनर बन और अहंकु शेयर कर. नहीं हे पार्टनर तो क्या भयो चल मैं तोकु पार्टनर बना रह्यो हूं. मेरे अहंकु शेयर कर. आखी सृष्टिकु या एन्गलसु देखनो ब्रह्मके एन्गलसु. ‘‘**एकाकी न रमते स द्वितीयं ऐच्छत् स ह एतावान् आस**’’ (बृह.उप.१।४।३) उपनिषद् कहे हे. वो अकेले अपने अहंमें संतुष्ट नहीं रह्यो, वो अपनो अहं शेयर करनो चाहतो थो या लिये वाने खुद इतने सारे रूप धारण किये, यों उपनिषद् कहे हे. अपने अहंकु शेयर करवेके लिये वाने इतने सारे रूप धारण किये. आखी सृष्टि ब्रह्मकी लीलाको ये पेहलु हे के ब्रह्म अहंकु सबके साथ शेयर करनो चाह रह्यो हे. अब अपन् जब कोईके साथ अपनो अहं शेयर नहीं करनो चाह रहे हें, तो लीलाके अनुगुण अपनो अहं नहीं हे. ये बात दो तरहसु सम्पन्न हो सके हे. ज्ञानमार्गसुभी और अज्ञानमार्गसुभी.

(ज्ञानमार्गीय अहंकारको स्वरूप)

जब अपन् ज्ञानमार्गीय केह रहे हें तब सीधो रहस्य समझो के अनुगुण नहीं हे. **''एकमेव अद्वितीय ब्रह्म.'' ''योऽहं अस्मि ब्रह्माऽहम् अस्मि. अहं अस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेव अहं माम जुहोमि स्वाहाः.''** (महा.नारा.उप.५।१०) वाको स्वरूप हे, एकमेवाद्वितीय = मैं एक हूं और मेरे अलावा दूसरो कुछ हे नहीं. वा तरीकेके अहंकु अपन् अपने अहंके भीतर ला रहे हें; वो ब्रह्म मैं हूं जो एकमेवाद्वितीय हे. अपने अहंकु अपन् ब्रह्मसुभी शेयर नहीं कर रहे हें. क्योंके अपन् ब्रह्मको शेयर वा स्वाराज पॉलकी तरह सारो खरीद लियो अपनूने और वाकु पताही नहीं चल्यो. ब्रह्मके अहंकु अपनूने ज्ञानमार्गीय प्रक्रियासु खरीद लियो वाके सारे शेयर और वो सोतोही रेह गये और अपननूने खरीद लिये. (स्वराज पॉलने डी.सी.एम. और एस्कोर्टस् लिमिटेडके मेजोरिटी शेयर्स खरीद कर उनको मेनेजमेंन्ट खरीद लियो हतो. तब इन्दिरा गांधीने बीचमें पड़के इनकी सुलह करवायी हती.) अद्वैतको मधुसूदन सरस्वती बहोत अच्छो कहे हे **''अद्वैतवीथिपथिकैः उपास्य स्वाराज्यसिंहासनरत्नभूताः''** बड़ो मीठो श्लोक हे. गज़ल इतनी मीठी नहीं होयगी जितनो मीठो ये श्लोक हे. अद्वैतकी जो वीथि हे, माने जहां कोई दो हे ही नहीं, ऐसी एक गली हे. जा गलीमें दो कुछ हे ही नहीं. वा गलीमें फिरवेवाले जो यात्री हें, वो जा स्वराजसिंहासनकी उपासना करनो चाहते होंय वा स्वराजसिंहासनको रत्न तो मैं हूं. अब मैं ब्रह्मके आधीन नहीं हूं. **''अहम् ब्रह्मास्मि.''** मैं खुद ब्रह्म हूं ना! तो मैं स्वराज हो गयो. स्वराजपॉल हो गयो. सारो शेयर ले लियो. मधुसूदन अपने महाप्रभुजीके दोस्त हते, अब वो महाप्रभुजीको दुःसंग लग गयो के क्या लग्यो पता नहीं, तो वाके पाछे वो ये केह रह्यो हे के **''शठेन केनापि वयं हठेन दासीकृता गोपवधूविटेन.''** एक बदमाश हे कोई, जो खुद गोपीनूको दास हे वो मोकु आके दास बना गयो, क्या करूं! ये कोई शठ हे, जो मोकु आके बेबकूफ बना गयो. मैं स्वराजसिंहासनको रत्नभूत हतो,

तो वाकु कोई एक शठने, बदमाशने जबरदस्ती दास बना लियो. अब दास बना लियो तो बना लियो वाके लिये तो इतनी शर्म नहीं आती पर पाछी पता चली के वो तो खुद गोपीनूको दास हतो. तब तो बहोत शर्म आई. वो खुद गोपवधुनूको दास हतो और पाछे मोकु अपनो दास बना गयो. अब मैं तो गोपीनूको दासानुदास हो गयो ना! बड़ी मीठो श्लोक हे ये.

ये फिनोमिना तो रेयरपर्सनालिटीमें देखवेकु मिले. वो स्वराज जो हे ना वो अहं ब्रह्मास्मिकी प्रक्रियासु अपन् ब्राह्मिक स्वराज ऐक्वायर कर लेवे होवें हें, वा एक्वायर करवेमें अपनो अहं कोईके साथ शेयरवर्दी रेह नहीं जाय. वाकु अपन् शेयर कर सकें ऐसो वो रेह नहीं जाय. क्योंके अपन् खुद ब्रह्म हो गये, स्वराज हो गये. अब कौनके साथ शेयर करनो? कोई हे ही नहीं मेरे अलावा जाके साथ मैं शेयर करूं. ज्ञानमार्गीयको अहं ब्रह्मके स्वरूपके तो अनुगुण हे पर लीलाके अननुगुण हे. याके कुछ प्लसपोइन्ट् हें. वो क्या प्लसपोइन्ट् हें के जामें या तरीकेको अहंकार पनप्यो, के लीलाके अननगुण होते भयेभी ब्रह्मके स्वरूपके अनुगुण हें, वामें कभी मोह नहीं होयगो, निर्मोह, निर्भय, निर्मात्सर्य होयगो. क्योंके कौनपे मोहित होयगो वो? मधुसूदनकी कथा अलग हे हों. वो तो अपवादकी कथा हे. सबकी कथा ऐसी नहीं होवे. ज्ञानमार्गीय ब्रह्मके स्वरूपानुरूप गुण हो गयो हे करके कोईपे वो मोहित नहीं हो सके, कोईसु वो डर नहीं सके, निर्भय वाको अहं होयगो, निर्मात्सर्य वाको अहं होयगो. क्योंके अपनेसु कोईकु अलग माने तो वाकु मत्सर करे ना! द्वेष करे ना! ना तो वो कोईसु डरे हे, न कोईसु द्वेष करे हे, न कोईपे मोहित होवे हे. या तरीकेको वाको अहंकार हो जाये. ये अहंको ब्राह्मिक केरेक्टर हे. ब्रह्ममें वो केरेक्टर हे; वो कोईके प्रति मोहित नहीं हे, कोईके प्रति मात्सर्य नहीं हे, कोईसु भयभीत नहीं हे; वो ब्राह्मिक केरेक्टर वा ज्ञानमार्गीय अहंकारवालेकु हासिल

हो जावे हें.

(मोहजन्य अज्ञानमार्गीय अहंकारको स्वरूप)

जैसे ज्ञानमार्गीय अहं हे लीलाके गुणसु अननुगुण, ऐसे एक अज्ञानमार्गीय मोहजन्य अहं भी हे. वो ब्रह्मके स्वरूपकेभी अननुगुण हे. लीलाके तो अननुगुण हे ही पर ब्रह्मके स्वरूपकेभी अननुगुण हे. या अज्ञानमार्गकी खासियत क्या हे? ये अहं केवल निजैकार्थ हे. मेरो अहं माने मेरो अहं. वामें कोईसु कोम्प्रोमाईजकी जरूरत नहीं हे. 'हूं' एटले 'हूं' पती गई ना बात! कोईके लिये मेरो अहं नहीं हे. सब मेरे लिये हे. मेरो अहं कोईके लिये नहीं हे. कोई मेरे अहंकु शेयर नहीं कर सके. ये उद्दाम आसुरी अहंकी सबसु एपेरेन्ट सिस्टम क्या हो जाये वाकी, वो मोहग्रस्त हो जाये व्यक्ति; मदग्रस्त हो जाये; भयग्रस्त होवे; मात्सर्यग्रस्त होवे; ये सब निजैकार्थ अहंके लक्षण हें. जैसे कोईभी या दुनियांमें तुम देखोगे के जितने भी डिक्टेटर हें वो निरन्तर डरते रहें हें. अभी मैने अखबारमें पढ़यो के तेरह हजार पोलिटिशियनूके लिये चौवन हजार कमान्डो तैनात हें. निरन्तर डरें हें. अरे पड़ो कायेको हो ऐसे धन्धामें यदि इतने डरते होओ तो! एक तो तुम लीडर बन रहे हो और कितनो सारो पैसा तुम्हारे प्रोटेक्शनमें खर्च होतो होय, तो उतनो पैसा नहीं खर्चाओ तो देशको कितनो फायदा हो जाये? तुम लीडर नहीं बनो तो देशको बहोत फायदा हो जायेगो. लीडर बने करके देशको इतनो नुक्सान हो रह्यो हे. चौवन हजार कमान्डो. एक कमान्डोकु तैयार करवेमें सरकारके न जाने कितने लाख रुपया खर्च होवें हें. चौवन हजार कमान्डो तेरह हजार पोलिटिशियनूके पीछे उनकी रक्षाके लिये काम कर रहे हें. इतने मात्सर्यग्रस्त हें, इतने भयग्रस्त हें, इतने मोहग्रस्त हें जाको ठिकानो नहीं.

संस्कृतमें एक बहोत अच्छी मुंजकी कथा हे. जब भोज पैदा भयो तो ज्योतिषीनूने मुंजकु केह दी के ''तेरो उत्तराधिकारी ये बनेगो.''

ऐसे नहीं कही के ''ये तेरो मर्डर करेगो.'' ज्योतिषीकी भविष्यवाणी क्या हती के तेरे बाद तेरो वारसा याकु मिलेगो. याके लिये भोजपे मुंजकु इतनो द्वेष आ गयो के कही ''भोजको गला काट दो.'' जब भोजको गला काटवेके लिये ले जा रहे थे तो छोटो हतो पांच छः बरसको, जब कसाई वाकु काटवेके लिये जंगलमें ले गयो तो कसाईकु दया आ गई वा भोला बच्चापे के क्या करेगो ये भोलो! वाने कही के ''क्या करूं, मैं तोकु मारनो तो नहीं चाहूं. तब भोजने कही ''एक मेरो श्लोक ले जाके मुंजकु दे दीजो.'' वा कसाईने कोई हिरनकु मारके वाकी आँख निकालके राजा मुंजकु दिखा दी के मारके ले आयो. मुंजने पूछी कसाईसु ''वो कुछ बोल्यो थो?'' वाने कही ''एक श्लोक दियो हे वाने लिखके.'' संस्कृतके साहित्यमें वो श्लोक माईलस्टोनूके जैसो मान्यो जाय हे. वामें कह्यो जाय हे ''**मान्धाता सुमहीपति कृतयुगाऽलंकारभूतो गतः नैकेनापि समं गता वसुमति मुंज! त्वया यास्यति.**'' या पृथ्वीपे मान्धाता भयो. या पृथ्वीपे राम भयो, या पृथ्वीपे बड़े बड़े राजायें भये, सबनूने राज्य कियो और सब मर गये. कोई कुछ साथ लेके नहीं गयो. ''**नैकेनापि समं गता वसुमति मुंज! त्वया यास्यति.**'' तेरे साथ शायद तू या जमीनकु ले जानो चाह रह्यो हे, वाके लिये मोकु काट रह्यो हे. तेरे मरवेके बाद यदि मैं राजा बनतो तो वामें तेरे बापको क्या गयो? जिन्देमें बनतो होऊं तो चल तेरेकु लफड़ा हे. तेरे मरवेके बाद समझो तेरो वारस मोकु मिलतो होय राज्यको तो तोकु इतनो गुस्सा क्यों आ रह्यो हे? जा दिन तू मरेगो तो शायद पृथ्वीभी तेरे साथ जायेगी. या लिये तोकु वामेंभी पजेशनूमें लफड़ा लग रह्यो हे के मेरे साथ यदि भोज रहेगो तो. या लिये तू मेरी गरदन काट रह्यो हे ना! या तरीकेको अहंकार कोईके साथ शेयर नहीं करनो हे.

कंसकु भी क्या भय हतो? निरन्तर कंसकु ये भय हतो. जो भी डिक्टेटर होंवे या या तरीकेके होवें, वो निरन्तर मदसु, मात्सर्यसु,

मोहसु, भयसु ग्रस्त रेहते होवें क्योंके उनको अपनो अहं शेयर नहीं करनो हे करके उनमें ये सारी वृत्तियें पैदा होवे हें. एक बार तुम अपने अहंकु शेयर करवेको टेम्परामेन्ट बनाओ ना! आधो डर तुम्हारो खतम. तुम घरमें सेवा करो ना, वामें हमारे अहंकु लगे के तुम हमारे अहंकु शेयर कर रहे हो! बालकन्की होड़ कर रहे हो! कृष्णसेवा तुम्हारे यहां हो सके! सेवा तो हम करें. सेवा तो बल्लभकुल करे. वैष्णव कैसे करे! अरे बल्लभकुलको एक ठाकुरजी ऐसो नहीं हे जो बल्लभकुलको होय. सब चौरासी दोसोबावन वैष्णवन्के ठाकुरजी हें. पर मुंजकी तरेह हमारो अहं हो गयो हे के मारो, काटो, हटाओ. इन सबकु हवेलीन्में आतो कर दो. इनके सेवा नहीं होनी चईये. घरके ठाकुरजीमें इनको भाव नहीं होनो चईये. क्योंके घरके ठाकुरजीमें इनको भाव रह्यो, कहीं शायद ये फिर सोचते सोचते हम लोगन्कु बेहोशी आ जाये. फिर हमारो क्या होयगो? हमारी दुकान कैसे चलेगी? हमारी मठड़ी कौन खरीदेगो? हमारे दर्शनन्में कौन आयेगो? नर्वसनेस् आ जाये. ऐसी टेन्डेन्सी हे. वो अहंकारकी लीलाके अननगुण ज्ञानमार्गीय, पुष्टिमार्गीय टेन्डेन्सी नहीं हे वो टेन्डेन्सी, माइन्ड इट, हवेली चलावेवाले हम बालकन्की टेन्डेन्सी ज्ञानमार्गीय नहीं हे, कर्ममार्गीय नहीं हे, भक्तिमार्गीय नहीं हे, संसारमार्गीय नहीं हे, शुद्ध अज्ञानमार्गीय निजैकार्थ अपने अहंको कैसे पोषण करनो? कैसे तुमकु डिसहार्टन् करनो के तुम सेवा कर नहीं सको हो, हमारे ठाकुरजीकु हिंडोला नहीं होय तो तुम ठाकुरजीकु हिंडोला नहीं झुला सको हो, हमारे ठाकुरजीकु हमने अन्नकूट नहीं धर्‍यो हे तो तुम तुम्हारे ठाकुरजीकु अन्नकूट नहीं धर सको हो. हमारे ठाकुरजीके जन्मके दर्शन नहीं खुलें होंय तो तुम ठाकुरजीको जन्म नहीं करा सको हो. अरे भई! ठाकुरजीके जन्मपे तेरो बस चल्यो कैसे? बेबकूफ बनावेके धन्धा! ठाकुरजीको जन्म मध्यरात्रिको भयो और तुम्हारे यहां जन्म होवेके बाद वैष्णवके यहां जन्म कैसे होयगो? वो तो वोही बखत करनो पड़ेगो. वो मुंजकी तरेह मूंजी हम हो गये हें हों! हमकु वो कन्सेप्ट

अच्छो नहीं लगे, नींद उड़ जाये सपना आतो होय तो, अब हमारो क्या होयगो जब वैष्णव सेवा करवे लग गयो? वैष्णवने अपने ठाकुरजीकु अपनो सर्वस्व मान लियो तो फिर हमारे ठाकुरजीको, हवेलीको क्या होयगो? ये निजैकार्थ सिर्फ चलाई जा रही अज्ञानमार्गीय हवेलीके डेमोन्स्ट्रेशन्के ठाकुरजी हें, कृष्ण नहीं हें. न तो स्वरूप कृष्णको स्वरूप हे और न वा तरीकेकी हवेलीन्में कृष्णकी लीला चल रही हे. ये तो एक शुद्ध मद, मात्सर्य की लीला चल रही हे. तुम वाके शिकार हो. ''जैसेको तैसा बम्मनको नाई.'' तुमभी अज्ञानमार्गीय और बालकभी अज्ञानमार्गीय. ''अन्धे गुरु लालची चेला दोनों नरकमें ठेलम ठेला.'' आचार्यचरण सुबोधिनीमें आज्ञा करें हें **''भगवदर्थे कृते जगति स्वस्य अहन्ता-ममतायां भगवद्विरोधेन बन्धः स्याद्''** (सुबो.१।८।४०) वो तो आखी कथाही अलग हे. पुष्टिमार्गकी कथा नहीं हे. पर यदि पुष्टिमार्गकी कथा समझो तो तुमकु ये रहस्य समझमें आयेगो के पुष्टिमार्गकी भक्तिकी कथा तो स्वपरोभयार्थ हे. महाप्रभुजी अपनो हर ठाकुर दूसरेकु पधराते तो आज्ञा करते **''मेरो सर्वस्व तोकु पधराय रह्यो हूं, इनकों तू अपनो सर्वस्व कर जानियो.''** महाप्रभुजी अपने अहंकु तुम्हारे साथ शेयर करनो चाह रहें हें के नहीं? मेरो सर्वस्व तेरेकु पधराय रह्यो हूं, इनकों तू अपनो सर्वस्व कर जानियो. अपने अहंकु महाप्रभुजी तुम्हारे साथ कितने निश्छल भावसुं शेयर करनो चाह रहे हें. वोही महाप्रभुजीकी हम औलाद तुम्हारेसु वो सारे ठाकुर छीनके अपनी ग्वालमंडलीमें पधरानो चाहें जिनकी सेवा न हम कर सकें और न मुखिया कर सके; न ठाकुरजीकी कोई क्रेडिट रेह जाये, न ठाकुरजीकी वो ग्रेड रेह जाये. हमारे यहां तो ठाकुरजीके मस्तकपे, श्रीअंगपे फुलकड़ा (कोक्रोच) अंडा और धर जाय. ग्वालमंडलीमें कौन उनकु स्नान करावे!

एक ठिकाने तो ऐसी दुर्घटना भई के ग्वालमंडलीके ठाकुरजी (तीन चार सो) हते, जब एन्टीक् एक्ट आयो तो इन्क्वायरी शुरु भई के सो बरस पुराने सब ठाकुरजीकु रजिस्टर करवाओ. रजिस्टर

करावेके कानून इतने खतरनाक हते के सबको फोटो, सबको माप, सबके हर डायमेन्शन् आगे पीछे ऊपर नीचेके फोटो, सबके एप्रोक्सिमेट टाईम्, कहांसु तुमने प्रोक्योर कियो माने सोर्स् ओफ् प्रोक्योरमेन्ट् और वाकु तुम कैसे प्रोटेक्ट कर रहे हो, वो सब डीटेल् सरकारकु सप्लाई करनी हती. अब वैष्णवनूसु शृंगारके लोभमें, झारीके लोभमें, आभरणके लोभमें, बंटा घंटाके लोभमें ले ले माल ठाकुरजी तो पधरा लिये, अब इतने तीन चार सो ठाकुरजीकी सेवा कौन करे? सब ठाकुरजीकु बक्सामें बन्द किये.अब वामें सब ठाकुरजीमें गुत्थमगुत्था हो गई. जब इन्सपेक्टर आयो तो वाने कही "तुम अपने ठाकुरजीकी इन्स्पेक्शन् कराओ." तो तीन पिटारा भरके ठाकुरजीकु देखके वाने कही "इतने रजिस्टर करने हें तो अभी तो मैं जा रह्यो हूं कल आऊंगो." तुमकु रजिस्टर करने होंय तो कर लो, इन पिटारामें ठाकुरजी भरे पड़े हें. इन्स्पेक्टरकी हिम्मत खो गई. वाने कही "इतने ठाकुरजीकु कौन रजिस्टर करे. ये रजिस्ट्रेशन्की प्रोसेस पूरी कब होयगी?" अब बातकु समझो. यदि वो ठाकुर वैष्णवके यहां बिराजतो होतो, तो कितनी गरिमासु बिराजतो, कितने सुखसु बिराजतो, कितने सर्वस्वभावसु बिराजतो! पर इन्टेन्शनली, मेलाफाइड इन्टेन्शनूसु वैष्णवसु ठाकुरजी ग्वालमंडलीमें पधरवाये गये. मिल्यो क्या वाके बदलेमें? ठाकुरजीके शृंगार, बंटा, झारी, आभरण सोने चांदी वगेरहके. उन ठाकुरजीकी यह दुर्गति के अपन् उनकु ठीकसु बिरजवा नहीं सकें हें. पिटारामें सब वो उलटे फुलटे फंसे भये हें. हस्त कहीं घुस्यो भयो हे, चरण कहीं घुस्यो भयो हे, मस्तक कहीं घुस्यो भयो हे. सब डबलूयु-डबलूयु मुद्रामें. अपन् देखें तो लगे के यहां ठाकुरजीनूमें भारी कुश्ती हो गई हे. तीन पिटारा भरके ठाकुरजी! पाछे पधरानो नहीं चाहें. वैष्णवकु सेवा आवे नहीं. झारीको नेवरा बांधनो नहीं आवे. वो जयन्त काक कहे के "झारीको नेवरा बांधनो नहीं आवे." अरे झारीको नेवरा बांधनो नहीं आवे तो महाराजकु कहां आवे ग्वालमंडलीमें नेवरा बांधनो! वहां तो फुलकड़ायें अंडायें धर रहे हें! बेबकूफ बनावेके धंधा!

तुम्हारे ठाकुरजी तुमसु झूट लेवे और हमारी दुकान चलानी, याके अलावा और कोई परपज़ नहीं हे. वो अज्ञानमार्गीय स्वरूप अननुगुण, निजैकार्थ मोह, मद, मात्सर्य, भय के कारण ये सारी परिस्थिति पुष्टिमार्गमें पैदा भई हे. अपनो अहंकार सुधरे तो आजभी पुष्टिमार्गको सारो खाताभी सुधर सके हे. ये अहंकार यदि अपनो सुधर नहीं सके तो पुष्टिमार्गको खाता सुधरनो बहोत मुश्किल हे, बहोत मुश्किल हे. अपन् सिद्धान्त समझ सकें हें पर पुष्टिमार्गको खाता नही सुधर सके. क्यों? क्योंके बेसिकली पुष्टिमार्गको धर्मगुरु अपने चेलानूसु डर रह्यो हे. ये पेरोडोक्स् हे के पुष्टिमार्गको धर्मगुरु, अपने चेलानूसु डर रह्यो हे. बाप बेटानूसु डर रह्यो हे, तो खाता सुधरेगो कैसे! कभी सुधरही नहीं सके. बेसिक ड्रोबेक् हे अपने पुष्टिमार्गके सिस्टम्की के अपन् ठाकुरजीके अहंकारके अहंलीलाके अनुगुण अपनेकु ढाल नहीं पा रहे हें, रीमोल्ड नहीं कर पा रहे हें. अपन् वा तरीकेके क्षुद्र अहंकारनूमें भटक रहे हें. ये अहंकारको आखो एक पर्सपेक्टिव हे, जो अपनेकु ये लीलाके अनुगुण और कैसे अपन् लीलाके अनुरूप होवें वाके तेहत देखनो मिलेगो. आज अपनेकु ये विषय पूरो करनो हे. सो आपको थोड़ो लोही और पीयुंगो. तो मैं समझुं के आखो विषय आपकु समझमें आयो होयगो.

एक बात समझो के जो स्वस्थ अहंकार होवे, वो ऐसो नहीं होवे अज्ञानमार्गीय. स्वस्थ अहंकारमें जो अविद्या हे वो "**विद्याऽविद्ये हरेः शक्ती**" (त.दी.नि.१।३१) विद्या भगवान्की शक्ति हे तो अविद्याभी भगवान्की शक्ति हे. वा भगवान्की अविद्या शक्तिसु सांसारिक अहंकार होवे हे. वा सांसारिक त्रैवर्गिक अहंकारमें या तरीकेको ड्राबेक नहीं हे जो अज्ञानमार्गीय अहंकार है. त्रैवर्गिक अहंकार भले ज्ञान कर्म और भक्ति के तुलनामें अपनेकु हीन कक्षाको अहंकार लगे पर वाको एक प्लसपोईन्ट हे और वो प्लसपोईन्ट क्या हे? वो सहज हे स्वाभाविक हे भगवत्कृत् हे. वो अहंकार अपने भीतर भगवत्कृत्

हे. वो तुम्हारी वासनान्सु पैदा भयो अहंकार नहीं हे. वाके साथ छेड़छाड़ करवेसु या तरीकेके अहंकारकी फाइल करप्ट होवे हे.

(अपनो मूल सहज अहंकार और वाकी कोपी)

याकु आप या तरहसु समझ सको हो. समझो के ओफिसमें डोक्युमेन्ट्कु फाइल करवेके रिकार्डरूम होवें हें. ढेर सारे डोक्युमेन्ट इक्टठे होते चले जायें. जो डोक्युमेन्ट्को रूम् हतो फाइल करवेकी, वो भरा गई पूरी तरहसुं. वाके बाद वहांके इन्चार्ज क्लर्कने अपने बड़े ओफिसरकु लेटर लिख्यो के अब ये बहोत भर गई हे, तो अपन् ऐसो कर सकें हें के तीस बरस पुराने सारे डोक्युमेन्ट खतम कर दें, डेस्ट्रोय् कर दें? यामें आपकी एप्रुवल् चईये. बड़े ओफीसरने वाकी एप्रुवल् दे दी के ठीक हे तीस बरस पुराने सारे डोक्युमेन्टस्कु खतम कर दो. वाकी चार चार कोपी बनाके रखो. एक मोकु भेजो के कौनसो डोक्युमेन्ट खतम कियो. एक अपने रिकोर्डके लिये रखो. भविष्यमें कोई पार्टीकु चईये तो वाकुभी तो देनो पड़ेगो ना, करके दो कोपी वाके लिये रखो. तो पेहलो डोक्युमेन्ट क्या खोटो हतो के चार चार कोपी वाकी बनाके रखनी! अब मूल डोक्युमेन्ट तो वामें मा नहीं रह्यो हे और चार चार कोपी वाकी और रखनी? ये अस्वस्थ अहंकार चार कोपी रखवेवालो अहंकार हे. योंभी आप समझ सको. ये एक कोपी शायद ज्यादा भरा गई होयगी, ओवर क्राउडेड हो गई होयगी. पर इन्स्पाईट ओफ् बीन्ग् ओवर क्राउडेड वामें कुछ तो स्वस्थता हे के वो मूल डोक्युमेन्ट हे. अब वाकु डेस्ट्रोय् करनो. "पुष्टिमार्गमां अहंकारने स्थान नथी, दैन्यने स्थान छे." दैन्य क्या? के हवेलीमें आओ, मनोरथ करवाओ! वो चार कोपी हें हों. मद मात्सर्य मोह और भय जन्य ये कोपीयें हें. वो चार फाइलोंकी एक कोपी आप रख रहे हो, एक स्वस्थ महद् अहंकारकु नहीं रखके मदको अहंकार, मोहको अहंकार, मात्सर्यको अहंकार, भयको अहंकार की चार कोपी क्रियेट करवा रहे हो. एक मूल कोपीकु

नष्ट करवा रहे हो. वाको ये रहस्य हे. बड़े ओफिसरन्में ये लफड़ा होवे के वो कोपीकु डेस्ट्रोय् करवेकी केह दें और फिर वाकी चार कोपी और बनवा दें. अरे भई पेहली कोपी खोटी क्या हती! स्वस्थ अहंकार अविद्यासु हतो पर अविद्या कौनकी? **''विद्याऽविद्ये हरेः शक्ती''** (त.दी.नि.१।३१) पहेले हरिकी शक्तिकी अविद्या हती. वा कोपीकु रेहवे देते ना! थोड़ोसो रूम् बड़ो बना लो. थोड़े डोक्युमेन्ट यहां रख लो, थोड़े डोक्युमेन्ट दूसरे रूममें रख लो. कई तरहसु वाकु मेनेज कियो जा सके हे. वा तरहसु नहीं के मूलको डेस्ट्रोय् कर दो और वाकी चार कोपी बनाके रख लो. मद मात्सर्य मोह और भय की चार चार कोपी बनवाके रख लो, या तरीकेको वामें लफड़ा हे. अपने अज्ञानमार्गीय अहंकारको ये गम्भीर रहस्य हे. अब देखो अपन् एज़् ए कन्क्लुज़न् या मुकामपे आये के अहंकारके कन्क्ल्युडिंग् रूप कितने हो सकें हें? दरअसल मैंने यहां पर अहंकार लिख दियो, पर आप याकु ऐसेभी समझ सको हो.

(चार्ट.८)

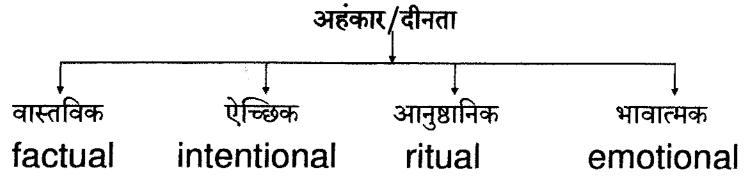

(वास्तविक और ऐच्छिक अहंकार/दीनता)

अहंकार और दीनता आईदर वे, वाकु अपन् समझ सकें हें क्योंके **कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना** तो अब जो मैं ये बात आपकु निष्कर्षके तौरपे बता रह्यो हूं, वो दीनतापेभी लागू हो सके हे और अहंकारपेभी लागू हो सके हे.

सबसु पेहले अपन् वास्तविक अहंकार फेक्च्युअल्. अब मैं

रिपीट नहीं करूंगो के फेक्च्युअल् अहंकार कितने हें, क्योंके इतने दिननूसु मैं आपकु बहोत सारे अहंकार बता चुक्यो हूं के क्रिया रूप, करण रूप, कार्य रूप वगेरह वो सब फेक्ट हें. जिनकु नकारो नहीं जा सके हे. अपने पास कोई चारा नहीं हे के उन अहंकारनूके रूपनूकु अपन् डिनाई कर सकें. वो वास्तविक अहंकार हें.

वाके बाद ऐच्छिक, इनटेन्शनल् अपने अहंकार होवें हें. कुछ कुछ इन्टेन्डेड अहंकार अपने होवें हें. मैंने चार्टमें उनके कोई क्लासीफिकेशन् नहीं दिखाये पर निरन्तर उदाहरणके द्वारा मैने इन्टेन्शनल् अहंकारके बहोत सारे रूप समझाये. क्योंके अपनी कुछ कुछ इच्छायें हें. कोई कोई अपनी कमजोरीके कारण पैदा होती भई इच्छानूसु कुछ अहंकार अपने पनपते होवें हें. वो अपनी इच्छायें नहीं होंय तो अपनो वा तरहकु अहंकार नहीं होयगो. वो इच्छा हे जैसे कल मैंने आपकु बतायो 'केटला तारा पुत्र?' वाने कही 'बे पुत्र.' "तो बन्ने पुत्र मरी जाय." ये अहंकार इन्टेन्शनल-अहंकार हे, वास्तविक अहंकार नहीं हे. कोमनसेन्स् वापरोगे ना! तो समझमें आयेगो के वा अहंकारकु सपोर्ट कर सके या जस्टिफाई कर सके, ऐसो कोई फिनोमिना कोई गोस्वामीबालकमें नहीं हे. मैं एक्स् वाई ज़ेड की बात नहीं कर रह्यो हूं, मैं ए टु ज़ेड तककी बात कर रह्यो हूं. ऐसो कोई फिनोमिना कोई गोस्वामीबालकमें नहीं हे के ऐसे पानी छोड़के कुछभी काम करवा सके. यदि करवा सकतो तो हवेली कायकु चलातो? हवेली चला रह्यो देट प्रूव्स् के वाकी वीकनेस् हे, कमजोर पर्सन् हे. अस्वस्थ अहंकारको हे. अपनी लाचारीके कारण वाकु ये धन्धा करनो पड़ रह्यो हे. जब लाचारीके कारण ये धन्धा करनो पड़ रह्यो हे तो वाणीमें इतनी ताकत कहां हे! वाणीमें ताकत कहां हे के वाणीसु जो कहे वो हो सके? ये तो खाली डरावेको इन्टेन्शन् हे वाको के डरा दें तो अपनो काम हो जाय, बन्दर घुड़की. अपन् वाकी घुड़कीकु अन्देखा करें या रिटेलियेट करें तो बन्दर भाग जाये, खड़ो

नहीं रहे. वो शेरवालो अहंकार नहीं हे के गुर्राके टूटे तुमपे और खावेभी तुमकु. बन्दर खाली खों खों करके डरावे और अपन् डरके भागे तो काटभी ले शायद, बाकी तो वो भीतरसु खुद ही डरतो होवे हे. बन्दरको अहंकार भयजनक अहंकार हे. वाकी खासियत हे के वो भयजनक अहंकार हे, स्वस्थ अहंकार नहीं हे. वास्तविक अहंकार नहीं हे वो इन्टेन्शनल अहंकार हे. क्योंके ताम झाम ऐसो रखनो पड़े नहीं रखे तो काम होवे नहीं. कुछ कुछ काम अपनूने करने हें तो वाकी मेथडस् ऐसी हें के वो इन्टेन्शनल् अहंकारसु करनी पड़ें हें.

वाके बाद देखो ये एक बहोत अच्छो पेहलु हे अहंकारको. कई सारे अहंकार अपने आनुष्ठानिक होवें हें. आनुष्ठानिकको मतलब क्या रिच्युअल्. कुछ कुछ कर्म, कोई कोई काम ऐसे हें, के जिन कर्मनूकु करवेके लिये वा तरीकेको अहंकार अपनेकु एज़ ए पार्ट ओफ़ कर्म रखनो पड़तो होवे हे. दुनियांको उदाहरण दऊं. समझो के कोईभी एअरहोस्टेस् या कोईभी रिसेप्शनिस्ट्कु अपनो एक रिच्युअलस्टिक् अहंकार रखनो पड़े. क्योंके रिच्युअलको एअरहोस्टेस या स्टुवर्ड, सम्पन्न कैसे करेगो यदि वो आनुष्ठानिक अहंकार नहीं होय. जबतक वो विमानमें घूम रह्यो हे, जबतक वा जॉबपे हे, तबतक वो अहंकार वाको रखनो पड़े. ये तो त्रैवर्गिक अहंकारकी बात हे. ऐसे बहोत सारे उदाहरण मिलेंगे. अभी अखबारमें एक बड़ो मजेदार वाक्या आयो. सारे ब्लेक् मनी और व्हाईट मनी और कहां करप्शन् हे और कहां करप्शन् नहीं हे, कहां एकाउन्टेड हे और कहां एकाउन्टेड नहीं हे, याके सारे केसूको जजमेन्ट जो देते होवें, सुप्रीम कोर्टके जजने कही "हमारी प्रोपर्टी कितनी हे वाकु जज करनेके लिये हम एलाउ नहीं कर रहे हें." कारण क्या? एक जजकी सीटपे बैठवेको एक रिच्युअलस्टिक् अहंकार बनायो के हम साधारण नागरिकनूसु ऊपर हें तो हमारी सम्पत्ति एकाउन्टेबल नहीं हे बाकी सारे गामकी सम्पत्ति एकाउन्टेबल्

हे. ''आऊं मडेके च्वां मके कोई चये तो रडी प्वां.'' मैं सबकु जज कर सकूं पर मेरेकु कोई जज नहीं कर सके के मेरे पास एकाउन्टेबल प्रोपर्टी हे के अनएकाउन्टेबल प्रोपर्टी हे. क्योंके भई मैं जज हूं. ये रिच्युअलस्टिक् अहंकार हे हों. वा सीटपे बैठनेके कारण पनप्यो अहंकार हे. एक दिन निकालो और दो जूता मारो तो सब अहंकार खतम. वो सीटपे बैठा दियो करके वो अहंकार पैदा हो जाये. ये तो त्रैवर्गिक अहंकारकी बात हे. जो हास्यास्पद अहंकार हें. पर रिच्युअल् अपने संसारमें होवे ऐसो ही नहीं, दुनियांकी बहोत सारी बातनूमें रिच्युअल् होवे हे. जैसे परिक्षाको इन्स्पेक्टर होवे हे, तो वाको रिच्युअलस्टिक् अहंकार रखनो पड़े भले वो चोरी करके पास भयो होय. पर विद्यार्थीकु तो देखनो पड़े के चोरी तो नहीं कर रह्यो हे. वो रिच्युअलस्टिक् अहंकार हे वाकु पूछो तो कभी न कभी वोभी चोरी करके पास भयो होयगो. वो कागजमें नहीं लिख्यो होयगो तो हाथमें लिख्यो होयगो, हाथमें नहीं तो पेन्टमें लिख्यो होयगो. क्योंके अपने यहांकी परीक्षाकी पद्धति खराब हे. पर वाकु रिच्युअलस्टिक् अहंकार मेन्टेन् करनो पड़े के ''मैं इन्स्पेक्टर हूं ''कोई चोरी करके तो परीक्षा नहीं दे रह्यो हे, मोकु देखनो पड़ेगो जरा? मैं इन्टरआर्टकी परीक्षा दे रह्यो थो ना, वा बखत सब पेन्ट-शर्ट पेहरे भये हते, खाली मैं ही धोती-उपरना पेहरे भयो हतो, तो मैं वाकी निगाहमें पेहले आ गयो. अब वो घड़ी घड़ी आके मोकु देखे तो मोकु डिस्टर्बन्स् होतो थो. मैने सोची के अब करनो क्या उपाय? मैंने जैसे चोरी कर रह्यो हूं ऐसो नाटक शुरु कियो. घड़ीकु यहांसु निकालूं और वहां छिपाऊं. अब मेरे पास कुछ हतो नहीं पर वाकु शतप्रतिशत् यकीन हो गयो के मैं चोरी कर रह्यो हूं. इतनो झल्ला गयो तो मेरे सामने आके बैठ गयो के अब चोरी कर. तो मैंने लिखनो शुरु कियो के ''हिन्दुस्तानकी परीक्षा पद्धति इतनी खराब हे और वामें निरीक्षक, इन्स्पेक्टर यमदूतकी तरह सामने बैठके आँख फाड़के परीक्षार्थीके पेपर पढ़तो होवे हे.''

तुरत भाग गयो. वामें एक पन्द्रह मार्कको एस्से हतो, तो मैंने कह्यो के ''अब फंस्यो!'' अरे भई कायको व्यर्थमें घूरे हे. थोड़ो औड लगे फिगर तो वाको घूरवेकी इच्छा हो गई. मैंने कही के ''घूर रह्यो हे तो याको पूरो घुरवे देनो चईये जासुं जितनो उफान हे उतनो निकल जाये.'' जब वो आके बैठ गयो तब मैंने लिखनो शुरु कियो के हिन्दुस्तानकी एड्युकेशन् सिस्टम्की सबसु बड़ी ड्राबेक् वाकी एग्जामिनेशन् सिस्टम् हे. वाकी सबसु बड़ी ईविल् इन्स्पेक्टर हे जो यमदूतकी तरह परीक्षार्थीके परचानूकु देखतो रहे, घूरतो रहे. वाके बाद वो फिर नहीं आयो. तो कभी कभी लोही पीनो पड़े. वो कथा अलग हे.

पर या रहस्यकु समझो के रिच्युअलस्टिक् अहंकार या तरीके के होवें हें. वामें ही होवें, ऐसो नहीं पर अपनूमेंभी होवें हें. देयर इज़ नो वे आउट. कुछ रिच्युअल् ऐसे होवें हें के जो अहंकारको प्रायोरिटी मानते होवें हें. तो जाकी जा बखत प्रायोरिटी होवे हे वा बखत वाको प्रायोरिटी देनी पड़े ना, अपने पासभी वा बखत कोई वे आउट नहीं रेह जाये तो वा बखत वो प्रायोरिटी देनी पड़े.

(आनुष्ठानिक, रिच्युलिस्टिक् इत्यादि अहंता/दीनता)

आज ही मैंने एक बहोत अच्छी बात पढ़ी, सोरी फोर डायग्रेशन् पर अच्छी बात हे या लिये बता रह्यो हूं. हर देशमें कोई कोई माल ले जावेमें प्रोहिबीशन् होवे हे. क्योंके खुद वो अपनो माल बनाते होंय और दूसरेको माल अपने यहां आके बिके तो अपनेकु नुक्सान होवे, तो उन आइटमनूपे प्रोहिबीशन् होवे. जहां भी प्रोहिबीशन् होवे वहां स्मग्लर उत्साहित हो जावे होवें. ऐसे कोई देशमें, मेक्सिको नाम वाको दियो हे, वहां प्रोहिबीशन हतो के बाजूके देशको कुछ माल नहीं लानो. सीमापे जो सीमाशुल्कको जो इन्सपेकटर् होवे हे, वहां एक आदमी आयो साईकलपे माल भरके और वाकु तुरत ओफिसरने

पकड़्यो. ''क्या हे? कुछ न कुछ चोरीको माल बोरीमें भरके ले जा रह्यो हे. दिखाओ.'' वाने कही के ''कुछ नहीं रेती हे.'' वाने कही ''नहीं दिखाओ.'' वाने कही ''यामें कहा दिखावेको हे.'' वाके बाद वाने बोरीमें चीरा लगाके सारी रेती झाड़ दी. तो वाने हंसके कही ''रेती ही हे ना और कुछ तो नहीं हे. ले जाओ.'' वाने रेती भरी और ले गयो. अब वो या तरीकेसु रोज रोज रेती भरके ले जातो थो. अब औफिसरकु लग्यो के चक्कर क्या हे? ये रोज रोज बोरी भर भरके कहां ले जावे हे. बिल्डरके पास रेती पोंहचावेवालो हे के कौन हे? हे क्या ये बला? एक दिन क्या भयो के वो साइकलिस्ट्कु अचानक शराबखानामें बिठाके वासु पूछी ''भई मैंने तेरेसु हार मान ली. पर तू ये रोज बोरीमें भरके रेती ले जाये हे वामें चक्कर क्या हे ये बता?'' वाने कही ''तुम गलत समझ गये, मैं रेती क्यों ले जाऊंगो. मैं तो रोज रोज नई साईकलपे रेती लेके जातो थो क्योंके वहां साईकल प्रोहिबिटेड हतो. तुम्हारी प्रायोरिटी गलत हती. तुमने साईकल देखी नहीं तो मैं क्या करूं?'' झांसा ऐसो दे दियो के रोज साईकलपे एक बोरी रेतीकी भरके ले जाये और वो चेकिंग रेतीकी बोरीकी करे और वो साईकल अन्दर घुस जाये. बात समझमें आई ना. प्रायोरिटी ऐसे झांसा दे दे हे अपनेकु. अपने अहंकारकी प्रायोरिटी कहीं और हो जाये और अपन् चेकिंग कुछ और करते होंय, माल कुछ और ही सप्लाई हो रह्यो हे भीतर करवेसु. तो या तरीकेकी ये सिस्टम् हे अहंकारकी के वो प्रायोरिटी कोई औरकी बता दे और हम वहां देखते होवें और वो माल यहांसु घुसा दे. मोकु लगी के अपने अहंकारके अनुरूप ये बात आई हे. एपेस्टेमिलोजीको प्रश्न कौन पूछ रह्यो थो? एपेस्टेमिलोजिकल् अहंकार सिद्ध क्यों हे? वाकी प्रायोरिटी या तरीकेकी हे के झांसा यहां दियो जा रह्यो हे और भीतरखानेसु माल कोई औरही जा रह्यो हे. वो रेतीकी बोरी जाही नहीं रही हे. साईकल जा रही हे स्मगलिंगमें. सो रिच्युअलस्टिकूभी अपने अहंकार होवें हें.

दीनताभी ऐसे वास्तविक हो सके हे और ऐच्छिक भी हो सके हे. दीनता आनुष्ठानिक भी हो सके हे. आनुष्ठानिक दीनताको हर व्यक्ति जानतो होयगो के जब वर घर आवे तो ससुरको वाके पैर धोवे पड़ेंके नहीं धोवे पड़ें? मनमें भले कुढ़तो होय के लई गयो, लई गयो पर आयो तो मंडपमें तो वाके पैर तो धोवे पड़ेंगे के नहीं? वो आनुष्ठानिक वाकी दीनता हे. पैर धोवे जैसो मानतो नहीं होयगो के वर राजाके पैर धोवे लायक होवें पर अनुष्ठान हे तो धोनो पड़ेगो. तो या तरीकेकी कुछ आनुष्ठानिक दीनतायेंभी प्रकट करनी पड़ें ससुरकु जमाईके सामने. संस्कृतमें **''जमु अदने''** (पाणि.सू.३०९७) ये गुजरातीमें जमवु क्रिया संस्कृतकी मूल क्रिया हे. **''जमु अदने''** जमी जाये तेनु नाम जमाई. जैसे ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता ऐसे संस्कृतमें जामाता, जमनारो बध्धु जमी जाय, तो वो जामाताके पैर धोने जैसी बात लगती नहीं होय, पर पैर धोनेको अनुष्ठान है सो तो करनो ही पड़ेगो, जायेगो कहां? ऐसे आनुष्ठानिक दीनता भी हो सके है और आनुष्ठानिक अहंकार भी हो सके है. ऐच्छिक दीनता भी हो सके है और ऐच्छिक अहंकार भी हो सके है. ऐच्छिक दीनताको मैंने आपकु बतायो हतो **''मारूं स्वमान रक्षवा जाता कदी कदी हु करगरी गयो छुं पण मने याद तो नथी.''** ऐच्छिक दीनता है. ऐसे वास्तविक भी हो सके है.

(इमोशनल् अहंकार और दीनता)

चौथो अपनो अहंकार इमोशनल/भावात्मक भी हो सके है. क्योंके भोगकी अपनी वृत्ति भोक्ताको अपनो केरेक्टर अपनेकु इमोशनल् बनातो होवे है. अपनो भोक्ताको अहंकार, भोगको अहंकार इमोशनल् अहंकार है. कर्ताकी वृत्ति, ज्ञाताकी वृत्ति में इमोशनूको कोई इतनो रोल् नहीं है. पर भोगकी वृत्तिमें थोड़ो भी खलल पहोंचते ही तुरत अपनो इमोशनल-आउटबर्स्ट प्रकट होवे है. अपने भोक्ताकी वृत्ति सेटिस्फाईड होते ही पोजिटिव-इमोशनल-आउटबर्स्ट होवे है. अपने भोगमें कोई

भी स्पीडब्रेकर आ जाये तो नेगेटिवइमोशनल- आउटबर्स्ट होवे है. या तरीकेको अहंकार इमोशनल-आउटबर्स्टकी तरह प्रकट होतो होवे है अहंकार अपनो, वो भी अहंकारको एक रूप है. कन्क्ल्युज़नूमें ये बात समझनी चईये के कुछ बातें और भी हैं याकी पर इतनी भी बात समझोगे तो कमी बेशी आपको अहंकारकी सारी बात समझमें आ गई.

याके बाद मैं या प्रश्नपे आनो चाह रह्यो हूं अब ''मैं पुष्टिमार्गीय हूं'' ये सिद्ध है के साध्य है? आप लोगनने जो भी कुछ सोच्यो होय वो रिजल्ट अपने पास रखो अपने माइन्डमें तैयार, पर मैं वाको स्वरूप समझाऊंगो.

प्रश्न : इमोशनल् दीनता कैसे होवे?

उत्तर : तेरी शादी हो गई के नहीं? हो गई. तो तेरी वाईफसु पूछियो ना? वो बराबर समझायेगी. वासु पूछियो वो बराबर समझायेगी के इमोशनल् दीनता क्या होवे? मनमें पचास बार समझती होयगी के तेरेमें और वामें फर्क नहीं है पर तुम्हारे लिये इमोशनूके कारण पूछती होयगी के चाय लाऊं, भोजन करनो है, आज ये कमीज तुम्हें कैसी लगेगी? अरे क्या अच्छी लगेगी तू समझता नहीं है? पर पर्सनल् दीनता प्रकट करनी पड़े. पूछ लीजियो तेरी वाईफ़ुको. बराबर समझायेगी के इमोशनल् दीनता कायेको नाम है. एक बात और समझ के वाहीको होयगी ऐसो नहीं तोकु भी होयगी वाईसेवर्सा. रेस्ट एस्योईके इमोशनल् दीनताको बहोत बड़ो रोल् है. इमोशनल् अहंकारको भी उतनो ही बड़ो रोल है. मैं अच्छी तरहसु जानुं के पति बिचारो इतनो दब्बु, इतनो दब्बु के पत्नी दहाड़े न! तो थर थर कांपे पर वो वाके नामसु ही गामकु डराती थी के ''मारा मिस्टरने नहीं गमे'' पर तारा मिस्टरनी हैसियत क्यां छे के बोली शके तारी सामे! इमोशनल अहंताको भी बड़ो रोल होवे है अपनी

लाईफमें. जब भी अपन ठाकुरजीके सामने गावे **''जाकों मन लाग्यो गोपालसों, ताहि और कैसे भावे. लेकर मीन दूधमें राखो, जल बिनु सचु नहीं पावे.''** ये जो दीनता प्रकट कर रहे हैं वह इमोशनल् अहंता है और गावे **''एक वर्यो गोपीजनवल्लभ नहीं स्वामी बीजो कोई... व्रत धारी ते धारी रे.''** ये सब क्या है? इमोशनल् दीनता है दयाराम भाईके या ऐसे जो भी दीनता-आश्रयके पद हैं जैसे **''चरणशरण व्रजराजकुंवरके हम विधि अविधि कछु नहीं जानत रहत भरोसे श्रीराधावरके.''** तो जाने गायो है वो क्या विधि अविधि नहीं जान रह्यो है! जा भगवदीयने ये पद लिख्यो है, जा बखत दीनता प्रकट कर रह्यो है, या प्रकारकी, जो **''रहत भरोसे श्रीराधावरके''** तो विधि अविधि जान नहीं रह्यो है! ये तो वाको इमोशन केह रह्यो है. अभी जैसे यहां ब्रजराजशरणजी इमोशनल दीनता बता रहे थे, के नुपुरको तुम शरणागत मान रहे हो तो मोकु भी अपनो शरणागत मान लो. तो क्या ये कृष्णके प्रति दीनता फेक्च्युअल् हती? नहीं. पर भावात्मक हती, इमोशनल् दीनता हती. ऐसे इमोशनल दीनता प्रकट होवे है. आपसी सम्बन्धनमें प्रकट होवे है. साधनामें प्रकट होवे है, सब तरेहसु प्रकट होवे है. इमोशनल् अहंकार भी प्रकट होवे है. पदनूमें अपन ये सब देख सकें हैं. एक पदमें आवे है **''नन्दलालसों मेरो मन मान्यो, कहा करेगो कोईरी!''** कैसो अहंकार प्रकट हो रह्यो है? मीरा कहे ना! **''माई री में गिरिधर लीनो मोल.''** मैंने गिरिधरकु खरीदयो है. ये अहंता मीराकी फेक्च्युअल् नहीं है. ये मीराकी अहंता कोई केल्कुलेशनपे बेस्ड इन्टैन्शनल् नहीं है वाको गिरिधरके प्रति मोह याको ये तरीकेसु केह रह्यो है के मैंने गिरिधरको मोल खरीदयो है. कौन मोकु ना पाड़ने वालो है! इमोशनल् अहंकार जो होवें वो बहोत मीठे होवें हैं.

हमारे यहां एक वैष्णव आते थे. उनकु सब हमारे यहां 'मोटाभाई' केहते. हमारे काका, दादाभाई सब उनकु 'मोटाभाई' केहते. वो सबके

लिये मोटाभाई जैसो ही हतो. सब भाई उनपे गुस्सा हो जाते थे 'मोटाभाई' भी केहते और गुस्सा भी रेहते. जाकु जो चीज चईये वो मोटाभाई दिवाते. और दिवा देते तो दूसरो भाई गुस्सा हो जातो के वाकु क्यों दिवाई! सबकु मोनोपोलीकी इच्छा होती. तो उनने हमारे कोई एक काकाकु कोई चीज दिवादी तो दूसरेकु नहीं दिवाई तो उनने कही के ''हमकु भी वैसी चीज दिवाओ.'' तब मोटाभाईने कही ''तमे बधा बालक छो लो लई जाओ.'' तो वाकु भी दिवा दी. वासु पहेलेवाले गुस्सा हो गये, क्योंकि उनकुं जो कोईके पास नहीं होय ऐसी चीज़ रखवेको शोख हतो. तो जब उनके यहां गये वो तो उनने कही के गेटआउट. मोटाभाईने कही ''धक्का मारीने शूं काढ़शो! नहीं जाऊं. बावा छो तमे. ऐटला मोटा थया पण बावा छो.'' वाकु खुदको मोटाभाई होनेको इमोशनल् अहंकार हतो. वो हमारे सब काकानूकु छोटे भाई ही मानते हतो. क्योंके बचपनसु साथ खेले थे, साथ साथ बड़े हुये थे तो सब वाकु ''मोटाभाई'' केहते थे.

मोकु भी बचपनमें वापे बहोत गुस्सा आतो थो. क्योंके मैं अपने बड़े बड़े बाल रखतो ना! तो जब भी मोटाभाई आतो तो मेरे बाल पकड़के हिलातो. क्यों रखें हैं इतने बड़े बाल? कटा दो! बहोत गुस्सा आतो मोकु. अब सब मोटाभाई केहते पर मेरी तो लप्पड़ मारनेकी इच्छा होती. पर जब मैंने वाको व्यवहार हमारे सब काकानूके साथ देख्यो तो मैं भी कन्विन्स्ड् हो गयो के सचमुचमें ये घरको मोटाभाई है. है वैष्णव पर है मोटाभाई क्योंके वाको इमोशनल् अहंकार इन सब भाईयनूमें और सारे परिवारके प्रति हतो. मेरे बाल पकड़के यों यों कर देतो तो मोकु लग्यो के सहन करनो चईये क्योंके मोटाभाई है. काका ऐसे करे तो कौनकु केहवे जानो! सचमुचमें वाकु सब मोटाभाई तरीके ट्रीट करते. हमारे सब काकानूकु ऐसे ही समझतो ''आ तो बालक छे. समझता नथी.'' सबकु बराबर

ट्रीट करतो. सब भाईयनमें वाको कोई पक्षपात नहीं. सब भाई वासु नाराज और रेहते और सब वाके पास जाते. सबकु केहतो इतने बड़े हो गये पर बालकके बालकही हो. इतनो इमोशनल् अटेचमेन्ट हतो हमारे परिवारके साथ. कोईकु वाने ऐसे ट्रीट नहीं कियो के वो वाको भाई नहीं होय. इमोशनल् अहंकार हतो वाको पर बड़ो मीठो अहंकार. बचपनमें मोकु बहोत बुरी लगती. मोकु आज तक याद है के बिरलामातुश्री सभाभवनमें वाने मेरे बाल पकड़के हिला दिये के "शूं लटूरिया बाल राखे छे!" मोकु बहोत इनसल्टिंग फील भयो. क्या करूं पर मोटाभाई है ना! सहन करनो पड़े.

वैष्णवनमें भी जैसे दामोदरदासजीने गुसांईजीको केह दी **"ये मारग हांसी खेलको नांही."** वो क्या हतो? उनको इमोशनल् अहंकार हतो. क्योंके मेरे गुरुको बेटा है. तो वाके लिये मोकु इमोशनल् अहंकार है. गुसांईजीने वा बातकु एप्रेसियेट करी हती के जो आप केह रहे हो, सच्ची बात केह रहे हो. तो इमोशनल् दीनता भी होवे है, इमोशनल् अहंकार भी होवे है. ठाकुरजीके साथ भी होवे है जैसे वहां **"भावत तोहि टोंडको घनो."** वामें ये जो श्रीनाथजीको पधराके ले गये, उनने श्रीनाथजीको ही डांट लगा दी के **"मूंड कटवायेगो के सीधे साधो चलेगो?"** अब ठाकुरजीकु केहनेवाले कौन अपन? इमोशनल् अहंकारको कभी आउटबर्स्ट होवे.

जहां जहां भी इमोशनल् अहंकार आउटबर्स्ट होवे ना वाकी मधुरता कुछ अलग ही होवे है, वाकी ये अज्ञानके अहंकार या इन्टेन्शनल् अहंकारके साथ कोई तुलना नहीं हो सके. ये मूढ़ लोग या अहंकारकु वा अहंकारके साथ मिलान करेंगे पर हृदय इमोशनल् अहंकारको कभी इन क्षुद्र अहंकारसु कम्पेयर या कोन्ट्रास्ट भी नहीं करेगो. इमोशनल् अहंकारकी एक अलग ही ब्राह्मिक खूबसूरती है, एक रसात्मक खूबसूरती है. या रहस्यकु कभी भूलनो नहीं चईये.

तो अहंकार इमोशनल भी हो सके है, दीनता भी इमोशनल हो सके है. जैसे **"रीझे राबड़ी गरीब लोग रे, भोगीने न भावे रे. अमे तो राज ना खासा खवास, मुक्ति मन ना आवे रे."** क्या अहंकार बोल रह्यो है? देखो दयाराम भाईको!! ये क्या है? इमोशनल् अहंकार है दयाराम भाईको. वाकी एक अलग खूबसूरती है. गाके देखो या पदकु. **'दुष्ट जीवने कहे छे ब्रह्म रे, ब्रह्म जीव लेखे रे, छते स्वामीए सुहागणनु सुख रे, स्वपने नहीं पेखे रे."** कितनो अहंकार बोल रह्यो है, अपनी भक्तिको. पर वो भक्तिको इन्टैन्शनल् अहंकार नहीं है. भक्तिको वो अज्ञानजन्य अहंकार नहीं है. इमोशनल् अहंकार है दयाराम भाईको. तो ऐसो इमोशनल् अहंकार होवे.

एक बहोत अच्छो शेर मोकु याद आ गयो. **"कभी तो सोच के वो शख्स् किस कदर था बुलन्द जो झुक गया तेरे कदमोंपे आसमांकी तरेह."** बहोत मीठी बात कही है. यहां आसमान कितनो ऊंचो दीखे, पर होराईजनपे पृथ्वीके चरण चूमतो दीखे आसमान इतनो नीचे. होराईजनपे अपन देखें तो आसमान क्या लगे? के पृथ्वीके चरण चूम रह्यो होय. इतनो ऊंचो आसमान, अचानक होराईजनपे जाके अपन् देखें तो ऐसो लगे के पृथ्वीके चरण चूम रह्यो है. तो वो केह रह्यो हे के **"कभी तो सोच के वो शख्स किस कदर था बुलन्द. जो झुक गया तेरे कदमोंपे आसमान्की तरेह."** ये इमोशनल् दैन्य है. ये कोई अहंकारको दैन्य नहीं है. जैसे **"उवाह कृष्णो भगवान् श्रीदामानं पराजित:."** (भाग.पुरा.१०।१५।२४) तो वो ठाकुरजीको इमोशनल् दैन्य है इन्टेन्शनल् दैन्य नहीं है के गोपीगोपबालकनसु उनको अपनो कोई उल्लू सीधो करनो है. वा लिये **उवाह कृष्णो भगवान्** . गोपबालकन्के प्रति उनको सख्य इतनो है के वाके कारण वो झुक गये. **'भगवान् श्रीदामानं पराजित:"**. या तरीकेके इमोशनल् अहंकार इमोशनल् दैन्य, रिच्युअलस्टिक् अहंकार रिच्युअलस्टिक् दैन्य, इन्टेन्शनल् अहंकार इन्टेन्शनल् दैन्य और फेक्च्युअल् अहंकार और

फेक्च्युअल् दैन्य ये सारी रेन्ज् है जा रेन्ज् में अपनेकु अहंकारकु समझनो पड़ेगो. कुछ याकी और डीटेल्स् हैं पर बेसिक् बात इतनी सी है.

मैं पुष्टिमार्गीय हूं. अब देखो अपन् पुष्टिमार्गीय हैं; अपने भीतर पुष्टिको बीजभाव ठाकुरजीने भर्यो है, वासु अपनेकु फर्स्ट ऐसे लगेगो के मैं पुष्टिमार्गीय हूं, ये अपनो अहंकार सिद्ध अहंकार है. आर्टिफिशियल् नहीं है. भगवानके द्वारा घड़्यो गयो अहंकार है. लेकिन अपन् गलत हैं. एब्सोल्युटली रौन्ग्. क्यों रौन्ग? कारण समझो. क्योंके भगवानने जो बीजभाव अपने भीतर भर्यो है, वाकु महाप्रभुजी बिना लाग-लपेटके गूढ़भाव कहे हैं. गूढ़ कौनसे अर्थमें? कितनो गूढ़? के खुद जामें बोयो है वाकु भी पता नहीं है के मैं पुष्टिजीव हूं के नहीं हूं? अपनेकु क्या पता के मैं पुष्टिजीव हूं के नहीं हूं? ठाकुरजीकु ही पता चले. ठाकुरजीने जो कुछ घढ़्यो है वो अपन् हैं. अब ठाकुरजीने अपनेकु क्या घढ़्यो है, अपनेकु क्या पता? याई लिये मैंने आपकु ये बात बतायी, के अपनेकु अहंकार तो पता नहीं चल सके पर व्यक्ति पता चले है. वाके लिये महाप्रभुजीने बतायो **''कृपापरिज्ञानन्तु मार्गरुच्या निश्चियते.''** (त.दी.नि.प्र.२।२२६) कृपाको परिज्ञान मार्गरुचि मार्गमें वाको इन्क्लीनेशन् है, मार्गमें वाकी मार्गमें वाकी चेष्टा है, मार्गकी वाणी बोल रह्यो है, पुरुषोत्तमजीकी टीका देखो मार्गकी वाणी बोल रह्यो है, मार्गकी वेषभूषा, मार्गमें महाप्रभुजी गुसांईजीने जो आज्ञायें करीं हैं, उन आज्ञानकु पालनेमें वाकी वृत्ति है, तो वामें वो बीज भावके कारण पनप्यो भयो अहंकार, वाके बीजभावके अहंकारमें प्रस्फुटित होयगो, वाके बीजभावके कुंडामें वो बीजभाव अंकुरित होयगो. यदि ये सब व्यवहार वाको नहीं दीख रह्यो है तो महाप्रभुजीकु पता चल सके, ठाकुरजीकु पता चल सके पर अपनकु पता नहीं चल सके के मैं पुष्टिमार्गीय हूं के नहीं. तो मैं पुष्टिमार्गीय हूं ये अहंकार सिद्ध कैसे हो सके है?

एक बात समझो के ये तो अपने सत्संगके द्वारा, अपनी परवरिशके द्वारा, अपने एसोसियेशन्के द्वारा, साधित अहंकार है, शतप्रतिशत साधित अहंकार है. ऐसो अहंकार खोटो करियो मत के मैं पुष्टिमार्गीय हूं ये हमारो सिद्ध अहंकार है. या रहस्यकु अच्छी तरहसु समझ लो के ये सिद्ध अहंकार नहीं है. ऐसो खोटो अहंकार रखनेकी महाप्रभुजी मना कर रहे हैं के गूढ़भाव निरूपितः के गूढ़भाव तो प्रभु जाने. अब प्रभु जाने तो अपनकु कैसे पता चल सके! आदमी खुदकु पता नहीं चल सके के मैं क्या हूं? तो मैं पुष्टिमार्गीय हूं ये अहंकार अपनो सिद्ध कैसे हो सके है? ये तो साधित अहंकार है जो अपनी फैमिली बैकग्राउन्ड है, मार्गके जो एसोसियेशन हैं, मार्गमें जो थोड़ो बहोत इन्टरऐक्ट कियो है अपनने, वासु पनप्यो भयो साधित अहंकार है अपनो. बाकी नेचुरल इन्क्लीनेशन् होवे है के हूं मने हूं. ये हेलियोसेन्ट्रिक थियोरी नहीं है. हेलियोसेन्ट्रिक थियोरी समझे? पुराने जमानामें लोग यों मानते थे के पृथ्वीकी परिक्रमा सूर्य करे है या लिये सारे ब्रह्माण्डके केन्द्रमें पृथ्वी है. क्योंके सूरज जैसो पृथ्वीकी परिक्रमा करें, नौ लाख तारा पृथ्वीकी परिक्रमा करें, अरे पृथ्वी परिक्रमा कर रही है वाके लिये वो परिक्रमा करतेसे दीख रहे हैं. इल्युजन् है. अब मैं यों घूमतो रहूं तो मोकु सारी दुनियां परिक्रमा करती दीखेगी. पर कोई परिक्रमा नहीं कर रह्यो है, मैं खुद अपनी आत्मप्रदक्षिणा कर रह्यो हूं. ये जियोसैन्ट्रिक इल्युजन् है. जियोसैन्ट्रिक इल्युजन्.

लेट अस् कम् टु दि हेलियोसेन्ट्रिक् रियलाजेशन्. भक्तिमार्गब्जमार्तण्ड जो हेलियो है मने सूर्य, तो वा सूर्यसैन्ट्रिक् रियलाईजेशन् पे अपनेकु आनो चईये के वो क्या बात केह रह्यो है? वो या बातकु स्पष्ट केह रह्यो है के भक्तिभाव तो गूढ़ है. वो तो जब अंकुरित होवे तब पता चले. अंकुरित कैसे होवे? **''यथा भक्ति प्रवृद्धा स्यात् तथा उपायो निरूप्यते. बीजभावे दृढ़े तु स्यात् त्यागात् श्रवणकीर्तनात्.**

बीजदार्ढ्य प्रकारस्तु गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः. अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः.'' (भ.व.१-२) हवेलीनमें भटकवेसु बीजभाव कभी दृढ़ नहीं होयगो. महाप्रभुजीको स्पष्ट आदेश है के अपने घरमें ठाकुरजीकी सेवा करोगे तो बीज भाव दृढ़ होयगो. वो बीजभाव दृढ़ होयगो तो तुम्हारी स्पष्ट पुष्टिअस्मिता होयगी. जा पुष्टिअस्मिताको उत्सव अपन ये मना रहे हैं. ''**अमे ऐवा रे, अमे ऐवा रे.**'' श्रीआचार्यचरणप्रदत्त पुष्टिअस्मिताको आचार्यचरणके चरणारविन्दमें निवेदन करके या बखतको शिविर अपन समापन कर रहे हैं, बहोत थोड़ो कुछ छूट गयो है पर इतनो सिग्निफिकेन्ट नहीं है जो छूट गयो है. अब आश्रयको पद गाके या सत्रको अपन सम्पन्न करें.

भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो।।
श्रीवल्लभ नख चन्द्र छटा बिन सब जग मांझ अंधेरो।।
साधन और नहीं या कलिमें जासों होय निवेरो।।
सूर कहा कहि द्विविध आंधरो, बिना मोलको चेरो।।

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः॥

॥ परिशिष्ट -१ ॥

॥ ब्रह्मवादी और सापेक्षतावादी चिन्तनान्तर्गत अहंकारविचार॥

(प्रमाणत: स्वरूपनिर्धारण)

जैसा कि हम देख गये आईन्स्टीनने भौतिकीके प्रतिपाद्य बाह्यार्थको युक्तिग्राह्य **"grand aim of all science is to cover the greater number of empirical facts by logical deduction from smaller possible number of hypotheses or axioms"** (द्रष्ट. उद्धृत ले.लिंकन बार्नेट 'द युनिवर्स एंड डॉ. आईन्स्टीन'पृ.११२-११३) अर्थात् विज्ञानकी सभी शाखाओंका भव्य उद्देश्य यही है कि अधिकतर आनुभविक तथ्योंको न्यूनतर प्राग्धारणा अथवा स्वयंसिद्ध धारणाओंके यौक्तिक निगमनके घेरेमें लाना. अर्थात् इन्द्रियग्राह्य गुणधर्मोका केवल संघात माननेके बजाय उन गुणधर्मोंके इन्द्रियग्राह्य संघातको यौक्तिक उत्प्रेक्षा यौक्तिक स्वयंसिद्ध प्रत्ययोंके निगमनगम्यतया एकीकृत करना इन्द्रियग्राह्य गुणधर्म संघात और यौक्तिक प्रत्ययार्थ द्रव्यमें यह तादात्म्यकी स्वीकृति है.

वह महाप्रभुने भी श्रुति-आदि शास्त्रोंद्वारा वैसे प्रतिपादित होनेके रूप मान्य कर रखा है. न तो श्रुतिप्रामाण्य आईन्स्टीनको और न युक्तिप्रामाण्य महाप्रभुको मान्य है. फिरभी अपने-अपने प्रमेय ब्रह्माण्ड या ब्रह्म के बोधमें फलमुखप्रमाके जनकतया नहीं परन्तु उक्त बोधमें प्रमास्वरूपयोग्यताके सम्पादकतया कुछ बातें ऐसी हैं जो इन दोनों चिन्तनोंको एक ही मध्यपाती दीवारके व्यवधानवाले दो विभिन्न द्वारोंवाले भवन जैसा स्वरूप प्रदान करती हैं.

साक्षात् प्रमाण दोनोंके पृथक् हैं फिरभी प्रमाणावलम्बनार्थ अपेक्षित

स्वरूपयोग्यता या तो जैसे आंगिकोंके सम्पादित करनेपर सिद्ध होती है वैसे ही प्रतिबन्धोंका निरास करनेपर भी. उक्तविध प्रमेयोंके बोधार्थ प्रमाणव्यापारमें दोनों ही अहंकारको प्रतिबन्धक मानते हैं. यह विचारणीय है कि कैसा अहंकार प्रतिबन्धक होता होगा?

कुछ अहंकार शारीरिक होते हैं जैसे बलवान् या सुन्दर होनेका अहंकार. कुछ अहंकार पारिवारिक होते हैं जैसे माता-पिता या पति-पत्नी आदि होनेके अहंकार. कुछ सामाजिक भी होते हैं जैसे जनमान्य नेता या उच्च गुरुपदासीन होनेके कारण पनपते अहंकार. कुछ अहंकार धार्मिक भी हो सकते हैं जैसे परधर्मिओंको पापी मूढ़ नरकगामी पतित मान लेनेको उकसानेवाला अहंकार. कुछ अहंकार प्राणियोंके वर्गभेदके कारण भी हो सकते हैं. उदाहरणतया हालमें ही एक प्राणि-उद्यानमें कोई मनोविक्षिप्त मनुष्य बाघके पींजरेमें आत्मघातके लिये कूद पड़ा और वहांके संचालकोंने मनुष्यको अवध्य मान कर बिचारे निरपराध बाघको शूट कर दिया! ऐसे अन्य भी कतिपय अहंकारोंका यहां कोई प्रसंग नहीं है. यहां तो प्रसंग है जगत्का प्रत्येक पदार्थ जो एक-दूसरेके साथ तादात्म्यभावापन्न है उस परम सत्यको व्यक्ति अपने दर्शन धर्म या विज्ञान के द्वारा पनपाये दृष्टिभेदके वश वैयक्तिक अहंकार मुग्ध होनेके कारण स्वीकार नहीं पाता!

इस विषयमें आईन्स्टीन कहते हैं **"what separates me from most so called atheists is a feeling of utter humility toward the unattainable secrets of harmony of the cosmos.", "If it is one of the goals of religion to liberate mankind as far as possible from the bondage of egocentric cravings, desires, and fears, scientific reasoning can aid religion in yet another sense."** (Al.En to Josef lewis April 18.1953, essay on Science and religion) आईन्स्टीन् कहते हैं कि दूसरे जो

नास्तिक हैं उनसे मैं कैसे अलग हूं? नास्तिक तो सभी युगोंमें होते रहे हैं. रसेल् खुद एक नास्तिक चिन्तक थे. ऐसे नास्तिकोंके साथ उनका लगातार संवाद (**continous dialogue**) चलता रहता था. पर "feeling of utter humility" नास्तिकोंमें दैन्यभाव नहीं होता और दैन्यके बिना कॉस्मोसृकी हार्मनीवाली सिक्रेट् (ब्रह्माण्डके तादात्म्यवाला रहस्य) समझमें नहीं आती है.

मुझे लगता है यहां 'एथिस्ट' पदका प्रचलित अनीश्वरवादी अर्थ लेनेके बजाय प्रस्तुत सन्दर्भमें "नास्ति इति मति: यस्य स: नास्तिक:" ईश्वर स्वर्ग धर्म आदि निषेध्यविशेषोंकी उपेक्षा करके सामान्य निषेधपरा मतिके अर्थमें थोड़ी दैरके लिये स्वीकार कर चलें तो सहज ही समझमें आनेवाली बात है अपनी अनुभूतिसे पृथक् अनुभूयमानको स्वीकारनेमें अनुभूति ही पर्याप्त होती है परन्तु अनुभूयमानको भी अस्वीकार करना हो तो दार्शनिक अहंकारको प्रबल बनाये बिना वह सुकर नहीं होता! श्रद्धाको अनेकधा आस्तिक्यबुद्धिके रूपमें स्वीकारा जाता है. महाप्रभु कहतें हैं कि "**कृष्ण सर्वात्मक हैं अत: उनके सामने हमें दैन्यभाव रखते हुवे अहंकार नहीं करना चाहिये. वह अहंकारका मनोभाव यदि स्वत:सिद्ध भी हो तो भी मनमें दैन्यकी भावना auto suggestion तो की ही जा सकती है. कमसे कम जहां-जहां हम कृष्णका अनुभाव देख पाते हों वहां तो अंहकार करनेसे बचना चाहिये, वैसे तो सारे लोकमें ही भगवद्बुद्धि रखनी चाहिये.**"(त.दी.नि.प्र.२।२४१).

यह कृष्णको ब्रह्म परमात्मा भगवान् समझ कर किया गया सर्वतादात्म्यके हेतुवश भेददृष्टिके उत्तेजक अहंकारका निषेध है. यह अहंकार सहज स्वाभाविक अहंकार नहीं परन्तु 'विकृत' कहो या शरीर परिवार समाज धर्मसम्प्रदाय बुद्धिशाली प्राणीसमूह में स्वयंकी स्थितिके वशात् परिष्कृत होता अहंकार कहो एक ही कथा है. ऐसा अहंकार नवजात शिशुकी अहंसवेदनाके जैसा निर्दोष नहीं होता. उसे तो भगवान्

गीतामें अपना ही रूपविशेषके होनेके रूपमें मान्य करते हैं "**भूमि जल अनल वायु आकाश मन बुद्धि और अहंकार ये मेरी अष्टविध अवर प्रकृति परा प्रकृति जीवचेतना जो इन्हें धारण करती है उसकी ही तरह**"(भग.गीता.७।४-५). वस्तुत: तो ब्रह्मकी अद्वय एकरस स्वयंप्रकाशरूपताका अनेकभावापन्न एक कृत्रिम रूप हमारा अहंकार होता है जिसे उद्देश्य बना कर उपनिषदोंमें कहा गया है "**यह पहले ब्रह्म ही था और उसने अपने आपको जाना कि ब्रह्म हूं सो वह सब कुछ बन गया. इस रहस्यको जो भी देव ऋषि या मनुष्य जान पाता है कि मैं ब्रह्म हूं वह ये जो कुछ हैं सब बन जाता है**" (बृह.उप.१।४।१०). यह शुद्ध अहंकार सर्वतादात्म्यकी कहो या हार्मनीकी कहो, उसे जाननेमें प्रतिबन्धक नहीं होता. शरीर परिवार समाज आदिकी परिच्छिन्नताके परिवेशमें परिष्कृत या विकृत हो जानेवाला अहंकार परन्तु सर्वतादात्म्यभावके अनुसंधानमें निश्चय ही प्रतिबन्धक बनता है. एक बार स्वयं आईन्स्टीनके विरोधमें तदातन शताधिक विद्वानोंने अपने-अपने लेखोंका संकलन प्रकाशित किया था ऐसा स्टीफेन हॉकिंग 'अ ब्रीफ हिस्टॉरी ऑफ टाइम'(पृ.१८८) में वृत्तान्त देते हैं और इसपर आईन्स्टीनने बहोत रोचक उद्गार प्रकट किया कि "यदि मैं ग़लत होता तो सौ विद्वान नहीं अकेले किसी विद्वानकी आलोचना भी पर्याप्त होती!

इसमें परन्तु अपनी आस्थाके प्रति आस्तिक्यबुद्धि या श्रद्धा का अनुभाव ही प्रकट हो रहा है अहंकारपूर्ण नास्तिक्यबुद्धिका नहीं. इस ऐसे अहंकारसे बचनेकी महाप्रभु और आईन्स्टीन दोनों प्रेरणा देते हैं. यहां इस प्रमेयकी प्रमाके उद्बोधनमें अहंकारका शिथिलीकरण प्रमाणकी स्वरूपयोग्यता सम्पादित करता हुवा हम पाते हैं.

आईन्स्टीन् जो कहना चाहता वह यह कि दूसरे नास्तिकोंमें दैन्य नहीं है. ब्रह्माण्डमें जो रहस्य है उनके प्रति मुझे दैन्यका भाव

है, अहंकारका भाव नहीं है.''

प्रमाणमें सबसे पहला प्रमाणांग दैन्य है ''**Feeling of utter humility towards the unattainable secrets of harmony of the cosmos**'' ब्रह्माण्डका रहस्य अज्ञेय हो या दुर्ज्ञेय हो. हर नास्तिकमें इसके विरोधमें अहंकार होता है कि मैने सब कुछ जान लिया है.

इस विषयमें एक अति सुंदर उदाहरण आपको बताउं. फ्रान्सूमें लुइस् १४वां था. तब विश्वकोश (encyclopedia) बन रहा था. उसमें 'गॉड्'का प्रकरण नहीं था. लुइस् १४ने पूछा कि इसमें गॉड्का chapter (प्रकरण) क्यों नहीं है? तब विश्वकोशकारने कहा कि ''We know that God is not required subject in encyclpedia''. वैसे विश्वकोश तो न जाने कितने निरर्थक लगते विषयोंको भी संकलित तथा ग्रन्थस्थ करता ही होता है. प्रश्न आवश्यक होने या अनावश्यक होने का नहीं. अलेक्जेंड्रियाके उस महान ग्रन्थागारको भस्मसात् करनेवाले अरबसेनापति उमर खलीफाका भी कुछ ऐसा ही धार्मिक अहंकार था कि कुरानमें जो कहा गया है वो बातें इन ग्रन्थोंमे हों तो कुरानके रहते इनकी आवश्यकता क्या है? और उससे विरुद्ध हों तो भी इनकी आवश्यकता क्या है? परमेश्वरके प्रकरणको अनावश्यक माननेवाला नास्तिक्यमतिवाला वैदुष्यपूर्ण अहंकार और धर्मोन्मादके अहंकार के बीच तारतम्य प्रकट नहीं होता, अधार्मिक या धार्मिक होनेके प्रभेदके अलावा!

आईन्स्टीन् कहते हैं ''मेरेमें ऐसा अहंकार नहीं है. secret unattainable है और वह यदि unattainable secret है तो मैं जान नहीं सकता'' इससे अपना अहंकार विगलित होना चाहिये. आकाशमें निहारिका तारामण्डल ग्रहपिण्डों को कितनी लम्बी अवधि तक दैन्यके

साथ जब हम निहारते तब हमें कभी कुछ कुछ इशारा मिल पाता है. अन्यथा उनके रहस्यको समझना संभव नहीं. वैश्विक तादात्म्यकी अनुभूतिमें प्रतिबन्धक विकृत अहंकार पुनः उक्त तादात्म्यानुभूतिके आनुषंगिक बन पाये, ऐसे उसे स्वाभाविक स्वरूपमें प्रतिष्ठापित करनेके प्रयोजनवश महाप्रभु भी कहते हैं :

> **''सच्चिदानन्द ब्रह्मके आनन्दांशके तिरोधानवश प्रकट हुयी सृष्टिमें आनन्दांश पुनः कथञ्चित् प्रकाशित अर्थात् (तुलनीय : 'मेरे वाणी प्राण चक्षु श्रोत्र बल इन्द्रिय सभी कुछ ब्रह्म हैं, जिनका मैं कभी निराकरण न करूं, मैं ब्रह्मका कभी निराकरण न करूं और न ब्रह्म मेरा निराकरण करे, ऐसा अनिराकरण हो पाये तो आत्मा निरत हो पाता है. तब उपनिषत्में निरूपित ब्रह्मके धर्म जीवके भीतर भी' केनोप.१) प्रकट होने लगते हैं. इस तरह भगवान् कभी सभी कुछ स्वयं बन जाते हैं, कभी पुरुषको द्वार बना कर... कभी आकाशादिका क्रमिक निर्माण कर उनमें प्रविष्ट हो कर जड़ जीव अन्तर्यामी के अनेकविध रूपोंको धारण करते हैं. अचिन्त्य अनन्त शक्ति होनेके कारण वे क्या नहीं कर सकते हैं! यही कारण है कि श्रुतिओंमें एक नहीं प्रत्युत अनेक प्रकार सृष्टिके प्राकट्यके वर्णित हैं. ऐसे सारे निरूपणोंका प्रयोजन कथञ्चित् उसके माहात्म्यका निरूपण करना है... वेदोंमें भगवन्माहात्म्य प्रतिपादन करनेका प्रयोजन ब्रह्मका माहात्म्य समझा कर बादमें उसके साथ 'तत् त्वम् असि' ऐसे उपदेश द्वारा उस ब्रह्मके साथ हमारा तादात्म्य/अभेद समझाना है. ताकि हम भक्ति कर पायें. क्योंकि भक्तिके दो अंश होते हैं एक माहात्म्यका ज्ञान और दूसरा स्नेह.''**
>
> (त.दी.नि.प्र.३६-४२).

ब्रह्मका यह माहात्म्य है कि वह सर्वरूप धारण करनेके बाद सर्वातीत भी रहता है **"यह सभी कुछ वह पुरुष है, चाहे भूतकालीन हो चाहे भविष्यत्कालीन. वह ऐसे अमृतत्वका ईश है कि अन्नके रूपमें खाये जानेपर भी खतम नहीं होता. यह तो सब उसकी महिमा या माहात्म्य है. वह स्वयं तो इससे कहीं अधिक है"**(ऋक्संहि.१०।९०।२) स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे माहात्म्यके निरूपणके साथ उसके साथ तादात्म्यका भी यहां निरूपण है. जो सहज स्वस्थ अहंकारका असहिष्णु नहीं है; और, यह हृदयारूढ़ हो पाये तो अस्वस्थ विकृत अहंकारका कोई औचित्य भी टिक नहीं पाता.

आईन्स्टीन्का भी जगत्प्रसिद्ध उद्गार **"science without religion is lame, religion without science is blind, what is required is scientific religion and not lame and blind"(Einstien's essay on Science and religion)** विज्ञानके बिना धर्म अन्धा है और धर्मके बिना विज्ञान पंगु है. इसके अनुरूप महाप्रभुके उल्लिखित वचनोंको ढालना हो तो कहा जा सकता है ब्रह्मके सर्वतादात्म्यभावापन्न होनेपर सर्वातीत होनेके माहात्म्यको जाने बिना भगवत्स्नेह अन्धवत् हो जायेगा और भगवत्स्नेहविहीन ब्रह्मका माहात्म्यज्ञान पंगुवत् होता है. **'religion'**पद लेटिन **'re legare'** पुन: बंध जानेके अर्थमें प्रयुक्त होता है. और **'science'** अनुभवजन्य ज्ञानके अर्थमें प्रयुक्त होता है. द्वैतवादी आस्था मनुष्यको धर्मसाधनाकी प्रेरणा दे कर उस ईश्वरके साथ उसे इस लोकमें बांधना चाहती हैं जो सृष्टिका कर्ता नियन्ता कर्मफलदाता आदि अलौकिक गुणधर्मोंसे युक्त है. महाप्रभुके मतमें परन्तु धर्मतया विहित सभी साधना सच्चिदानन्द ब्रह्मके तीन आयामोंमें से सत्वाले आयामके साथ कर्मसाधनाद्वारा पुन: जुड़ा जा सकता है. चित्वाले आयामके साथ ज्ञानसाधनाद्वारा पुन: जुड़ा जा सकता है. और आनन्दवाले आयामके साथ भक्तिसाधनाद्वारा जुड़ा जा सकता है. एतदर्थ शरणागति उसके माहात्म्यकी अनुभूतिका उद्यम है और समर्पण उसके सर्वतादात्म्यको

अनुभूत कर पानेकी दीक्षा है. और उसका नाम 'ब्रह्मसम्बन्ध' है. इतना ही नहीं अपितु उसके उपदेशके उपक्रममें ही पहले समुद्रतरंगन्यायेन अव्युच्चरित अंशांशिभाव निरूपित किया गया है, जो बादमें अग्निविस्फुलिंगन्यायेन व्युच्चरणपूर्वक अंशांशिभाव बन जाता है. इसके कारण आपसी तादात्म्यकी विस्मृति और अहंकारकी विकृति जो प्रकट होती है उसे याद दिलानेका वह उपदेश है. यह 'रि-लिगारे' नहीं तो और क्या है? अनुभवविहीन पुन: भगवान्के साथ बंधनेकी प्रक्रियाको आईन्स्टीन जो अन्धप्रक्रिया मान रहें, वह उनके सापेक्षवादद्वारा प्रस्थापित सर्वतादात्म्यवादी दृष्टिसे मण्डित हो तो अन्धी नहीं रह जाती. और यह अनुभवजन्य ज्ञान रूपी विज्ञान भी जगद्विनाशक बन कर जगत्की सारी उर्वरा शक्तिओंके केवल उपभोगार्थ शोषणरूप विज्ञान हो तो ऐसे विज्ञानको पंगु ही मानना पड़ेगा. अत: धर्माग्रही या धर्मपक्षपाती कदाचित् इस विधानको "धर्मविहीन विज्ञान अंधा होता है और विज्ञानविहीन धर्म पंगु" ऐसे भी प्रस्तुत करना चाहें! दोनोंमेंसे किसी भी एक स्थितिमें ब्रह्म या ब्रह्माण्ड का माहात्म्यज्ञान और उसमें प्रकट हुयी विविधताओंमें इतरेतरतादात्म्यको तो कदापि विस्मरणीय नहीं बनाना चाहिये.

(विशेष जिज्ञासार्थ द्रष्टव्य गो.श्याममनोहरजीकी पुस्तक 'ब्रह्मवाद'.)

oooooo

॥ परिशिष्ट -२ ॥
॥ अहंकारमीमांसा-आधारवचन ॥

१. ब्रह्मात्मक संकर्षणात्मक अन्तःकरणात्मक अध्यासात्मक क्रोधमदमात्सर्यात्मक ममताकामलोभमोहजननात्मक कीदृशं न कुर्वीत ? तेन अहंकाररहिताय नामाश्रयोपदेशसंगतिप्रकारः :

(अहंकार-अकर्तव्यता, मानापेक्षात्याग)

१. उत स्वया तन्वाँ सं वदे तत् कदानु अन्तर् वरुणे भुवानि ! किं मे हव्यम् अहृणानो (अक्रुद्धो) जुषेत !! कदा मृळीकं सुमना अभि ख्यम् (अभिपश्येम).(ऋक्संहि.७।८६।२)

२. पृच्छे तद् एनो, वरुण ! दिदृक्षुः उपो एमि चिकितुषो (विदुषो) विपृच्छं (विविधं प्रष्टुं) स मानमित् मे कवयश्चिद् आहुः अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते.(ऋक्संहि.७।८६।३)

३. किम् आग आस, वरुण ! ज्येष्ठं यत् स्तोतारं जिघांससि सखायम् प्र तन्मे वोचो दूळभ (अवाच्य) स्वधाव (तेजस्वी) अव त्वा अनेन नमसा तुर इयाम्.(ऋक्संहि.७।८६।४)

४. अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नो अव या वयं चकृमा तनूभिः अव, राजन् ! पशुतृपं न तायुं. सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम्.(ऋक्संहि.७।८६।५)

५. न स स्वो दक्षो, वरुण ! ध्रुतिः सा सुरा मन्युः विभीदको (द्यूताक्ष) अचित्तिः अस्ति ज्यायान् कनीयसः उपारे (उपागते) स्वप्नश्च (स्वप्नेऽपि) इत् अनृतस्य प्रयोता !!(ऋक्संहि.७।८६।६)

मनो ब्रह्मेति व्यजानात्...विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात् (तैत्ति.उप.३।४-५). अहंकार इतीयं मे...मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च...ये चैव सात्त्विका भावा... (भग.गीता.७।४,१५।१५,७।१२). एष हिएव एनं साधु कर्म कारयति तं यमेभ्यो लोकेभ्य उन्निनीषत एष उ एव एनम् असाधु कर्म कारयति तं यमधो निनीषते (कौषी.उप.३।८).

२. तत्त्वोपदेशः :

बद्धो मुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुतः ॥
गुणस्य मायामूलत्वाद् न मे मोक्षो न बन्धनम् ॥१॥
शोकमोहौ सुखं दुःखं देहापत्तिश्च मायया ॥
स्वप्ने यथा आत्मनः ख्यातिः संसृतिर्नतु वास्तवी ॥२॥
विद्याविद्ये मम तनू विद्धि उद्धव ! शरीरिणां ॥
बन्धमोक्षकरी आद्ये मायया मे विनिर्मिते ॥३॥
एकस्यैव ममांशस्य जीवस्यैव महामते ! ॥
बन्धोऽस्याविद्ययानादिर् विद्यया च तथेतरः ॥४॥
अथ बद्धस्य मुक्तस्य वैलक्षण्यं वदामि ते ॥
विरुद्धधर्मिणोस् तात ! स्थितयोर् एकधर्मिणि ॥५॥
सुपर्णावेतौ सदृशौ सखायौ
यदृच्छयैतौ कृतनीडौ च वृक्षे ॥
एकस्तयोः खादति पिप्पलान्नम्-
अन्यो निरन्नोऽपि बलेन भूयान् ॥६॥
आत्मानम् अन्यं च स वेद विद्वान् ॥
अपिप्पलादो नतु पिप्पलादः ॥
योऽविद्यया युक् स तु नित्यबद्धो

विद्यामयो यः स तु नित्यमुक्तः ॥७॥
देहस्थोऽपि न देहस्थो विद्वान् स्वप्नाद् यथोत्थितः ॥
अदेहस्थोऽपि देहस्थः कुमतिः स्वप्नदृग् यथा ॥८॥
इन्द्रियैर् इन्द्रियार्थेषु गुणैरपि गुणेषु च ॥
गृह्यमाणेषु अहंकुर्याद् न विद्वान् यस्तु अविक्रियः ॥९॥
दैवाधीने शरीरेऽस्मिन् गुणभाव्येन कर्मणा ॥
वर्तमानो अबुधस्तत्र कर्तास्मीति निबद्ध्यते ॥१०॥
(भाग.पुरा.११।११।१-१०)

"**द्वा सुपर्णा**" (मुण्ड.३।१।१) इति श्रुतिपठिता द्वैतबुद्धिः तात्त्विकी औपाधिकी भ्रान्तिरूपा वा? तात्त्विकी चेद् अपिप्पलादस्य पिप्पलादाद् वा पिप्पलान्नाद् वा अन्यबुद्धिः? न तावत् पिप्पलादात् संभवति द्वैतापत्तेः. नापि पिप्पलान्नात् सा इतरसाधारण्याद्. औपाधिकी चेत् भोक्तृकृता साक्षिकृता वा? साक्षिणि अननुभूयमाने द्वैतबुद्धेः अद्वैतबुद्धेः वा अप्रसंगात्. नापि साक्ष्युपाधिकृता, साक्षित्वस्यैव हानात्, भ्रान्तिरूपत्वे तु अपिप्पलादस्यापि भ्रान्ततापत्तिः तस्माल्लीलात्मिकैव उभयोः तादात्म्यात्.

३. कर्तव्योपदेशः :

विहायकामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृहः ॥
निर्ममो निरंहकार स शान्तिम् अधिगच्छति ॥
(भग.गीता.२।७)

४. इतरमत :

१. सब्बसो नामरूपस्मिं यस्य नत्थी मयापितं असता च न सोचन्ति सवै भिख्खुति वुच्चते. (धम्म. ३६७)

२.Torah abides only with him who regards himself nothing (Talmud torah).

३.Truly, I say to you, unless a grain of wheat falls into the earth and dies, it remains alone but if it dies, it bears much fruits. He who loves his life loses it and he who hates life in the world will keep it for eternal. (John.12‹24).

तुलनीय

आत्मैव इदम् अग्रे आसीत् पुरुषविधः सो अनुवीक्ष्य न अन्यद् आत्मनो अपश्यद्. सो 'अहमस्मि' इति अग्रे व्याहरत्. ततो 'अहं'नामा अभवत्...अथ यत्पूर्वो अस्मात् सर्वान् पाप्मानः औषत्. ओषति ह वै स तं योऽस्मात् पूर्वो बुभूषति. य एवं वेद (बृह.उप.१।४।१).

उद्धृतवचनानुक्रमणिका

अखण्डम् कृष्णवत् सर्वम्...३२१ (त.दी.नि.२।१८२)
अद्वैतवीथिपथिकैः उपास्य...३७६ ( )
'अनन्त'शब्दः काले, संकर्षणे...४६ (सुबो.३।२६।२५)
अनन्ता वै वेदाः...३ (तैत्ति.ब्राह्म.३।१०।११।३)
अनायासेन हर्षात् क्रियामाणा...३२४ (सुबो.१।१।१७)
अपाणिपादो जवनो ग्रहीता...१७७,१७९ (श्वेता.उप.३।१९)
अस्मात् सर्वस्मात् सर्वान्...८ (बृह.उप.१।४।१)
उवाह कृष्णो भगवान् श्रीदामानं...३९६ (भाग.पुरा.१०।१५।२४)
एकाकी न रमते स द्वितीयं...३७५ (बृह.उप.१।४।३)
एकोऽहं बहुस्यां...३१८ ( )
एवं सर्वरूपत्वं भगवतो निरूप्य...२८६ (सुबो.१०।१०।३१)
एष ह्येवैनं साधुकर्म कारयति...४३ (कौषि.उप.३।८)
कथम् अयथा भवन्ति भुवि...१९४ (भाग.पुरा.१०।८४।१५)
कर्ता स्वतन्त्रएव स्याद्...२५ (त.दी.नि.१।७७)
कर्ताऽहं इति मन्यते...३६ (भग.गीता.३।२०)
कर्मभिः भ्राम्यमाणानां...३७४ (भाग.पुरा.१०।४४।७)
कर्मण्येव अधिकारस्ते मा...३७४ (भग.गीता.२।४७)
कार्य-करण-कर्तृत्वे कारणं...७३ (भाग.पुरा.३।१६।८)
कार्य-कारण-कर्तृत्वे हेतुः...७३ (भग.गीता.१३।२०)
कृपापरिज्ञानन्तु मार्गरुच्या...३९७ (त.दी.नि.प्र.२।२२६)
क्रीडार्थम् आत्मनः इदं त्रिजगत्...१८७ (भाग.पुरा. ८।२२।२०)
जगत् तु त्रिविधं प्रोक्तं...३४७ (सि.मु.१०)
'जगदंकुर'इति यथा...८३ (सुबो.३।२६।२०)
जमु अदने...३९१ (पाणि.सू.३०९७)
तच्छक्त्या अविद्यया तु...१६० (तदी.नि.१।२३)
तत् प्रमाणं श्रुतिरेव न तु...२८९ (सुबो.१०।१०।३२)

तद्धा एतत् पश्यन् ऋषि...९ (बृह.उप.१।४।१०)
तद्धाम परमं मम...५१ (भग.गीता.१५।६)
तन्मनस्काः तदालापाः...१३२ (भाग.पुरा.१०।२७।४४)
तस्मात् मच्छरणं गोष्ठं...३४१ (भाग.पुरा.१०।२२।१८)
त्वतलौ भावप्रत्ययौः...१४ ( )
दुःखेषु अनुद्विग्नमनाः सुखेषु...१११ (भग.गीता.२।५६)
देहम् किम् अन्नदातुः वा...३७१ (भाग.पुरा.१०।१०।११)
दैवात् क्षुभितधर्मिण्यां...६३ (भाग.पुरा.३।२६।१९)
द्वया ह वै प्राजापत्या दैवाश्च...४ (बृह.उप.१।३।१)
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य...८७ (भग.गीता.५।१४)
न प्राप्तानि पुरा न...२२४ (भतृ.वैरा.श.१०७)
नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि...३१३ (सुबो.कारि.१०।१।१)
नानुपमृद्य बीजो अंकुरसम्भवः... ( )
नैव किञ्चित् करोमि...३६१ (भग.गीता.५।८-१०)
पद्म धर्यो जन तापनिवारण...४७ (जन्मा.वधा.)
परास्य शक्तिर विविधैव...१६४,१६९.१७५ (श्वेता.उप.६।८)
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि...७५,७८ (भग.गीता.१३।२१)
पुरुषः सुखदुःखानाम्...७४ (भग.गीता.१३।२१)
प्रकृतिः पुरुषश्चोभौ परमात्मा...५३ (त.दी.नि.२।१८)
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः...१२३ (भग.गीता.३।२७)
प्रतिक्षणपरिणामिनो हि भावाः...२०२ (सांख्यकौमुदी.५)
प्रभुत्वेन हरौः स्फूर्तो...५० (त.दी.नि.२।१०२)
बहुस्याम् प्रजायेय...८ (छान्दो.उप.६।२।३)
ब्रह्मविद् आप्नोति परम्...३५४ (तैत्ति.उप.२।१)
ब्रह्मसम्बन्धकरणात् सर्वेषां...१८५ (सि.र.२)
ब्रह्मापर्णं ब्रह्महवि...३७३ (भग.गीता.४।२४)
भगवदर्थेकृते जगति स्वस्य...३८१ (सुबो.१।८।४०)
भूमिः आपो अनलो वायुः...५०,१२१ (भग.गीता.७।४)

भोगा न भुक्ता वयमेव ...२२० (भर्तृ.वैरा.शत.१२)
मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिद्...४९,३६९ (भग.गीता ७।७)
मनुष्याणां सहस्रेषु...२२४ (भग.गीता.७।३)
मयि सर्वम् इदं प्रोतं सूत्रे...४९,३६९ (भग.गीता.७।७-८)
मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम्...३५५ (वाल्मि.रामा.बाल.२।१५)
मान्धाता सु महीपति ...३७९ ( )
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये...२२० (भग.गीता.१६।१५)
यच्च किञ्चिद् जगत् सर्वं...३५४ (महा.नारा.उप.१३।१-२)
यतो वा इमानि भूतानि...३१०,३४३ (तैत्ति.उप.३।१)
यथा भक्ति प्रवृद्धा स्यात्...३९८ (भ.व.१-२)
यद् यद् इष्टतमं लोके...१३४ (त.दी.नि.२।२३६)
यमेव एषः वृणुते तेन लभ्यः...३० (कठोप.१।२।२३)
यस्य न अहंकृतो भावो...४६ (भग.गीता.१८।१७)
यो अयं कालः तस्य ते...५४,६५ (भाग.पुरा.१०।३।२६)
योऽहं अस्मि ब्रह्माऽहम्...३७६ (महा.नारा.?)
विद्याऽविद्ये हरेः शक्ती...३८३,३८५ (त.दी.नि.१।३१)
स आत्मानं द्वेधा...३१६ (बृह.उप.१।४।३)
स इममेव आत्मानं द्वेधा...१३१,३१६ (बृह.उप.१।४।३)
स एकाकी न रमते...३१९ (बृह.उप.१।४।३)
स एष यर्हि प्रकृतेः गुणेषु...९४,१२३ (भाग.पुरा.३।२७।२)
स वै नैव रेमे तस्मात् एकाकी...३१५ (बृह.उप.१।४।३)
संकर्षणः स्वभावतो अयं तामसः...४६ (सुबो.३।२६।२५)
सच्चिदानन्दकं बृहत्...५१ (सि.मु.३)
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेः...२२२ (भग.गीता.३।३३,३।३८-३९)
सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो...१३४ (चतु.१)
सर्वान् बलकृतान् अर्थान्...२२,४७ (मनु.स्मृ.८।१६८)
सर्वाणि रूपाणि विचित्य...५ (तैत्ति.आर.३।१२।७)
सर्वो हि आत्मास्तित्व...२३७ (ब्र.सू.शां.भा.१।१।१)

सहस्रशिरसं साक्षाद् यम्...२,४५ (भाग.पुरा.३।२६।२५)
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष...२१ (तैत्ति.आर.३।१३।२)
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष...३११ (पू.सू.१)
सा काचिद् अन्या देवता...४९ (सुबो.३।२६।२५)
सिद्धोऽहं बलवान् सुखी आढ्यो...३२ (भग.गीता.१६।१४-१५)
सो अबिभेद् तस्माद् एकाकी...३१५ (बृह.उप.१।४।२)
सोऽनुविक्ष्य नान्यद्...३१५ (बृह.उप.१।४।१)
सोऽपि तैस्तत्कुले जातः...८७ (पु.प्र.म.२५)
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा...३६१ (भग.गीता.२।५४-५५)
स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि...३७४ (भाग.पुरा.६।१७।२८)
शुनि चैव श्वपाके च...३६९ (भग.गीता.५।१८)
हुंभाव पुंभाव न्यौछावर करीने...१० (दयारामभाई)